अनंत यात्रा

भाग 4

अनंत यात्रा

अनंत यात्रा

पूज्य श्री बाबूजी

एवं

बहिन कस्तूरी

के

मध्य पत्र व्यवहार

भाग - 4

25 जुलाई 1955 से 3 मार्च 1959 तक

प्रथम संस्करण : दिसम्बर 1997
500 प्रतियाँ

© : सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल्य : 60/- रुपये

प्रकाशक : श्री जी.डी. चतुर्वेदी
सी. 830-ए. पारिजात
एच-रोड. महानगर
लखनऊ

मुद्रक : एन्टेक्स प्रिंटर्स
10-ए, बटलर रोड,
डालीबाग,
लखनऊ।

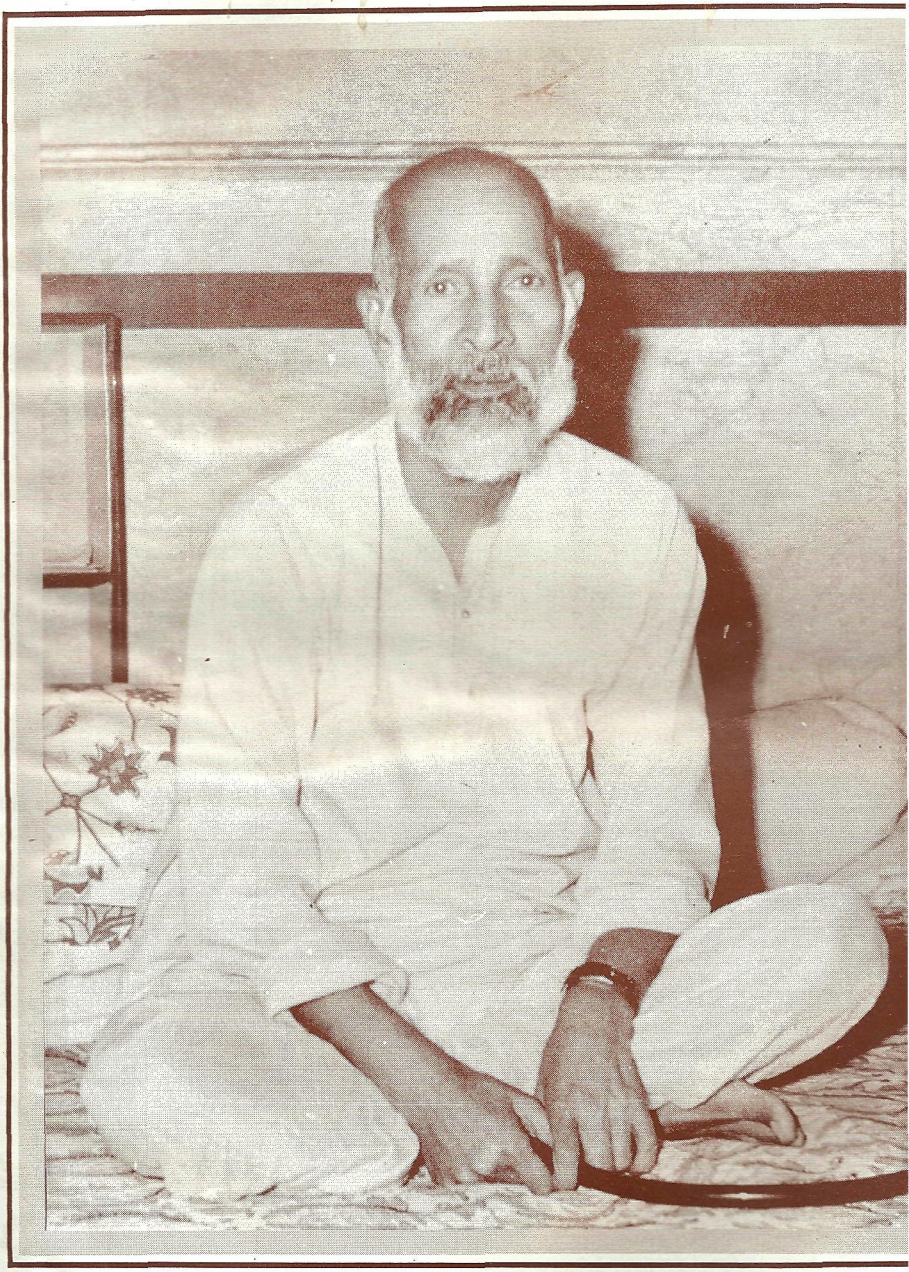

श्री रामचन्द्र जी महाराज

शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

दो शब्द

प्रिय अभ्यासी बन्धु,

आज 'अनन्त-यात्रा' का चतुर्थ भाग आपके हाथों में देते हुए अति हर्ष हो रहा है। 'अनन्त' की यात्रा में अनन्त-दशाओं का अनुभव आपके संग्रह रखते हुये मुझे अनन्त-सुख की अनुभूति हो रही है। इन दैविक-दशाओं को पढ़कर इन्हें प्राप्त करने की प्रेरणा इनसे आपको अवश्य मिलेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

'अनन्त-यात्रा' मेरे श्री बाबूजी की कृपा एवं अभ्यासी के प्रति उनके सहज-प्रेम का दैविक-नमूना है। दैविक-सौंदर्य द्वारा मुझे सँजोते हुये 'अन्तिम-सत्य' की ड्योढ़ी में प्रवेश देकर मानों समस्त के लिए उन्होंने 'अनन्त-देश' (भूमा) का द्वार खोल दिया है। अब इसमें प्रवेश कर आप सभी जीवन के परम-लक्ष्य को पायें यही मंगल-कामना है।

कस्तूरी बहिन

कस्तूरी बहिन

पत्र संख्या - 501

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

खुश रहो। — 25.7.55

पत्र तुम्हारा 19.7.55 का मिल गया। ब्रह्माण्ड से Energy से खींचने से ज़रुर फायदा होगा। सुबह के वक्त तो कर ही लिया करो फिर दिन में अगर चाहो तो एक आध दफ़े कर सकती हो। मगर इस ख्याल के बाँधने में एक बात बहुत ज़रूरी यह भी है कि Energy खींचते वक्त यह भी ख्याल रहे कि जितनी System को जरूरत है, उतनी ही Energy आ रही है। दूसरी बात मैंने और बताई है कि किसी वक्त ध्यान यह भी करना चाहिए कि जितनी बीमारी जिस्म में है वह सब धुएँ की शक्ल में पीछे से या दायें-बाँयें निकल रही है और जिस्म अरोग्य हो रहा है। आँख खोलकर करो, कोई हर्ज नहीं। अब अपना कुल हाल लिखना कि कमज़ोरी रफ़ा हो गई और अगर शिकायत है तो क्या और कहाँ है? या अगर दर्द है या सूजन या सख्ती है, तो कहाँ है?

कम्पन या लपकन का कम हो जाना, जो तुमने लिखा है यह समाप्त तो कभी नहीं होता, मगर dim ज़रूर हो जाता है। dim होना इस बात का चिन्ह है कि उन्नति की हालत है। मगर बिल्कुल dim तो उस वक्त पड़ता है जब सोलहों आने भर हम अपना आपा मिटा चुकते हैं, और जितना कि Vibration Dim है, उतनी ही बीज रूप में शक्ति आ जाती है और हम Dim Vibration को मजबूत करके जब कम्पन पैदा कर देते हैं, तो बड़े-बड़े काम कर डालते हैं। इसका बीज रूप में आ जाना ही असल शक्ति में प्रवेश हो जाना है। हाथ जो सिर पर अब मालूम नहीं होता, उसकी वजह तुमने खुद लिख दी है कि वह कम्पन या शक्ति को ज़रूरत से ज्यादा उभरने नहीं देता था। हाथ है अब भी मगर इतना, जितना कि ज़रूरत है।

बड़ा अच्छा हुआ, केसर को 150 रूपये की नौकरी मिल गई। केसर ने जो लिखा है, उसे परेशान होने की जरूरत नहीं, वह सब ठीक हो जायेगा। Self cleaning का Process वह कभी कर लिया करे, वह तुम उसे बता देना, जैसी ज़रूरत हो। हालत वैसे उसकी बहुत अच्छी है।

भाई-बहनों को आशीर्वाद।

शुभ चिन्तक

रामचन्द्र

पत्र संख्या- 502

परम् पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर-प्रणाम! — 30.7.55

कृपा-पत्र 'आपका' मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

लगता है कि सम्पूर्ण प्रकृति जड़ हो गई है। कुछ ऐसा लगता है कि चलना-फिरना, सोना-जागना, कभी कुछ होता ही नहीं, और मानों कभी हुआ ही नहीं। भाई, पता नहीं, हालत शुद्ध कह लीजिये या Innocence कह लीजिये।

भाई, मेरा तो न जाने क्या हाल हो गया है कि मैं अब जड़वत् दशा से भी खाली हूँ, क्योंकि जड़वत दशा कहने पर भी दशा में अन्तर नहीं पड़ता। अब तो यह दशा है, कि जिन्हें मैं 'बाबूजी' कहती हूँ, वे कैसे हैं, कहाँ हैं, कुछ पता नहीं। मानों कभी मुलाकात ही नहीं हुई हो। कभी मैं सोचती हूँ कि श्री 'बाबूजी' बस से उतरेंगे, तो मैं पहिचान भी पाऊंगी या नहीं। कहाँ हर कण-कण में बस वे ही दिखलाई पड़ते थे परन्तु अब न जाने क्या हो गया है कि अब कहीं कभी दीखते ही नहीं. या यों कह लीजिए कि आँखों में प्रकाश ही नहीं रहा, जो उन्हें देख सकेन दशा को जड़ कह लें, परन्तु अब तो उस पर इसका असर ही नहीं पड़ता। अब तो यह लगता है कि कितनी सौम्य सी जगह में सैर हो रही है। बिना किसी हवा के, वहाँ कैसी हवा की Feeling है, जो बड़ी ही कुछ सीधी सी, सुरत सी, या शुद्ध या Innocence का Essence कह लीजिये। मैं तो अनुभव करती हूँ, समाती जाती हूँ उसमें, परन्तु शब्द भारी पड़ते हैं। हवा तो वहाँ है नहीं, परन्तु कुछ यह है कि उस दशा की Feeling करते-करते भी अक्सर यह पता नहीं रहता कि मुझे कोई हालत Feel हो रही है, वरन् इतना साम्य हो जाता है कि Feeling जाती रहती है, बल्कि वही मेरा रूप हो रहता है। 'आप' कृपया देख लीजियेगा यह क्या दशा चल रही है।

अम्मा आप को शुभाशीर्वाद कहती है। छोटे भाई बहनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या 503

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! 3.8.55

तुम्हारा पत्र 30 जुलाई का लिखा हुआ मिल गया। अबकी तो इस पत्र में कुछ अजीब विचार और अजीब दशा और अजीब ढंग से लिखी पाई तो इससे यह मालूम होता है कि लिखने वाला भी अजीब और अद्भुत होगा। क्या तुमने तो नहीं लिखा है? तुम यह कहोगी कि लिख ही गई। कैसे? तो पता नहीं। पता यों नहीं होगा कि उसका पता नहीं रहा होगा। यानी पता, पता देकर न जाने कहाँ चला गया होगा। बस यही है Reality में अच्छी तौर पर प्रवेश हो जाना, होना इसको भी खत्म है, इसलिये कि पते का पता तो नहीं रहा मगर लापते का भी पता है। मैं इन दो चार Sentences जो तुमने लिखे हैं, पढ़कर गद्गद हो गया और इन्होंने तुम्हारी कुल हालत का मुझे अन्दाज बता दिया। सच तो यही है कि अगर हममें आखिर पर भक्ति भी रह गई अर्थात् उसका अन्दाज रह गया, तो हमें पूरी तौर से छुटकारा नहीं मिला।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या - 504

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम! 8.8.55

कृपा पत्र 'आप' का मिला। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो लगता है कि वह सारा Dim Vibration भी मानों हज़्म हो गया है। मुझे तो अब कुछ नहीं दिखाई पड़ता। परन्तु अभी यह देखती हूँ कि यदि ख्याल बाँधूँ तो वे Dim Vibration स्पष्ट अनुभव होने लगते हैं। अब तो यह दशा है कि अब चलती-फिरती क्या हूँ, देखती हूँ ज़मीन पर कभी पैर ही नहीं आते। अब तो यह तक समझ में नहीं आता कि Heart बाहर है या भीतर और कुछ यह भी है कि Heart का ख्याल बाँधने से कोई असर नहीं होता, वरन् मुझे तो लगता है कि बाहर-भीतर कहीं है ही नहीं। भाई, अब तो लगता है, मन Vibration हो गया है, और Vibration भी लगता है कि अब उसका ख्याल ही न जाने क्यों कभी नहीं आता है। लगता है कि Vibration ही मन है, या बुद्धि, या जो कुछ है सो भी लगता है कि सब मानों हज़्म हुआ जा रहा है। यहाँ तक हाल है कि अपनी तबियत से जब उसे तेज़ करती हूँ, तब जाकर अनुभव हो पाता है। भाई, दशा क्या है, सरलता तथा Innocence तो बस उस दशा की केवल एक Quality मात्र ही की गणना तक ही आ पाते हैं और Vibration मानों मेरी दशा का सहज स्वभाव मात्र भर ही है। याद की भी याद भूल गई है।

लगता है कि जो हाथ मेरे सिर पर था और पीठ पर था, उस हाथ की Feeling मानों अब मेरा स्वयं रूप बन गया है। दशा में बनावट भी नहीं है, तथा सहजता भी नहीं। सहजता तो केवल मेरी दशा का एक गुण मात्र भर है और मुझमें तो कोई गुण नहीं। इधर रह-रहकर जाने कभी क्या हो जाता है कि रात-रात भर मानों तबियत किसी से बातें कर रही हो, परन्तु मैं तो इतनी अनजान हूँ 'बाबूजी', कि लगता है, कि सबेरा होते ही मुझे कुछ होश नहीं। रात भर सोते में तो मानों कुछ होश सा रहता भी है, परन्तु सबेरा होते ही वह लापता हो जाता है। कुछ यह है कि होश में थकान लगती है, यानी रात में और बेहोशी में थकान भाग जाती है।

भाई, मैंने तो दीवानी बनने की कोशिश की थी, परन्तु 'मालिक' ने यह सोचा कि यह दीवानी बन घूमेगी तो इसकी कहीं भद्द न हो जाये। इसलिये मेरा तो अब यह हाल है कि दीवानी तो मैं सच में न बन सकी, परन्तु मुझे अब यह भी पता नहीं लगता कि मुझे अब यह इच्छा भी है या नहीं। फिर यह भी तो पता नहीं कि दीवाना होता कैसा है, वह क्या करता है और वह क्यों दीवाना बन जाता है, 'बाबूजी' आप ही बतायें। मुझे तो कुछ पता नहीं है। शायद 'आप' के बताने से कुछ पता हो जाये तो कुछ कोशिश भी करूँ और यह भी कृपया बतावें कि मैं दीवानी किसकी बनूँ और कैसे बनूँ और दीवाने को क्या-क्या मज़ा आता है? 'आप' जानें, क्योंकि मैं देखती हूँ या कुछ समझने का प्रयत्न करती हूँ, तो अपना सार, अपना रहस्य, 'आप' को ही पाती हूँ। इसलिये, मेरा तो सब 'आप' ही जानें। जो 'आप' बताना चाहेंगे, वही तो मेरी समझ में कुछ आ सकता है अन्यथा नहीं। किन्तु 'आप भी भला

पत्थर को क्या बतावेंगे। पशु-पक्षियों को तो कदाचित् समझाया जा सकता है, परन्तु पत्थरों को कदापि नहीं। परन्तु मेरा तो कुछ यह हाल भी तो है 'बाबूजी', कि पहले मुझे तो यह भी बताना पड़ेगा कि मैं पत्थर हूँ, जानवर हूँ, मनुष्य हूँ या कुछ भी नहीं। मुझे क्या पड़ी, जो 'आप' कहें, सोई तो मैं हूँगी।

अब तो अक्सर यह दशा हो जाती है कि, अक्सर देखती हूँ कि बैठे ही बैठे आँखें फटी की फटी ही रह जाती हैं और ख़ो जाती हूँ, नहीं भाई, मैं शायद कुछ नहीं हो जाती हूँ, क्योंकि 'बाबूजी' कुछ नहीं ही तो मै हूँ, वही तो मेरा स्वरूप है।

केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई बहिनों को प्यार।

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या- 505

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! 14.8.55

तुम्हारा पत्र 8 अगस्त का मिल गया। तुमने किसी पत्र में लिखा है कि पाइन्ट F_1 की सैर पूरी हो चुकी है, ऐसा नहीं है। बल्कि उस स्थान पर जो शक्ति है, वह फैली हुई है, मगर ज्यों की त्यों है, अभी उसने सैर की शक्ल अख्तयार नहीं की है। कुछ थोड़ी सी जरूर हुई है, जिसकी वजह से तुम आजकल रुकी हुई हो, अर्थात् बढ़ नहीं रही हो। मगर इसको परवाह मत करो, यह मेरा काम है और इसे मैं दुरूस्त कर लूंगा। बाकी हालत, जो तुमने लिखी है, वह Reality में सम्मिलित होना जाहिर कर रही है। दीवानगी के बारे में जो कुछ तुमने पूछा है, उसका उत्तर दीवाना ही दे सकता है, और जहाँ दीवानगी है वहाँ द्वैत मौजूद है। बातों के बारे में जो लिखा है, यही बात मालूम होती है कि सोते-सोते विचार के रमाव का मुख मेरी तरफ हो जाता होगा। वैसे तो मुझे अभ्यास में इधर-उधर जो लोग बोला करते हैं, वह मेरे पास आवाज़ अक्सर आ जाती थी। कभी इत्तफाक़ से अब भी हो जाता है। मसलन काश्मीर में जिस वक्त गोली चली थी, उस गोली की आवाज़ें उसी वक्त कान में आने लगीं। मैंने जब नक्शे को देखकर निगाह जमाई तो मालूम हुआ कि उसी तरफ गोली चल रही है। कहीं रेल लड़ गई तो उसके लड़ने की आवाज़ और चोट खाने वालों की हाय-हाय भी आ गई है। मगर यह चीज़ हर वक्त नहीं होती, न मालूम कब और किस वजह से कभी ऐसा हो जाता है।

काशीरामजी Assam में काम अच्छा कर रहें हैं और Mission की आवाज़ उस हिस्से में खूब पहुँच चुकी है और 6-7 सत्संगी बन भी चुके हैं, जो स्थाई रुप में हैं।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या- 506

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम! 13.8.55

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। मालिक की कृपा से जो कुछ आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरा तो यह हाल है कि Conciousness और Unconciousness मेरे लिए कुछ ऐसी चीज़ हो गई है कि जब चाहूँ तो, अपने से पैदा भले कर लूँ, 'मालिक' से भले माँग लूँ, वरना भाई, मुझे तो कुछ पता नहीं कि क्या है, क्या नहीं है। वैसे जीवन जैसा चल रहा है, तो उसका यह हाल देख रही हूँ, कि पता नहीं 'मालिक', मन को चाहे चेतन कह लें, चाहे अचेतन कह लें। मुझे तो दोनों या मेरे लिये तो अब दोनों में कोई अन्तर नहीं रह गया है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आप की दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री - कस्तूरी

पत्र संख्या-507

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम! 15.8.55

यहां सब कुशल है, आशा है आप भी स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो अब यह दशा है कि मेरे लिये तो मानों 'प्रेम' शब्द उड़ चुका है। न मुझे अपने से प्रेम कभी आता है, न दुनिया से है और न ईश्वर से आता है। कहाँ एक Second भी 'उसकी' याद भूलते ही तड़प उठती थी, अब मुझे कभी तड़प नहीं उठती। जब मन से ही नहीं है तो भला लाने से क्या आवेगी। न मन में तड़प के लिए craving ही होती है। मैं तो, ऐसी समझ लीजिये कि जैसे मेरा तो सारा रस निचोड़कर मुझे धूप में सुखा डाला गया हो। बस एक मेरे 'मालिक' की कृपा से इतनी सी बात ज़रूर बाकी है, कि श्री बाबूजी की आज्ञा होते ही तबियत स्वत: ही वही करती है। 'उसकी' इच्छा के विरूद्ध स्वप्न में भी नहीं कर सकती और यह बात Automatic ही देखती हूँ।

लगता है कि F_1 point की सैर समाप्त हो गई है। मैं तो बस सूखी लकड़ियों के समान लगती हूँ। जैसी ऊपर तैसी भीतर हूँ। अक्सर अब यह हो जाता है कि सामने 'श्री बाबूजी' का ही ख्याल रहने पर भी, जाने क्या हो जाता है कि तबियत उन्हीं से कहने लगती है कि हमारे 'बाबूजी' को क्या कभी देखा है? वे बड़े अच्छे हैं और जाने क्या- क्या, कुछ मुझे पता नहीं। यही हाल अपना पाती हूँ कि अक्सर मुझे यह याद नहीं आता कि मैंने सचमुच कभी 'आपको' देखा है। अब यह भी 'मालिक' जानें।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-508

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! 17.8.55

मैंने एक चिट्ठी मास्टर साहब के पते से 4 अगस्त को डाली थी, उसमें तुम्हारी चिट्ठी का जवाब भी था, जो मिल गया होगा। इस साल जन्माष्टमी का व्रत 10 अगस्त दिन बुधवार को रहेगा। मैं यह चाहता हूँ कि तुम व्रत अगर रखना ही चाहो तो दोपहर को दूध या फल या कोई और हल्की चीज़ खाओ और सूरज अस्त होने के बाद पेट भरकर कोई हल्की चीज़ खा लो। चूँकि तुम आजकल कुछ कमजोर हो, इसलिये ज्यादा सख्त कायदे की पाबन्दी करने की ज़रूरत नहीं। केसर से कह देना कि ईश्वर की कृपा से हालत उसकी भी अच्छी है और वह तुम्हारे क़दम-ब-क़दम चलने की कोशिश कर रही है मगर कुछ Limitations ऐसा पड़ा हुआ है कि जिसकी वजह से पूरी तौर पर अपनी लालसा के मुताबिक चल नहीं पाती और यह सबमें होता है। इसमें कोई हर्ज़ नहीं। धीरे-धीरे अभ्यास और सत्संग से दूर हो जाता है मैंने उसकी हालत जो कुछ भी है, एक खत में उसे लिख दी थी। लय-अवस्था अगर किसी में है तो तुम्हारी लय-अवस्था के बाद उसी का नम्बर आता है और लोगों में से कुछ अच्छे भी हैं और कुछ रस्मी तौर पर लगे हुए हैं।

चौबेजी को प्रणाम और तुम्हारे भाई बहिनों को आशीर्वाद।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या 509

प्रिय बेटी कस्तूरी शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! 23.8.55

तुम्हारे पत्र मिल गये। चाहा था कि उत्तर दें, इतने में एक खत इलाहाबाद से आ गया। उससे पता चला कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। इसलिए मैंने इरादा कर लिया कि शनिवार की शाम को Bus से गोला होकर लखीमपुर आऊँगा। बसन्त पंचमी 16.2.56 को पड़ रही है।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-510

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम! 16.8.55

मेरा एक पत्र आपके पास पहुँचा होगा। मालिक की कृपा से जो कुछ मेरी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, कुछ ऐसा हाल है कि पता नहीं मैं द्वैत हूँ या अद्वैत हूँ। 'आप के' लिखने पर गौर किया तो कुछ समझ में ही नहीं आया। खैर यह तो 'आप' ही जानें। यही क्या, मुझे तो अपनी अब कोई हालत ही नहीं लगती है। नासमझ हालत भी अब हालत के लिये कहना ठीक नहीं पाती हूँ। लगता

है जैसे नेत्रों की कोई ग्रन्थि साफ़ हो गई हो और 'मालिक' की कृपा से देखा तो वह द्वैत-अद्वैत का झगड़ा मेरे लिये समाप्त हो चुका है। जगते में न जाने क्यों कभी-कभी चौंक पड़ती हूँ, किन्तु चौंकने पर भी Feeling कुछ नहीं होती। Condition में तो न समा ही है, न Simplicity की छाया वह तो उसका एक प्रभाव मात्र ही है। आगे 'आप' जानें।

अम्मा 'आप को' शुभाशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-511

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 18.8.55

आशा है, मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। मेरी तबियत भी अब ठीक है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब देखती हूँ कि दशा में पसीजन कभी आती ही नहीं और निश्चलता भी पता नहीं है, या नहीं। और साम्यवस्था की तो लगता है जान ही निकल गई हो। अब तो दशा मानों (.) घेरे के बीच का Centre है और circle के चारों ओर भी साम्यावस्था या Simplicity का क्षेत्र है, अंदाज नहीं पाती हूँ। मुझे तो लगता है कि मानों दरियाए-मारफ़त में कभी कुल्ला तक नहीं किया हो। Simplicity में आनन्द था, परन्तु अब उस अन्दाज़ तक तबियत ही नहीं पहुँचती, किन्तु जो भी एहसास अब है, चाहे वह कैसा भी हो, उससे तबियत नहीं अलहदा होती, बल्कि देखती हूँ कि तबियत का वही स्वरूप हो जाता है, जैसा कि एहसास होता है।

मेरा तो यह हाल है कि दरियाये-मारफ़त में मेरी दशा कमल का वह पत्ता है, जो उसके स्पर्श से परे है। भला मैं ब्रह्म विद्या क्या सीखूँगी, जबकि मुझे इन्सानियत का भी अन्दाज़ नहीं, तमीज़ नहीं। अब तो यह है भाई, कि न कुछ क्रय हुआ है, न विक्रय ही हुआ है।

केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहनों को प्यार। इति:-

आप की दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-512

प्रिय बेटी कस्तूरी, — शाहजहाँपुर
शुभ आशीर्वाद! — 25.8.55

तुम्हारे 16 अगस्त और 18 अगस्त के खत मिल गये। डा. वरदाचारी का ख़त जो आया, उसकी नकल तुम्हें भी देखने को मिल गई होगी। तुमने उनके बारे में जो लिखा वह ठीक ही निकला और मुझे तो अब तुम्हारी मदद की पग-पग पर ज़रूरत पड़ती है। इसलिये कि तुम्हारी हर बात अनुभव ही होती है और मैं यह चाहता हूँ कि कोई ऐसा मेरे करीब ही रहे कि इन चीज़ों की मदद मिलती रहे। मेरा अनुभव मुझे बता तो ठीक ठीक देता है, मगर जब उसे कोई दूसरा ठीक-ठीक बताता

है, तो मैं समझ लेता हूँ कि अब मेरा ख्याल ठीक है। मेरा अनुभव तेज़ ज़रूर था किसी वक्त और सम्भव है अब भी हो, मगर कुछ पता नहीं चलता।

मैं समझता हूँ कि तुम चाहती हो कि मैं वहाँ आ जाऊँ, तो देखो तो सही कि मैं आ तो नहीं गया। अच्छा मैं आ गया, तो यह बताओ, मैं गया कब था? तुमने अपने खत में जो लिखा था, यह प्रेम की बड़ी ऊँची अवस्था है और अपने आपको भूल जाने की एक उम्दा दलील। न होश का पता लगना और न बेहोशी का, यह बात बता रही है कि तुम्हारा रिश्ता गहरा उससे जुड़ गया है, जो इन तमाम बातों से अलहदा है। मगर कहीं जिससे कि रिश्ता जुड़ चुका है, वह भी भूल जाओ, तो फिर असलियत ही असलियत है। मगर फिर भी छोर नहीं। F1 के बारे में जो लिखा है, वह ठीक है कि रुक जाने पर चिड़चिड़ापन पैदा होने लगता हैं। मै Training (सिखलाने) में गलती भी कर जाता हूँ। वह यह कि ताकत बाज़दफे जरूरत से ज़्यादा पहुँचा देता हूँ, जो हज़्म नहीं हो पाती। मैं अब इसका ख्याल रखूँगा। अब मैंने उस स्थान को ज़रा मुलायम किया है जिसका नतीजा यह हुआ होगा कि तुममें लोच और नर्मी की अनुभूति हुई होगी। अब मैं ईश्वर ने चाहा इसी गति में सैर की हालत ले आऊँगा और इस वक्त तो तुम्हारी हालत इतनी मुलायम और सूक्ष्म होगी कि तुम अपने आपको बहुत हल्का-फुल्का महसूस करती होगी न मालूम क्या बात है कि मैं गल्ती कर ही जाता हूँ। इच्छा-शक्ति का Moulding बाज दफे अभ्यासी को तौल कर नहीं करता। न उस स्थान को तौलकर कि वहाँ पर कितनी ज़रूरत है, यही वजह ग़लती की मालूम होती है और मुझे इसका अफ़सोस भी है। ईश्वर और बन्दे की पहचान भी यही है, कि ईश्वर से कभी ग़ल्ती नहीं होती और बन्दे से हर वक्त हर समय सम्भव है।

आदमी अगर एक भी अच्छा मिल जावे, तो वह Mission को ज्यादा बढ़ा सकता है, वनिस्बत पचास आदमियों के जो नाकारा हों। अब काशीराम की आवाज़ आसाम भर में गूँज पैदा कर देगी इसलिये कि उनमें प्रेम बहुत है। इसीलिये मैंने उनको सिखाने के लिये एक दम से तैयार कर दिया है। हालांकि मैं यह डरता जाता था दिल में कि कहीं मास्टर साहब यह न कह बैठें कि आपने जल्दी की।

चौबेजी को प्रणाम और तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-513

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 23.8.55

यहाँ सब कुशल है, आशा है 'आप' भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

इतवार की रात का एक स्वप्न कहूँ या ख्याल कहूँ। ऐसा देखा कि मानों भरे समुद्र के बीच खड़ी हुई मैं तीर पर खड़े 'आप' को देख रही हूँ। अचानक देखते-देखते समुद्र सूख गया और सूखी की सूखा, न पानी, न रेत में खड़ी हूँ। 'आप को' देख रही हूँ और कुछ ऐसी अपलक

हो रही हूँ कि पता नहीं कब 'मालिक' ने अपने हाथों से उठा लिया किन्तु उठाते, न उठाते ही मैं जाने उन्हीं हस्त-कमलों में समा गई। फिर अपने को नहीं पाया और इतने में ही 'आप' को भी कहीं नहीं पाया।

एक न जाने क्या बात है कि इधर विचार बहुत दिमाग में भन्नाया करते हैं। यह जरूर है कि यदि में चाहूँ, तो ये दूर हो जाते हैं, परन्तु न जाने क्यों ऐसा चाहने की ओर तबियत नहीं जाती है। मेरी दशा उस इन्सान की तरह है कि जिसे कभी यह बताया ही नहीं गया हो कि ईश्वर कुछ है। उसकी ओर भी विचारधारा को कुछ मोड़ना चाहिए। न जाने क्या अब कुछ यह बात है कि पानी बरसते में चाहे घूमती हूँ, किन्तु फिर भी सूखी की सूखी ही फिरती हूँ। लगता है, मानों मेरे ऊपर बरसात ही नहीं हो रही है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आप की दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-514

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम! 26.8.55

कृपा पत्र 'आप का' मिला। पढ़कर समाचार मालूम हुए। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो लगता है कि शरीर का कण-कण मानों महा समाधि या चिर समाधि में लय हो गया है; सदैव के लिये महा शान्ति को प्राप्त हो गया है। दशा ऐसी है कि उसे बेहोशी या सोई हुई नहीं कह सकती, बल्कि लगता है कि मेरा तो मानों महा समाधि या महा शान्ति या चिर-शान्ति स्वरूप हो गया है। न जाने क्या बात है कि किसी condition की Feeling अब नहीं हो पाती है। एक कुछ यह देखती हूँ भाई, कि एक नली सी जो Heart दिमाग से connected है और वह नली दिमाग के ऊपर कहीं दिमाग से सम्बन्धित रहते हुए भी हवा में जाकर गायब हो जाती है। उसके परे से भी कोई शायद ज़िन्दगी मुझमें डाला करती है। परन्तु मुझे इतना होश नहीं कि ज़िन्दगी क्या चीज है। शरीर तो केवल एक खाली-साफ़ पिंजड़ा मात्र ही दिखाई पड़ता है कि जिसका पक्षी उड़ गया हो और पिंजड़ा भी कहने को कह लिया है, वरन् मेरा तो यह हाल है कि उससे इतना भी सम्बन्ध नहीं कि वह अपने दर्द, पीर की भी मुझसे कुछ कह सके। न जाने क्या बात है कि होश में भी अपना हाथ पकड़ती हूँ तो भी Touching का पता नहीं रहता। अब तो यह हाल है कि जैसे हर समय एक अजीब होश-बेहोश सी दशा रहती थी, परन्तु देखती हूँ कि मैं अब बेहोश कभी नहीं होती। मेरी दशा को अब न नशा छू पाता है, न खुमारी। वह तो साफ़ की साफ़ है। हालत में न मजा कह सकती हूँ, न बेमजा ही। बस तबियत लगी रहती है, यही कह लीजिये। मेरा तो यह हाल है कि मुझे ऐसा लगता है कि मानों अपनी कुल विचारधारा को केवल 'मालिक' की खुशी के लिये ही मोड़ दें और 'मालिक' को हर

समय अपने सामने बैठा हुआ अनुभव करें। यही नुस्खा है दोष से बचने का कि ओह, 'मालिक' के सामने मुझसे यह ग़लती हुई। फिर न होने के लिये प्रार्थना करें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री- कस्तूरी

पत्र संख्या-515

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 27.8.55

हम सब यहां कुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी मेरी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

ब्रह्म विद्या तो बिल्कुल ईश्वरीय धारा या ईश्वरीय रूप का स्वरुप है। कुछ यह दशा है कि लगता है कि मेरा अपना स्वयं का प्रतिबिम्ब ही मानों Reality है। यही नहीं, बल्कि उसी प्रतिबिम्ब से यह संसार रौशन है, चेतन है, परन्तु प्रतिबिम्ब के ऊपर मेरा तो यह हाल है कि मेरे में या मेरी दशा में तो कोई भी चीज़ का पता नहीं मिलता है। अपना तो यह हाल है कि यदि ख़ाली कहती हूँ, तो भी कुछ तो अनुभव होता है, परन्तु मुझमें तो कुछ नहीं है। मैं प्रतिबिम्ब नहीं, इसलिये मुझमें से तो मानों Reality निचोड़ ली गई हो। ऐसा भले कह लें कि 'नहीं' को 'है' का अनुभव मान कर चल रही हूँ। अब तो यह हाल है कि लगता है कि न आर जाना है, न पार जाना है, न रुकना है। न समुद्र है, न किश्ती है, न इधर है, न उधर है। यद्यपि मेरे दिल में एक Regular पीर रहते-रहते, न जाने क्यों अब मुझे पीर का भी आभास नहीं हो पाता, लेकिन फिर भी जब कभी होता है, तो मानों कुछ होश दिला जाता है, या यों कहिये कि कुछ सजग कर जाता है।

केसर 'आप' को प्रणाम कहती है और अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। इति:-

आप की दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-516

प्रिय बेटी कस्तूरी, — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद — 29.8.55

तुम्हारे तीन पत्र 23.8.55, 26.8.55 व 27.8.55 के मिल गये। 23 अगस्त के पत्र में जो तुमने लिखा है कि समुद्र में जाना और फिर मेरे हाथों में समा जाना बड़ा अच्छा मतलब रखता है। इसके बारे में मैंने मास्टर साहब के खत में बहुत पहले लिखा था, वह चीज़ अब vision या वारदात या घटना की शक्ल में उतरी है। अर्थात् तुम मुझमें लय हो चुकी हो। अब तुम कस्तूरी, जैसा तुम्हारे माता-पिता ने पैदा किया, वह नहीं रही। जब यह बात है तो मैं यह समझता हूँ कि मेरी हालत और तुम्हारी हालत में बस इतना फ़र्क मालूम होता है कि जो Stages मेरे गुरू महाराज ने अपनी समाधि के बाद दिये थे; अब वह जो कुछ भी हो, बस इतना ही फ़र्क है। वह सब जो

कुछ महा--समाधि के बाद मुझे दिया है, वह कुछ speciality रखता है। मैंने किसी ख़त में लिखा था कि सिखाने वाले के महासमाधि लेने के बाद सीखने वाले को क्या फ़ायदा पहुँचता है वह ख़त, जो बात मैं कहना चाहता हूँ बता देगा। Simplicity और सादगी का एहसास या अनुभूति न होना, कब? उसमें रंगने के बाद, यह बात बता रही है कि तुम्हारी Ignorance की हालत शुरू हो गई है। नहीं, नहीं, बल्कि उसमें और उन्नति कर चुकी हो। अब Ignorance के खात्मे के बाद आध्यात्मिक-तालीम ख़त्म हो जाती है मगर मेरी निगाह कहीं पर ठहरती ही नहीं है। इसके आगे कुछ और भी है, परन्तु अब लिखकर मैं क्या करूँ? इसलिये कि Ignorance के बाद की दशा पर जो मैं जुबान खोलता हूँ तो मुमकिन है आजकल के वेदान्ती मेरी आलोचना करेंगे, हालांकि कर वे नहीं पावेंगे। फिर क्या है? बेवकूफ़ी का खिताब जरूर दे सकेंगे, क्योंकि यह चीज़ उनके हाथ में है। इसलिये मैं यह चाहता हूँ कि वहाँ पर पहुँचने पर तुम खुद Ignorance के आगे का हाल दो, ताकि मैं खुद इस खिताब से बच जाऊँ। वेदान्ती की कदर हमारे चौबेजी ने खूब की है। उन्होंने जिसके दाँत न हो, उसको हँसी में वेदान्ती कहा है और ठीक भी है, जिसके दाँत नहीं रहते, वह ग़िजा चबा नहीं सकता और जब चबा नहीं सकता तो उसको मैदा भी हज़्म नहीं कर सकता, और जब बिना चबाई हुई गिज़ा मैदे में जाती है तो मैदे का Function बिगड़ जाता है। बस वेदान्तियों का यही हाल है कि रूहानी गिज़ा और शक्ति को ग्रहण करने की शक्ति नहीं रहती। कथनी से कोई फ़ायदा नहीं रहनी होनी चाहिए।

Swami Viveka Nand--- "This is an Excellant Thought of expression, To abide by the real State is really a spiritualism"

23 अगस्त के पत्र में सिर्फ एक बात का जबाब देना है। वह इस चीज़ का कि तुमने लिखा है कि विचार बहुत आ रहे हैं। इस पर तुम कभी गौर करना, तो पता चलेगा कि तुम विचारों से अपने आप को अलग पाती होगी। ईश्वर की कितनी अपार दयाँ है कि इस दशा में विचारों का ताँता लगाये रखता है। वजह यह है कि इस हालत Ignorance में अगर विचार न उठें तो जिस्म छिन्न भिन्न हो जावे, इसलिये कि फिर Perfect Balance State हो जावेगा, जो संसार के उत्पन्न होने के पहले थी।

26 अगस्त का जो खत है, कुछ उत्तर उसका दिये देता हूँ। लिखा है कि कण-कण चिर समाधि ले चुका है और महा शान्ति को प्राप्त हो चुका है। बस इतनी ही कमी है कि तुम्हें किसी न किसी तरह पर महाशान्ति होने का एहसास अगर लिखा नहीं, तो क्या तबियत में है? जब इसकी अनुभूति ऐसी चली जावे कि शान्ति को विचार भी न पकड़ सके, तब हालत असली है। और तब ही Ignorance की पूर्णता है। मैं तो भाई शान्ति से बहुत घबराता हूँ। यह चीज़ स्वामी लोगों को ही मुबारक हो जो शान्ति आने से पहले अपने आप को शान्त समझ लेते हैं। तुमने लिखा है कि होश में अपना हाथ पकड़ने से हाथ का एहसास नहीं होता, यह लय-अवस्था है, अव्वल दर्जे की। लिखा है कि दशा को न नशा छिपाता है, न खुमारी, तो नशा तो जिस्म से ताल्लुक रखता है और खुमार सूक्ष्म-शरीर से। तुम इससे ऊँची उठ चुकी हो तो अब नशा व खुमार कैसा? नशे का मजा तो तब आता और रहता भी कि जब कहीं तुम कायस्थ होती और जो कुछ नशा पैदा भी हुआ, यह कायस्थों की मुँह की क्या, दिल की भभक थी और भाई मुसलमान सूफियों ने तो नशे-मारफ़त लिखा है जो ठीक नहीं होता। अब तुम खुद समझ लो कि तुम किस हालत में हो।

27 अगस्त का खत जो तुमने लिखा है, उसमें यह लिखा है कि मेरा अपना स्वयं का प्रतिबिम्ब ही मानों Reality है किन्तु न जाने क्यों मैं स्वयं प्रतिबिम्ब नहीं हो सकती इसलिये मुझमें से तो मानो Reality भी निचोड़ ली गई हो। इस इबारत का मतलब मेरी समझ में नहीं आया। तुमने यह लिखा है कि आर जाना है, न पार जाना है, न समुद्र है, न किश्ती, इत्यादि-इत्यादि। जब असल में अभ्यासी लय होने लगता है, तब ऐसी अनुभूति शुरू हो जाती है और ठीक भी यही है कि न कोई चीज़ आती है, न जाती है। हम जहाँ के तहाँ ही रहते हैं, जहाँ कि हम हमेशा से थे और हमेशा रहेंगे और यह बात भी सही है कि आत्मा इतनी निर्मल और शुद्ध है कि उस पर किसी का रंग नहीं चढ़ता, मगर उसका होना ही, अर्थात् उसके होने का भाव अक्ल समझ लेती है तो यही सबसे बड़ा पर्दा बन जाती है और चूंकि वह आत्मा से बहुत नजदीक है, इसलिए वह जो आत्मा की वजह से है, अपने को सब कुछ समझ कर अहम् के चक्कर में पड़ जाती है। इसको चाहे Intelligence कह लीजिए ख्वाह समझने के लिए कोई और चीज़। चाहे इसको मन कह लीजिए/ गरज़ कि आत्मा की पहिचान भी यही कराती है।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-517

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 29.8.55

कृपा-पत्र 'आपका' मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्यों मुझे कुछ ऐसा लगता है कि मानों ब्रह्माण्ड से Automatically ही कोई चीज़ निकल-निकल कर ऊपर Atmosphere में बहती रहती है, परन्तु वह क्या चीज़ है, यह मुझे पता नहीं। कुछ यह देखती हूँ कि सब लोग कहते हैं कि योगी जब मरता है तो उसका ब्रह्माण्ड फटकर तब मरता है और मैं तो अपना ब्रह्माण्ड Automatic ही फटा पाती हूँ। मेरा तो यह हाल कह लीजिये कि बेमज़े का मज़ा और 'नही' को 'है' मानकर बढ़ रही हूँ।

छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-518

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 7.9.55

पूज्य मास्टर साहब के पत्र द्वारा 'आपका' समाचार मिला। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो न जाने क्या बात है कि जैसे पहले एक बार मैंने लिखा था कि चलते-फिरते, काम-

काज करते भी मेरा कण-कण तो सदैव निश्चल ही बना रहता है। हाथ हिलाते हुए भी हाथ का एहसास नहीं होता। परन्तु अब तो अजीब तबियत है, चाहे बहकी हुई सी कहने भर को कह लीजिये। यह हाल है कि अब तो बाबूजी चाहे निश्चल कह लें या चंचल किन्तु मेरा तो यह हाल है कि तबियत में अब कुछ भी कहने का असर नहीं। तबियत तो अब ऐसी रहती है कि कुछ कहते नहीं बनता, क्योंकि वह तो ज्यों की त्यों है। उसमें तो कहने के लिये कुछ है ही नहीं।

मुझे तो अब यह भी पता नहीं चलता कि तबियत या दशा भी कोई चीज़ है या नहीं। अब तो यह दशा है कि कहने को भाई, चाहे Ignorance कह लें, परन्तु मैं तो अब यह भी कुछ न कहूँगी। क्योंकि अब तो यह दशा है कि Ignorance का भी मानो रंग उड़ गया हो। जैसे धोती रंग कर धूप में डाल देने से रंग उड़ जाता है और धोती सफ़ेद की सफ़ेद रह जाती है। अंतर इतना है कि मेरे में तो सफ़ेदी भी न कभी थी न है। अब मैं क्या कहूँ? अब तो यह हाल है कि दशा को ज्यों की त्यों कहती हूँ, तो वह भी कहते नहीं बनता। मैंने तो रंग का उड़ना भी जाने क्यों लिखा है, क्योंकि मेरे पास तो कोई रंग था ही नहीं और न तबियत ही थी, तो मैंने तो कुछ नहीं किया और न करूँगी। मैं क्या हो गई हूँ, यह आप ही जानें। मैं यह दशा देखती हूँ कि यद्यपि मुझे तो कुछ चाहिये ही नहीं, परन्तु फिर भी दिल में एक ऐसी कराह है कि पता नहीं वह क्या चाहता है। 'मालिक' के साथ रहते हुए भी कहीं वह उसे ही तो नहीं देखना चाहता। 'वह' ही जानें। मुझसे तो कभी वह फ़रियाद ही नहीं करता और शायद करता हो तो मैं सुन नहीं पाती हूँगी। न जाने क्यों मुझे अपने पर विश्वास नहीं। मेरे सन्मुख तो एक 'आप' ही रहते हैं। परन्तु मैं कहीं 'आप' को भूल तो नहीं गई? यह भी 'आप' ही जानें। मैं तो कुछ नहीं कह सकती। जैसे 'मालिक' रखेगा, बस वही मेरी रहनी है। कथनी तो कुछ है ही नहीं। इति:-

आप की दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-519

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर-प्रणाम! — 14.9.55

यहाँ सब कुशल है। नारायण दद्दा से 'आप' की कुशलता का समाचार मिला। सुनकर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो यह दशा है कि अनभिज्ञता से भी मानों परे हटती जा रही हूँ। अब तो यह हाल है कि अनभिज्ञता का भी ज्ञान विस्मृत हो चुका है। ऐसा लगता है कि मेरा हर काम मानों अब Nature ही स्वयं करती है, बातचीत तक भी। भाई, मुझे ऐसा लगता है कि श्री बाबूजी की बिटिया समझ कर Nature ने उसकी नौकरी बजाने की तो नहीं सोच ली, 'मालिक' ही जानें। मेरा तो अब कुछ यह हाल है कि किसी भी दशा को विचार में नहीं बाँध पाती, क्योंकि मैं तो स्वयं ही विचार में नहीं बँध पाती। अब तो यह हाल है कि कहने को कुछ कह जाती हूँ, परन्तु वास्तव में मेरे पास तो अब कहने के लिए कुछ है ही नहीं।

इधर दो-तीन दिन से दशा कुछ साफ़ या खुली हुई नहीं चल रही है और ऐसा अब जल्दी-

जल्दी होता है। न जाने क्या बात है कि हालत में सुहानापन कभी नहीं आता या कुछ यह हो कि पता नहीं अब मैं हालत में घुस भी पाती हूँ या नहीं। परन्तु हालत, फिर भी लगती अच्छी है। वह भी इसलिये कहती हूँ कि तबियत बुरी भी मालुम नहीं पड़ती। कुछ यह हो गया है कि तबियत में दशा को गौर या मनन कर सकने की शक्ति ही नहीं रह गई है। न जाने क्यों तबियत में ऊबन के साथ-साथ कुछ अन्दर बेचैनी ऐसी रहती है कि न किसी काम में कहीं भी मन लगता है और न बिना काम के ही लगता है। तबियत हमेशा ऊबती रहती है। कभी सोचती हूँ कि कहीं सफ़ाई की तो जरूरत मुझे नहीं है। अब 'मालिक' ही जाने। कुछ इतनी भी मानसिक शक्ति नहीं रह गई है कि चाहते हुए भी इस ऊबन को दूर नहीं कर सकती। शायद इसीलिये कभी-कभी बेकार ही रोने की इच्छा होने लगती है। अब तो तबियत बस ऐसी है कि रोऊं-गाऊं या सोऊँ और ये भी बातें अब अपने बस की नहीं रही। तबियत को अब 'मालिक' के हाथ में दे देने की भी सामर्थ्य नहीं रही।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार।

आप की दीन हीन, सर्व साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-520

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 19.9.55

तुम्हारे पत्र सब के सब मिल गये। हालत तो तुम्हारी अच्छी है ही। ईश्वर का धन्यवाद आज 7.30 बजे शाम को मैंने तुमको G1 पर डाल दिया। ईश्वर ने चाहा तुम central region की सैर ज़रूर करोगी। तन्दुरूस्ती कहीं ईश्वर ऐसा करता कि ठीक हो जाती, ताकि Misson का काम बिना थके हुए कर सकती।

केसर हमारे यहाँ आई थी। हमने उनकी Pind Desh की सैर खत्म करा दी। वैसे ब्रह्माण्ड-मण्डल में उसकी सुरत अक्सी प्रतिबिम्ब तौर पर पहुँच चुकी थी। एक दिन तो मैंने उसे थोड़ा सा सत्संग दिया, जिसमें वह यह न कहे कि हमारा आना निरर्थक हुआ। दूसरे दिन बहुत मरी हुई हालत से उसे सत्संग दिया अर्थात् कुछ तबियत नहीं चाही, मगर कुछ बिना इच्छा के सत्संग कराया। मेरा इरादा पिण्ड-देश की Mastery देने का था और उसी की मैं तैयारी कर रहा था, मगर एक दम से देने की उसमें Capacity नहीं पाई इसलिए मजबूरी रही। काम तो मैंने उसके सुपुर्द कर दिया है और वह ठीक कर रही होगी।

तुमने जो "सहज-समाधि" बढ़ा दी है, मैं जब आऊंगा, तो उसको सुनूँगा फिर छपने का इन्तज़ाम हो ही जावेगा।

चौबेजी को प्रणाम और तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-521

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 23.9.55

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो न जाने यह क्या दशा है कि पहले मेरे अन्दर कोई चीज़ थी, जिससे मुझे अपनी उन्नति का पता मिलता रहता था, परन्तु अब तो उसका भी पता नहीं रहा। शायद इसीलिये मुझे अपनी उन्नति का पता नहीं रहता। बल्कि अब तो यह दशा है कि मानो बस यह दुनियाँ ही मेरी दुनियाँ है और यही तो अब मेरी रहन है। बल्कि यह नहीं, अब तो यों कहिये कोई दुनियाँ न रही। भाई, मैं अपने को अब भला किस गिनती में गिनूँ, समझ में नहीं आता, क्योंकि विचार में अब किसी गिनती का महत्व नहीं। यहां तक कि मुझे तो यदि दुनिया में भूली मानवी कहा जावे, तो शायद गलत न होगा, असर तब भी नहीं है और यह हाल भी है कि लगता है कि मानों इस दुनिया से ऊपर उठने की मुझमें सामर्थ्य ही नहीं रही और न मेरी अब इसमें कुछ रूचि ही रह गई है। अब तो यह दशा है कि कोई घर की कहे या बेघर की कहे, कोई दुनियां की कहे या बे दुनियां की कहे, परन्तु तबियत में इसकी कोई रूचि नहीं, कोई अन्तर नहीं पड़ता।

भाई, अब मैं कैसे अपनी दशा को, किन शब्दों में लिखूँ। कुछ यह देखती हूँ कि मेरे विचारों में अब कोई ज़ोर ही नहीं रह गया है, न दृढ़ता ही है, क्यों? मैं तो अब यह देखती हूँ कि दशा में यदि Innocence की या नम्र महा-समाधि या Simplicity कहती हूँ तो भी अब तो ये सब निरर्थक हो गये हैं या मेरे विचारों में इतनी शक्ति नहीं, जो इन्हें पकड़ सके।

सब लोग कहते हैं कि अपनी ही प्रलय हो जाती है, परन्तु बहुत सोचने पर भी मेरी प्रलय कहाँ हुई? जैसी की तैसी हूँ। अब जब मैं सत्संग में जाती हूँ तो मुझे यह लगता है, जाने यह क्या उत्सव है, जिसका मुझे कुछ पता नहीं। पहले की तरह अब मेरी आँखों में खोज नहीं रही। सोते-जागते सी दशा में एक ऐसी पीर है, जिसे मैं न तो पीर है, कह सकती हूँ, न कुछ कह सकती हूँ। अब तो आंखों में जाला न रहा, जिसके साफ़ होने पर यह कहती कि भाई, अब कुछ और दीखा, अब ज्यादा अच्छा दीखा और जाला हटने पर दीखा, क्या?, कुछ नहीं। अब तो भाई यह दशा है कि कुछ ऐसा हो गया है कि मन में या मेरे अन्दर कोई स्मृति ही नहीं रह गई है। यहाँ तक कि किसी आत्मिक क्षण, आत्मिक आनन्द तक का भी कभी स्मरण ही नहीं आता है। वहां तो न कोई चित्र बना है, न बिगड़ा है। मैं तो जाने बुत हो गई हूँ। कोई मेरे पास पूजा करने को आता है, तो जब तक वह कहता नहीं, तब तक मैं नहीं समझती कि मेरे पास कोई पूजा करने को भी आ सकता है और करवाती भी हूँ तो नासमझी की हालत में। बस केवल 'आप' के ही सहारे तो सब होता है।

केसर 'आप' को प्रणाम कहती है और अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहनों को प्यार। इति:-

आप की दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-522

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 29.9.55

तुम्हारा पत्र 23 सितम्बर को मिला। तुमने श्री वी. विश्वनाथन के बारे में जो कुछ लिखा ठीक है। वह महायोग में मस्त हैं, जो अहंकार ख़त्म करने का तरीका है, मगर अचम्भा यह है कि अहंकार उनमें बढ़ रहा है। डा. वर्धाचारी का पत्र फिर आया है, जिसकी नकल मैं भेज रहा हूँ। आदमी बहुत अच्छा है, मगर नहीं मालूम, कभी कुछ लिख देते हैं, कभी कुछ लिख देते हैं। उनके हृदय में कालिमा ठोस हालत में तो नहीं है, मगर अभी है और यह चीज़ कुल System में तुम उनके पाओगी।

अब अगर तुम्हें अपनी हालत को लिखने के लिए शब्द नहीं मिलते, तो मुझे भी तुम्हारी हालत समझने के लिए शब्द नहीं मिलते हैं। जो चीज़ कि तुम्हें अपनी हालत का पता देती थी, वह द्वैत थी, जो अब अपना आपा छोड़ता जाता है, या मुरझाता चला जाता है, इसलिये पता नहीं चलता। मगर फिर भी कोई चीज होती ही है, जो कुछ न कुछ अपनी हालत का पता दे रही हो, तो फिर भला वह पता क्या दे। कबीर ने कहीं पर लिखा है:-

"जहाँ मिलौनी, तहाँ विचार, एक एक में कहाँ विचार॥"

"मालिक" अगर विचार में नहीं आता तो यह तो बड़ी अच्छी चीज है। इसलिए कि जिसकी तलाश थी, वह स्वयं मौजूद है। मगर अभी यह हालत पूरे तौर से पैदा नहीं हुई है। तुमने लिखा है, कि अपनी दशा में कोई विशेषता नहीं लगती, बल्कि और सब मनुष्यों के समान मालूम होती है, यह खुद बड़ी अच्छी हालत है। मगर पूरे तौर से यह हालत भी अभी नहीं आई है, आरम्भ जरूर है। असली हालत, जो इन्तहाई पहुँच के बाद पैदा होती है, वह इतना बड़ा भेद है कि उसको मैंने अभी तक जुबान से भी नहीं कहा है। इसलिए कि नहीं मालूम कि लोग मेरे बारे में क्या ख़्याल करें। कम से कम यह तो फतवा दे ही देंगे कि इसने आध्यात्मिकता में अभी क़दम भी नहीं रखा और लोगों को बहका रहा है। दूसरे यह बात भी है कि इस आखिरी हद के पहुँचने का नतीजा अगर किसी को बता भी दिया जाये तो फिर कोई ऐसी बात नहीं रह जाती कि जो मनुष्य के लिए ऐसी हो कि ब्रह्म-विद्या की ओर उसको ले जाते। तबियत बहुत चाहती है कि उसे कहीं पर कह ही डालूँ। मगर इसका न बताना ही अच्छा है जो पहुँचेगा, खुद जान लेगा। सम्भव है कि वेदों और ऋषियों की किताबों में इसीलिये इसका छींटा भी न दिया गया हो या यह भी हो सकता है कि यह बात मुझ ऐसे अकिंचन के लिये ईश्वर ने Reserve रखी हो क्योंकि बड़ी बातें तो बड़े लोगों के लिये रखी गई हैं और छोटी बातें मुझ ऐसे मामूली आदमी के लिये ही हों। ठीक है कि एक भिखारी जब माँगता है तो उसको पैसा या रोटी का टुकड़ा दे दिया जाता है और जब कोई बड़ा आदमी माँगता है तो हज़ारों का चैक उसे लोग देते हैं। तुमने लिखा है कि ऐसा लगता है कि हाथ से मानों सब कुछ निकल गया। इसके माने या तो यह समझ लो कि हाथ में सब कुछ आ गया या यह समझ लो कि जिस चीज़ को तुम पकड़े बैठी थी, उस बोझ से हाथ खाली हो गया। तुमने यह लिखा है कि एक ऐसी कसक मौजूद है, जिसको न तो कह सकती हूँ या नहीं ही कह सकती हूँ। यही चीज़ बस आगे

बढ़ा रही है, और यह उस वक़्त विदा होगी जबकि अपना काम पूरा कर लेगी। आखिर पर रहना इसको भी नहीं है।

केसर का भी ख़त आया। उसे तबियत में इस बात की ग्लानि नहीं होना चाहिये कि जिस हद तक मैं उसे देना चाहता था, उस हद तक उसमें Capacity न थी। रफ्ता-रफ्ता पैदा हो जायेगी, ईश्वर ने चाहा। जापान भेजने के लिए मैंने फोटो खिंचवा लिये हैं। मैं सब के सब भेज रहा हूँ। मास्टर साहब ने तो वाकई दुनिया के हर हिस्से में ज़्यादा न सही तो दो-दो, एक-एक आदमी में ही सही, Mission का नाम तो पहुँचा ही दिया। बस इतना अपने हाथ में था, आगे अब ईश्वर के हाथ में है।

चौबेजी को प्रणाम! तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिंतक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-523

परम पूज्य श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 22.10.55

कृपा पत्र 'आप' का मिला। मेरा भी एक पत्र 'आप-को मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

पहले मुझे जब कुछ होश या ध्यान आता था, तो लगता था कि तबियत व कुल शरीर के नसों तक की Activities का खिंचाव ऊपर की तरफ़ अनुभव होता था, परन्तु अब तो यह दशा है कि लगता है कि मैं तो यहीं की यहीं बनी रहती हूँ, ऊपर कभी जाती ही नहीं। अब तो यह हाल है कि ख्याल कभी कोई आता नहीं, और बेख्याल भी तो रहती नहीं। भाई, मेरा तो यह हाल कह लीजिये कि सोई हुई तबियत को सोने का एहसास नहीं, या गुमी हुई तबियत को गुम होने का गुमान नहीं। बस जीवन एक साधारण सांसारिक लड़की की तरह चल रहा है। अब न जाने क्यों तबियत में बेचैनी का एहसास न होते हुए भी चैन नहीं पाती हूँ। इधर तबियत फड़फड़ा कर कहीं भागती चली जाऊँ, ऐसा चाहती है। कैसे चली जाऊँ, कहाँ चली जाऊँ, यह तो कुछ पता नहीं है। परन्तु भाई, अभी अन्दर कोई ऐसी बन्दिश ज़रूर है, जो फड़फड़ाने से भी टूट नहीं जाती और तबियत खुल नहीं जाती। यही कारण है कि न घर न बाहर न सत्संग न किसी से बात में एक क्षण को भी तो जी नहीं लगता। मेरी यह दशा है कि बेचैन और चैन का भी एहसास नहीं है।

अब तो भाई, यह हाल है कि बन्दिश भी है नहीं और स्वतंत्रता का भी पता नहीं। अब तो भाई, अपने को देखती हूँ तो अपने 'मालिक' से पूछती हूँ कि मैं अस्थिर हूँ या स्थिर हूँ, कुछ पता नहीं चलता मुझे। किसी समय में मुझे याद है कि मैंने यह 'आप को' लिखा जरूर था- "मन थिर, चित थिर, सुरत थिर, थिर भया सकल शरीर"। परन्तु अब तो मैं यह भी नहीं कहती। वह भी नहीं कहती। अच्छा तो यह है कि मैं चुप ही क्यों न बैठी रहूँ परन्तु दशा तो यह है कि न बोलना, न चुप रहना, न सुनना, न सुनाना, मुझे तो अब कुछ भी आता नहीं। अपने को अब देखती जरूर रहती हूँ, परन्तु कोई विशेषता, कोई Change, ख़ास तो मालूम नहीं पड़ता है। अब तो दशा ऐसी

कह लीजिये कि जैसे, जब दुनिया में जो सबसे पहला आदमी पैदा हुआ हो, तो न तो उसे स्वयं ही पता रहेगा कि वह क्या कर रहा है, क्या नहीं कर रहा है, और जो कुछ उससे हो रहा है, वह ग़लत है या ठीक है। बेचारे को न तो कुछ ईश्वर का पता है, न पूजा का, न कोई, वह उसकी ज़रूरत ही समझता है और न कोई उसके सामने ऐसा है, जिसे देखकर ही कुछ सीखे। वह तो जो करता है, ठीक है, बस यही दशा है मेरी। हाँ, इतना ज़रूर है कि मुझे अभी यह भी पता नहीं है कि मैं पैदा हुई भी कभी हूँ या नहीं। शायद इसीलिये मुझे तो न जाने क्या हो गया है कि अब अपनी दशा सब मनुष्यों के समान भी नहीं अनुभव होती, क्योंकि मेरी तो यह दशा है कि मुझे कुछ यह भी तो पता नहीं कि दुनिया अभी बनी भी है या नहीं। लेकिन यह जरूर देख रही हूं कि इस दशा को मानों कोई अपने हाथ में पकड़े है। बड़ा धीमे धीमे खुलने दे रहा है। यह जरूर मेरे 'मालिक' की कृपा है। मैं ऐसा दशा में समाने या मिटने तो लग ही गई हूँ अब तो यह एक ऐसा नया Para शुरू है कि जिसमें जिन्दगी और मौत, ये दोनों पहलू तबाह हो गये, जिसमें बनना और मिटना, ये दोनों बातें नहीं है। विद्या और अविद्या का पता नहीं है। बस यह अब मेरी दशा कह लीजिये या मेरा ऐसा स्वरूप ही कह लीजिये, तो ठीक होगा। अब तो भाई न हद की बंदिश है और न बेहद का मैदान है। जाने क्या है कुछ पता नहीं। बस 'मालिक' का बरदहस्त ढील बहुत ही धीमे धीमे दे रहा है, जिससे बहुत ही धीमे-धीमे यह दशा खुल रही है।

ऐसा लगता है कि मेरे अन्दर मानों जबरदस्ती कोई एक बंधन लगाये है और वह बंधन, बंधन नहीं लगता, वरन् आगे बढ़ाता है। भाई अब तो लगता है कि 'मालिक' भी हाथ से मानों निकल गया हो। मेरा तो यह हाल है कि मुझमें तो अब कोई Capacity ही न रही। अब क्या करूँगी, पता नहीं। और इसीलिये शायद Heart में भी broadness कभी आती नहीं और लाने की मुझमें क्षमता नहीं रही और न Capacity ही बनाने की।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-524

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 29 10.55

मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। यहाँ सब कुशल है, आशा है, आप भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब देखती हूँ कि जो भी दशा ज्यों-ज्यों खुलती जाती है, वैसे ही वैसे पहले की तरह वह पहले ऊपर फैलकर भीतर नहीं जाती, वरन् अब तो वैसे ही वैसे वह मेरा मानों स्वरूप ही होती जाती है या यों कहिये कि वह मेरा स्वरूप होती नहीं जाती, वरन् वह तो मानों मेरा स्वरूप होती ही है। मेरी तो न जाने क्या दशा है कि लगता है मैं तो खाने-पीने और, और कामों में ही चाहे व्यस्त न भी रहते हुए भी व्यस्त रहती हूँ, मानो मुझे और कुछ मालूम नहीं है। अब 'आप' ही बतायें, मैं क्या करूँ?

मेरा तो अब कुछ यह हाल रहता है कि सोई हुई सी तबियत रहती है, परन्तु सोये हुए का एहसास नहीं रहता है। पहले रात में जब सोती थी, तो बड़ी फैली हुई व कुछ हल्की-हल्की बड़ी अच्छी दशा लगती रहती थी। जागने से सोना भला लगता था, परन्तु अब तो यह दशा है कि रात दिन बस यही दशा रहती है कि सोई हुई सी तबियत में सोये हुए का भान ही नहीं रहता है। मुझे तो अब इनमें कोई अन्तर ही नहीं लगता है। सादगी कहती हूँ तबियत में, तो यह भी मात खाती है। वास्तविक बात तो यह है कि दशा कोई है ही नहीं। दशा की तो अभी शुरूआत ही नहीं हुई है। लगता है तबियत ने नम्रता को भी छोड़ दिया है। बन्दगी के भी चिन्ह या आसार पाये नहीं जाते हैं। बस एक उचाटपन सा ही मानों तबियत में घर कर गया है और कुब्बत मुझमें रही नहीं और न इरादा बाँधने की ही गुंजाइश रही, फिर तो 'मालिक' ही सम्भाले। आत्मा भी लगता है मर गयी है, क्योंकि जो तबियत को अच्छे-बुरे किसी में टोकती ही नहीं।

भाई, मेरा तो यह हाल है कि- "तेरी एक मुश्त खाक के बदले तू न अगर वहिश्त भी मिले"। और शायद यह इसलिये है कि ऐसा हो गया है कि मुझे यही लगता है कि जैसे मैं 'मालिक' के Sub conscious mind में समा चुकी हूँ या उसके Sub conscious mind में फैल चुकी हूँ। मेरी तबियत तो लगता है कि 'मालिक' की मुट्ठी में है और यही बस जरा सी बंदिश मालूम पड़ती है, नहीं तो तबियत कहीं भाग-भाग जाने को बेचैन हो उठती है। अब हालत क्या है, केवल एक अन्दाज़ भर है और अब तो केवल अन्दाज़ को अन्दाज़ की भी खबर नहीं रहती, क्योंकि अब मैदान भी क्या है। एक बराबर सतह सी चली गई है, जिसका छोर नहीं, परन्तु मेरी निगाह तो सतह पर भी नहीं मिलती। जाने क्या हो गया है, यह तो 'आप' ही जानें।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आप की दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-525

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 2.11.55

तुम्हारे पत्र 22 अक्टूबर और 29 अक्टूबर के लिखे हुए मिल गये। डा. के.सी. वर्धाचारी में अब अंधकार और कालिमा बहुत ही कम है। तुमने उन पर मेहनत बहुत अच्छी की और मैं भी सोचता रहा कि कौन सी तरकीब की जावे कि जिससे वे साफ हो जावें। मेहनत मैं भी उनके साथ कई महीने से इसके दूर करने की कर रहा था। उनके दिल की हालत ऐसी थी कि जैसा अंधा कुँआँ। अब 'मालिक' की कृपा से यह बातें बहुत ही कम हैं। मेरे बहुत हाल ही में तरकीब समझ में आई कि जो अंधकार का कारण है उस पर concentrate करके दूर किया जावे। चुनांचे ऐसा ही किया और उन्हें फ़ायदा भी हुआ, मगर मुझे बड़ा ताज्जुब है कि मेरे किसी वक्त में ऐसी चीजें फौरन समझ में आती थी और अब महीनों बाद यह चीज समझ में आई। कमजोरी की वजह से दिमाग उतना अच्छा काम नहीं करता।

तुम्हारे ख़तों का जबाब देना बड़ा मुश्किल पड़ रहा है, इसलिये कि आगे लय-अवस्था और उसकी तुरिया, जिसको फ़ारसी में बका कहते हैं, शुद्ध रूप में घूम फिर कर आती रहती है और इनका छोर नहीं, कब तक आवे। आखिरी बकाबस यही होती है कि changeless (अपरिवर्तन) दशा पैदा हो जावे। फिर न तड़प रहती है न कोई दशा और यह इतनी ऊँची हालत है कि इसके बाद फिर और कुछ नहीं है। ईश्वर करे यह हालत सबको नसीब हो। मगर कठिनाई यह है कि मैं अपने साथियों से इसके लिये बकता ही रहता हूँ मगर कोई तवज्जोह नहीं करता। मैं इस पर भी तैयार हूँ कि क्षण मात्र के लिये उनको यह दशा दिखला भी दूँ। जो यह निहायत मुश्किल काम है, इसलिये कि जो बंधन है, उसको पकड़े रहना पड़ेगा, ताकि रूह (आत्मा) कहीं अपनी असल में न मिल जावे। क्योंकि एक मुसाफिर कितना ही दूर क्यों न हो मगर जब घर सामने पड़ जावे तो फिर अन्दर जाने की तबियत ही चाहेगी। फिर यह सब कुछ किया भी जावे तो भी कोई इसके लिये तैयार नहीं मालूम होता। मैंने अक्सर छोटी-छोटी हालतें लोगों को दिखलाई है, ताकि उनको ब्रह्म विद्या से शौक बढ़े; मगर उससे कोई लाभ न हुआ। तुमने अपने ख़त में लिखा है कि "मैं हालत से चिमट नहीं पाती" यह एक मरतबे पहले भी हो चुका है। मगर इस मरतबे तुम्हारी ख़ता नहीं है। मैं अब तक यह तय नहीं कर पाया कि किस तरह से तुम्हें चलाया जावे। जिस तरह से अब तक तुम्हें चलाता रहा उस तरह से चलाने में सब बातें नहीं पैदा होंगी जो मुझे मिली हैं। खैर उसमें भी मैं हर्ज नहीं समझता। मगर फिर यह सवाल उठ सकता है कि दो एक सी Personality एक वक्त में नहीं रह सकती। अगर दूसरी Personality ऐसी तैयार हो जावे इत्तफाक से तो पहली की जरूरत नहीं रहती और उसको फिर दुनिया छोड़ना ही पड़ती है। गुरू महाराज ने यह भी कहा है कि जो Personality इस वक्त काम कर रही है, हजारों वर्ष तक आगे नहीं आवेगी। खैर, यह भी कोई बात नहीं। खास तौर पर प्रार्थना करने पर यह हो सकता है कि एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी, कुछ समय तक आती रहे अगर तबियत मेरी यही मजबूर करती है कि जैसा अब तक तुम्हें चलाता रहा हूँ, वैसा ही चलाऊँ, जितना मैं तुम्हें अभी तक ले आया हूं, उसका परिणाम यह है कि तुम्हारी अवतारी हालत (Prophetic Condition) शुरू है और तुम अगर गौर करके देखो तो तुम्हें यह पता सम्भव ही चल सके कि ईश्वरीय शक्ति तुमसे आदेश लेने के लिये और काम करने के लिये इन्तज़ार में रहती है। अभी तक मैंने यह चीज़ नहीं लिखी, अब लिखता हूँ। यह जरूर है कि मैंने वह Instinct अभी तुममें Develop नहीं की, कि जिससे ईश्वरीय शक्तियों से काम ले सको और न मैंने अभी तुम्हारा रूख उस तरफ़ घुमाया है।

तुमने लिखा है कि कम्पन होता है तो ऐसा लगता है मानों मैं मालिक के sub-conscious mind में समा चुकी हूं। यह ख्याल ठीक मालूम होता है और जो तुमने जो लिखा है कि अपनी शक्ति ही याद नहीं आती और Photo को देखकर अपने आपको न पहिचानना, यह सब इस बात को ज़ाहिर करती है कि कस्तूरी जैसी इस दुनिया में बनकर आई थी, अब बिगड़कर वैसी ही रह गई, अर्थात् जो आने से पहले थी और इसी को अपने आपको पहिचानना कहते हैं। विचारों का तांता आना जो लिखा है, यह विचार तुम्हारे नहीं है, बल्कि उस सूक्ष्म रूप के विचार हैं, जो मनुष्यों ने बनाये हैं और वह टकराते रहते हैं। मेरी भी यह हालत बहुत दिनों रही है।

ज्यादा ऊँचा चढ़ जाने पर फिर इनका टकराना बन्द हो जाता है। मगर फिर भी जैसे Environment सामने आ जाते हैं, उसी के मुताबिक ख्याल पैदा हो जाते हैं, मगर वह विचार ज्यादातर उसके नहीं होते।

अम्मा को प्रणाम और भाई बहिनों को आशीर्वाद। असम संदेश तुम्हारे पास भी श्री काशीराम ने भेजा होगा। उसमें तुम्हारा भजन छप चुका है।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-526

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 4.11.55

आप का कृपा-पत्र मिला। पढ़कर समाचार मालूम हुआ। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो कुछ ऐसी दशा है कि मुझे अंतर में हर समय अच्छा लगा करता है और यही नहीं, बल्कि वही तो मेरा स्वरूप हो गया है लेकिन मैं देखती हूं कि अब अपने उस (अच्छा लगने के) स्वरूप से भी यानी उस अच्छाई से मेरा सम्बन्ध है या नहीं, यह पता नहीं। क्योंकि अच्छाई का अन्दाज़ भी तो अन्दाज़ में नहीं आता है। कुछ यह है कि इतना अधिक absorb उस आनन्द में हो चुकी लगती हूँ, या न जाने क्यों रह-रह कर लुप्त होने लगती हूं। अब न जाने क्यों देखती हूँ कि विचारों का कुछ तांता सा दिन रात सोने में भी लगा रहता है और वह कुदरतन ऊपर से जुड़ा रहता है। इसलिये मेरा तो उन विचारों से कोई मतलब कोई सम्बन्ध नहीं रहता है। अब तो यह दशा है कि न तो अनजान दशा रह गई है और न कुछ जानती ही हूँ। खुद अपनी हालत से मुझे अपना कुछ सम्बन्ध नहीं लगता है और कोशिश किसी बात की करने से लगता है कि मानों जबरदस्ती मजे से अलग होने की कोशिश करती हूँ, यद्यपि हो नहीं पाती। भाई, सच बात तो यह है कि मैं देखती हूँ कि कोई हालत अब आती ही नहीं कि जिससे मैं सम्बन्धित हो सकूँ या जिसमें मैं लय हो सकूँ। दशा तो Naturality का मानों खुद नमूना बन गई है परन्तु Naturality भी तो है या नहीं, मुझे कुछ पता नहीं। यही नहीं बल्कि लगता है कि यह शब्द मैं ऐसा सुन रही हूँ कि जो मैंने कभी नहीं सुना। मैं देखती हूँ कि शरीर का, अंतर का कण कण एक ऐसे मजे का स्वरूप बन चुका है कि जिसे न तो मजा ही कहते बनता है और न बेमजा ही कहते बनता है। बस यही हाल है।

मेरा तो भाई यह हाल है कि न तो मुझे कुछ मालूम है और न यह मालूम है कि कुछ नहीं मालूम है। यदि मालुम है तो क्या कुछ पता नहीं और यदि नहीं मालूम है तो यह भी पता नहीं कि क्या नहीं मालूम है। पहले मैं देखती थी कि Dim ही सही, कुछ कम्पन सा हर समय मुझे एहसास होता था, परन्तु अब तो न जाने क्या हो गया है कि कुल शरीर भर में कम्पन कभी होता नहीं। यहां तक कि भीतर बाहर मुझे कहीं हरकत या कम्पन का कभी एहसास ही नहीं होता है। भाई पता नहीं कि क्या मेरा अन्दाज़ ही खतम हो गया होगा। परन्तु नहीं, दशा तो यह है कि अन्दाज़ और

बेअन्दाज़ का भी तो अन्दाज़ नहीं लगा पाती। और अन्दाज़ क्या रह गया है, जबकि हालत यह है कि आध्यात्मिकता से तो सम्बन्ध ही टूट चुका और Reality से फिर रिश्ता ही क्या है। न जाने भाई, मैं तो जाने इतना नीचे आ गई हूँ कि कभी आत्मिक बातें मुझे याद ही नहीं आती और 'मालिक' की बातें मैं भला जानूँ ही क्या? कुछ जानती भी हूँ मैं या नहीं, यह मुझे मालूम नहीं और मैं क्या जानूँ? या क्या मुझे जानना चाहिये, यह 'मालिक' ही मुझे बतावें।

हालत में Simplicity मुझे पसन्द है, परन्तु अब तो मैं विचार तक में उसे पकड़ नहीं पाती और Simplicity भी इसलिये पसन्द है कि मैं सुनती हूँ कि मेरे 'मालिक' को Simplicity पसन्द है। कुछ यह हो गया है कि न मुझे अब यह एहसास होता है कि चल रही हूँ, न रुकती ही हूँ, परन्तु फिर भी देखती हूँ कि न जाने मुझे क्या हो जाता है कि हालत में Break जल्दी-जल्दी फिर लगा, फिर ठीक, फिर लगा, फिर ठीक। अगर 'मालिक' न हाथ पकड़ कर चलाये तो मुझे लगता है कि Break ही लग जावे। लगता है ज़बरदस्ती घुमाते लिये चल रहे हैं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या-527

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 19.11.55

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। यहां सब कुशल है। आशा है वहाँ भी सब सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

वैसे तो कुछ मालूम ही नहीं रहता, परन्तु देखती हूँ कि कभी-कभी अक्सर मुँह से यह ज़रूर निकल जाता है कि जो चाहूँ सो ईश्वरीय शक्ति से काम करा सकती हूँ, परन्तु यह तो हँसी की बात रही। मैं तो अजीब खाली रहती हूँ। विचार भी टकराते नहीं, परन्तु अब देखती हूँ कि एकाध दिन को कभी विचार कुछ आने भी लगे, तो भी मैं खाली की खाली रहती हूँ। हर आदमी ही मुझे खाली मालूम पड़ता है। यही नहीं, हर आदमी चलते फिरते हुए भी मुझे उनमें कभी हरकत ही नहीं मालूम पड़ती है। न तो जड़वत् ही कुछ दीखता है और न यह तबियत ही किधर को भी कुछ जानने समझने को उत्सुक होती है। देखती हूँ कि तरक्की की भी इच्छा जैसे कभी कुछ उठती नहीं बस, मालिक जानें।

अब तो यह दशा है कि कुछ अनजानना मेरे लिये असम्भव सा लगता है और कुछ जानना मानो उससे भी असम्भव हो गया है। अब तो यह हाल है कि 'मालिक' का Sub-conscious mind मुझमें एकदम सब समाकर हज़्म हो गया है और मेरी सैर या गति उससे परे शुरू हो गई है और तभी से लगता है, मानों विचारों का वह तांता सा, जो मेरे जाने अथवा अनजाने में भी यहाँ तक कि सोने में भी हर समय लगा रहता था अब वह भी मुझमें सब हज़्म हो गया है और दशा में अब मुझे आराम सा लगा करता है और यह आराम भी मानों मुझमें सब हज़्म होता जा रहा है। दशा अब बिल्कुल खाली है, परन्तु उसमें खालीपन नहीं है। पहले यह लगा करता था कि जैसे दशा को मैं देखती चलती हूँ,

अनुभव करती चलती हूँ, परन्तु अब तो दशा स्वयं मानों मेरा स्वरूप ही हो गई है। एक कसक अक्सर मन में कसकती रहती है कि 'मालिक' को जी भरकर न चाह सकी। परन्तु अब यह ऐसा कांटा है, जो अब खटकता नहीं।अब तो मुझे यह शिकायत नहीं रही कि दशा में चिमट नहीं पाती। बिल्कुल सरल सी, शुद्ध तबियत है परन्तु फिर भी कुछ ठीक नहीं कह सकी। 'मालिक' की कृपा से दशा जैसी अनुभव में आती है, वैसी कह नहीं मिलती है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-528

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 26.11.55

पूज्य मास्टर साहब के पत्र से आपका समाचार मिला। यहाँ भी सभी सकुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

हालत क्या है, खुद अपना नमूना है क्योंकि वह खुद अकेली है। उसकी उपमा के लिये कुछ जब दूसरा हो, तब तो उपमा देवे। जब वह वही है, तब क्या होवे। भाई, मेरा तो यह हाल है कि जाने मुझे लगता है कि फ़ैज तो मानो मुझमें कभी पहुँचता ही नहीं। फ़ैज (Transmission) का तो मुझे स्पर्श ही नहीं हो पाता। भाई, मुझे कभी 'श्री बाबूजी' दिखाई ही नहीं पड़ते हैं। कहाँ से आँखें लाऊँ, जो देखूँ अपने प्रभु को। क्या मुझे जिन्दगी भर कभी अपने 'श्री बाबूजी' की याद नहीं आयेगी? बस केवल 'श्री बाबूजी' की Sitting में अच्छा सा या Rest सा मिला करता है। मेरा तो कुछ यह हाल है कि मुझे एक क्षण को भी यह पता ही नहीं लगता कि मैं 'श्री बाबूजी' के यहाँ आई हूँ। यही नहीं, अब तो यह दशा है कि बार-बार 'श्री बाबूजी' से ही पूछने की बात जुबान पर आ जाती है, परन्तु जाने कौन थामे रहता है कि 'श्री बाबूजी' कहाँ हैं, घर में कब आवेंगे। मेरा तो यह हाल है कि लगता है कि कुल आत्मिक हालत की जिन्दगी लय हुई जा रही है। कारण का भी कारण सब कुछ समाप्त हो चुका है। 'श्री बाबूजी' के अपने सामने बैठे रहने पर भी, न जाने क्यों मुझे उनका एहसास नहीं होता है। यह तो आप ही जानें कि यह क्या है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

आप की दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-529

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 29.11.55

मेरा एक पत्र आपको मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

अभी हाल ही में जब मैं शाहजहाँपुर से लौटी, तो बस पर बैठते ही यह पता नहीं रहा कि

मैं शाहजहाँपुर गई भी थी। बस एक ऐसा अनजान नशा तो नहीं कहना चाहिये, परन्तु कुछ ऐसा है, जो मुझे बस चुप बैठे, बिना काम के जी लगा रहता है। कहीं जाने को तबियत ही नहीं चाहती है।

मेरा तो यह हाल है कि कभी-कभी आमने-सामने बैठे-बैठे एकाएक मालिक से यह अलग बैठा शरीर भी भार होकर छटपटा उठता है, उनमें समा जाने के लिये, परन्तु ऐसा हो नहीं पाता। शरीर वही नहीं हो जाता। जबसे शाहजहाँपुर से लौटी हूं, कुल पीठ में, विशेष कर रीढ़ में, व रीढ़ के लगे-लगे में, इधर उधर हर समय कुछ गुदगुदी सी, कुछ सिहरन सी हुआ करती है। रीढ़ के ऊपर से लेकर निचले सिरे तक ऐसी ही कुछ हरकत सी हुआ करती है।

छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

आप की दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-530

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभ-आशीर्वाद! — 4.12.55

तुम्हारे पत्र 26 नवम्बर और 29 नवम्बर के लिखे हुए पहुँचे। मैं मथुरा से 30 नवम्बर की शाम को आ गया था। नारायण के यहाँ उनके कहने पर छः घंटे ठहरे। एक मुख्तार साहब, जिन्होंने नारायन से शुरु किया था, भी मेरे पास बैठे थे और बहुत खुश हुए। इससे जाहिर होता है कि वह स्थाई रूप से करते रहेंगे। वह डा. चतुर्भुज साहब के पास भी बैठ चुके हैं और उनको यह यक़ीन हो गया है कि वहां पर आडम्बर ही आडम्बर है। डा. चतुर्भुज साहब की किताबें उन्होंने सब पढ़ी हैं और वह कहते थे कि जो किताबें इस Mission की निकल रही हैं, और जो उनमें बात है, उसकी पासंग भी वह नहीं है और उसमें विचार भी पूर्ण रूप से दर्शाये नहीं गये हैं। मेरा विचार तो यह है कि सम्भव है कि किसी समय में लोगों के समझ में यह आ जावे कि इतना अच्छा विषय और Original कहीं और नहीं है यह सब हमारे गुरू महाराज की आशीष और बरकत है और मुझे पूरा यकीन है कि उनका Mission उन्नति करके ही रहेगा। यह जरूर है कि अभी तक लोग मुझे सेवा का मौक़ा नहीं दे रहे हैं और न ज्यादातर ऐसे लोग मिल रहे हैं, जिनमें Burning Desire (उत्कंठा) असलियत हासिल करने के लिये मौजूद हो, या तो यह मेरी तकदीर का करिश्मा है या अभी समय पूर्ण रूप से ऐसा नहीं आया है।

अब मैं कुछ गोद-गाद तुम्हारी हालतों के विषय में कर रहा हूँ। ऐसी सूक्ष्म गति का जवाब देना बड़ा कठिन है। इसलिये कि लय अवस्था को ही गति जो तुम्हारे पत्र में मौजूद है वही बढ़ती चली जा रही है और वही हालतें भाँति भाँति से तुमने दर्शायी है। तुमने लिखा है कि ऐसी सुस्त हालत रहती है कि पत्र लिखने को भी तबियत नहीं चाहती है। यह शुक्लाजी वाली हालत नहीं है, बल्कि Soul का यह characteristic है कि हम Inactivity की तरफ रहने लगे हैं, और जिस्म से सम्बन्ध बहुत कम हो गया है। इसमें दो बातें होती हैं, जब हम जिस्म से काम लेना चाहते हैं तो हमारी गति ऐसी हो जाती है, जैसे जब ईश्वर ने दुनिया पैदा की तो Soul हमारे पैदाइश

का कारण बन गई और वह ऐसा Base बन गई कि विचार आते ही उसमें हरकत काम करने के लिये शुरू हो जाती है। विचार आत्मा से बहुत निकट है, इसलिये हम कहेंगे तो यही कि वह खुद आत्मा से ताकत घसीट कर जिस्म से काम लेना शुरू कर देता है और आत्मा में कुछ ऐसी गति है कि उसकी ताकत से विचार जो चाहे सो काम ले ले। जैसे बिजली की ताकत कि उससे चाहे रोशनी का काम ले लो, चाहे पंखे का और चाहे अंगीठी का। इसलिये हम कोशिश यह करते हैं कि विचार भी आत्मा का रंग ले ले और इसी के लिये अभ्यास है। जब हमारा विचार इतना शुद्ध हो जाता है और उसमें सब रंग उतर जाते हैं तो मनुष्य से वही काम होते हैं, जो धर्म-शास्त्र के अन्दर हैं और वह जो कुछ करता है, उसमें शास्त्र का विरोध नहीं होता। शास्त्र में बहुत सी पाबन्दियाँ ज़ाहिरी भी रख दी है ताकि विचार शुद्ध और पवित्र बनते रहें। कुछ कवियों ने अपनी तबियत इन विषयों पर ज्यादा आजमायी है और ठोसता से भी काम लिया है, जिसका नतीजा यह हुआ कि हमारा आधार ठोसता ही रह गया और इसी को लेकर, चूँकि यह चीज़ आसान थी, हमारे यहाँ के रंगे हुए महात्मा लेकर चल दिये। विवेक-शक्ति तो तीव्र हो नहीं पाई थी कि Right और Wrong में फ़र्क समझ में आता और काम करना शुरु कर दिया और प्रमाण के लिये उन्हीं कवियों को पेश कर दिया, जिनके बारे में ऐसे विचार लिखने पर लोगों की राय यह हो गई कि आध्यात्मिकता में भी यह पूर्ण थे। इतनी हालत तो महात्माओं में पैदा हुई नहीं कि उनकी शक्ति का अन्दाज़ा लगा सकते। मैंने उर्दू, फ़ारसी Literature देखा है, उसमें भी बड़े अच्छे-अच्छे विचार मिलते हैं, मगर उनको आध्यात्मिकता में निपुण बनाकर कोई सामने नहीं रखता। विचार की तारीफ़ जरूर है, और उसके Quotations भी दिये जाते हैं। यह सिर्फ हिन्दी कवियों की ही किताबें महात्मा लोग प्रमाण समझते हैं और मैं तो यही नतीज़ा निकालता हूँ कि सिर्फ संस्कृत पढ़े हुए लोग जो हैं, उनका Vision बहुत Broad नहीं रहता। उसकी वजह यह मालूम होती है कि संस्कृत में अभी तक सिर्फ Set Literature ही रहा है उससे आगे Nature को देखते हुए और मुख्तलिफ़ विचारों को तौलते हुए अभी तक लिखा नहीं गया है। मनुजी ने लिखा है कि अगर वेद की बातें अक्ल और Reasoning के खिलाफ़ हों तो उनको भी नहीं मानना चाहिए। तुम बिटिया, चूँकि ब्राम्हण हो जाति से भी, हालांकि लखनौर वालों के तरीके की नहीं, इसलिये मुझे क्षमा करना। मैं तुलसी दास की एक चौपाई लिखता हूँ:-

"पूजिये विप्र सकल गुन हीना, शूद्र न गुनगन ज्ञान प्रवीना"

इस चौपाई को मैंने ब्राह्मणों को प्रमाण देते हुए सुना है कि वह यह चौपाई इस लिये पेश करते हैं कि लोग उनकी कद्र करें। इससे मतलब यह है कि वह समझते हैं कि हम इस कदर गिर चुके हैं कि लोग हमारी कद्र नहीं कर रहे हैं। इसलिये तुलसीदास का Injunction पेश कर देते हैं। ऐसी बहुत सी बातें और जगह भी मिलेंगी। इन बातों को मनुजी का वाक्य जो ऊपर लिखा हुआ है उससे तौलना चाहिये। जाति का अभिमान वहाँ पर टूटा समझना चाहिये। जहाँ पर कि अन्दर से सोचने से भी यह आवाज़ न आवे कि मैं ब्राह्मण हूँ या वैश्य या शूद्र या कोई और जाति।

तुमने लिखा है कि तुम मुझको हर कण कण में देखती थीं, मगर अब यह हो गया है कि 'आप' मुझे कहीं नहीं दीखते। यह तो खुली हुई चीज़ है कि आँख-आँख को नहीं देख सकती। जिसको तुम देखती थी, अब बहुत कुछ जब तुम वही हो गई तो फिर देखोगी किसको? तुमने यह भी लिखा है कि फैज़ तो मानो मुझमें पहुँचता ही नहीं। इसका मतलब यह है कि जो चीज़ कि तुम तक पहुँचती

थी, अब तुम उसी में डूब चुकी हो। दरिया में घड़े दो घड़े पानी के पड़ जाने से उसके Volume में क्या वेशी महसूस हो सकती है। तुमने लिखा है कि ऐसा मालूम होता है कि आजीवन कभी 'आपकी' याद ही नहीं आई। एक मिसाल मैं लिखता हूँ कि जब लड़कियाँ अपनी ससुराल में पहली, दूसरी बार जाती हैं तो उन्हें अपने घर की याद बहुत आती है। रहते-रहते उनकी ससुराल ही मैका बन जाती है। फिर उन्हें मैके की याद ऐसी नहीं आती है और ससुराल ही को मैका समझ में आने लगता है और वही घर बन जाता है। बस यही हालत तुम अपनी समझो कि याद करते-करते तुम याद ही बन गई। बाकी हाल जो 26 नवम्बर के खत में लिखे हैं, मसलन मेरे ज़िस्म का एक छाया- मात्र मालूम होना, यह सब बातें यही बताती हैं कि जो चीज़ मुझमें है, उसमें तुम अच्छी लय हो चुकी हो। मगर इतनी कमी अभी है कि मैं तुम्हें छाया मात्र नज़र आ जाता हूँ। मैंने जो अक्सर कहा है कि अभ्यासियों को सिखाने वाले की रूचि का अन्दाज़ होना चाहिए; इसका मतलब यह है कि उनको इस मामले में अपने आप को हर वक़्त होशियार और Alert रखना चाहिये और यह तभी हो सकता है जब कि अपने विचार का रिश्ता सिखाने वाले से जुड़ा रहे। इसकी बहुत सी तरकीबें भी हैं। मसलन एक बफ़ादार नौकर जो यह चाहता है कि मालिक को मुझसे आराम ही मिले। वह कहीं भी बैठा हो, उसकी तबियत मालिक की तरफ इस टटोल में रहती है कि उसको इस वक़्त क्या जरूरत होगी। यह तो मिसाल है जो मिसाल ही तक है। अब आध्यात्मिक सम्बन्ध में अगर सिखाने वाले से कोई रिश्ता सच्चे रूप में पैदा कर लिया जाता है तो यह चीज़ पैदा हो जाती है कि किस वक़्त हमें सिखाने वाले से मुख़ातिब होना चाहिए और किस वक़्त हमें क्या बात करनी चाहिये। अब ये बातें तुम्हारे लिये नहीं हैं।

27 नवम्बर के पत्र में तुमने लिखा है कि पूजा करते समय यह मालूम हुआ कि जीभ का पर्त उचल गया है। यह एक अजीब चीज़ है, जो सामने आई। शब्द आकाश में है और हमारे पास जीभ, इसलिये है कि जो बात हम कहना चाहते हैं, उसमें वह असल चीज़ जो ख्याल के द्वारा शब्दों में आती है, उसको जीभ घुमा-घुमाकर और लौट-पौट कर ऐसी सूरत में ले आती है कि दूसरे लोग उसको समझ सकें। मतलब यह है कि असल चीज़ को किस कदर घुमा-घुमाकर जीभ उसके लिए एक औंजार बन जाती है अब जीभ के पर्त का उचलना यह साबित करता है कि आवाज़ की तोड़-मोड़ खत्म हो गई है और जो शब्द है, वह वैसा ही Natural तरीके में निकलना चाहिए। आध्यात्मिकता में इसके माने यह हुये कि शब्द जो तुम्हारे मुँह से निकलेंगे, उसमें बिल्कुल असलियत और खालिस-पन (Pure) होगा, बनावट नहीं होगी इसके माने यह हुए कि जो कुछ कहोगी, उसमें फ़ैज और असर होगा और वह बातें दूसरों के दिल पर असर ज्यादा करेगी और आध्यात्मिक लाभ आवाज़ की Vibration से उनको ज्यादा पहुँचेगा। रीढ़ में रेंगन महसूस होना, इसके माने है कि यह स्थान जाग्रत हालत में आ रहे हैं। कोशिश करके अपने बोलने के लिये श्याम प्रकाशजी से जरूर तय कर लेना। चौबेजी के कहने से वह ऐसा जरूर कर देंगे और खुद भी उन्हें तुम्हारा ख्याल है।

तुम्हारी सैर H^1 Point की अभी शुरु नहीं हुई, मगर ख़त पहुँचने के बाद देखना कि उसकी शुरुआत हो चली है।

तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ। अम्मा व चौबेजी को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-531

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 8.12.55

कृपा-पत्र आपका मिला। पढ़कर समाचार मालूम हुआ। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ यह है कि कुल पीठ में और कंधों तक में हर समय कुछ रेंगा करता है न जाने अब यह बात कुछ हो गई है कि कोई मर गया हो, तो भी मुझे ऐसा प्रतीत ही नहीं होता है। मुझे इसकी याद ही नहीं रहती या जाने भाई, क्या हो गया है और मज़ा यह है कि मरने पर रो भी लेती हूँ, परन्तु मरने की प्रतीत नहीं होती है और जीवित मनुष्य भी प्रतीत नहीं होते। यह सब क्या जीवन मरन में भ्रम सा है। यह सब कुछ मेरी समझ में नहीं आता है और न तबियत इन पर कुछ विचारने को ही चलती है, क्योंकि तबियत में कोई लहर कोई चंचलता या जिज्ञासा अब लाने से भी तो नहीं आती है। Problems तो Solve हो गई लगती है, फिर परवाह काहे की रहे।

मेरा तो यह हाल है कि मैंने जो 'मालिक' का दर्शन शाहजहाँपुर में छाया-मात्र दर्शन होना लिखा है, वास्तव में मैंने, अब तो लगता है कि यह भी ठीक नहीं लिख पाई हूँ। सम्भव है, इतनी मर्यादा का आवरण लग गया हो। न जाने क्यों पहले जब कभी 'आप' अपने पत्र में "मुझे क्षमा करना" लिख देते थे, तो मुझे एक ठेस सी, कुछ ग्लानि सी होने लगती थी परन्तु अब तो यह "क्षमा करना" भी पढ़कर ज्यों की त्यों हैं। कोई बात उस मेरी हालत तक पहुँच कर उसमें धब्बा नहीं आने देती। निश्चलता ही मेरा स्वरूप हो गया है और स्वरूप भी ऐसा कि जो मुझे अब भासता नहीं और शायद इसीलिये अब अपने में चिमट कर चलना भी मुझे नहीं आता है। अब तो मैं न जाने क्यों 'मालिक' के पधारने की बाट भी नहीं देख पाती। बस, पैर स्वयं Bus Stand पर पहुंच कर Bus में 'मालिक' को खोज कर लौट आते हैं, परन्तु मुझ पर तो कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता। अब ऐसा लगता है कि जैसे कुल हड्डियों के भीतर से पर्त उचल जाते हैं और रोशनी बड़ी भीनी-भीनी सी रहती है, परन्तु इन सब का मेरी हालत से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। यह तो इस शरीर का हाल है। उँगलियों तक की हड्डी-हड्डी में एक भीना सा प्रकाश रहता है। कुल शरीर में कहीं से हर समय एक Vibration सा आया करता है, ऐसा मैं देख रही हूँ। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-532

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 19.12.55

मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। यहां सब कुशल है। आशा है आप सब लोग भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, लगता है एक बराबर सतह सी में डूबती और पार करती चली जा रही हूँ, बल्कि अपना स्वरूप अब एक बिल्कुल ऐसी सहज सी अवस्था का ही स्वरूप हो गया है कि मैं उसमें

डूब नहीं पाती हूँ। आज दो दिन हुए, अचानक ऐसा लगा कि पीठ में बाँई ओर कंधे से नीचे ही जो पीठ की चौड़ी सी हड्डी होती है, उसके बीच में एक Point सा है और जैसे पका हुआ फोड़ा भीतर से कुछ उबरने को करता है, वैसा ही Sensation उसमें होता है। तब से कुल पीठ बड़ी हल्की-फुल्की हो गई है और मानों कुल शरीर में मिलकर एक हो गई है। अब तो न जाने क्या दशा हो गई है कि चाहे मेरे 'श्री बाबूजी' आयें अथवा चले जायें, परन्तु बेचैनी होने पर भी हालत अपनी हालत से नहीं हटती। आँखे नहीं, जो 'उन्हें' देख सके, कान नहीं, जो 'उनकी' बात सुन सके, सुरति (याद) नहीं, जो 'उन्हें' स्मरण रख सके और अनुभव नहीं, जो 'उनकी' उपस्थिति को ही अनुभव कर सके। कभी कुछ रौ में किसी से कुछ दशाओं के बारे में बोलने लगती हूँ, तो बाद में कभी, यह लगता है कि कहीं मैंने इन्हें धोखा तो नहीं दिया है, किन्तु शायद इसकी जिम्मेदारी 'मालिक' लिये रहता है। इसीलिये इस ख्याल में (धोखे में) ठहराव नहीं रहता है। इसीलिये कभी-कभी मुझे बेचैनी सी होने लगती है। मुझे ऐसा लगता है कि मानों मन गल गया है और मन के परे फिर मुझमें मनन शक्ति कहां से आये और मन का आवरण उठ जाने से अब तो मन के परे तबियत को एक Limitless क्षेत्र में पा रही हूँ और ऐसा लगता है कि शरीर के कण-कण से सम्बन्ध छूट चुका है। अब तो यह न जाने क्या बात होती जा रही है कि दशा के अन्दाज़ का अन्दाज़ भी अब मुझसे नहीं सम्भल पा रहा है। अन्दाज़ की तह में डूबने के लिये मानसिक शक्ति भी भारी पड़ती है। मुझे तो अब ऐसा लगता है कि जो कुछ मैं बोलती हूँ, जीभ का उससे कुछ मानों शब्द बोलने में भी सम्बन्ध नहीं रहता है। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-533

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 22.12.55

तुम्हारे पत्र 8 दिसम्बर और 19 दिसम्बर 55 के मिल गये। तुम्हारे स्थान H_1 पर नहीं मालूम अँधेरी क्यों आ जाती है। मैं हटा देता हूँ और फिर वह चीज़ पैदा हो जाती है, इसको सोचना है। गुरू महाराज की कृपा से उम्मीद तो यही है कि वजह समझ में आ जावेगी और दूर करने की कोशिश करूँगा। परेशानी की कोई बात नहीं और तुम्हारे समझ में आ जावे तो तुम खुद लिखकर भेज देना। आठ दिसम्बर के खत में तुमने लिखा है कि न कुछ पता है, न बेपता। यह तो ब्रह्मगति की हालत है, मगर इसको बहुत कुछ अभी निखरना बाकी है। अभ्यासी जितना ऊँचा जाता है, उतना ही नीचे की चीज़ें उसे धुँधली मालूम होती हैं। जैसे बहुत ऊँचे पहाड़ पर चढ़ जावें तो वृक्ष और मनुष्य एक छाया मात्र ही नज़र आवेंगे। बस यही जबाब इस बात का है तुम मुझे छाया मात्र ही दीखती हो और अगर गौर करो तो यही हालत सबके साथ मिलेगी। तुमने जो कुल शरीर में Vibration होना लिखा है, इसके माने यह है कि तुम मेरी हालत से बहुत कुछ चिमट चुकी हो और यही असर तुम्हारी हड्डियों में प्रवेश होता चला जाता है। तुमने लिखा है कि हड्डी-हड्डी से रोशनी निकलती हुई मालूम होती है तो जो चीज़ कि अन्दर है, वही बाहर निकल रही है और यह ईश्वर का

धन्यवाद है कि अच्छी हालत है। अब 19 दिसम्बर के ख़त पर आता हूँ। तुमने लिखा है कि जी में आता है कि मैं रौ में आकर कुछ बोलने लगूँ या किसी को कुछ बताने लगूँ, मगर फिर यह विचार होता है कि मैंने कहीं गलत बताकर उन्हें धोखा तो नहीं दे दिया। बस इतनी ही कमी है कि तुममें अपने अस्तित्व का ख्याल अभी बाकी है। इसको उर्दू के शब्दों में कुछ अहमियत का होना कहा जावेगा। (अहमियत यानी अहं-भाव) अब मैं कुछ अपना हाल भी लिखता हूँ। मैं जब बोलता हूँ तो न मुझे यह समझ में आता है कि कौन बोल रहा है, बल्कि अपनी बकवास में मै definite होता हूँ और यही हाल लिखने में है। इसलिये हर जगह Commanding Tone ही मिलेगी। अब लोग इसे अहंकार समझ लें तो मजबूरी है। यह मैंने इसलिये लिख दिया कि यह हालत अगर ठीक है, तो हर अभ्यासी को इस पर आना चाहिए। तुमने यह लिखा है कि बराबर सतह सी है, जिसमें दिल डूबकर स्वयं बराबर सतह सा हो गया है। इसके माने यह है कि साम्य-अवस्था का प्रकाश शुरू हो गया है। साम्य-अवस्था की ऋषियों में बड़ी तारीफ़ है और यह वाकई बड़ी ऊंची हालत है। अगर यह किसी में ईश्वर दे देते हैं तो यह समझ ही लेना चाहिए कि जीवन का मसला Problem तो हल ही हो गया और इस हिसाब से तुमने ठीक लिखा है। 8 दिसम्बर सन् 55 के खत में कि Problem Solve हो गई है। बड़े-बड़े ऋषि इसको काफी समझकर आगे बढ़ने की कोशिश नहीं करते और ठीक भी है यह बहुत बड़ी और ऊँची हालत है जो तुममें अभी पूरी तौर से नहीं आई है, मगर उम्मीद आ जाने की जरूर है। मगर इस हालत का पहुँचा हुआ अभ्यासी दूसरों को संकण्ड में छुटकारे का हक़दार नहीं बना सकता। अभ्यास कराते हुए तो वर्षों में वह सब कुछ करा सकता है, मगर मेरी चाल तो कहीं पर खत्म नहीं होती। लोगों की निगाह में यह Perfection (पूर्णता) है और ऐसा कहना गलत भी नहीं है। मैं तो उस राह का राही हूँ कि जहाँ से गुजर कर यह पता भी नहीं रहता कि कभी इस रास्ते पर चला था और यह भी नहीं कि किसी किसी की अनुभूति बाकी रह जावे। साम्य अवस्था के लिये मैं भी कोशिश करता हूँ कि अभ्यासियों में यह चीज़ पैदा हो जावे क्योंकि यह चीज़ भी पैदा हो गई तो उनकी जिन्दगी का मसला तो हल हो ही गया। मेरी तृप्ति अगर यहां तक पहुँचाने पर भी नहीं होती तो न सही। ज़ुबान पूरी तौर से यदि खोल देता हूँ तो वह ईश्वरीय भेद निकल जाने का शुबह होता है। इसलिये बस इतना ही लिखे देता हूँ, समझने वालों के लिये, कि जब हम किसी राग के न रहे, तब असल में संलग्न होना कहना चाहिये और फिर उसमें जो बात पैदा होती है, उसके लिये शब्द नहीं।

तुमने इस पत्र में यह भी लिखा है कि अन्दाज़ ठहरता नहीं, इसलिये मन की भी मनन शक्ति उससे बरी रहती है। इस विचार का तुम ठीक वर्णन नहीं कर सकी। मगर खैर अगर ठीक तरह से वर्णन कर सकती तो उसका जवाब यह है कि ब्रह्म के तलः में एक अच्छी लीनता प्राप्त है। तुमने बाँये कंधे के नीचे की हड्डी में जो Sensation होना लिखा है, उसके Point को अभी सोचना है, मगर इसका कारण बताये देता हूँ। तुम जब शाहजहाँपुर आई थीं, मैंने तुम्हारी पीठ की नसें और हड्डियाँ साफ़ की थी। इसलिये कि साम्य अवस्था में कहीं भी भारीपन न रह जावे, उसको अभी और भी साफ़ करना होगा। इन हड्डियों और नसों को साफ़ करने से साम्य अवस्था असली रूप में दरसना शुरू हो जाती है। सोच मैं यह रहा हूँ कि मामूली अभ्यासी

भी जो हमारे पास आते हैं, उनकी भी यह हड्डियाँ और नसें भी साफ क्यों न की जावें, मगर ऐसा करने में कठिनाई यह होती है कि इतना समय वह मुझे नहीं देते कि उसकी यह चीजें साफ़ होने की नौबत आ जावे। इसलिये कि सिर्फ सूक्ष्म शरीर और पिण्ड और ब्रह्माण्ड के स्थान की सफ़ाई में वह बहुत ज्यादा वक्त ले लेते हैं। अगर कहीं उनमें भक्ति (Devotion) और ईश्वर-प्राप्ति की प्यास की वृद्धि हो जावे तो मुझे इतना वक्त न देना पड़े। चाहता तो मैं यह हूँ कि सब काम अपने ही जिम्मे ले लूँ, मगर भाई, क़ायदा यह है कि अपने ही धर्म और फ़र्ज का पालन करने से ईश्वर-शक्ति को वह अपना सकते हैं।

केसर का भी खत मिल गया। मैं उसे पढ़कर प्रसन्न हुआ। केसर भी अच्छी उन्नति कर रही है। मैंने उसके ख़त का विस्तारपूर्वक जवाब यों नहीं दिया कि तुम तो उसे खुद समझा सकती हो और इसलिये अपना वक्त बचा लिया। खैर उसको जानने के लिये मैं यह लिखे देता हूँ कि रोशनी का चारों तरफ उससे निकल कर फैलना यह बतलाता है कि उसके पिंड-देश की विलायत (Mastery) पर पग रख दिया है। मैं एकदम से उसको देना चाहता था, मगर उसकी अन्दर की हालत (Transparent) पारदर्शक नहीं थी बल्कि Opaque (अपारदर्शक) थी, इसलिए मैं रुक गया, कि ऐसा न हो कि किसी नस में कोई नुक़सान पहुँच जावे, मगर खैर, वह इरादा जो मैंने बाँधा है, ईश्वर उसे धीरे-धीरे पूरा कर रहा है। उसको जो काम बता दिया है, वह करती ही होगी। अब उसकी Sitting लेने की तबियत यों नहीं चाहती कि उसमें ताज़गी (Freshness) प्रेम की वजह से मौजूद रहती है, मगर उसको Sitting से जी नहीं चुराना चाहिये, ताकि वह ताज़गी बढ़ती जावे।

शुभ चिंतक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-534

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 24.12.55

कृपा-पत्र 'आपका' मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। यहाँ भी सभी लोग सकुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो लगता है कि शरीर के भीतर-बाहर, कण-कण में महा-प्रलय की सी नीरवता बस गई है और यह न जाने क्या बात है कि मेरे चारों ओर एक बहुत ही Dim कहने मात्र को प्रकाश-युक्त Vibration सा हर समय रहता है, परन्तु शरीर से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। किन्तु यह Dim प्रकाश सा तो मेरी हड्डी-हड्डी से भीतर स्वयं निकला करता है। अब मैं देख रही हूँ कि चाहे कितनी खुशी या हँसी की बात क्यों न हो, परन्तु या तो मेरा स्वभाव ही गम्भीर हो गया है, या हँसी ही मुझ तक नहीं पहुँचती। मैं चाहते हुए भी इनमें शामिल नहीं हो पाती। मैं देख रही हूँ कि मेरी Body में भी अब कुछ Changes पैदा हो रहे हैं। भीतर ही भीतर कुछ हो रहा है और कुछ यह है कि मेरा शरीर का कण-कण तो बिल्कुल हल्का फुल्का सा, नीरव ही हो गया है, परन्तु उनमें से, रोम-रोम में से मानों एक कुछ Power सी निकला करती है। अब तो अनुभूति

का जनाज़ा जा चुका है और अनुभूति के लिये कोई चीज़ भी सामने नहीं आती है जो आती है, वह NIL है और मुझ में ठहराव नहीं, जो उस NIL को एहसास में ठहरा सकूँ।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री - कस्तूरी

पत्र संख्या-535

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 26.12.55

तुम्हारा पत्र 24 दिसम्बर का लिखा हुआ प्राप्त हुआ। मैंने सुन लिया कि तुम गीता-जयन्ती में बहुत अच्छा बोली और मुझे इसकी खुशी है। अब तुम Speaker हो गई और झिझक जाती रही। तुमने खत में लिखा है कि बात करने में यह मालूम होता है कि जीभ से कोई सम्बन्ध ही नहीं रह गया है। यह लय-अवस्था का अच्छा Expression है। महा-प्रलय की भाँति नीरवता का एहसास होना यह ज़ाहिर करता है कि चित्त की वृत्तियों का निरोध हो चुका। मगर इस हालत में अभी फिर भी भारीपन है। तुमने यह लिखा है कि चारों ओर एक Dim Vibration मालूम होता है। यह उस स्थान की झलक है, यानि H1 जिस पर तुम हो। तुमने यह लिखा है कि रोम-रोम खुला हुआ सा लगता है, इसका मतलब मैं यह समझ रहा हूँ कि सब एक ही सी हालत छाई हुई है, जैसे पेड़ का छाया। Vibration इसमें जरूर नज़र आ रहे हैं। अब इसके आगे जब लिखोगी तो और साफ़ तौर से मैं वर्णन कर सकूँगा। जब तक समझ में आवे, लिखती रहो, आगे तो वाकई शब्द Expression के लिये किसी को नहीं मिलते।

केसर ने लिखा है कि ऐसा मालूम होता है कि मेरी मृत्यु हो गई है, और इस संसार से मेरा नाता बिल्कुल छूट गया है, यह अनुभूति बहुत कुछ सही है। मगर अभी संसार से नाता जुड़ा हुआ है।

चौबेजी व अम्मा को प्रणाम व तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-536

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 29.12.55

कृपा-पत्र 'आपका' मिला। समाचार पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरी तो अब हड्डियाँ भी पिघल-पिघल कर गल-गल कर बराबर हुई जा रही हैं, गायब हुई जा रही हैं। न जाने क्यों भाई, Tone में मेरी, सब कहते हैं कि अब Mastery सी होती जा रही है और मुझे लगता है कि जो मैं बोलती हूँ, सब सत्य होता है और

Confidence रहता है। पीठ में भी हड्डियों में, गुरियों तक में भी गलाव दौड़ गया है और कुल स्वरूप ही एक बराबर सतह सा ही हुआ जा रहा है। मेरे सिर के पिछले भाग में हर समय करीब-करीब लपकन हुआ करती है। कुछ टिघलन व कुछ रेंगता सा रहता है। वैसे तो मुझे कुछ एहसास ही नहीं होता, परन्तु जब मैं स्वयं को पढ़ने का प्रयत्न करती हूँ तो हर आदमी के क़दमों में सिर झुक जाता है, परन्तु तबियत तो एक समान सतह रूप हो गई है। उसे तो कुछ मतलब नहीं रहता है। अब तो मेरी दशा यह है कि मुझे तो अब छाया मात्र भी कुछ नहीं दीखता है। मैं देखती हूँ कि घर में ही सबसे बातें करती हूँ, बोलती हूँ, परन्तु अक्सर मुझे यह पता नहीं रहता कि अम्मा से अभी बोल रही थी या ताऊजी या केसर अथवा अन्य किसी से। लगता है, ऐसा हो गया है कि न मुझे अब किसी की बोली को ही पहिंचान रह गई है, न स्वयं अपनी बोली को ही जान पाती हूँ। यद्यपि बोलती हूँ, बात करती हूँ, अब चेतना तो जैसे कभी जाती ही नहीं। कभी कभी मैं सोचती हूँ कि सब कहते हैं कि अपने को तथा सब कुछ भूल कर ईश्वर में लगना चाहिये परन्तु मैं तो प्रयत्न करके हार गई। मुझे तो हर समय चेतना रहती है। अचेतनता एक क्षण को भी तो कभी नहीं आती, तो अब भला मैं क्या करूँ। मुझे लगता है कि 'मालिक' से कुछ कहना चाहती हूँ, परन्तु उस कुछ में कुछ है नहीं, फिर क्या अर्ज़ करूँ।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है, केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-537

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 1.1.56

तुम्हारा पत्र 29 दिसम्बर 55 का मिल गया। H_1 Point पर अँधेरी आ जाने का मतलब अभी तक ठीक समझ में नहीं आया। कुछ-कुछ अन्दाज होने लगा है। जब ठीक समझ में आ गया तो, तुम्हें बता दूँगा। South India में कुछ लोगों ने और शुरु किया है और एक शख्स का ख़त कलकत्ते से आया है उसको Practices भेज दी गई है।

दृढ़ता तबियत में रहनी ही चाहिये और जिस किसी ने इसके ख़िलाफ कहा है, उसकी गलती थी। अगर कोई सोने को पीतल बता दे तो जानने और परखने वाले की निगाह में सोना ही रहेगा। तुमने लिखा है कि हड्डियाँ पिघल पिघल कर, गल गलाकर बराबर हुई जा रही हैं। तो ईश्वर की कृपा से हड्डियाँ नहीं पिघल रही हैं, और न गायब हो रही हैं बल्कि Negation की तैयारी है। यह तुम्हारी अनुभूति कि भीतर बाहर एक ही सी सतह रहती है, इसके बारे में पिछले ख़त में लिख चुका हूँ। सिर के पिछले भाग जिसको Occipital Prominence कहते हैं, और यही ब्रह्म का भण्डार है उसमें लपकन का महसूस होना यह बताता है कि वहाँ पर असर शुरु हो गया है। यह देखा भी गया है और यह हमारे लालाजी की काबलियत का सबूत है कि अभ्यासी जिस स्थान पर होता है, उससे आगे उसका खेमा गड़ चुका होता है बल्कि तजुर्बे में यह बात भी आई है कि थोड़े ही दिनों के अभ्यास के बाद अभ्यासी के Occipital Bone पर कुछ

लहरें पैदा होने लगती हैं। बात यह है कि उनमें असल तत्त्व अर्थात् जैसा कि उनको बनना है वह शुरू में ही डाल दिया जाता है और इससे बहुत जल्दी हो जाती है। बात करने में यह तमीज़ न होना कि तुम अपनी माता से बात कर रही हो या पिता से- यह हालत अच्छी है और यह चीज़ बताती है कि रिश्तेदारी का नाता टूट चुका है मगर इसमें समता भी हो जायेगी। कुछ वजह उसके ज्यादा बढ़ जाने की यह भी है कि जिस्म के लिहाज़ से दिमाग में थोड़ी सी कमजोरी है और उस पर Pressure ज्यादा होने की वजह से अपने Function में कुछ कमी ही रखता है। इस इबारत से मेरा यह मतलब नहीं है कि तुम्हारा दिमाग बहुत कमजोर है, बल्कि यह मतलब है कि जितनी उसमें ताक़त है उससे ज्यादा उससे काम लिया जा रहा है। वैसे तुम्हारी बुद्धि ईश्वर-कृपा से तीव्र है और दिमाग अच्छा। दूसरों की बोली जल्दी न सुन पाना एकाग्रता और उसके फलस्वरूप ध्यान उस ओर न जाने की वजह से है। तुम ईश्वर की याद में बेख़बर तो पहिले ही हो चुकी, मगर यह बात जब थी जब दूसरा सामने था। अब एक ही है तो बेख़बर किससे होगी?

केसर का ख़त पढ़ा। उसकी हालत ईश्वर की कृपा से अच्छी चल रही है। अम्मा और ताऊजी को प्रणाम और तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-538

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 4.1.56

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। समाचार मालूम हुए। यहां भी सभी लोग सकुशल हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो लगता है कि शरीर में कोई बोझ ही नहीं रह गया है। हल्का फुल्का मानों स्वयं ही इधर उधर डोलता रहता है। उसके चलाने में देखती हूँ न तो मेरा कोई इरादा ही रहता है और न इसके चलने-फिरने का शायद इसीलिये मेरे पास कोई पता ही रहता है और स्वयं अपना ही नहीं, बल्कि सबके शरीर मुझे तो ऐसे ही लगते हैं। मेरा तो शरीर जाने क्या हो गया है कि मुझे पता नहीं जमीन पर चलता है या आसमान में उड़ता रहता है। मेरा तो कुल शरीर चेतन हो गया है। चेतन कहने को कह लिया है, वरन् अब तो यह दशा है कि जर्रे-जर्रे से प्रकाश निकलता है, किन्तु रोशनी वाला प्रकाश नहीं है,वरन् लगता है कण-कण आँख बन गया है और उससे प्रकाश निकलने लगा है। 'मालिक' ने मेरी दृष्टि में अब असल तत्त्व का प्रकाश भर दिया है, अर्थात् मेरे लिये अब केवल असल तत्त्व की ही अनुभूति है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। मेरे शरीर के कण-कण में ईश्वरीय-शक्ति का रुप ही मुझे एहसास में आता है। स्वयं मेरा शरीर है या जाने ईश्वरीय शक्ति का रूप ही हो गया है। मैं ईश्वरीय शक्ति रूप कहती हूँ, वह इसलिये कि यही चीज़ दशा के लिये कहते बनती है, नहीं तो, न शक्ति है, न भक्ति है, न मुक्ति है, न बंधन है। स्वभाव का भी कुछ ऐसा साम्य हो गया है कि जब तक दशा में अंधेरा

रहता है तब तक चिड़चिड़ापन रहता है। तबियत काबू में ही नहीं आती है परन्तु जहाँ शुद्ध हुई, तो चाहे फिर कोई मारे, गाली दे, फिर असर नहीं, क्योंकि हर काम शरीर पर होता है और शरीर ईश्वरीय-शक्ति रूप हो गया है, तो फिर उस पर प्रभाव कहाँ पड़ सकता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या- 539

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 8.1.56

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। पूज्य मास्टर साहब से आप की कुशलता का समाचार सुनकर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा हो गई है कि अब मुझे रात दिन कभी यह पता ही नहीं मिलता कि मेरा शरीर है या नहीं। हड्डी-माँस सब कुछ गलकर बराबर सतह में समा गया। मैं अक्सर लिखा करती थी कि मेरा तो स्वरूप ही यह हो गया, वह हो गया, परन्तु अब बिल्कुल यह बात देख रही हूँ कि स्वरूप मेरा कुछ है ही नहीं। अब मैं भाई, क्या लिखूँ? कलम बन्द होने लगती है, परन्तु ख़ैर चलाने वाला अब यह सब जाने क्या चलाकर कुछ लिखवा ही देता है और अंत तक वह कलम चलवाता ही रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है, क्योंकि 'मालिक' की कृपा से दशा क्या आती है, सामने आईना आ जाता है, जिसमें मुख देखकर अपना ही बयान किया करती हूँ। परन्तु अब क्या करूँगी? नहीं मालूम, क्योंकि अब तो देखती हूँ कि आईना के सामने कोई तस्वीर ही नहीं आती। अब तो लगता है कि Inactivity का भी सम्बन्ध मुझ से टूट चुका है। Activity थी नहीं और Inactivity भी अब कहते ठीक नहीं बैठती, अब जाने क्या है।

H^1 तो बिल्कुल साफ़ है। कोई अड़चन, जैसे कभी आई ही नहीं थी। मुझे अब तो लगता है कि अड़चन मानों ऊपर से आती है। न जाने क्या बात है कि लय-अवस्था मुझमें अब कभी प्रवेश ही नहीं करपाती है। मुझे तो लगता है कि दशा की भी दशा मेरे में हज़म होती चली जाती है, यानी मुझे लगता है कि न जाने क्यों अब न मेरे पास कुछ आता है (दशा) और न मेरा कुछ जाता है। पता नहीं क्या हो गया है, यह तो 'आप' ही जानें।

केसर आप को प्रणाम कहती है और अम्मा आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन,सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-540

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 11.1.56

तुम्हारे दो पत्र मिले। तुमने यह लिखा है कि जब साधक शाहजहाँपुर आते हैं और लौटकर वापस आ जाते हैं, तो उनका मन मेरे पास ही छूट जाता है। यह अनुभूति तुम्हारी ठीक है कि उनका ध्यान मेरी ओर रहता है, मगर इसे अगर इस तरह से देखो कि मेरा मन भी कुछ दिनों उनके साथ रहता है, तो ज्यादा सही मिलेगा। यह ज़रूर है कि जब उनका आकर्षण मेरी ओर होता है तो मेरा चित्त भी उनकी तरफ़ हो जाता है, मगर यह चीज़ सबके साथ नहीं मिलेगी। अगर कहीं उनका मन हमेशा के लिये मेरे पास छूट जावे तो फिर उनके लिये किसी चीज़ की तलाश की ज़रूरत न रहे। तुम्हारी अनुभूति यह सही है कि Nature की तरफ से point पर जो अँधेरी थी वह उसकी रोक थी, इसलिये कि कहीं Special personality तुम न बन जाओ, जो मुझे यहाँ से जाना पड़े, और यह स्वामी विवेकानन्दजी ने जब कि मेरी तबियत किसी तरह से न मानती थी रोककर दी है। इसमें तुमको कोई हानि न पहुँची। मेरा जहाँ तक ख़्याल है कि यह बिल्कुल Prophetic स्थान है, और तुम्हारी यह हालत पहले से शुरू हो चुकी थी, उसको न उभरने के लिये भी एक तरक़ीब कर दी गई है, इससे भी कोई हानि नहीं है। कल साढ़े नौ बजे रात को मैंने तुम्हारा झुकाव I_1 पर कर दिया है। पूरी तौर से उस तरफ इसलिये नहीं खींचा है कि H_1 पर की अँधेरी जाती रहे जो सतह सी जगह भीतर-बाहर मालूम होती थी, वह उस वक्त तक दूसरी चीज़ थी। अब तुम और वह मिलकर एक हो रही हो। पीर या दर्द जब अपने हद से गुज़र जाता है तो वह ख़ुद दवा हो जाता है और तुम्हारे खत में जो कुछ भी लिखा है, उसके जवाब में कुछ पंक्तियां लिखता हूँ।

सब लोग कहते हैं कि अपने आपको पहिचानो, अर्थात् यह देखो कि तुम कौन हो? वह लोग सही ज़रूर होंगे, मगर कोई मुझसे पूछे तो अपने आप को भुला देना ही और अपनी Body Consciousness और Soul Consciousness को ख़त्म कर देना ही सब कुछ है। जब हममें पहिचानने की शक्ति रही या जानने की शक्ति रही तो एक हम और दूसरे वह चीज़ जिसको हम पहिचानने की कोशिश करते रहे, कभी पहिचान नहीं सकता। अत: सरल नुस्खा यही है कि अपने आपको भुलाने की कोशिश करता रहे और इसी की मैं कोशिश कराता हूँ और लोगों को ऐसे ही अभ्यास बताता हूँ। मैं समझता हूँ Know Thyself का मसला Socretes ने तो लिखा ही है, और उसी की नकल होती रही और सम्भव है कि भारतवर्ष के ज्ञानी महात्माओं ने इस पर और ज़ोर दिया हो। हमें तो अपने आपको इतना मथना है जो ध्यान की मथनी से हो जाता है कि हीर का हीर (मक्खन ही मक्खन) रह जावे। तुमने अपने पत्र में सही लिखा है कि अबकी बार मैं लखीमपुर ही रह गया और ऐसा रहा कि आना मुश्किल!

केसर का भी ख़त मिल गया। उसके संस्कार बनना बन्द हैं। फ़िक्र पैदा न होने के माने ये है कि अन्दर वह मग्न रहती है और बाहर के ऊपर जो अँधेरा सा लगता है उसमें यह मालूम होता है कि त्रिकुटी की सैर शुरू है।

शुभ चिन्तक

रामचन्द्र

पत्र संख्या-541

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 11.1.56

मेरा एक पत्र आप को मिला होगा। यहां सब सकुशल है, आशा है आप सब लोग भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो अब यह न जाने क्या दशा है कि आँखें बन्द करती हूँ तो भी मेरे लिये अँधेरा नहीं होता और आँखें खोले रहती हूँ, तो भी उजेला कभी नहीं होता। मेरी दशा में एक अजीब सन्नाटा समाया हुआ है, परन्तु देखती हूँ कि इस सन्नाटे में भाँय-भाँय नहीं होती, बल्कि यह सन्नाटा मेरी दशा है। शायद इसीलिये मुझे अब यही अच्छा लगता है। सुनसान बियावान दशा लगती है।

मेरा तो यह हाल है कि अन्दर देखती हूँ तो सन्नाटा ही मानों मेरा अन्तर और शरीर भी सन्नाटा स्वरूप हो गया है। शरीर के कण-कण में सन्नाटा छाया हुआ है। भीतर-बाहर एक अजीब सन्नाटा अनुभव करती हूँ जो मुझे बुरा नहीं लगता है। किन्तु न जाने क्या हो गया है कि तबियत में एकाग्रता कभी आती नहीं। दक्षिण में पूजा कराते हुए देखा कि तमाम गाढ़ा Blood कुल पृथ्वी पर जमा हुआ है। मेरी तो यह दशा है कि न मुझे स्थूल, सूक्ष्म कुछ भी एहसास में नहीं रहता। सब कुछ जो जैसा है, वैसा ही एहसास आता है और एहसास में कुछ है नहीं, दिखाई कुछ पड़ता नहीं। इधर एक बात देख रही हूँ कि शरीर का ज़र्रा-ज़र्रा ईश्वरीय प्रकाश व ईश्वरीय-शक्ति मय हो गया है। यद्यपि न उसमें प्रकाश की अनुभूति है और न शक्ति की, वरन् मेरे कण-कण से जो किरणें फूटती हैं, उनमें इसी बात का एहसास पाती हूँ। कुल दिमाग़ की हड्डी में, कुल शरीर की किरणों मेंतथा उसके चारों ओर के वातावरण में ईश्वरीय-चेतना का आभास पाती हूं, परन्तु स्वयं हर चीज़ से खाली हूँ। यद्यपि इधर कई दिनों से कुल दिमाग़ में दर्द रहता है, परन्तु लगता है कि ईश्वरीय-प्रकाश, दैवी चेतना सी उससे छिटकने लगी है। अब तो कस्तूरी, कस्तूरी नहीं रही, बल्कि 'श्री बाबूजी' की कस्तूरी हो गई है। मुझे तो न जाने क्या हो गया है कि लगता है कि मेरे मन में अब आत्मा ही नहीं है, बल्कि न जाने क्या हुआ कि आत्मा मेरे कुल नस-नस में, रोम-रोम में व्याप्त हो गई। भीतर-बाहर कुल में व्याप्त हो गई। अब तो सब लोग मुझे अपने और अपने से मालूम पड़ते हैं और एहसास मुझे कोई लोगों का, किसी वस्तु का होता नहीं है। समझ में नहीं आता कि आत्मा है या ईश्वर है, खैर कुछ भी हो। अब तो लगता है कि आत्मा अपने घर में समा गई, फिर मेरे अन्दर कहाँ से आवे। पहले अक्सर अपने अंतर में जो एक सौं तबियत का एहसास लिखा करती थी, वह कुल स्वरूप ही बन गई है। अब तो लगता है कि यह सब नज़ारा बदलते हुए भी दशा नहीं बदलती। एक समान गति रहती है। वह कभी डिगती नहीं, क्योंकि देखती हूँ कि उसका न कहीं आदि है, न अन्त हैं।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। केसर व बिट्टो आप को प्रणाम कहते हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-542

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 14.1.56

मेरा एक पत्र आप को मिला होगा। यहां सब कुशल है, आशा है आप सब लोग भी वहां सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

आज तो दशा बिल्कुल तेजी पर है। मेरे कण-कण से ईश्वरीय किरणें फूटी पड़ती हैं। जिस पर हाथ रख दूँ, रस हो जावे। मेरे चारों ओर Vibration बहुत तेज है। परन्तु Moderation नस-नस में व्याप्त है। यह सब आप की ही कृपा का फल है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री - कस्तूरी

पत्र संख्या-543

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 31.1.56

तुम्हारे दो पत्र तारीख 11 जनवरी एवं 14 जनवरी सन् 56 के मिले। पत्र का उत्तर देने से पहले मैं यह खुशखबरी देना चाहता हूँ कि कल काशीराम तथा गजानन्दजी आसाम से आ गये। अब मैं तुम्हारी आध्यात्मिक दशा पर कुछ लिख रहा हूँ।

तुम्हारी दशाओं को समझना भी अब हर का काम नहीं रहा और मुझे भी उसको समझने में दिक्कत पड़ती है और शब्द उसके लिये नहीं मिलते। वाह! क्या अच्छा लिखा है कि आँख बन्द करने पर अँधेरा प्रतीत नहीं होता और आँख खोलने पर उजियाला मालूम नहीं होता। यह उस असल चीज का तलछट समझना चाहिये, जहाँ न अँधेरा है न उजाला। लोग उसको रोशनी कहते हैं और मैं भी विचार के प्रगट करने के लिये यही शब्द इस्तेमाल करता हूँ। अगर भूमा की तरफ कोई उचक कर दखे तो जो तुम्हें अनुभूति है उसी की निखरी हुई हालत (Refined) मिलेगी। मगर उझक वही सकता है, जिसके पास दिल न रहा हो। इसके बारे में मैंने किताब 'अनन्त की ओर' में भी लिखा है। तुमने यह लिखा है, भीतर-बाहर एक सन्नाटा सा छा गया है, इसके लिए अच्छा Expression अंग्रेजी में Wilderness हो सकता है या सूनापन कह लिया जावे, मगर यह इसके बाद वाली हालत है। मगर अभी असली हालत बहुत दूर है। अभी तुम्हारी हालत में कुछ परमाणु (Matter) के बहुत हल्के कण शामिल हैं और यह I[1] की हालत है। कुछ हल्की तिलमिलाहट भी है, जो बहुत गौर करने से मालूम होती है। यह तिलमिलाहट और कुछ नहीं है, बल्कि कम्पन की सूक्ष्म गति है। Negation में यह कुछ चीज नहीं रहती। एक सूखी हुई हालत Changeless रहती है और इसकी भी अनुभूति नहीं रहती। उससे आगे बढ़कर जहाँ पर कम्पन माध्यम हो जाता है, उसमें बेशुमार शक्ति होती है और

Negation को तो मरी हुई हालत कहना चाहिए। मगर तमाम ज़िन्दगी की जड़ वही है। हम असल में मरकर ही ज़िन्दा होते हैं। जब एकाग्रता एक अच्छा रूप धर लेती है, तो फिर इसकी अनुभूति नहीं हो पाती। ईश्वर और आत्मा तुम्हें उड़ती-उड़ती बातें लग रही हैं। इसे तो ऐसा समझो कि जैसे लाल (Ruby) के सामने कोई रंग की दूकान ख़ोले। असल में ब्रह्म विद्या की प्राप्ति के लिये लोग रंग की दूकानें ही ख़ोलते हैं और तमाम उम्र इसी को बेचते-खोंचते रहते हैं। जिन लोगों की निगाह इन रंगों पर पड़ती है, उनकी तबियत में भी वही रंगीनी बढ़ जाती है, जिसको वास्तव में हममें जो भी (रंगीनी) थी, उसको उतारना ही चाहिये था।

हर कण-कण में ईश्वरीय प्रकाश का उठते हुए पाना, यह बात बता रही है कि घटियापने के ब्रह्म में तुम्हारी लय-अवस्था हो चुकी है। पहले किसी ख़त में मैंने लिखा है और ऋगवेद भी यही कहता है कि ब्रह्म कई प्रकार के होते हैं। यह हालत जो तुम्हारी है, अच्छे-अच्छों को नसीब होना मुश्किल है। अफ़सोस यह है कि इस मिशन की शिक्षा इतनी आसान है कि उसको कोई अपनी निगाह में नहीं लाता और इसीलिये उसका मूल्य भी कम हो गया है। मूल्य से मेरा मतलब यही है कि इसकी कोई क़दर नहीं रही है। तुमने जो दक्षिण में रक्त देखा है वह तो बहना ही है। मैंने किसी वक्त बातों बातों में किसी से कहा था कि यह बातें दक्षिण भारत से शुरू होंगी, सम्भव है यह ठीक हो। तुमने अच्छा किया कि सत्संगियों के लिये रक्षा कर दी और उनकी रक्षा तो वैसे ही रहेगी, ईश्वर ने चाहा। आत्मा कण-कण में तो व्याप्त है ही, मगर तुम्हारी अनुभूति इस विषय में जो है, उसके माने यह हैं कि तुम्हारा वही रूप बन गया है, जिसकी लोग तलाश में है, मगर अफ़सोस यह है कि हाथी को कुलिया में ढूँढते हैं।

तुमने I^1 का हाल तो ठीक ही लिखा है। यह सही समझो कि मुझमें अगर गुरू महाराज का ज्ञान व अक्ल काम न करे तो ऊँचे दर्जे की शिक्षा देना दूभर हो जावे। H_1 की स्याही हटाने के लिए I^1 पर और उसका पूरा जोर I^1 पर रुजू कर दिया था, जिसका परिणाम यह हुआ कि H_1 भी ठीक आ गया और I^1 पर अपने आप दूसरा पैर उठ रहा है। H_1 पर जो स्याही मुझे अनुभूति होती थी, वह कोई कालिमा या नुक़्स नहीं था, बल्कि मेरी ग़ल्ती से उस पर Force या शक्ति अंदाज़ से ज़्यादा पहुंच गई थी, जिसकी वजह से शक्ति की एक तह जम गई थी और वह जोर मेरे हटाये नहीं हटता था। मालिक की कृपा से यही तरकीब समझ में आई, जो मुझे करनी ही पड़ी। इससे मेरी ग़ल्ती का भी असर दूर हो गया और इस ग़ल्ती की वजह से तुम्हें अगले Point पर बहुत ज़्यादा मदद मिल गई।

तुम्हारे माता पिता को प्रणाम तथा भाई-बहिनों को आशीर्वाद!

शुभ चिंतक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-544

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 30.1.56

आशा है मेरा तथा केसर का पत्र पहुँचा होगा। यहां सब कुशल है, आशा है 'आप' भी स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो भी मेरी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो दशा क्या है, कुछ ऐसी खाली दशा है कि जिसको कह सकने के लिये कोई शब्दों की वहाँ गम्य ही नहीं हो पाती है। सूनसान या बियावान कहने से दशा के लिये बिल्कुल ज़रा भी ठीक नहीं बैठता। यहाँ तक लगता है कि मानों कण-कण में से ईश्वर नाम की सुगन्ध को भी किसी ने चूस कर फेंक दिया हो या ऐसे कह लीजिये कि एक जगह की कुल वायु को यदि किसी यंत्र द्वारा खींच लिया जावे तो फिर उसके लिये क्या कहा जा सकता है। सन्नाटा कहती थी, परन्तु अब तो वहाँ दशा में सन्नाटा कहने को भी नहीं रहा। अब तो यह दशा है कि प्रेम का भी तो पता नहीं रह गया है कि कहाँ से लाऊँ, कैसे लाऊँ, जो 'बाबूजी' से प्रेम कर पाऊँ। एक दिन शाम को पूजा के कमरे में कुछ लिख रही थी, तो लगा एक Power जिसके लिये मेरा अन्दाज़ विष्णु ठहरता है, मेरे सामने आई, रंग साँवला (काला), बोली, कुछ माँगो। मैंने कहा कि मुझे तो कुछ चाहिये नहीं। मुझे तो सब मिल गया। बोली-नहीं, कुछ तो माँगो। तो मैंने कहा कि क्या आपने मेरे श्री बाबूजी को देखा है, तो वह चुप रही। फिर मैंने कहा कि श्री बाबूजी के ध्यान में लयलीन हो जायें, मैं यही माँगती हूँ बस तुरत ही वह ग़ायब हो गई।

मेरी हालत तो ऐसी है कि हल्की शब्द भी तो उसे छू तक नहीं पाता है। मैं तो बस उसे खाली कहती हूँ। वह भी इस तरह कि जो है, वह स्वयं ही है और कुछ कहने की गुंजाइश नहीं है।

अब तो मेरी दशा यह है कि भीतर-बाहर सब जैसे अँधेरा ही अँधेरा है। कण-कण मानों अँधेरा स्वरूप हो गया है और भीतर-बाहर अजीब शून्यता ही शून्यता व्याप्त है। अपने को देखती हूँ तो रोम-रोम, नस-नस में शून्यता ही व्याप्त हो गई है। अक्सर अब ऐसी दशा रहती है कि भीतर-बाहर, सब शून्यता ही शून्यता लगती है किन्तु जाने क्या बात है कि अपने भीतर देखती हूँ तो कण-कण में अन्धेरा सा शून्यता सी रहती है परन्तु शरीर से Vibration निकलता अनुभव होता है, अजीब बात है। वैसे तो मैं शून्यता की दशा कहती हूँ, परन्तु दशा यह है कि मैं तो स्वयं ही मानों शून्यता रूप ही हो गई हूँ। एक कुछ यह देख रही हूँ कि पहले मुझे सदैव लगा करता था कि जैसे एक ऊपरी अनन्त शक्ति मुझे अपनी ओर खींचा करती थी, कभी मैं सुस्त भी पड़ जाती थी, बीमारी के कारण, तो भी मुझे यही लगता था कि ऊपर की शक्ति, आकर्षण मुझे अपनी ओर खींचे रहता है, परन्तु अब देखती हूं कि कुछ नहीं, तुरत ठप होने लगती हूँ, जैसे कोई आगे का द्वार बन्द कर देता है। अब तो मैं भूलती,जागती चलती हूँ।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं और केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आप की ही स्नेह सिक्ता

सेविका-कस्तूरी

पत्र संख्या-545

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 5.2.56

'आपका' कृपा पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' का अनेकानेक धन्यवाद है क्योंकि धन्यवाद के अतिरिक्त अपने अहेतुकी कृपा वाले 'मालिक' के लिये और कहूँ ही क्या। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि न जाने क्या हो गया है कि भीतर बाहर सब जगह, सब ओर मुझे खाली-खाली मालूम होता है। देखती हूँ कि दशा की तिलमिलाटह भी पैठ सो गई है या यों कह लीजिये कि उसकी भी जान सी निकल गई है। कुछ ऐसी दशा देख रही हूँ कि जो कह दिया या कर दिया, उस पर फिर कभी दूसरा विचार मन में नहीं उठता है कि कहीं यह न हुआ तो, बल्कि तबियत निश्चिन्त हो जाती है। यद्यपि अभी इसमें पूर्ण दृढ़ता नहीं आई है। अब तो ऐसी दशा है कि कोई कहता है अब दिन हो गया। कोई कहता है रात हो गई परन्तु मुझे कुछ एहसास ही नहीं होता। सब कहते हैं हवा चल रही है, पानी बरस रहा है परन्तु मुझे तो कुछ एहसास नहीं होता। मैं तो सूखी ही रहती हूँ, जैसी की तैसी। कुछ तबियत ऐसी एक सा हो गई है कि वह उसी में ही रहते रहते वही बन गई है। देखती हूँ कि जब सब रात कहते हैं,तब भी कभी न मुझे नींद मालूम पड़ती है और न सुस्ती और न कभी चुस्ती ही एहसास होती है। अब तो वास्तव में मेरी दशा यह है कि ऊपर लिखी बातें तो सब ऊपर की ही उड़ती उड़ती बातें रह गई है। I[1] point मुझे साफ़ बहुत हो गया लगता है, किन्तु मैं अब अपनी तबियत को पकड़ नहीं पाती हूँ और पकड़े तब, जब कुछ हो। क्योंकि मेरी तबियत तो मैं स्वयं ही हो गई हूँ। सब ओर बियावान हो गया है, परन्तु 'मालिक' की कृपा से मुझे अब ऐसी ही दशा अच्छी लगती है।

आज रात में एक स्वप्न सा देखा कि एक बिल्कुल सुनसान जगह में एक नदी बह रही है। पानी उसका मटमैला सा है और बहुत हल्का सा है। मैं उसमें नहा रही हूँ किन्तु फिर भी भींगती नहीं, सूखी की सूखी निकल आती हूँ। यद्यपि कुल नदी के पानी में लगता है कि मेरे 'श्री बाबूजी' समाये हुए हैं, फिर भी नहीं भीगती और उसमें दूसरे तीर पर श्री बाबूजी ऐसे एहसास में आते हैं कि जैसे केवल एक ख्याल की गम्य के भी बाहर हो। छाया भी कहना, उससे कई गुणा भारी पड़ता है। लोग कह रहे हैं- तुम विधवा हो गई, परन्तु मैं तो बिल्कुल एक बेख्याल खाली दशा में हूँ, इसलिये कुछ पता नहीं। फिर आँख खुल गई।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या 546

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 23.2.56

मेरा एक पत्र आप को मिला होगा। इधर मेरी तबियत कुछ खराब हो गई थी, परन्तु अब बिल्कुल ठीक हूँ। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई मेरी तो यह दशा है कि जब श्री बाबूजी को देखती हूँ, बात करती हूँ, परन्तु यदि कोई महानता के साथ स्मरण करती हूँ, तो तबियत घबड़ाने लगती है, जी घुटने लगता है। असली बात यह है कि दशा तो यह है कि कुछ दशा मेरी है, परन्तु उसे समझने की कोशिश करने से जी घबरा उठता है। अब तो न उत्सव, न कोई भीड़, न श्री बाबूजी, मुझे तो अब कुछ दीखता ही नहीं।

मेरी तो अब यह दशा है कि तबियत या दशा तो मर गई है। एक अजीब भरी हुई दशा पाती हूँ। देखती हूँ कि बिल्कुल Thoughtless दशा रहती है। यही नहीं, बल्कि मेरा स्वरूप ही यही हो गया है और शायद इसीलिये मुझे न उत्सव न भीड़ कुछ दिखाई ही न पड़ा। उत्सव में मैं गई, परन्तु मेरे लिये उत्सव पता नहीं आया या शायद आये, मुझे कुछ दीखता ही नहीं। अब तो यह दशा है कि ईश्वरीय-धारा की भी वहाँ गम्य नहीं। जबान की भी गम्य नहीं, बिल्कुल सब कुछ सब ओर एक Thoughtless दशा है। न कुछ आना (आता) है, न जाना (जाता) है। पहले मुझे बहुत Dim Vibration महसूस होता था, परन्तु अब तो सब कुछ समाप्त हो चुका। बिल्कुल लगता है दशा में बस सम ही सम हो गया है। बिल्कुल Thoughtless दशा है, यही स्वरूप है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
सेविका-कस्तूरी

पत्र संख्या-547

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 29.2.56

तारीख 23.2.56 का लिखा हुआ पत्र प्राप्त हुआ। Sri M.K. Gaurshan बहुत अच्छे तरीके से लगा हुआ है। ता. 25.2.56 को 7.15 P .M. पर वह आत्मा के स्थान पर ख़ुद-ब-ख़ुद आ गया और उसने दिल की सैर, जहाँ तक पिण्ड का सम्बन्ध है पार कर ली। कुछ सफाई, जो कुछ अँधेरा लिये हुए दिल में करने को अभी रह गई है, सो यह मेरा और तुम्हारा काम है।

मैं भूल गया हूँ जरा लिखना कि तुम्हारे सैर का स्थान क्या।[1] है? मेरा ख्याल यही है। पिछले ख़त से पता चल जावेगा तुममें ईश्वर की कृपा से साम्य अवस्था पैदा हो चुकी है, मगर उसमें सफ़ाई और शुद्धता पैदा नहीं हुई है। कुछ उस हालत के सामने अलहदा कहने को भारीपन छाया की तरह स्याही लिये हुए मालूम होता है, यह भी ईश्वर की कृपा से दुख दूर ही हो जावेगा। उत्सव के रंग की अनुभूति न होना यह माने रखता है, कि तुमने बहुत कुछ अपने में चिमट कर लय-अवस्था हासिल कर ली है और यह बहुत ही अच्छी बात है। तुमने Thoughtless की हालत जो बताई है, यह साम्य अवस्था का तर्जुमा है और सूनापन भी इसीलिये प्रतीत होता है। यह तुमने ठीक लिखा है, जहाँ पर कि तुम हो, वहाँ पर हवासों की भी गम नहीं है। किसी उर्दू कवि ने लिखा है:- "न वहाँ ख्याल पहुँचे, न जेहन की है रसाई" अर्थात् न वहाँ ख्याल की गुजर है और न Intelligence की पहुँच। तुमने लिखा है कि जितना प्रेम तुम करना चाहती हो, नहीं कर पाती मैं भी यही कहता रहा और कहते-कहते उसी में झुलस गया।

केसर का भी खत आया। उसके स्वप्न की ताबीर (Interpretation) मैंने यह बताई है कि Soul अपनी Naked form में आ गई है। इसकी व्याख्या बड़ी मुश्किल है, सिर्फ इतना लिख देना काफी है कि उसमें लग लिपटान, जो कुछ भी था, वह अलहदा सा है और इसी को Naked form कहा जा सकता है। उसने लिखा है पूजा करने और न करने में कोई अन्तर नहीं मालूम पड़ता है, इसको वह ठीक तौर से प्रगट नहीं कर सकी। उसका मतलब यह मालूम होता है कि पूजा करने में जो हालत रहती है, वही न करने पर भी। जो अगर स्थाई रूप में आ जावे तो बड़ा अच्छा है मगर इस हालत के लिये कोशिश नहीं करनी चाहिये, इस चीज को ख़ुद-ब-ख़ुद आने देना चाहिये। प्रार्थना के समय जो युद्ध का दृश्य आ जाता है, वह हो सकता है, सही निकले। मुझे गोण्डा से एक अभ्यासी ने लिखा था, जिसने थोड़े दिनों अभ्यास के बाद छोड़ दिया कि "मैंने ध्यान के समय यह देखा है कि हिन्दुस्तान पर एक पर्दा पड़ा हुआ है, और उसमें शब्द Danger लिखा हुआ है" उसको हटाकर मैं ख़ुद दाखिल हो गया और स्वप्न भी उसने देखा था। अब ईश्वर जाने क्या होने वाला है। उत्सव में मेरे पास से इस साल कुछ भी नहीं लगा, बल्कि 30-40 रूपये अंदाजन बच रहेगा, जो Bank में जमा हो जावेगा। चौबेजी व अम्मा को प्रणाम व तुम्हारे भाई-बहिनों को आशीर्वाद!

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-548

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 28.2.56

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा, परन्तु आज फिर जी चला आया। कोई खास बात नहीं है, फिर भी जो दशा आजकल है, सो लिख रही हूँ।

अब तो यह दशा है कि लगता है कि केवल बीज ही बीज है और उसी में मै समाती जा रही हूँ और वही मेरा स्वरूप होता जा रहा है।

भाई, मेरी तो अब यह दशा है कि भीतर-बाहर मुझे तो अब कुछ भी नहीं महसूस होता है। कुछ यह देख रही हूँ कि अब कुछ नहीं में ही मैं मस्त हूँ और उसमें मैं समाती या घुसती चली जा रही हूँ। कुछ ऐसी दशा रहती है कि अब दिन भर कभी मुझे उजेला ही नहीं लगता। धाम में भी बैठने पर उजेला नहीं लगता और गहरी से गहरी रात में भी लालटेन बुझ जाने पर भी लिहाफ़ में मुँह ढाँकने पर भी अँधेरा ही नहीं होता। बहुत पहले भी अक्सर मैं यह बात लिखा करती थी कि वैसे तो दशा यह है, परन्तु अपने अंतर में मुझे एक Changeless दशा अनुभव होती है और अब देख रही हूँ कि वही दशा मेरा स्वरूप हो गई है या यों कहिये कि एक वही दशा भीतर-बाहर, कण-कण में व्याप्त है।

अब तो मेरी यह समझ में नहीं आता कि Thoughtless दशा कहूँ या क्या, क्योंकि मेरे तो शरीर का कण-कण वही स्वरूप हो चुका है। मैं पहले लिखा करती थी कि मेरे अंतर में एक अजीब अनन्त एकरस आनन्द बना रहता है, परन्तु अब या तो मेरा अंतर ही गलते-गलते समाप्त हो चुका

या भाई, मुझे तो कुछ पता नहीं क्योंकि मैं तो अब यह देख रही हूँ कि अंतर है ही नहीं और मेरे शरीर का कण-कण, भीतर-बाहर सब कुछ एक ही बिल्कुल विचारहीन (Thoughtless) दशा ही हो गया है और वह एक रस Thoughtless आनन्द अब मेरा स्वरूप ही हो गया है, इसलिये अब आनन्द कहते अच्छा नहीं लगता। बस स्वयं एक मस्ती है, जो मुझे पता चला कि मैं स्वयं ही हूँ। वह स्वयं मेरा ही स्वरूप है और अब तो यह कुछ भी नहीं, बस हर समय बिल्कुल Thoughtless दशा है।

अब तो भाई, यह दशा है कि वह तो अब जो है, सो है। अब तो सूक्ष्म भी नहीं है, बल्कि सूक्ष्मता तो मुझे एक पर्दा ही लगता है, जो मुझमें नहीं है। दशा तो बिल्कुल एक साँ है या यों कह लीजिये कि एक Unlimited मैदान है। उसे या दशा कह लीजिये या कुछ भी कह लें। हालत का तो दीवाला निकल गया है सच तो यह है भाई कि Thoughtless जो मैंने ऊपर लिखा है, वह भी कोई दशा नहीं है, वरन् बिल्कुल खाली या सूने के लिये यही कहते बना। अब मुझे ऐसा लगता है कि जबरदस्ती मुझे कोई शक्ति दुनिया की ओर ऊपर से दाबे रहती है और जो मुझमें शारीरिक activity बनाये रखती है। अब तो दशा में न कोई चमत्कार है, न चंचलता है, न सुहानापन ही है, क्योंकि वह तो जो है, सो है, फिर दूसरी चीज कहाँ से आवे।

दशा तो ऐसी है कि उसमें अब किसी की गुजर नहीं और सबकी गुजर है। अब तो अथाह मैदान सामने है, जिसमें मैं रामा चुकी हूँ। अब तो दशा ऐसी है कि न आना मालूम है न जाना मालूम है और यह भी नहीं मालूम कि कुछ मालूम है और न यह मालूम है कि क्या मालूम करूँ। अब तो मैं भिखारिन भी नहीं रह गई हूँ, तो फिर अपने दर (ठिकाने) का भी क्या पता।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं और केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-549

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 15.3.56

असल जिन्दगी क्या है? कि जिन्दगी की जिन्दगी जाती रहे। वह जिन्दगी क्या है, जिसको जाना चाहिये? वह वह है जिसमें पना लगा हो, जैसे 'जीव-पना'। अब कहीं जिन्दगी जाने के बाद वह जिन्दगी आ गई कि जो तलाश की दौड़-धूप खत्म कर दे, तो फिर उसको दुनिया से मुर्दा होना ही कहा जावेगा और ईश्वर से जिन्दा रहना शब्द ही ठीक हो सकेगा। अब तुमने जो लिखा है कि मैं आया और गया, मगर तुम्हें इसकी अनुभूति नहीं, उसके माने यह है कि उस असल जिन्दगी की शुरुआत हो चुकी है। मगर यह भी लिखा है कि तबियत बाबूजी, बाबूजी कहकर पुकारती है, यह चीज बता रही है कि अभी वह टीसन बाकी है, जिससे कि अभी असल जिन्दगी में जिन्दा होना है। असल जिन्दगी को निगाह में रखते हुए "बाबूजी, बाबूजी" तबियत का पुकारना कमजोरी ही कही जावेगी, मगर उस जिन्दगी को जिसमें तुम्हें जिन्दा रहना है उसके लिये यही जज्बा हथियार भी है।

बाकी कुल पत्र का जबाब यह है कि तुम बबूल का दरख्त बन रही हो कि जो न सावन हरा न भादो सूखा। बाकी और बातें इस वक्त बहुत ऊँची लय-अवस्था बता रहे हैं और फिर यह तो होता ही रहता है कि कभी लय तो कभी उसकी तुरिया।

अब मैं तुम्हारी कहानी पर आता हूँ और या समझ लो कि मैं अपनी ही कहानी बयान करता हूँ। मैं जब लखीमपुर में अभी आया था तो मैंने तुम्हें J_1 स्थान पर खींच दिया था, उसकी सैर अभी अच्छी तरह से तो आरम्भ नहीं हुई, मगर चिन्ह पैदा हो रहे हैं, और उसमें सूक्ष्मता बढ़ रही है। असल पूछो तो मैं तुम्हारी हालतों को देखता हुआ चलता हूँ और बाज हालत मुझे इतनी भा जाती है कि मुझे उसके देखने में मज़ा आता है, इसलिये तुम्हें देर लग जाती है। अब जो हालत उस स्थान पर छाई हुई है, अब तक उसे देख-देखकर खुश हो रहा हूँ, मगर अब सैर की हालत पैदा करूँगा, हलाँकि जी देखने का ही चाहता है।

मैंने, चौबेजी ने जो ऋग्वेद दिया था, उसको पढ़वा कर सुना और सुन रहा हूँ। उसमें सोम रस का वर्णन किया गया है और उसमें टीकाकारों ने अपनी राय भी दी है, जिनसे मैं सहमत नहीं हूँ। अबकी इरादा ये किया है कि जब मैं लखीमपुर आऊँ और बहुत से सत्संगी मौजूद हों, तो सब लोगों को मैं सोमरस पिलाऊँ। इससे मुझे भी तजुर्बा होगा और ख्याल तो यह है कि जो असर सोमरस पीने से होता था, वही असर सब पर दौड़ेगा, ईश्वर ने चाहा। और फिर अगर कहीं यह नुस्खा बन जावे तो उससे इसकी जाँच हो जावेगी। सोम के मानी केसर से कहना और ठा. हरदत्त सिंह से भी, कि पुराने किसी कोष में बबूल के तो नहीं हैं, मेरा ऐसा ख्याल हो रहा है।

ऋग्वेद में सरस्वती के मंत्र आये हैं और अग्नि और वायु और इन्द्र के भी और इनका Force इन्हीं स्थानों पर है, जो इसकी जगहें हैं। सरस्वती के स्थान की मैंने बहुत पहले Research की है, चुनांचे उसमें जितने मंत्र आये हैं, उनमें सब में, उसी स्थान पर जोर पड़ता है और उनकी लय ऐसी है कि वह स्थान जाग उठता है और अगर वह सब मंत्र उसी धुन से बार-बार पढ़े जावें, तो उस स्थान की कुल सैर हो जाती है। इसी तरह से मैंने किसी Speech में कहा है कि दीपक राग कंठ चक्र के करीब से अलापा जाता था, चुनांचे अग्नि के मंत्र जितने आये है, उनकी ध्वनि (धुन) कण्ठ चक्र से ही निकलती है और उसमें सैर के वही तरीके हैं, जो मैं अपनी इच्छा शक्ति से करवाता हूँ। अभी थोड़े ही से मंत्र मैंने सुने हैं, उसका नतीजा तुम्हें लिख दिया, इसीलिये स्वाध्याय सिर्फ वेद का ही मुफीद हो सकता है। आर्य लोग शब्द से चले हैं, जो धुर तक पहुँचता है। अब अगर मैंने कुल वेद सुन लिया तो मैं यह भी बता सकूँगा कि वैदिक जमाने के ऋषियों की कहाँ तक पहुँच हुई है।

हम चौबेजी के इस मद में बहुत एहसानमन्द हैं कि उन्होंने यह किताब देकर मुझे सोचने का मौका दिया।

तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ और अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-550

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 4.3.56

कल हरि दक्ष आ गये। उनसे 'आप' के समाचार जानकर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई अब तो मेरी यह दशा है कि जिसमें Spiritual Waves कभी भूले से भी आ ही नहीं सकती। पहले मैं कितनी अच्छी अच्छी दशायें लिखा करती थी कि नम्रता, सरलता, इत्यादि परन्तु अब तो कोई बात, कोई दशा आती ही नहीं। अब तो बस- "मन थिर, चित्त थिर, सुरति थिर। थिर भया सकल शरीर"। है नहीं, बल्कि अब तो न मन है, न चित्त है, न शरीर है। अब तो एक समान, अविचल गति ही मेरा स्वरूप है। अब तो जैसे मैं भीतर टिघलन लिखा करती थी, वह टिघलन भी समाप्त हो चुकी। अब तो एक समान गति है। अब तो अपने श्री 'बाबूजी' का ध्यान करने का भी मुझ पर कुछ प्रभाव ही नहीं पड़ता। कभी एक क्षण को भी मुझे यह नहीं लगता कि मैं कभी Spiritual आदमी था। अब तो स्थिरता भी अनुभव नहीं होती। बस ख़ाली रहते ही रहते दिन रात बीत जाता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आप की ही स्नेह सिक्ता
सेविका-कस्तूरी

पत्र संख्या-551

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभ-आशीर्वाद! — 4.4.56

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिल गया। ख़ैर, उसका उत्तर फिर दूँगा। एक बात जो इस वक्त सामने है, उसके बारे में मैं कुछ लिखना चाहता हूँ। मैं जो कुछ कहता हूँ, उसमें यह सोचना चाहिये कि इसकी वजह क्या है और मेरी राय जो कुछ भी है, वह मोहब्बत से भरी हुई है, या उसके विपरीत। मोहब्बत से भरी हुई उससमय समझना चाहिये, जबकि उसमें कुछ लाभ प्रतीत हो। मैंने चौबेजी से बहुत पहले कहा था कि मेरे जन्म दिन में पाँच रूपये से ज्यादा न व्यय करें और इसके लिये चौबेजी ने भी कहा था कि ऐसा ही होगा। चुनांचे मुझसे कहा भी यही गया कि इसकी पाबन्दी की गई मगर अम्मा के और तुम्हारे कहने सुनने से यह मालूम हुआ कि ख़ाना वगैरह और तो और आदमियों का किया जाता है, जिसमें 50 या 60 रूपये से कम न ख़र्च होते होंगे। तुम जरा सोचो तो सही कि तुम्हें रूपये की कितनी तंगी रहती है और उस पर यह Taxing कितना ज्यादा होगा जो काम 4 या 5 रूपये में हो सकता हो उस पर इतना रूपया बेकार सर्फ करना कहाँ तक अक्लमंदी होगी। मैं तो ख़र्च के मामले में इतना सख्त हूँ कि मैं बराबर कहता रहता हूँ कि प्रसाद चढ़ाना जरूरी नहीं है। अब जरा सोचो तो सही कि मेरी राय कहाँ तक सही है? सिर्फ इस वजह से इतनी सख्ती का ख़त लिखा था। एक बात लिखता हूँ, अपनी प्रशंसा में नहीं कि मुझे जब यह मालूम हुआ कि हमारे लालाजी को पैर छुआना पसन्द नहीं है, तो

मैंने उनके पैर छूना छोड़ दिया। इसलिये कि हमें तो वही चीज़ करना चाहिये, जिसमें वह राज़ी रहें। अगर कहीं हम लोगों में मेरा नहीं बल्कि किसी उनके शिष्य का मामला होता, जो तुम लोगों के साथ इस समय है, तो 'लालाजी' का मनसा देखते ही वह चीज़ खत्म कर दी जाती और इसका बोझ दिल पर न आता। वैसे अगर तुम लोग खर्च ही करना चाहते हो तो मेरा कुछ हर्ज नहीं, जितना चाहो, करो। इसकी तकलीफ़ तुम्हीं लोगों को होगी।

इस बात को तुम फिर जरा सोच लेना कि आध्यात्मिक गंगा में डूबने से ज्यादा लाभ होता है या माया की नदी बहाने से। मुझे खेद ज्यादा होगा अगर गुरू-पशु होने का तुम लोगों ने सबूत दिया। तुम लोगों को यह बात नागवार हुई हो तो मैं अपने शब्द वापिस लेता हूँ और यह गुरू महाराज की आज्ञा है, इसलिये मजबूरी है, मगर जो मेरे कहने और लिखने में असर हो गया हो, उसको हटाने का मुझमें इस वक़्त काबू नहीं। वैसे तबियत तो मेरी यह चाही कि इस चीज़ को खत्म ही कर दिया जावे, इसलिये कि गैर जरूरी झंझटों से जितना ही बचाव हो सके अच्छा है। क्या तुमको तो अफसोस नहीं हुआ, उस खत पर जो मैंने लिखा था? चौबेजी को तो अफसोस हुआ होगा और अम्मा को भी। तो चौबेजी से तो मुझे यह कहना है कि वह जन्मदिन पर कितनी ही दौलत लुटा दें, मुझे अफसोस नहीं होगा. इसलिये कि जो मेरे मना करने का भेद था, उस मोहब्बत का उन्हें पता न चला और यह तो हर समझदार आदमी का काम था कि अगर उसका दिल इस हद तक नहीं बना है कि मेरे कहने को माने और बर्दाश्त करे तो उसकी वजह पर पहले ख्याल जाना चाहिये था। यह तो मैं समझता हूँ कि तुम्हारे यहाँ जन्मदिन क्या मनाया गया, एक नई उलझन सी पैदा हो गई, जिसने तुम लोगों को अफसोस में डाल दिया। मेरे गुरू महाराज में यह आदत थी कि अगर कोई सत्संगी उनके लिये कुछ ज़रूरत से ज्यादा खर्च करता था, तो उन्हें अच्छा न मालूम होता था और वे उसे टोक देते थे। यह आदत मुझमें भी आ गई। इतना मुझे अफसोस जरूर रहेगा कि मेरी अच्छी बात ने तह तक न पहुँचने की वजह से ख़राब असर पैदा किया और मैं अपनी इस आदत से मजबूर हूँ कि बाज औकात मैं कर्रा Step ले लेता हूँ हलाँकि मैंने इस मामले में बड़ा Strong Step लिया है और मुझे तो वैसे ही शर्म आती है यह सुनते हुए कि मेरा जन्म दिन कहीं मनाया गया। इसलिये कि लोग कहीं यह न ख्याल करने लगें कि 'रामचन्द्र' अपने आपको पुजवाना चाहते हैं। एक बात मेरे समझ में यह और आई कि मैं इस जन्मदिन के मामले को तुम्हारे ही ऊपर छोड़ता हूँ। तुम जैसा चाहो इसमें इन्तज़ाम रखो, इसलिये कि तुम्हारा दिल दुखी न हो। मैंने सब बातें और इसकी वजह भी ऊपर लिख ही दी है, जिससे मेरा असल मतलब रोशन हो जावे और यह चौबेजी और अम्मा को भी सब बता देना। चौबेजी अब भी सन्तुष्ट न हों तो मैं यही बातें क्षमा मांगते हुए उनको भी अलहदा से लिख सकता हूँ। मेरे कहे हुए का असर तो कुछ कुछ ऊपरी तौर पर तो हटा है, मगर पूरी तौर पर तो उस वक्त हटेगा जबकि तुम और चौबेजी और अम्मा लालाजी से इसके हटने की प्रार्थना करें। इससे मेरी तबियत भी वैसी ही बन सकेगी। अगर कोई कमी मेरे रह गई हो तो चौबेजी मुझे लिखें, ताकि मैं उसको भी साफ कर दूं।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-552

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 13.2.56

मेरा पत्र पहुँचा होगा। शायद आपको जो थोड़ी सी साँस की तकलीफ़ मालूम हुई थी, वह ठीक हो गई होगी। ईश्वर से प्रार्थना है, आप हमेशा स्वस्थ रहें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि ज़रा सा भी Vibration तक है, न कोई नॉलेज है, और न Intelligence है। ऐसा लगता है कि श्री बाबूजी की Soul में मैं समाती चली आ रही हूँ और मेरा वही स्वरूप हुआ जा रहा है। भाई, मेरी तो यह दशा है कि नींद, भूख, प्यास, श्वांस, प्राण अब कुछ भी मुझ तक पहुँच ही नहीं पाते। पहले मैं लिखा करती थी कि मुझे कुछ दीखता ही नहीं, सिवाय एक आत्मा के परन्तु अब तो यह दशा है कि न आत्मा, न कुछ मालूम ही नहीं पड़ता। पहले हर आदमी, हर चीज़ से शायद इतना मुझे प्यार था कि हर एक से लिपट जाने को तबियत चाहती थी, परन्तु अब तो मुझे कुछ दीखता ही नहीं, तो मुझे मानों किसी से प्रेम ही नहीं रहा। अब तो यह दशा है कि यह भी मुझे पता नहीं कि मुझे दीखता है या नहीं, कुछ एहसास होता है या नहीं। हालत अब बहुत शुद्ध अथवा साफ़ है। यह भी नहीं पता है कि शरीर चल रहा है या स्थिर है। मैंने भाई, दशा के लिये कुछ तो कहा है, परन्तु दशा यह है कि उसमें तो न कोई पर्दा है, न बंधन, न कुछ। बेनक़ाब दशा कह लीजिये। लगता है कि 'बाबूजी' की आत्मा में डूब गई हूँ, फैल गई हूँ।

भाई, लिखा तो करती हूँ कि मेरा यह स्वरूप हो गया है, वह हो गया है, परन्तु अब तो देखती हूँ कि स्वरूप तो ज्यों का त्यों ही है। अब तो भाई, बका ही बका रहती है, फ़ना कभी नहीं आती।

आपने कृपा करके मुझे J1 point पर खींच दिया, इसके लिये मैं किस मुख से आप को धन्यवाद दूँ। मैं तो इस योग्य भी नहीं हूँ। इति:

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-553

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 16.3.56

आशा है मेरा पत्र पहुँचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो दशा बिल्कुल Blank है। न यह है न वह है, तो भाई Blank दशा के लिये शब्द भी Blank है। पहले मैं एक सर्वव्यापक दशा के बारे में लिखा करती थी, परन्तु अब तो चाहे सर्व-व्यापक कहो, या कुछ, कुछ असर ही नहीं पड़ता। मैं यह देख रही हूँ कि न कोई रूप है, न रंग है, न चाल है, न ढाल है और न उसमें कोई सार है और न कोई रहस्य ही छुपा हुआ है। अब

तो यह दशा है कि शायद ईश्वर सर्वव्यापी भी नहीं है। करुणा, दया जो कुछ भी उसके लिये कहा जाता है, मैं तो देख रही हूँ, कि उसमें तो कुछ नहीं है। वह तो बिल्कुल Blank है। मुझे तो अब लगता है कि मेरे बाबूजी का कोई स्वरूप ही नहीं है, कोई नाम नहीं है। आत्मा वगैरह भी कुछ है नहीं, कुछ होती नहीं। मुझे तो लगता है कि शरीर का कण-कण Blank है। रीढ़ में केवल दो नालियों के अतिरिक्त अब लगता है, कुछ है ही नहीं, जो सिर तक चली गई है। लगता है कि सारी पेचीदगियाँ समाप्त हो गई हैं।

मुझे तो लगता है कि शरीर की बनावट की किल्ली उतर गई। अब तो मुझे इसकी बनावट भी एहसास में नहीं आती, बल्कि यह भी शुद्ध एक समान दशा में मिलकर बराबर हो गया है। अब तो यह दशा है कि पहले एक दिल था, जिसमें श्री बाबूजी विराजमान थे और वही उन्हें पुकारता था, परन्तु अब नहीं मालूम हर कण-कण ही दिल हो गया है और उन्हें पुकारने लगा है, परन्तु पुकार में आवाज नहीं है, पसीजन नहीं है। बस न जाने कहाँ मेरे कानों में सूखी पुकार 'बाबूजी', 'बाबूजी' की आया करती है। मुझे तो दिल का भी एहसास नहीं है। मैं देखती हूँ कि मैं नहीं पुकारती हूँ परन्तु न जाने कहाँ से 'श्रीबाबूजी', 'श्री बाबूजी' की पुकार मेरे कानों में आया करती है। सब ओर Blank ही मुझे लगता है, जहाँ न पुकार है, न कुछ गुहार है। कुछ ऐसा है, मेरी यह दशा है कि जिसके होने या न होने का प्रमाण मेरे पास कुछ नहीं है। इति:

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
सेविका कस्तूरी

पत्र संख्या-554

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 12.4.56

तुम्हारा पत्र मिला। उससे यह इतमिनान कर लिया कि तुम लोगों को वजह समझ में आ गई होगी, कि मैंने इतना खर्चा जन्मदिन पर करने के लिये क्यों मना किया है। वैसे अगर कोई दौलत लुटा दे तो मेरा कोई हर्ज नहीं मगर चूँकि तुम लोगों की तकलीफ़ रूपये की मुझको खल जाती है और एक तरह से फ़िक्र पैदा करती है, इसलिये सख्ती के साथ रोका गया। यह मिसाल तो यहाँ पर ठीक नहीं होगी, मगर मैं लिखे देता हूँ कि अगर कोई लड़का इस कदर ख़ैरात (दान) करने पर लग जावे कि माँ बाप को और दूसरे लोगों को उसकी वजह से तंगी हो जावे तो सोचो तो सही कि यह ख़ैरात कितना बड़ा पाप होगा। इसलिये कि इतने लोग जिसकी जिम्मेदारी उस लड़के पर है, इस ख़ैरात की वजह से तकलीफ उठावें। जिस रूपये पर दूसरों का हक़ हो, उसको दान-पुण्य में लगा देना बिल्कुल पाप है जबकि उतना खर्च कर देने से सबको तकलीफ़ होती है।

मेरे गुरू महाराज ने मुझे एक बहुत उम्दा बात बताई थी कि बुतपरस्ती या मूर्ति पूजन यही नहीं है कि पत्थर पूजा जावे, बल्कि किसी आदत का गुलाम हो जाना यह भी बुत-परस्ती है। दूसरे एक बात और है कि अगर हम अपने ही विचार की पूर्ति में रहते हैं और अगर उसके ख़िलाफ कोई बात पैदा होती है, तो धक्का लगता है। ऐसे लोगों को मन्मत कहते हैं। उसके लिये यह नहीं कहा जाता कि वह 'मालिक' की मौज में खुश हैं, अर्थात् उसको गुरू-मत नहीं कह सकते। अब इसमें कोई जितनी ही तरक्की कर ले, उतनी ही in-confirmity with the Lord कहा जाता है।

हमें तो वह बात करनी चाहिये जिससे 'मालिक' खुश रहे और इसी में हमारा काम बनता है और सम्बन्ध घना होता जाता है।

मुझमें भी बहुत सी बुरी आदतें होंगी। एक तो सुबह देर करके उठने की, दूसरे हुक्का पीने की और यह सब जानते हैं। और न मालूम क्या क्या होंगी, इसकी मुझे ख़बर नहीं। यह तो दूसरे ही लोग मुझे बतावें तो पता चल सकता है। एक नुक्स जो मैं कहे ही देता हूँ, यह है कि मैं Extremist जरूर हूँ। अगर रूहानी (आध्यात्मिक) Approach का ख्याल एकाग्रता में पड़ गया तो जब तक मैं वह चीज़ दे न लूँ, मुझे चैन नहीं आता। साथ ही उसके अगर कोई और बात मैंने Seriously ले ली और वह विचार की गहराई में पड़ गयी तो फिर उस वक्त सिवाय उस बात को करने के और किसी तरफ ख्याल नहीं जाता। इसलिये हर चीज़ मैं Lightly लेता हूँ, मगर कभी ऐसा भी हो जाता है कि वह विचार की गहराई में पड़ जाती है। चुनांचे इस case में जो तुम्हारे सामने है, ऐसा ही हुआ और उसका Explanation तुम्हारे ख़त में उस वक्त आया जबकि तीर कमान से निकल चुका था। अब तुम हिरासा मत हो। मैंने यह कुल मामला तुम्हारे ही ऊपर छोड़ दिया है, इसलिए तुम चाहे खर्च करो 5 रूपया या उससे ज्यादा, मुझे एतराज नहीं, मगर यह मजबूरी जरूर पड़ गई है कि मेरा ख्याल कुछ इस तौर पर अटक गया है कि जिससे यह हो सकता है कि जन्म-दिन पर फ़ैज कुछ बँधा रहे और इसी के लिये मैंने तुमको लिखा था कि तुम लोग इसके लिये "लालाजी" से प्रार्थना करो कि वह बँधाव हट जावे। मैंने भी प्रार्थना की है और करूँगा भी मगर अभी तक पूरी तौर से नहीं हटा है। हुकुम यही है कि जन्मदिन मनाया जावे, इसलिए मजबूरी पड़ गई, वरना मैं तुम सबको इसके लिये मना कर देता।

मेरे दिल में एक विचार और पैदा हुआ कि समय वह अब नहीं रहा कि जब शिष्य गुरू को Submit करते थे, इसलिये जमाने की रफ्तार देखकर इस बात को यूं होना चाहिये कि गुरू खुद शिष्य को Submit करे और यह विचार मेरा अभी तक बंधा हुआ है। अब लालाजी साहब से इसकी रोशनी लेकर इस तरीक को बदलना चाहता हूँ, इसीलिये मैंने चौबेजी से और अम्मा से क्षमा मांगी है। मेरी समझ से यह चीजें अच्छी है, अगर लालाजी पसन्द करें। चौबेजी से पूछना कि इस मामले में उनकी क्या राय है और मास्टर साहब से भी। मैं तुम्हें यह भी इत्मिनान दिलाता हूँ कि मैं किसी से भी नाखुश नहीं हूँ। एक बात थी जो भन्नाटे में पड़कर जोर पकड़ गई और मैं कर गुजरा जिसका मुझे ख्याल भी है।

चौबेजी और अम्मा को प्रणाम और तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-555

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 21.3.56

आशा है मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सब अच्छी तरह से हैं। आशा है आप भी अच्छी तरह से होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि मैं हर कण-कण लिखती हूँ, परन्तु मुझे कण-कण का एहसास नहीं होता। अब तो यह दशा है कि न कभी पैदा हुई न हूँ, न होऊंगी। नहाना, खाना, रूप, रस, गंध, स्पर्श ये सब कभी मानों होते ही नहीं। जैसे नहाती जाती हूँ, परन्तु पानी का मुझे स्पर्श ही नहीं होता। वायु का कभी स्पर्श नहीं होता। साँस लेने की क्रिया तो चालू रहती है, परन्तु साँस मुझ तक कभी पहुँचती ही नहीं। न जाने हूँ, न जाने नहीं हूँ। यही नहीं, यही हाल मुझे सबका लगता है। कुछ अब ऐसी भूल की सी दशा रहती है कि जो न इधर की है, न उधर की। कुछ खबर ही नहीं रहती है। मैंने पिछले पत्र में Blank दशा लिखी है, परन्तु अब तो देख रही हूँ कि मैं तो उसे भी भूल गई हूँ। Blankness का मुझे अन्दाज़ ही अब कभी होता नहीं। लगता है कि वह खुला मैदान ओझल होते-होते अब मुझे पता नहीं अब मैं कहाँ चली गई। बिल्कुल नम्र सी दशा है। मुझे लगता है कि सिर के पीछे फैलाव सा हो गया है और उसमें वही दशा फैली है, जो बड़ी ही हल्की हल्की सी अब मेरी है। किन्तु देखती हूँ कि उसके भीतर-भीतर दशा फैली है, परन्तु उसका जैसे द्वार अभी नहीं खुला है। दशा जरूर उसमें बाहर भी फैल रही है।

भाई मैं अपनी दशा क्या लिखूँ। सूखी ठठरियों में रस निचोड़ रही हूँ। फिर भला सूखी ठठरियों की दशा क्या लिखूँ। अब तो यह दशा है कि न दुई है, न एकता की ही अनुभूति कभी होती है। मेरे लिये तो यह समान ही हो गई है। किन्तु अब इन सूखी ठठरियों में रस नहीं, केवल 'मालिक' ख्याल में रस या तरी की फ़ायदे देता है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती है। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-556

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 29.3.56

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। आशा है 'आप' की तबियत अब ठीक होगी। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो मैं देख रही हूँ कि मेरी सैरगाह का वह स्थान है कि जहाँ पर "पना" की गुंजाइश ही नहीं है। यहाँ तक कि खाली या शून्य या सूनी दशा, जो मैं लिखती हूँ, उसने "पना" लगाते ही दशा भद्दी या भारी सी हो उठती है। अब तो भीतर-बाहर, कण-कण में, कुल शरीर तक के ज़र्रे-ज़र्रे में एक अजीब नम्र सी दशा बसी हुई है। शरीर तो मैंने लिखने को लिख दिया है, वरना कुल एक यही Atmosphere ही हो गया है। शरीर तो Atmosphere में या हवा में ही मिल गया है ऐसा कि कुल दशा का अब Atmosphere ही मुझे एहसास में आ पाता है, बस अन्य कुछ नहीं। यद्यपि दशा के लिये तो Atmosphere भी कहना ठीक नहीं, क्योंकि मैं यदि चाहे दशा को ही Atmosphere कहूँ तो एक ऐसा दबाव सा लगता है, जो साँस न आवे, परन्तु मेरी तो दशा ऐसी है कि उसके लिये केवल दशा ही कहती हूँ और कुछ नहीं।

मेरी तो दशा यह है कि कोई Atmosphere मुझे कभी एहसास में ही नहीं आ पाता है न जाने क्या बात है कि तबियत में activity रह ही नहीं गई है। यही नहीं, बल्कि मेरा स्वरूप ही बिल्कुल inactive हो गया है। शायद इसीलिये मुझे तो अब सदैव यह भी पता नहीं रहता कि Active या Inactive होता क्या है। यद्यपि मेरी तबियत न उदास ही है, न एकान्त ही चाहता है, न कुछ लेकिन जब बिल्कुल ही inactive हो गई है, तो ऊपर मुझसे active पना लाया नहीं जाता। इसलिये न मैं स्वभाव की गंभीरता ही बदल सकती हूँ, क्योंकि मुझे कुछ चाह ही नहीं होती। स्वभाव भी बिल्कुल inactive हो गया है। अब तो दशा न एक समान है, न कुछ। दशा के लिये अब तो कुछ कहना या कुछ न कहना बिल्कुल व्यर्थ या समान है। न जाने मेरी क्या दशा है कि जो मैंने Inactive लिखी है। यह भी पता नहीं है कि बोलती हूँ या चुप रहती हूँ न कहीं आवाज़ है, न शब्द, कुछ नहीं लगता। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री - कस्तूरी

पत्र संख्या-557

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 11.4.56

पूज्य मास्टर साहबजी से 'आप' सब की कुशलता के समाचार ज्ञात हुए। 'आप' को दौरा करीब घंटे भर सुबह और शाम हो ही आता है। ईश्वर शीघ्र ही इसे अच्छा कर दे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो यह दशा है कि मुझे लगता है कि न कोई है, न कुछ था। मैं भी नहीं हूँ, कोई भी नहीं है। न आवागमन का आन्दोलन ही है, न शान्ति की शीतलता। अब जो भी हो, कुछ कह नहीं सकती, क्योंकि मैं तो अब यह देख रही हूँ कि अब जो कुछ भी है, वह केवल कुछ नहीं को 'है' मानकर ही कुछ कहा जा सकता है। या यों कह लीजिये कि जब मैं दशा के लिये कुछ कहती हूँ, तो भी दशा को ज्यों का त्यों ही पाती हूँ। मेरी तो भाई, यह दशा है कि बनना, बिगड़ना मुझे कुछ एहसास नहीं होता। मुझे तो किसी ने नहीं बनाया है, तो फिर बिगड़ेगा क्या। भाई, अपनी दशा के क्षेत्र को No word कहना ही ठीक होगा, फिर कुछ नहीं रहता कहने को।

भाई, मेरी तो अब यह दशा है कि बीज भी नाश हो गया है। मेरा अंतर क्या है, लगता है ऐसी पृथ्वी जिस पर कभी बीज भी न डाला गया हो। ऊसर हृदय है, ऊसर दशा है। मुझे तो ऐसा लगता है, सब कुछ ज्यों का त्यों है। मुझे तो जाने क्या हो गया है कि स्थिरता जो हर समय, हर चीज़ ज्यों की त्यों स्थिर लगती थी, अब तो मुझे स्थिरता का जैसे कुछ अर्थ ही नहीं प्रतीत होता है और न कुछ। जो मैं सब कुछ ज्यों की त्यों लिखा करती थी, वह भी कुछ नहीं मालूम पड़ता। मेरा तो यह हाल है कि मुझे कुछ नहीं मालूम पड़ता, कोई चीज़ नहीं मालूम पड़ती है परन्तु अब तो यह भी स्मरण नहीं रहता कि कुछ नहीं मालूम पड़ता और न यह हाल है कि कुछ मालूम पड़ता है। मेरी दशा तो अब ऐसी हो गई है कि उसमें एक शून्य तक को गुंजाइश नहीं। शून्य कहती हूँ तो वह भी ऊपर ही छलकने लगता है, अलग चीज़ हो जाती है परन्तु

हालत तो बस हालत है। मैं और बात नहीं जानती। मेरी तो यह दशा है कि मुझमें अब लगता है कि Creative Power ही नहीं रह गई है। यह तक नहीं कि मैं इसकी कोशिश कर सकूँ कि 'मालिक' की मौज में मेरी मौज रहे। हाँ, यह अवश्य देख रही हूँ कि इतनी कृपा श्री बाबूजी की इसमें है कि यदि मुझमें कोशिश करने का ताव नहीं रह गया है, तो तबियत को लगाम भी 'आपने' ऐसी रखी कि उसे 'उसकी' तबियत के ऊपर न आने दिया। मुझमें तो अब न बनने की शक्ति रह गई है, न मिटने की और कुछ ऐसा देख रही हूँ कि जब शक्ति नहीं रह गई है तो अशक्ति का भी पता नहीं चलता है। न जाने यह क्या बात है कि हर शख्स मुझे अपने से बलवान लगता है। (आत्मिक मामले में भी) तो शायद सबसे तबियत में कुछ दबी सी होती है, परन्तु जब भाषण या वैसे भी आध्यात्मिक विषय पर बात करने लग जाती हूँ, फिर तो मुझे लगता है कि मैं मानो Master हूँ या कहिये कि उस समय दशा में Mastery आ जाती है। परन्तु बाद में फिर कुछ नहीं। हाँ, 'मालिक' के प्रेम की प्यासी रहती हूँ, चाहे भीतर छुपे तौर पर या कैसे, यह मुझे पता नहीं है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आप की ही स्नेह सिक्त
सेविका कस्तूरी

पत्र संख्या-558

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 13.4.56

इससे पहले मैं एक लिफाफा डाल चुका हूँ। उसके बाद तुम्हारा ख़त 11.4.56 का प्राप्त हुआ। इसका जवाब मैं इससे पहले ख़त में लिख चुका हूँ कि मैं चौबेजी से या अम्मा से नाखुश नहीं हूँ और नाख़ुश होने का सवाल ही क्या? मैं तो सिर्फ एक रिवाज़ और खर्च को कम करना चाहता था। मास्टर साहब ख़ुद भी नहीं समझे, इसलिये तुमसे ऐसा कह दिया। इसको कि मैं इसके पहले ख़त में मैं लिख चुका हूँ, मतलब यह है कि कहने का असर कि रहमत बरसेगी, जो कुछ थोड़ा बहुत हो गया हो, उसकी दुआ की जरूरत है अर्थात् यह असर साफ़ आ जावे, अगर 5 रूपया से ज्यादा खर्च हो तो। इसलिये लालाजी से यह प्रार्थना करनी चाहिये कि मेरा दिल इस विचार से साफ़ हो जावे। यह सब बातें इससे पहले ख़त में मैं साफ कर चुका हूँ और तुम बिल्कुल परेशान मत हो। पिछले ख़त को गौर से पढ़ना, चित्त तुम्हारा साफ़ हो जायेगा फिर भी कोई बात रह जावे तो मुझसे पूछ लेना। मैं भी आखिर इन्सान हूँ, तो यही समझ लो कि इसी हैसियत से मैं इतना तेज कह भागा।

चौबेजी और अम्मा को प्रणाम और तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-559

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 16.4.56

कृपा-पत्र आप का कल आया। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि 'मालिक' से मेरा आंतरिक या अंतरिक्ष सम्बन्ध लगा करता था, परन्तु अब तो जिधर देखती हूँ, न तोड़ने का एहसास होता है, न जुड़ने का। बस एक समान दशा ही व्याप्त है। दशा भी इतनी हल्की कि बस कहने भर को, वरना उसमें जान नहीं है। शायद इसीलिये मैं देख रही हूँ कि विचार काम व बुद्धि भी हालत से मिले-जुले ही रहते हैं, या दशा में लय हो चुके हैं। इसीलिये मुझे इनका एहसास ही कभी नहीं होता। अब तो ऐसी दशा रहती है कि कोई हालत भी मेरे एहसास में नहीं रहती है और न अन्दाज़ में रहती है। और यह भी पता नहीं कि आखिर तबियत रहती कैसी है? अब तो न बूँद है, न सागर है। यहाँ तो प्रारम्भ या समाप्त का प्रश्न नहीं। अब तो यह दशा है कि जहाँ कभी तनिक क्षोभ का भी प्रश्न नहीं उठ सका है। इसलिये स्पन्दन या Vibration के प्रश्न का प्रश्न ही उठ सकता है। अब दशा यह है कि एहसास भी बोझिल हो जाता है। मुझे तो अब यह लगता है कि बका या तुरिया कहना भी हालत में शून्य (डाट) के समान ऊपरी और अलग चीज़ हो जाती है, जो मेरी हालत से मेल नहीं खाती और भाई, बक़ा आवे कहाँ से, जब फ़ना ही नहीं है, और फ़ना भी कहाँ से आवे, जब कुछ है ही नहीं या जब यह ही पता नहीं कि तबियत रहती कैसी है। दशा तो अब यह है कि मुट्ठी बन्द करिये तो भी खाली की खाली रहती है। मैं हाल लिखती हूँ, तो भी यह पता नहीं कि तबियत कैसी रहती है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही चरण सेविका

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-560

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 22.4.56

पूज्य मास्टर साहबजी से 'आप' का समाचार मिला। 'आप' के पेट के दर्द का हाल सुनकर सबको चिन्ता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि जल्दी से जल्दी दर्द ठीक हो जाये। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

कल रात को 9 या $9^1/_2$ बजे जब प्रार्थना के बाद सबको पूजा करवा रही थी, तो कल कुछ मुझमें बहुत अजीब बात हुई। यद्यपि मैं कह नहीं सकती कि क्या हुआ। शायद J 1 से ऊपर खींच दिया हो। श्री बाबूजी ने तो भी नहीं कह सकती हूँ और आज यह लगता है कि मानों (अपनी) हालत भी हाथ से निकल गई है और अब ऐसा हाल है कि जैसे खाली बैठे आदमी को यह पता न रहे कि वह खाली बैठा है। लगता है कि मानों जैसे अब कुछ काम ही न रह गया हो। काम घर का सब बराबर कर रही हूं, परन्तु दशा यही है कि जैसे कुछ काम ही नहीं रह गया हो। न

जाने क्या बात है कि पूजा करती भी हूँ, कराती भी हूँ, बात भी करती हूँ, परन्तु तो भी रात-दिन कभी भी, अब तो हल्कापन भी कभी आता नहीं। आज तो मुझे लगता है कि केवल point नहीं, बल्कि जैसे कोई Region का Region एकदम से गटक गया हो, हज़्म हो गया हो और फिर बाद में आज कुछ इसका भी पता ही न हो (रहे)। खाली तबियत अथवा सूनी तबियत जो लिखा करती थी, उसका तो मैदान ही मानों भटक गया हो। सारा पसारा या फैलाव या मनन शक्ति या हालत तथा अंतर-बाहर, मुझे तो जैसे सब कुछ गटक गया हो।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही चरण सेविका
पुत्री - कस्तूरी

पत्र संख्या-561

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 30.4.56

एक पत्र लिख चुकी हूँ। आशा है आप सब वहां अच्छी तरह से होंगे। आप का कोई पत्र अभी तक नहीं मिला, शायद आप और जरूरी काम से Busy होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि पहले, अब तक मैं देखती थी कि मेरे ख़्याल में मेरे श्री बाबूजी के आकार का एक अक्स सा बना रहता था। यद्यपि इधर धीरे-धीरे मुझे ख़्याल में वह आकार का अक्स भी इतना कम अनुभव में आ पाता था, परन्तु मैं पकड़े थी। किसी न किसी तरह जब भी ख़्याल में कुछ हरक़त आती थी, तब मेरा पहला ख़्याल उसी आकार को टटोलता था, तो बहुत ही धुँधला सा, सो भी भूल-भूल कर आता था, परन्तु अब तो लगता है कि जैसे किसी ने बिल्कुल धो दिया हो। जब ख़्याल में नहीं है तो conception तक नहीं बँध पाता है और अब तो भाई, न ख़्याल में जान है और conception खाली है तो फिर अब तो लगता है कि सब Beyond Conception है, नहीं, बल्कि न यह पता है कि कुछ है और न यह होश है कि कुछ नहीं है। मेरी तो यह दशा है कि ख़्याल का भी ख़्याल मुझे रहता ही नहीं है। शायद इसीलिये 'मालिक' के आकार की कल्पना करती हूँ परन्तु वह भी तो नहीं, अब नहीं कर पाती हूँ। कल्पना जब बँधती नहीं तो दृष्टि भला उसे देखेगी क्या, बुद्धि समझेगी क्या और अक्स भी क्या रह सकेगा। मेरा तो यह हाल है कि न तो जीवित में ही हूँ, न मुर्दा में ही हूँ। पता नहीं आप को पत्र कौन लिखता है, किसको लिखता है और लिखकर भी मुझे कागज़ कोरा का कोरा ही लगता है। मुझे तो पता नहीं कि मन कहाँ चला गया और कौन ले गया। कभी था भी, या नहीं, कुछ पता नहीं। क्या करूँ? मेरी तृप्ति भी नहीं है और प्यास का भी एहसास नहीं कर पाती हूँ।

पूज्य मास्टर साहब को मेरा प्रणाम कह दीजिएगा। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आप की ही स्नेह सिक्ता
सेविका-कस्तूरी

पत्र संख्या-562

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम! 2.5.56

आशा है, 'आपकी' तबियत ठीक होगी। मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मुझे तो लगता है कि मानों मैं अब तक एक स्वप्न सा देख रही थी, जिसका Impression मेरे दिमाग़ में भी कुछ याद नहीं पड़ता। वह स्वप्न भी जैसे अब समाप्त हो गया। हालत क्या, बल्कि हालत का मानो एक स्वप्न सा था, जो एकदम समाप्त हो गया। अब तो मुझे कुछ भी याद नहीं पड़ता। मानों अब तक स्वप्न में विचर रही थी और वह एकदम से मुझमें सटक गया, मेरे में हज़्म हो गया। अब तो यह दशा है कि जैसे कुल संसार या शक्ति किसी के पेट में हो, परन्तु उसे कुछ इसका गुमान तक न हो। अब न जाने यह क्या बात हो गई है कि जब किसी को पूजा करवाती हूँ या कोई और Work करती हूँ, बल्कि ऐसा लगता है कि मानों 'मालिक' के पास से इच्छा शक्ति उस समय आ जाती है और बाद में मुझे फिर कुछ ख़बर नहीं रहती। वह इच्छा शक्ति शायद फिर 'मालिक' के पास ही वापिस लौट जाती है। मानों कोई सब चीज़ बेचकर 'मालिक' का गुलाम हो जावे, तो वह समय पर उसे सामान दे देता है, फिर कुछ नहीं। किन्तु यह देखती हूँ कि गुलाम को कभी इसका गुमान तक होता कि कोई चीज़ उसकी है। यहाँ तक कि उसे तो गुलामी तक का भी कभी ख़्याल या होश नहीं आता है। गुलामी भी चीज़ 'मालिक' की ही हो जाती है। यह और बात है कि यदि मर्ज़ी हो तो 'वह' कभी उसका एहसास-मात्र भर करा देवे, परन्तु तो भी देखती हूँ कि चीज़ 'मालिक' की ही रहती है। बस इतना समझ लीजिये कि केवल शरीर-मात्र भर गुलामी का चिन्ह गुलाम के पास रह जाता है जिससे 'उसी' की सेवा होती है किन्तु फिर भी न जाने क्यों सेवकाई में भी सेवक का भाव 'मालिक' कभी पास भी नहीं फटकने देता। यही बस मेरी दशा है।

जो कुछ है का ख़्याल आता है, तो लगता है कि 'मालिक' सामने है और 'उसी' के पास रखा है। यहाँ तक कि अंतर का तो सवाल ही क्या, शरीर तक का उससे कोई सम्बन्ध हो नहीं होता। कुछ ऐसी दशा है कि 'मालिक' की मर्ज़ी पर छोड़ने का भाव नहीं आता बल्कि मालिक ही वास्तव में काम लेता है। कस्तूरी तो वास्तव में संसार के लिये जैसे केवल एक फोटो मात्र भर है, जिसमें संसारी लोग उसे देखते हैं और पहिचानते हैं। कस्तूरी को तो उस फोटो की भी याद नहीं। कस्तूरी तो 'मालिक' के अंतरिक्ष में विलीन हो गई और यह हाल है कि अंतर में पूछती हूँ तो Inner Voice कोई उत्तर नहीं देती और फिर जवाब कौन दे, जब कि Inner कुछ है ही नहीं। जो है, वह बस बाहर ही बाहर (शरीर मात्र) भर है।

मेरा तो यह हाल है कि लगता है कि 'मालिक' का अंतरिक्ष ही मैं सटक गई हूँ, या अंतरिक्ष-गति ही न जाने क्या हुआ कि मुझे तब कुछ पता न चला, एकदम से मानों गले के नीचे सटक गई। अब कुछ हो नहीं सकता और भाई, यह भी पता नहीं 'मालिक' के गले से मेरा अंतरिक्ष ही सटक गया हो। अब तो कुछ ख़बर नहीं। अब तो बस वह मेरा Centre हो गया है। इच्छा-शक्ति भी जब और जितनी वह दे देता, काम हो जाता है और बाद में कुछ पता नहीं रहता।

सच तो यह है कि काम करने का भी होश नहीं, मानो मेरा 'मालिक' अपने Centre (मेरे शरीर) द्वारा सब कर देता है। अब तो देखती हूँ कि पूजा करवाते समय मेरा शरीर भी Medium नहीं रहता बल्कि Direct श्री बाबूजी से ही रहता है। शरीर का तो यह हाल है कि अपना हाथ पकड़ती हूँ तो भी यह एहसास ही नहीं होता कि कुछ पकड़े हूँ, तो फिर अपने का ही भला क्या हो सकता है।

अब तो हालत, बेहालत हो गई है। मैं देखती हूँ कि श्री बाबूजी अक्सर मुझे लिखा करते थे कि जो हालत उस असल हालत की वज़ह से होती है, उसे तुम अच्छा Express कर ले जाती हो, परन्तु मेरा तो अब यह हाल है कि असल ही नहीं दीखता तो उसकी वजह से क्या होगा।

अब तो अजीब दशा है कि न कुछ लक्ष्य है, न उद्देश्य है, न बेचैनी है, फिर भी चैन नहीं है। न दिल है, तो फिर दर्द कहाँ उठे। अंतर तो लुट गया। दिन भर खाली बीतता है, उसमें यह बेख़बरी कि जैसे कोई सोता जागता आदमी हो, नहीं। नहीं, बल्कि ऐसा, जिसे न कभी सोना है और न कभी जागना है। कुल शरीर में Vibration बना ही रहता है। कुल शरीर तक क्या है, लगता है, जैसे हवा का दबाव भी जहाँ समाप्त हो चुका है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आप की ही स्नेह भिक्षा
सेविका- कस्तूरी

पत्र संख्या-563

प्रिय बेटी कस्तूरी — लखीमपुर
खुश रहो! — 7.5.56

पत्र मिला। जबाब देना अब खतों का मुश्किल पड़ रहा है। इसलिये कि बड़ी Deep Thinking की जरूरत पड़ती है। मगर आजकल कई दिन से तवज्जोह मैं तुम्हें अक्सर दे रहा हूँ। कुछ ठहरने के बाद जब अपना काम पूरा कर लूँगा तब लिखने की कोशिश करूँगा।

अम्मा को प्रणाम और सब छोटों को प्यार।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-564

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 7.5.56

मेरा एक पत्र आपको मिला होगा। बहुत दिनों से आप का कृपा पत्र न आने के कारण परेशानी अवश्य हो जाती है। जाने क्यों, मुझे बिना आप के पत्र के धीरज नहीं हो पाता है। 'मालिक' की [illegible]ा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मुझे य[illegible] कि कई पत्रों में आपने लिखा कि तुममें उस असल जिन्दगी की शुरूआत

हो चुकी है, मगर मेरी तो (अब यह) दशा कहती है कि उस असल ज़िन्दगी में भी ज़िन्दगी नहीं रही। अब तो न ज़िन्दगी है, न मौत है, या यों कह लीजिये कि जैसे सोये हुए को सोने का एहसास हो नहीं है। अब न जाने क्या हो गया कि सिर के पीछे लगता है कि कुल सिर बिल्कुल हल्का, खाली-खाली हो गया है। कुल सिर और कुल शरीर भर में आगे पीछे सब एक ऐसी नरम सी, मुलायम सी दशा व्याप्त रहती है कि यदि हल्कापन कहा जावे तो उससे हज़ारों गुणा भारी पड़ेगा। मुझे कुछ यह भी लगता है कि बाँये पैर के अंगूठे के द्वारा कोई दशा या कोई चीज़ मेरे कुल शरीर में व्याप्त हुआ करती है। इसके अलावा इसके द्वारा मुझे लगता है कि मानों कुल शरीर में Vibration सा भी बना रहता है। लगता है कि कुल सिर का पिछला भाग भी गल-गला कर सब कुछ एक समान हो गया है। बाँये अँगूठे के पास वाली उँगली में भी एक प्रकार की रेंगन सी या Vibration सा रहता है।

अब तो ऐसा लगता है कि मानों कोई मेरी बागडोर को और अधिक कसकर खींचे रहता है और मैं शायद इसीलिये टीसन, मानों मेरा एक अंग ही बन चुकी है। मेरे लिये तो भाई, ख़्याल और बेख़्याल तबियत किसी का कोई अर्थ ही नहीं रह गया है। खाली का भी मेरेलिये कोई अर्थ नहीं रह गया है, न Zero, न कुछ नहीं। मुझे तो अपने लिये अब न जाने क्यों सब कुछ बेकार हो गया लगता है, जिसका कोई अर्थ नहीं रह गया है। मेरी तो कुछ यह दशा है कि देखती हूँ कि जब चाहती हूँ तो दिमाग़ में भजन इत्यादि तुरन्त आने लगते हैं और जब चाहती हूँ कहानी या लेख लिखने लगती हूँ, परन्तु न जाने क्या बात है कि कुछ लिखने बैठती ही नहीं हूँ। कभी तबियत ही नहीं होती।

मेरा तो यह हाल है कि मुझे न सिर की अनुभूति है, न पैर की, न हृदय, न पीठ की, न हाथ की। मेरे लिये तो सब कुछ एक समान ही है। बाँये पैर के अँगूठे की नस, सिर के पिछले भाग में लगता है, जुड़ी हुई है। यह शरीर तो ऐसा हो गया है, मानों किसी ग़ैर का हो और उसकी भी याद न रहे। इसमें भाई, कुछ बोझ ही नहीं है, क्योंकि लगता है इसमें न कोई अवयव है, न हड्डी, न माँस, न रक्त, न खाल। यही नहीं, बल्कि न आकार है, न कोई स्व है, न रूप है, न रंग है। शरीर तो मानों हवा हो गया है। (रात मे मुझे अब यह भी नहीं लगता है कि मेरा शरीर सो रहा है, या यह कौन है, क्या है, कोई एहसास ही नहीं होता। यह तो मानों ग़ैर की चीज़ है) और मुझे न जाने क्या हो गया है कि मुझे न सोने का मज़ा याद आता है, न जागने का मज़ा याद आता है। जब देखती हूँ कि अपना ही शरीर सो रहा है, किन्तु तब भी सोने का मज़ा याद में नहीं आता। न पूजा का मज़ा याद है, न ध्यान का, न 'उसकी' याद का। ऐसा लगता है कि जैसे कभी कुछ हुआ ही नहीं, यह हाल है।

भूत, भविष्य तथा वर्तमान मेरे लिये, किसी का, अब कुछ अर्थ नहीं है। मेरा तो यह हाल है कि मुझे चाहे कोई दुनिया की ओर घसीट ले, चाहे ईश्वर को याद दिलाये, मेरे ऊपर मानों कुछ असर ही नहीं पड़ता। मैं तो जगह को जगह पर हूँ, किन्तु जगह या ठिकाने की भी याद नहीं है। क्या कहूँ, क्या न कहूँ। 'मालिक' बचाये रखना मुझे दीन-दुनिया, किसी की भी तमीज़ नहीं है। भले-बुरे की भी तमीज़ नहीं। मेरी तो यह दशा है कि सोती भी रहती हूँ और इधर-उधर की बातें भी कान में सुनाई पड़ा करती है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है और केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
पुत्री - कस्तूरी

पत्र संख्या-565

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 15.5.56

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आप की तबियत केसर के पत्र से मालूम हुआ कि खराब है, परन्तु आप ने मुझे नहीं लिखा। कृपया अपनी तबियत का हाल शीघ्र दीजियेगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

पूज्य मास्टर साहब जी कहते हैं कि तुम्हें श्री बाबूजी पर तेजी आई, किन्तु मुझे Past की कुछ याद ही नहीं आती और न जाने क्यों अब यह शब्द सुनना भी मुझे बर्दाश्त नहीं होता है। लगता है कि मानों दिल पर कोई चोट कर रहा है, परन्तु यह 'मालिक' की कृपा है कि उसका मुलायम सा हाथ फेरते ही वह चोट तुरन्त ऐसी साफ़ भी हो जाती है कि फिर मुझे कुछ पता ही नहीं रहता है।

भाई, अब तो लगता है कि पहले मैं लिखा करती थी कि मेरा हर कण-कण मानों स्थिरता का स्वरूप ही हो गया है, परन्तु अब तो दशा में न अस्थिरता का पता है और न ही स्थिरता का ही एहसास है। तबियत इन दोनों से भी खाली या उपराम हो गई लगती है। तबियत को एक समान या सतह सी कहने में कुछ अर्थ नहीं होता है। अब तो बिल्कुल ख़ाली दशा रहती है, परन्तु ख़ालीपन नहीं लगता है। मैं देखती हूँ कि कोई भी बात मैं मन में रोक ही नहीं पाती हूँ। सबके सामने जैसी बात होती है, वैसी ही निकल जाती है, छिपती नहीं है और दूसरे confirmity है। तेजी यह है कि जो बात आती है मन में, वह तड़ाक से निकल जाती है। न जाने क्यों अब तो यह भी पता या एहसास नहीं होता कि मेरी बागडोर किसी के हाथों में है और अपने ही वश में हूँ। इसीलिये अब तो यहाँ तक होता है कि अब न तो चैन में ही हूँ और न जाने क्यों बेचैन भी हो नहीं पाती। मेरे दिल में तो अब न कसक है, न टीसन है, मुझे कुछ एहसास नहीं होता है। अब तो चाहे समझ उतनी न हो, किन्तु लगता है कि मैं तो पूरी दुनियादार हो गई हूँ। कभी 'मालिक' की याद नहीं आती। उद्देश्य का भी पता नहीं। क्या कर रही हूँ या क्या करना है, कुछ पता नहीं है। क्या हो रहा है, या क्या हो, कुछ मालूम नहीं। न ऊपर हूँ, न नीचे हूँ, न यहाँ हूं, न वहाँ हूँ, न बनावट है, न असल है, न किसी Point के अन्दर हूँ, न बाहर हूँ। मुझे न जाने क्या हो गया है। क्या खोजती हूँ, कुछ पता नहीं। कुछ पास है नहीं। 'मालिक' भी कहीं छुप गया है। दिल में दर्द है, पता नहीं। हाथ, पैर, सिर, किसी की तमीज नहीं, कि कहाँ दर्द है, कहाँ पीर है। क्या चाहिये, कुछ होश नहीं है। बस, काम दिन भर ही कुछ न कुछ करती हूँ,परन्तु न तो 'मालिक' का ही करती हूँ, न दुनिया का करती हूँ। अब कुल अँधेरा ही अँधेरा है। भीतर बाहर कुल अँधेरा ही फैला है। परन्तु यह अँधेरा भी ऐसा

है, जिसमें उजेला है नहीं और मुझे अँधेरा का भी एहसास नहीं होता है। अब तो न जाने क्या कुछ ऐसा हो गया है कि ऐसा लगता है कि न तो हालत से अलग ही रहती हूँ और न अब हर समय चिमटे रहने का ही एहसास होता है। कुछ यह दशा है कि तेज़ी भी एकदम से आ जाती है, तो भी मुझे कुछ पता नहीं रहता है। मुझे कोई बात बुरी लगती है, इसका भी पता नहीं रहता। कोई बात अच्छी लगती है न इसका ही कुछ पता लगता है।

अब तो भाई, मैं नहीं समझ सकती कि मैं सीधी हूँ या टेढ़ी हूँ। फिर मैं अपने को सुधारूँ क्या? मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है। 'मालिक' आप ही मुझे सुधार लें।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-566

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी | लखीमपुर
सादर प्रणाम! | 19.5.56

मेरा पत्र मिला होगा। मास्टर साहब जी भी वहाँ पहुँच गये होंगे। आशा है, 'आप' स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरा तो यह [illegible] है कि कभी जुनून या पागलपन या बेचैनी आने ही नहीं पाती, लेकिन मैं देखती हूँ कि जब यह था, तब मन में कुछ बंधन सा था, परन्तु अब न मन है, न आराम है, न शक्ति है और न अशक्ति है। मेरे लिये तो ये दोनों बराबर हैं। यही नहीं, बल्कि यदि कहीं कुछ बंधन है, तो वैसा नहीं है। स्वतंत्रता या बंधन, मेरे लिये दोनों समान हैं। मेरे लिये प्रेम या नि:प्रेम दोनों बराबर हैं। हाय! क्या कभी 'मालिक' से प्रेम कर सकूँगी। अब तो देखती हूँ कि शायद बेचैनी की Limit, Limitation टूट कर एक समान सतह सी हो गई है। एकता या दुई, ये दोनों हालत मेरे लिये एक साँ है। अब तो मेरा हर कण-कण, भीतर-बाहर, सब बेचैन है, परन्तु मैं क्या कहूँ। मेरी हालत तो ऐसी है कि मेरे लिये तो मानों चैन और बेचैनी एक हो गये हैं। कसक कहना भी हालत से भारी बैठता है। यदि मैं हाय कहती हूँ तो मानों हर कण-कण, हाय-हाय कर उठता है और यदि मौन रहती हूँ तो हर कण-कण मौन हो जाता है। परन्तु मेरा यह हाल है कि मैं तो अब दोनों में से कुछ भी नहीं कर पाती हूँ। मैं तो देखती हूँ कि 'बाबूजी'-'बाबूजी' तो मेरे लिये महामंत्र होकर स्वत: ही मेरे प्राणों में रम गया है और मेरे ही क्या, जहाँ भी सुनती हूँ, हर आवाज़, जड़ में हो या चेतन में हो, मूक हो या बुलन्द हो, सब 'बाबूजी'-'बाबूजी' की आवाज़ स्वत: ही मेरे अन्दर पहुँचाया करते हैं।

समझ में नहीं आता, क्या करूँ? रोके से भी रुकती नहीं। कहीं भी भागकर छिप जाती हूँ, परन्तु यह आवाज़ पीछा नहीं छोड़ती है। कहीं दर्द होता है तो, बजाय कराह या हाय के स्वत: ही 'बाबूजी'-'बाबूजी' आवाज़ आती है, जिससे मेरा वह दर्द तो कम पड़ जाता है, परन्तु दर्द के इस दर्द का इलाज नहीं। यह दर्द तेज़ी पर भी जाने मेरी आत्मा इसे तेज़ी पर भी आने नहीं देती और आ भी सकता नहीं, क्योंकि भण्डा फूट गया है। आये भी तो कहाँ से। एक फूटे खोल

में भला हवा कहाँ टिक सकती है। 'मालिक' भी कहीं मिलता नहीं, जो अपनी दास्तान 'उसे' सुना दूँ। परन्तु अब तो यह हाल है कि अपने में तो दिल की धड़कन भी नहीं होती, जो 'बाबूजी' का नाम ही सुना दे, 'उनका' स्मरण दिला दे और न जाने क्यों बाहर भी कभी मानों कोई आवाज़ नहीं होती, जो मेरे कानों में पहुँचकर मुझे 'उसकी' याद दिला दे। जाने दुनिया में आवाज़ या ध्वनि ही समाप्त हो गई है या मेरे ही कानों का पर्दा फूट गया है, नहीं तो कभी तो कोई खटक पहुँचती ही।

क्या मुझे अब कभी भी कोई 'मालिक' का स्मरण न दिला सकेगा। मुझे ऐसा लगता है कि ध्वनि तो न कभी थी, न है, फिर आये कहाँ से। मैं तो यही रास्ता देखती हूँ कि शायद कभी 'वही' मुझे याद कर ले। कोई विचार भी रात दिन कभी टकराते नहीं। जो कुछ शायद होश आ जावे, परन्तु होश आवे कहाँ से। यदि गया हो, तो आवे। पता नहीं अब मैं अपनी हालत लिखती हूँ या क्या लिखती हूँ मुझे तो कागज़ कोरा का कोरा ही दीखता है, फिर भला हालत क्या होगी। हालत के नाम पर तो मुझे कोरा कागज़ भी एहसास में नहीं आता है किन्तु ऐसा सब होते हुए भी मेरी तो एक अखण्ड गति हो गई है। या यों कहिये कि वह अखण्ड गति ही मेरा स्वरुप हो गया है। अब तो प्रार्थना या भजन इत्यादि गाने में मेरी कुछ रूचि ही नहीं रह गई है, मानों कोई मुझे रोक लेता रोने भी नहीं देता, गाने भी नहीं देता। पागल सी नहीं हो जाने देता और चैन भी आता नहीं। न कुछ सुनना चाहती हूँ और न कुछ कहना चाहती हूँ। मुझे लगता है कि असल नम्रता वह है कि कुछ न रहे, परन्तु मैं तो न नकल ही हूँ, और न असली ही हूँ। मानों हर हालत की परिभाषा समाप्त हो गई है और हालत ही नहीं, हर परिभाषा ही समाप्त हो गई है। हालत में न मज़ा है, न बेमज़ा है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री - कस्तूरी

पत्र संख्या-567

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 26.5.56

दो पत्र डाल चुकी हूँ, मिले होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मुझे तो ऐसा लगता है कि हालत क्या है, बल्कि स्वयं अपने को मानों धोखा दे रही हूँ, कि हर दशा जो मैं लिखती हूँ, सो 'है' मानकर परन्तु असल में तो हर हाल नहीं है, या जब फिर देखती हूँ तो कुछ नहीं दीखता। Creative Power ही समाप्त, नष्ट हो गई है। न जाने क्या बात हो गई है कि न तो दशा में Activeness ही है और न Inactive ही है, बल्कि ऐसा लगता है कि मानों इन दोनों शब्दों का अर्थ कुछ है ही नहीं और यही हाल दशा का है

कि यदि दशा कहती हूँ तो और बेदशा कहूँ तो मानों ये शब्द जैसे स्वप्न में बर्रा रही होऊँ, कोई अर्थ ही नहीं लगता और हालत के लिये ही क्या, बल्कि मेरी तो हालत ही यही हो गई है, कि जिसका कुछ अर्थ नहीं रह गया है और अर्थ का भी तो कुछ अर्थ नहीं है और न व्यर्थ ही कुछ है। (मेरी तो यह दशा है कि हालत और मैं एक समान हूँ) और मैं ही क्या हर चीज मेरे लिये तो एक समान ही हो गई है और एक समान का भी कोई अर्थ नहीं रह गया है। अब तो बस हालत स्वयं ही है। अब जो कुछ भी हो। न वह व्यक्त है, न अव्यक्त है। न वह है और न वह नहीं है।

कल रात अचानक शायद 11-12 बजे, जब मैं सो गई थी, कि अचानक मुझे लगा कि 'आप' कह रहे हैं कि कस्तूरी मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है। तुम्हारी आत्मा मेरे हृदय में समा गई है और मैं बेचैन हूँ।'' बस इतने में चौंक कर उठ बैठी, तो देखा कि गालों पर कुछ आँसुओं की न जाने क्यों लकीरें सी बनी हैं, वरना जागते में तो आँसू कभी आते नहीं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-568

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 4.6.56

आशा है मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहां सब कुशल है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो अब ऐसी गरीब हालत है कि मैं देखती हूँ कि मेरे पास तो अब अपने 'मालिक' के प्रेम का कोई सबूत ही नहीं है, फिर मैं भला उसे क्या दिखाऊँ या क्या सुनाऊँ। न सुनाने को कोई दास्ताँ है, न दिखाने को दिल है। मुझे बस भीतर-बाहर एक अजीब बिल्कुल शुद्ध Pure ही दशा कहती हूँ, फैली लगती है और कुछ यह दशा है कि मैं देखती हूँ कि जो मेरी बुराई भी करते हैं, वे भी मुझे ऐसी शुद्ध दशा में ही सराबोर महसूस होते हैं। सब कहते हैं कि ईश्वर जो करता है, भलाई के लिये करता है, परन्तु मेरी जाने क्या Innocent दशा है, या जाने क्या कि मुझे कुछ पता ही नहीं। यह भी पता नहीं कि वह कुछ करता भी या नहीं। उसे भी जाने कुछ पता है या नहीं। न जाने क्या बात है कि मैं अब तक यही कहती थी कि 'मालिक' की मर्जी में ही मेरी मर्जी है। जैसी 'उसकी' मर्जी है, सो है परन्तु अब मैं नहीं जानती कि 'उसकी' कुछ मर्जी भी है, या नहीं। न मेरी मर्जी, न किसी की, मानों कुछ मर्जी ही नहीं रह गई है। सब Automatic चल रहा है, सो चल रहा है। मेरी तो कुछ ऐसी बेमज़े की दशा है कि जिसका मज़ा कहा नहीं जा सकता है। ऐसी बेकैफ़ी हालत है कि जिसमें बिना कैफ़ियत के कैफ़ियत का नज़ारा व मज़ा है। मैं चाहती हूँ कि कोई 'बाबूजी' न कहे, रेडियो या ग्रामोफोन भी नहीं। कस्तूरी तो बिना न्यौछावर (दाम) के न्यौछावर हो चुकी है।

कल से तो यह दशा है कि ऐसा लगता है कि यह मेरा शरीर नहीं, बल्कि श्री बाबूजी की आत्मा ही साक्षात् मानों हो गई है। दशा क्या है, Imagination का Imagination भी उससे इतना भारी है कि जैसे एक जान और एक बेजान चीज़ है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोट भाई बहिनों को प्यार।

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-569

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 25.6.56

बहुत दिनों से आप की तबियत का समाचार नहीं मिला है। इस कारण कुछ फिक्र है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो यह दशा है कि आँख बन्द करने पर भी मानो कभी बन्द नहीं होती और न कभी खुलती हैं। न जाने क्यों यद्यपि अपने 'श्री बाबूजी' के ख्याल के लिये मरती हूँ, चैन नहीं पाती हूँ, परन्तु हाल यह है कि उनके ख्याल का स्मरण आते ही तबियत घबरा जाती है। जैसे मान लेती हूँ कि अमुक भाई को जब पूजा कराऊँ, तो यह ख्याल करूँ कि मेरे श्री 'बाबूजी' के हृदय से ईश्वरीय-धारा अमुक भाई के हृदय में प्रवेश कर रही है, यह विचार भी सहन नहीं होता है। मेरी तो यह दशा है कि ठहराव का भी एहसास नहीं होता है और न जाने क्यों कभी चाल या चलने की भी अनुभूति वहीं होती है। मेरी तो बिल्कुल रूखी हालत है। मेरी हड्डी-हड्डी रूखी पड़ी है, मेरा स्वरूप, बातचीत, सब बिल्कुल रूखा हो गया है। यहां तक कि अपने श्री 'बाबूजी' से बातचीत करने में भी, मैं तो लगता है कि रूखी की रूखी ही रही। परन्तु इसमें भी मेरा वश नहीं। जैसी हूं, वैसी 'मालिक' के सामने भी रह पाती हूँ। पहले मुझे याद है कि जैसे हरदम मैं एक बरसात सी में भींगती रहती थी, परन्तु या तो अब बरसात ही नहीं होती या मैं ही भींग नहीं पाती हूं।

भाई, मेरी तो कुछ ऐसी दशा है कि बीमार रहूँ, दिन भर पड़ी रहती हूँ तो तैसी और अच्छी रहूँ और दिन भर काम करूँ तो तैसी, मुझे कोई बात महसूस नहीं होती है। किसी से बोलूँ, बात करूँ तो तैसी और दिन भर चुप पड़ी रहूँ तो भी कुछ नहीं। किसी भी हालत में कोई अंतर ही मुझमें नहीं आता है। पूजा पर बैठ जाती हूँ तो तैसी और बीमारी के कारण दिन भर न बैठूँ तो तैसी। मुझे तो अब न Activity का पता है और न Inactivity कभी रहती है। मेरी तो यह दशा है कि मेरा कण-कण मानों सदैव सोता रहा है और सोता ही रहेगा। यही नहीं, बल्कि सारी प्रकृति मानों सो गई है। इतनी चहल-पहल, शोरगुल में भी तो मानों सोई ही पड़ी रहती हूँ। चलते-फिरते आदमी मुझे सब सोये हुए सी दशा में लगते हैं।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-570

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

आशीर्वाद! — 28.6.56

तुम्हारा पत्र 25.6.56 का मिल गया। तुम्हारी सैरगाह का स्थान अब K, है और उसकी सैर भी भीनी-भीनी शुरू हो गई है। इस वक्त इस स्थान पर मेरा ख्याल जो पहुँचा, उसे देखकर इतनी ताज़गी (Soothing) मिली कि चित्त प्रसन्न हो गया और अपने सूखे-साखे स्थान की ख़बर न रही। इस जगह का अगर वर्णन किया जाये तो बहुत कुछ Dawn से समानता मिलेगी। इसमें परमाणु बहुत सूक्ष्म हालत में है और माया की चमक और दमक बहुत ही कम है। वह कुछ ऐसा स्थान है, जहां सब कुछ सोया हुआ मालूम होता है। जैसे दुनिया छिन्न-भिन्न करके या अपना घर बिगाड़ के उसका मालिक आराम से सो रहा हो और उसे इस फ़िक्र से छुटकारा मिल गया हो। बस ऐसी ही हालतें तुम अपने पत्र में बयान कर रही हो। पूजा के वक्त यह ख्याल न बाँधना कि मैं प्राणाहुति दे रही हूँ यह लय अवस्था की अच्छी दलील है। कण-कण सुन्न और सोता हुआ, जो तुम्हारी अनुभूति में आ रहा है, यह सब उस स्थान की सैर का परिणाम है। केसर का भी पत्र आया। वह भी एक अच्छी हालत की ख़बर दे रही है और मुझे उम्मीद है कि जो काम मैंने उसे Mission के बारे में दिया है, वह कर रही होगी।

तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ और अम्मा को प्रणाम।

तुम्हारे खत और मेरे जवाब जहाँ तक हो सकें, केसर उसकी नकल करती रहे, ताकि छप सकें।

शुभ चिन्तक

रामचन्द्र

पत्र संख्या-571

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 30.6.56

आपका पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। मैं अब मेहनत के लिये जरूर परिश्रम करूँगी। 'आप' चिन्ता न करें। मैं ठीक हूँ। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरा तो यह हाल है कि चाहे काम करूँ या लेटी रहूँ, दशा में कोई अन्तर नहीं आता। शारीरिक दशा में भी मुझे इसमें कोई अन्तर ही नहीं लगता है। न जाने क्या बात हो गई है कि 'आप' के अविरल Faith के कारण हर काम, हर चीज में एक अदम्य उत्साह भरा रहता था, परन्तु अब न जाने क्या हो गया है कि काम अब भी करती हूँ, परन्तु वह चीज नहीं आती, वरन् लगता है कि बड़ी शीतलतापूर्वक स्वत: ही काम होता रहता है। हाँ, इतना अवश्य है कि निराशा या आशा भी उस समय या कभी भी अब कुछ नहीं रहती है। अब न तो मुझे चैन का एहसास होता है और न बेचैनी की ही अनुभूति होती है। अब तो कुछ ऐसी दशा है कि न वह व्यक्त है और न अव्यक्त ही है। कोई विचार भी रात-दिन टकराते नहीं, जो शायद कुछ होश आ जावे। परन्तु होश भी आवे कहाँ से, यदि कुछ गया होता,

तो आता भी, परन्तु जब कुछ गया नहीं तो फिर आवे कहाँ से। व्यक्त और अव्यक्त, वास्तव में मैं तो कहती हूँ कि Useless बातें हैं।

लगता है कि अंतर-बाहर अब मानों कभी कोई कुछ Work ही नहीं होता है। सारी प्रकृति में बस, सोई सी अवस्था में हो सब ओर व्याप्त है। अब तो ऐसी दशा है कि जहाँ पर न किसी के मन की गम्य है और न विचार की पहुँच है और अनुभूति के बन्धन से भी परे है। मेरे मन में तो 'मालिक' की शरण हूँ, इतना भी कहने व अनुभूति करने की क्षमता नहीं रह गई है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या-572

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 3.7.56

मेरा एक पत्र जो पूज्य मास्टर साहब जी के हाथों भेजा था, सो मिला होगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ ऐसी दशा है कि जैसे सब ओर रात्रि का नीरव सन्नाटा छाया हुआ है। सारे Senses में मानों रात का नीरव सन्नाटा छा गया है। दिल की धड़कन भी कभी सुनाई नहीं पड़ती। उसमें भी मानों मौत की खामोशी छा गई है। कुल शरीर की नस-नस में, कण कण में, बाहर-भीतर, सब ओर बस मानों रात्रि का सन्नाटा ही बस गया है। मानों बस, सब ओर रात्रि ही रात्रि बस गई है और इस रात के सन्नाटे में एक तरह का मानों Complete Rest सा मुझे मिल रहा है। मेरी तो यह दशा है कि मानो हर समय मैं मुर्दा-आसन में ही पड़ी रहती हूँ, किन्तु बस मुझे आसन का होश नहीं है। मानों मेरा अंतर तथा बाहर-भीतर सब ओर मानों एक Everlasting Rest में फैला पड़ा है। मेरे हर कण-कण में मानों नीरव प्रलय ही व्याप्त हो गई है। अब तो कुछ ऐसी दशा रहती है कि मानों मुर्दा-आसन मेरा स्वरूप ही हो गया है। ऐसा लगता है कि वह रात्रि के सन्नाटे की दशा मानों मेरे कण-कण में, नस-नस में समाती चली जा रही है, यहाँ तक कि अब तो मानों मेरा स्वरूप ही वही हो गया है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण-सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-573

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 6.7.56

तुम्हारा 30.6.56 का पत्र मिल गया। तुम्हारे सैर करने की जगह जैसा पहले मैंने लिखा है, K1 है और वहीं की हालत बता रही है। यह स्थान ऐसा है कि जिसकी मिसाल एक जंगल या उजड़ी

हुई बस्ती हो सकती है। इस स्थान में प्रकृति अपना बहुत कुछ आवरण उतार चुकती है और उसमें बोझ, वज़न, सब ख़त्म हो जाता है, मगर फिर भी सूक्ष्म रूप में वह मौजूद रहती है। जब यह भी जाती रहे, तब महाप्रलय की गति या Original हालत कही जा सकती है। अब इससे आगे इसी का रूप बिगड़ता चला जायेगा और उसके आवरण उतरते चलेंगे। यही वजह है कि सारी प्रकृति तुम्हें सोई हुई सी प्रतीत होती है। अब इन स्थानों को पार करना अभ्यासी के वश का रोग नहीं रहा। सिर्फ उसकी यात्रा का और असल में पहुँचने का चाव ही रास्ते में आगे क़दम रखने में मददगार होता है, और इसी चीज़ को देख कर Transmitter आगे बढ़ाता चला जाता है।

मैं कह सकता हूँ कि हजारों वर्ष ध्यान में रहे, मगर यह हो ही नहीं सकता कि बिना अच्छे पथ-प्रदर्शक की मदद के अभ्यासी आगे बढ़ सके। अपनी ही मेहनत से काम अगर लिया जावे तो इस बात में Pressure बढ़ता चला जायेगा और एक गुत्थी सी बन जावेगी, जो आगे बढ़ने से रोकेगी। यह हमारे 'लालाजी' की ही दया और कृपा है और उन्हीं की शक्ति कि जो आगे बढ़ाती चली जा रही है, और किसी का बस नहीं।

तुम्हारी चाल में थकान नहीं आई है, बल्कि वह स्थान ही ऐसा है, जहाँ कि इतनी मन्द मन्द सैर हो रही है, और धीरे- धीरे भी। अब अगर इसमें तेजी बढ़ा दी जावे तो, वह आवरण, जो प्रकृति ने उतार दिया है,फिर चढ़ने लगेगा। इसलिये जैसी गति उसकी, सूक्ष्म होती चली जाती है वैसे ही सूक्ष्म सैर उसकी कराई जाती है। फिर लिखता हूँ कि इन बातों की पूर्ति कराने वाले सिवाय हमारे 'लालाजी' के और कोई हो ही नहीं सकता है। यहाँ पर Divine Intelligence का काम है।

अम्मा और चौबेजी को प्रणाम और तुम्हारे भाई बहिनों को आशीर्वाद!

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-574

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम! 6.7.56

मैंने एक पत्र भेजा है, सो पहुँच गया होगा। 'मालिक' की कृपा से मेरी तबियत अब ठीक है। चिन्ता की कोई बात नहीं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या बात है कि मैं सोई हुई प्रकृति के उस पार ही सैर कर रही हूँ। नहीं, बल्कि लगता है कि प्रकृति भी मानों मुझे हज़्म होती जा रही है। मुझे तो ऐसा लगता है कि अब जो मेरी सैर होती है, वह मेरे Sub-conscious mind द्वारा स्वत: ही होती रहती है। उसमें भी अब मेरे मन या हाथ की बात नहीं रह गई है और मुझे लगता है कि मेरा Sub-conscious mind भी घुलता या मिटता अथवा लय होता चला जा रहा है। अब कुछ यह भी देखती हूँ कि मेरा Sub-conscious mind ही मानों कुल प्रकृति का वास्तविक स्वरूप है। इसलिये मेरी नज़रों से अब प्रकृति भी बिल्कुल ओझल सी ही होती जा रही है। मेरे लिये तो प्रकृति भी केवल एक मिटी हुई जीवन रेखा के समान है और अब तो देखती हूँ वह भी मिटती चली जाती है। मैं देखती हूँ कि ऐसी दशा में Sub-conscious mind ही अभ्यासी की रहनी का स्थान हो जाता है। यद्यपि

मेरी तो यह दशा है कि मैं तो Sub-conscious mind में भी नहीं रहती हूँ। मैंतो न यहाँ हूँ, न वहाँ हूँ, न कहीं और। ऐसा लगता है कि कुल अँधेरा मेरे अन्दर समाया जा रहा है। मेरे हृदय में समाया जा रहा है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या- 575

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 12.7.56

पत्र तुम्हारा बाबू श्यामबिहारी द्वारा मिला। तुमने जो हाल तीसरी जुलाई के ख़त में लिखी है, उसका जवाब मैं इससे पहले के ख़त में लिख चुका हूँ, जिसका जवाब तुमको अपने ख़त दिनांक 6th जुलाई सन् 56 में दिया है। तुमने जो Expression अपनी हालत का रात्रि का उपमा देते हुए लिखा है, वह K_1 के स्थान का है। ईश्वर लोगों को क्यों नहीं मिलता? इसलिये कि लोग उसको चमक में ढूँढ़ते हैं। वह तो अँधेरे में ही टटोलने से मिल सकता है। दिन में कोई रात्रि को ढूँढ़े, तो उसको नहीं मिलेगी और इस हिसाब से यह भी सही है कि रात्रि में कोई दिन को ढूँढ़े, तो वह भी उसको नहीं मिलेगा अर्थात् ईश्वर को जिसने पा लिया, फिर चमक के गहरे का ध्यान उसके दिमाग़ में भी नहीं आ सकता। इसीलिये मैं ने तुम्हें अब अँधेरे में लिये जा रहा हूँ, जहाँ तुम खुद अपने आप को सुझाई नहीं देती और भाई, इसमें आगे अँधेरा ही अँधेरा मिलेगा। यह जरूर होगा कि आगे बढ़कर उसको अँधेरा भी नहीं कह सकते और यहाँ पहुँच कर हम उजाले को भी अलविदा (Good-Bye) कह चुकते हैं। फिर आगे हमको अँधेरे को भी Good-Bye कहना पड़ेगा। तब हम असल भाण्डार में दाखिल हो सकेंगे। अब वहाँ क्या है? न अँधेरा है, न उजाला, न रात और न दिन, मगर चल-चलाव अभी मौजूद है।

केसर का भी ख़त मिल गया। उसकी भी हालत ईश्वर की कृपा से अच्छी है। अम्मा व चौबे जी को प्रणाम और तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-576

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 16.7.56

कृपा-पत्र आप का मिला। पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या बात है कि इधर दिन भर में, बीच बीच में अकस्मात् मेरी इतनी सूखी तबियत हो जाती है कि फिर बाहर-भीतर मुझे बस इतना सूखापन व्याप्त हो जाता है कि फिर मैं लाचार

फिरा करती हूँ। अब तो यह दशा है कि मुझे तो अपनी Reality का ही कुछ पता नहीं और अपनी ही क्या, हर आदमी व हर चीज़ के लिये ही मेरी यही दशा है। मानों कुछ भी है ही नहीं। Reality ही समाप्त हो गई। अब कुछ पता ही नहीं, क्या है, कहाँ जा रही हूँ, कुछ पता नहीं है। अब तो यह दशा है, हर तत्त्व, हर अणु-अणु ही गलकर समाप्त हो गया है। भाई, मेरा तो यह हाल हो गया है कि लोग मुझ चींटी को चाहे मसल डालें, परन्तु मैं वह बर्र नहीं हूँ जो काट खाऊँ। न जाने क्यों हर आदमी व हर चीज मुझे एक सॉं ही अनुभव होती है, या यह कहिये, बस एक हालत ही नज़र आती है, नहीं, बल्कि उस हालत की हालत ही मेरा स्वरूप हो गया है।

आज न जाने क्यों मानों एक सूक्ष्म covering या एक मेरे अनजानता covering आँखों के सामने से एकदम साफ़ हो गया। उसके बाद अब यह हाल है कि अब ऐसी दशा बाहर भीतर है कि मानों जिसमें कभी कोई दाग़ ही न लगा हो, सफ़ेदी भी न रही हो एक बेरंग हालत ही व्याप्त है और वही मेरा स्वरूप है। और मेरा स्वरूप क्या, बेस्वरूप का स्वरूप और बेरंग का रंग मान लिया है। अब तो न कुछ असलियत है, न नकलियत का ही कुछ पता है। अब तो न कोई तार है, न कोई खटक है। हाँ, Heart पर अपने आप अक्सर कुछ Vibration सा होने लगता है। परन्तु मैं नहीं कह सकती हूँ कि मेरी जानकारी उसमें हो पाती है या नहीं। न जाने क्या रास्ता है भाई, सच तो यह है कि न अब राह में राह है, न राही में राही है, और न रहबर ही कहीं है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या- 577

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 23.7.56

आशा है मेरा पत्र पहुँचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो न जाने क्या रास्ता है भाई, सच तो यह है कि न राह है, न राही है, और न रहबर ही कोई है। एक चटियल मैदान पड़ा है, मानों खुद मौत ही सोई हुई है। अब तो यह दशा है कि मैं खुद अपने को ही कभी जगा नहीं पाती हूँ। यदि कहती हूँ कि मौत हो गई तो मौत कैसी कहूँ, जहाँ जन्म की तैयारियाँ हो नहीं हैं। मेरी तो अब यह दशा है कि जहाँ ज्ञान और अज्ञान, दोनों ही समान हैं, व्यर्थ है, कुछ अर्थ ही नहीं रह गया है। अनुभव का भी कुछ अर्थ अब मेरी समझ में नहीं आ पाता है। दशा के लिये तो न जाने क्यों, न तो मैं Purity, न Simplicity ही कह सकती हूँ, बल्कि मुझे तो लगता है कि जैसे इनका Origin ही समाप्त हो गया है। न जीवन है, न मुक्ति है। यह दशा है कि मानों आंखे मुँद गई हैं या आँखे मूँद कर चल रही हूँ। मानों Rest भी यहाँ अब Rest करने लगा है। अब तो concious है, न Potentiality है। मेरी तो यह दशा है कि न कोई तत्त्व है और न Reality है। अब तो लगता है कि एक अधर सा मैदान मेरे अंतर में समा गया है। मुझे तो न अब Activeness

है और न Inactiveness ही रह गई है, दोनों बिला या समा लय हो गये हैं। कहाँ? यह पता नहीं। कब? यह भी मालूम नहीं है।

अब यहाँ विराट कहाँ। यहाँ तो सूक्ष्म रूप का भी पता नहीं है। जीवन मुक्त अवस्था की भी समाप्ति हो गई। सच तो यह है कि Expression नहीं। तुरिया अवस्था कहती हूँ तो स्वयं को ही लगता है कि मानों बेकार बक रही हूँ। अब तो यह दशा देख रही हूँ कि रंग (प्रेम का रंग) की भी छींट को कोई मानों पहले ही अपने ऊपर ले लेता है। मुझे पता नहीं क्यों उससे भी बचाये रखता है और बचाने वाला अपनी शक्ल को भी न जाने क्यों मुझसे बचाये रखता है। तरस गई हूँ, परन्तु 'वह' अपने को मानों साथ रखते भी ओझल रखता है। मुझमें तो अब न इतनी ताब है, न अक्ल है, कि मेरी उन्नति हो रही है या नहीं, होगी या नहीं, कुछ विचार ही नहीं रह गया है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-578

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 28.7.56

तुम्हारे दो पत्र दिनांक 16.7.56 व 23.7.56 के मिल गये। Existence of God तो साबित करने की चीज़ नहीं है, बल्कि अनुभव करने की चीज़ है और शब्दों से अभी तक साबित नहीं हो सकी। जो चीज़ उसके देखने की है, उसी से वह अनुभव में आ सकता है और देखा जा सकता है।

यह तो ठीक है कि तुम्हारे सैर और यात्रा का स्थान K_1 है और उसके करीब करीब 1/3 सैर समाप्त हो चुकी है और वहां पर तुम रुक गई हो। इसलिए कि तुम्हारे चलने का अब बस नहीं रहा। क़दम-क़दम पर अब एड़ लगाने की जरूरत है। मैं कुछ इन दिनों दूसरी ओर Attentive रहा हूँ। कुछ उलझनें भी ऐसी आ गई हैं, जो अगर ईश्वर ने सुलझा दी तो नवम्बर में South India जा सकूँगा। इसलिये तुम्हारी ओर मैं ध्यान नहीं दे सका। अब सैर फिर शुरू होगी, ईश्वर ने चाहा और ख़त पहुँचते-पहुँचते इस चीज़ को तुम्हें अनुभूति होने लगेगी। तुमने जो दो पत्र भेजे हैं, उसमें इसीलिये कोई बात ऐसी न मिली कि जिसका जबाब दिया जा सके। दूसरे एक बात यह भी है कि ऐसी सूक्ष्म गतियों का जबाब देना भी अब बड़ा मुश्किल है। इसलिये कि शब्द मुश्किल से मिलते हैं और अब उन बातों के कारण लिखना उससे भी ज्यादा कठिन है। फिर भी मैं कोशिश कर कराकर चाहता तो यही हूँ कि कुछ न कुछ जवाब हो जावे।

काशीराम जी का ख़त आया था। वह पत्रिका निकालने की जल्दी कर रहे हैं। अब उन्होंने 24 सफ़े हिन्दी के लिये और 8 सफ़े अँग्रेजी के लिये रखे हैं। तुम अपने लेख भेजती चलो! सालाना चन्दा इसका तीन रूपया है। मैं चाहता हूँ कि कुछ मैं भी लिखूँ, मगर मेरे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। नहीं मालूम कि मेरा दिमाग़ बूढ़ा तो नहीं हो गया? वैसे तो जब ईश्वर की कृपा होती है, तो मज़मून ख़ुद-ब-ख़ुद उतरता है, और मेरी कोशिश से कुछ नहीं होता।

तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ। चौबेजी व अम्मा को प्रणाम। केसर का खत मिल गया। उसकी हालत अच्छी चल रही है।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-579

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 25.7.56

कल पूज्य मास्टर साहब जी आ गये। उनसे समाचार तथा आप की तबियत का हाल जानकर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने क्या, मेरा तो यह हाल है कि मुझे लगता है कि मानों सब कुछ Powerless है। भीतर बाहर सब कुछ Powerless है। यहाँ तक कि....., परन्तु मैं तो यह देख रही हूँ कि Power का तो कुछ अस्तित्व ही नहीं है, या भाई, मुझे ही कुछ हो गया है। कुल प्रकृति, सब मुझे Powerless ही दीख रही है। Existence नाम की तो मानों कोई चीज़ ही नहीं है। सब मानों कल्पित था। पता नहीं क्या है। मुझे अब कुछ नहीं मालूम है। यहाँ तक कि मुझे अपने शरीर तक में न तो Power का एहसास होता है, न Weakness का ही और ऐसा ही हाल सबके लिये ही हो गया है। न कोई शक्ति का केन्द्र ही नज़र आता है, जिसमें Power हो। बस 'मालिक' के चरणों से जरूर लिपटी हूँ। हालाँकि शक्ति का अन्दाज़ कहीं भी नहीं होता या भाई, मेरा ही यह कोई हाल, बेहाल हो गया है। Powerless से मतलब किसी असहायावस्था से, Helpless से बिल्कुल भी नहीं है।

भाई, न जाने क्या बात है, कि अमीरी का निशान नहीं, आशा नहीं और ग़रीबी का भी कभी अंदाज नहीं हो पाता है। अमीरी-ग़रीबी मेरे लिये सब कुछ Powerless है, समान है। अब तो हालत का न सबेरा होता है, न शाम। कुछ है एक सहज-चेतना या क्या है, वह भी सवेरे-शाम में तो शामिल नहीं है, जिससे अपनी दशा का बोध होता रहता है। यद्यपि ज्ञान या अज्ञान मेरे लिये तो सब समान हैं, सब Powerless है। भाई, पहले मैं लिखा करती थी कि मेरे अन्तर में सदैव जाने और अनजाने में भी एक स्थाई आनन्द बना रहता था और मुझे अपने अंतर से एक आत्मिक प्रकाश, जिससे कुल शरीर तक, भीतर-बाहर, सबमें एक पावन प्रकाश की सी अनुभूति रहती थी, परन्तु अब तो यह है कि भीतर-बाहर, शरीर, आत्मा, मुझे तो अब कभी कुछ दिखाई ही नहीं पड़ता है। सब कुछ मिलकर एक हो गया है, जिसे अब अंधेरा भी नहीं कहा जाता है, और प्रकाश तो बहुत ही भारी चीज़ है।

अब तो न जाने मुझे क्या हो गया है कि अपने को मान कर काम करती हूँ, तो भी Existence का कभी गुमान तक नहीं आ पाता है। जान भी निकली नहीं कही जा सकती है और बेजान भी नहीं हूँ। मेरे लिये तो दोनों ही समान हैं। अब तो आनन्द या बेआनन्द कह लें, मेरे लिये दोनों एक समान ही हैं। सब कुछ Powerless है। सब कुछ एक हो गया है।

मुझे तो अब लगता है कि जैसे सब कुछ कल्पित ही था और वास्तव में तो वह है, जो

अब है या पता नहीं, जो 'मालिक' देगा किन्तु है क्या, यह कुछ पता नहीं और कुछ बेपता भी नहीं है। मानों कोई तत्त्व ही नहीं है। सब कुछ Powerless है। किसी की कोई Existence ही नही है। पहले मुझे लगता था कि कोई चीज मानो ताक़त देती है, परन्तु अब मैं कुछ नहीं कहती। अब तो Existence की Existence ही समाप्त हो गई। सब कुछ एक हो गया है। जाने भाई, क्या है। मैं लिखा करती थी कि कोई चीज मुझे अपनी ओर खींचे रहती है, परन्तु अब तो कुछ नहीं है।

मैंने दशा लिखी है, परन्तु मुझे अपने मन का शब्द नहीं मिला जिससे उसे व्यक्त करूँ। मुझे इधर न जाने क्यों ऐसा लगता है कि मेरे सिर (Mind) के भीतर का बहुत सूक्ष्म सा पर्दा कोई फाड़ दे तो मानों मैं कहीं उड़ जाऊँ। जहाँ चोटी ख़त्म होती है, वहाँ कुछ होता है। मैं उसे कह नहीं पाती हूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

सदैव आप की ही चरण सेविका
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या-580

प्रिय बेटी कस्तूरी | शाहजहाँपुर
शुभ आर्शीवाद! | 30.7.56

इससे पहले जो पत्र आये, उनका जवाब इसी लिफाफे में रख दिया है। अब 25 जुलाई का जो पत्र आ गया, उसका उत्तर भी इस पत्र में दे रहा हूँ। मैंने पिछले पत्र में लिखा है कि तुम्हारी चाल ठहरी हुई थी और K1 का 1/3 सैर करने के बाद रुकी है। अब आज से फिर उसमें जागृति पैदा होने लगी है। ख़त पहुँचने तक जैसा कि मैंने लिखा है, ईश्वर ने चाहा, सैर शुरू हो जावेगी। जितनी चाभी भर देता हूँ, उतनी ही तुम चल लेती हो और इसमें तुम्हारी ख़ता नहीं। बहुत ऊँचे स्थानों में बिना Push दिये कोई नहीं चल पाता। इस मेरे कहने का विश्वास उसी को हो सकता है, जिसको ऐसी सूक्ष्म गतियां प्राप्त हो रही हैं। इक्का-दुक्का Saint ऐसे भी हुए हैं कि जिन्होंने अपनी हालत ईश्वर से Direct प्रेम पैदा करके कर ली है और यह प्रेम भी बहुत अच्छा है, अगर कोई ऐसा कर सके। किन्तु ये Circles जो Egoism के हैं, उनको पार अपनी जिन्दगी में सिवाय "लालाजी" के कोई न कर सका। मैंने जहाँ तक इसकी खोज की है, इतनी ऊँची उड़ान अगले-पिछले महात्माओं में कहीं नहीं मिली। मेरा ख्याल भी है कि इसमें अपनी मेहनत से सफल होना भी कठिन है, इसलिये कि जब अहंकार रहित होने की, जितना सम्भव है, अगर बिना गुरू के कोशिश की जावेगी, तो जिस्म नहीं रह सकता। इसलिये तरकीब यह है कि उसको थोड़ा सा अन्दर दबा देना चाहिये। इस तरह पर कि न उसकी अभ्यासी को कभी ख़बर हो सके और न आँखों वाला भी जान सके। इस तरह पर कि जैसे कुर्सी की गद्दी के नीचे धूल पड़ी होती है तो बैठने वालों को कभी पता नहीं चलता। जिस्म के क़ायम रखने के लिये कुछ न कुछ यह हालत रखना जरूरी है और सच तो यह है कि Egoism का बिल्कुल ख़ात्मा, जैसा कि मैंने Efficacy of Rajyog में लिखा है, महाप्रलय के वक़्त ही होता है, जो सब मिल-मिलाकर

एक Identity की शक्ल में हो जाता है, जिसमें संसार की उत्पत्ति फिर शुरू होती है। बस समझ लो कि अभ्यासी के शरीर में जब वह Egoism के Circles पार करता है, अहंकार की शक्ल Identity की कर दी जाती है।

अब मैं तुम्हारे ख़त पर आता हूँ। तुम्हें अस्तित्व ग़ायब मालूम होता है। यह लय-अवस्था की एक बहुत ऊँची हालत है। मगर यह हालत ऐसी स्थायी होनी चाहिये कि अभ्यासी कितना ही ख़्याल करे, तो भी इसका Impression दिल में न बने। तुम्हारी यह अनुभूति का समाप्त होना कि प्रकृति को कोई चीज़ मानों ताक़त देती है, व्यक्त करती है कि Consciousness समाप्त होना चाहती है, मगर अभी उसकी झीनी हालत मौजूद है या यों कहो कि consciousness की सूक्ष्म गति अभी मौजूद है। यह भी ईश्वर ने चाहा, अपने से आगे बढ़ने की ख़ुशख़बरी देगी। संसार की दौड़-धूप सिर्फ Pure Consciousness तक है, और इसी को वह ईश्वर प्राप्ति समझ रहे हैं, मगर कोई मुझसे पूछे तो वास्तव में यहाँ तक पहुँचे हुए को अभी असल मैदान ही नहीं मिला। अगर मैं किसी से कहूँ तो यही कहेगा कि अपनी बड़ाई दिखाने के लिये एक नई चीज़ गढ़ ली है, और वह अपने विचार में जैसा कि उन्हें वातावरण मिला है, सही भी, अपनी जगह पर हो सकते हैं और फिर यह भी बात है कि बड़े बड़े महात्माओं के सामने जो बड़ी बड़ी पूजायें बताते हैं, मुझ जाहिल को सुनने भी कौन लगा।

तुमने लिखा है कि तुम्हारे सिर के स्थान पर अगर कोई पर्दा फाड़ दे तो मैं कहीं पहुँच जाऊं। यह एहसास तुम्हारा सही है। मगर जहाँ चोटी रखी जाती है, उसको ब्रम्ह रन्ध्र का स्थान कहते हैं। यहाँ पर Direct Revelation होता है। यह स्थान अभी दूर है। सम्भव है कि इसके बीच में बहुत से Points हों। हालाँकि जिस स्थान पर हो, वहाँ पर नापने से फ़ासला निहायत ही थोड़ा मिलेगा, मगर फ़ासले पर नहीं जाना चाहिये। हर स्थान खुद एक ईश्वर का बड़ा Sphere है और इन स्थानों को अगर नापा जावे तो ऐसे संसार जिसमें कि हम रहते हैं, हज़ारों समा जावेंगे।

केसर का जो 16 जुलाई का ख़त आया है, उसमें उसने लिखा है कि रोशनी होते हुए भी अँधेरा प्रतीत होता है। उसके मतलब यह है कि उसकी त्रिकुटी की सैर हो रही है, जिसको सूफ़ी लोग सैर नफ़्स कहते हैं।

तुम जो आश्रम में छपने के लिये मज़मून भेजो, उसमें हमारी तारीफ़ नहीं होनी चाहिये, वरना यह Advertisement समझा जावेगा। बल्कि तत्त्व की बात होनी चाहिये। हमारी किताबों का Reference आने में कोई हर्ज नहीं और 'लाला' जी का नाम आ जाना तो बहुत अच्छा है, मगर Advertisement उसमें ज़ाहिर न हो, बल्कि वह असल बात जो उन्होंने कही या लिखी है, या उन्होंने Philosophy बयान की है, वह भी आ सकता है।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-581

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम! 2.8.56

कृपा-पत्र आप का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने क्या बात है कि ऐसा लगता है कि मेरी तबियत खुद अपनी तबियत के पास नहीं पहुँच पाती है, उससे घुल नहीं पाती है। दूसरे अब मुझे न जाने क्या हो गया है कि हर आदमी मुझे अपने (सगे) की तरह प्यारा लगता था, परन्तु अब तो मुझमें Universal Love नहीं रह गया है। अब तो मेरा कोई सगा है, न प्यारा है और मुझमें किसी से प्यार नहीं है। मुझे लगता है कि Universal Love की मानों कोई Existence ही नहीं है, कोई तत्त्व ही नहीं है, सब कुछ खाली हो गया है। अपने जीवन सर्वस्व 'मालिक' तक से मुझे किंचित मात्र भी प्रेम नहीं रह गया है। यह सब मुझे न जाने क्या हो गया है।

स्थिरता अब कभी होती नहीं और अस्थिरता भी कभी होती नहीं। मेरे लिये न जाने क्या दोनों एक समान ही हो गये हैं। यद्यपि श्री 'बाबूजी' को बुलाती जरूर हूँ, परन्तु कभी भी यह ध्यान नहीं आता कि किसे बुला रही हूँ, क्यों बुला रही हूँ। देखती हूँ कि कोई रंग या रूप आंखों के सामने कभी नहीं आता। दिन भर आंखें देखती हैं, परन्तु सब कुछ एक समान ही हो गया है। वैसे यह न जाने क्या है कि यदि मानों कोई हरी चादर माँगता है, तो मैं देती हूँ और वह ठीक ही निकलती है, परन्तु Mind पर हरे, नीले, पीले किसी का कोई Expression नहीं। यदि कोई केसर को बुलाता है, तो मैं केसर को ही भेजती हूँ, बिट्टो को नहीं। परन्तु Mind पर देखती हूँ कि बिट्टो का कोई रूप है, न कोई केसर ही है। भाई, यह सब क्या है? कैसे होता है? मेरी कुछ समझ में नहीं आता। न जाने सब कुछ Powerless हो गया है। रात में घंटो आँखें बन्द किये पड़ी रहती हूँ, परन्तु आँख बन्द करने पर अँधेरा नहीं प्रतीत होता और आँख खोलने पर भी उजेला नहीं हो जाता है। कहने को एक मरी हुई Condition रहती है, इतना ही कह लीजिये। भाई, मैं तो जितना प्रेम 'मालिक' से चाहिये, उतना नहीं कर पाती हूँ। परन्तु कसक भी अब कसक में मिल गई है। मेरे लिये तो कसक और बेकसक दोनों एक समान ही है। मेरी हालत में अब कभी जोर नहीं आता है और न हल्की ही का कुछ Mind पर Expression है, सब कुछ खाली हो गया है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-582

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम! 8.8.56

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। ईश्वर की कृपा से अब आप की तबियत ठीक होगी। 'मालिक' से सदा यही प्रार्थना है कि आप हमेशा स्वस्थ रहें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ

आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्यों आज मेरे अंतस में आनन्द का ठिकाना नहीं है। आज लगता है कि 'आप' मुझे मिल गये। मैं एक हो गई हूँ। आनन्द है और साथ में बिल्कुल Balanced State है और आनन्द भी ऐसा है कि न जाने क्यों मुझे यह भी अनुभूति नहीं होती कि आनन्द मुझे है या कहाँ है या श्री 'बाबूजी' पुलकित हो रहे हैं। लगता है कि Sub-conscious mind एकाकार हो गया, 'बाबूजी' में समा गया। आनन्द है, परन्तु उसमें कोई Power मानों नहीं है, Powerless है।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि लगता है कि मानों मैं तो एकता और दुई, दोनों से अलहदा हो गई हूँ। पहले मुझे लगता था कि जो एकता की दशा के अनुभव करने में मुझे कुछ घबराहट सी होने लगती थी, परन्तु अब तो न जाने क्यों चाहे कितनी कोशिश करो, एकता कभी आभास होती ही नहीं जैसे चिकने घड़े पर एक सेकेण्ड को भी बूँद नहीं ठहरती चाहे कोई लाख प्रयत्न करे, वही हाल मेरा है, कि अब मानों कोई दशा मेरे लिये आती नहीं। मेरा तो यह हाल है कि मुर्दा कह लीजिये या जिन्दा, जो 'आप' कह देंगे, वही हूँ। मुझे लगता है कि मेरी दशा को खालिस नम्रता की दशा कहना ही ठीक लगता है कि जिसमें एक बिल्कुल ही क्या, खाली सी दशा है। अब तो यह दशा है कि मुर्दे को चाहे कपड़े पहनाओ या नंगा पड़ा रहने दो। अब तो सब से जुदा हो गई हूँ। आनन्द मैं कहती हूँ और भला 'मालिक' में ओत-प्रोत हो जायें, इससे बढ़कर आनन्द की बात ही क्या हो सकती है, परन्तु अब तो मेरी तबियत ने तबियत को ही छोड़ दिया है न विचार ही तबियत को पकड़कर तबियत में जोड़ सकते हैं। वह तो दूर न जाने कहाँ चली गई।

कहाँ तो भाई, मैं सब में एक थी, लगता था कि बिल्कुल जड़ चेतन तक में मेरी एकता थी, परन्तु मैं तो अब निर्मोहिन हो गई हूँ। सच ही सबसे जुदा हो गई हूँ। मुझे न किसी से प्रेम है, न योग है। अब तो मैं भोगी भी नहीं, क्योंकि मेरी स्थिरता या अटलता भी लुप्त हो गई है। लगता है, मैं, मैं ही हो गई हूँ। परन्तु यह फ़िक्र मुझे जरूर है कि आखिर मैं हूँ क्या? क्योंकि कोई स्वरूप नहीं मिलता, कोई अन्दाज़ नहीं मिलता। न यही लगता है कि 'मालिक' में ही लय हो गई हूँ, बस मैं, मैं हो गई हूँ। अब मेरे 'बाबूजी' कहाँ गये? क्या अब 'आप' मेरे सर्वस्व हैं? असल में दशा तो कुछ ऐसी है कि केवल खालिस नम्रता ही कह लीजिये कि जो एक बिल्कुल दीन या खाली दशा है।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि अब मनोरंजन नाम की तो मेरे लिये कोई चीज़ ही नहीं रह गई है। स्वयं अपनी दशा में भी मनोरंजन नहीं, वरन् एक शून्य हालत है। ऐसी अकेली अवस्था या स्थान है कि जहाँ से मानों दूसरा कभी गुज़रा नहीं और जहाँ ईश्वरीय चमत्कार की गुज़र नहीं। भाई, यद्यपि मेरे बाहर-भीतर, कण-कण में 'मालिक' का ही प्रकाश व्याप्त है, परन्तु न जाने क्यों, 'आप' ने अपना मधुर स्वरुप मुझसे चुरा लिया है, जो मुझे कहीं दिखाई नहीं पड़ता है।

मैंने पहले लिखा था कि सिर का पर्दा फट जावे तो कहीं उड़ जाऊँ और मुझे यह भी लगता है कि तब मानों दशा में पूर्ण रूप से घुसकर अनुभव कर पाऊँ। वैसे 'मालिक' की कृपा से दशा तो इतनी साफ़ सामने या अनुभव में आती है, परन्तु यह पर्दा मानों उसमें पूरी तौर से मुझे रमने नहीं देता है। दाहिने हाथ के अँगूठे के ऊपर जैसे हाथ सीधा करें तो जहाँ नब्ज़ होती है ठीक उसके

ऊपर कलाई से लेकर अँगूठे तक इतनी तेज रेंगन होती है, कि मानों कोई जानवर चल रहा हो और बिल्कुल ऐसे ही दाँये पैर में उसी जगह पर होती है। कभी भौंहों के ऊपर बाईं ओर होता है। लगता है कि मानों बिल्कुल उदासीन दशा सी रहती है। बिल्कुल Pin drop Silence ही मानों स्वरूप ही हो गया है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं और केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-583

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 16.8.56

आशा है मेरा पत्र मिल गया होगा। कल परम पूज्य मास्टर साहबजी आप के पास पहुँच रहे हैं। उसने मिलने पर यहाँ की याद एक बार पुन: आप को ताज़ी हो जायेगी। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या दशा है कि आप यहाँ आये हुए थे, किन्तु मुझे इसका स्मरण ही नहीं था। बार-बार भूल जाती थी। यदि कोई चलने की बात न चलाये, तो मुझे ख्याल ही नहीं आता कि 'श्री बाबूजी' के पास चलना है। तबियत में श्री बाबूजी की रटना मौजूद है, परन्तु न जाने क्यों 'उनको' याद नहीं आती। न रूप, न रंग, न आवाज़, कुछ भी याद नहीं पड़ता है। न तबियत भरी ही लगती है, किन्तु उसमें अब चाह भी नहीं लगती। मैं तो यह देखती हूँ कि श्री 'बाबूजी' से बातें करती हुई मैं उन्हें भूली रहती हूँ। अब तो यह दशा है कि तबियत 'बाबूजी', 'बाबूजी' करती हुई खो जाती है, परन्तु मुझे उनकी याद नहीं आती। उनका स्वरूप नहीं याद आता है बल्कि मुझे अब यह प्रतीत ही नहीं होता कभी कि आप यहाँ आये हुए थे या नहीं।

भाई न जाने क्यों मेरी तो यह दशा हो गई है कि सुख-दुख की भी यही दशा है कि यह कहते किसे हैं, कुछ पता नहीं। रो लेती हूँ परन्तु cause उसका कभी मानों पता ही नहीं रहता है। हँसती हूँ, परन्तु cause का कभी पता नहीं रहता है। सच तो यह है, कि न कभी रोती हूँ, न कभी हँसती हूँ। तबियत बिल्कुल उदासीन सी रहती है। पूजा का तो मानों अभी बीज ही नहीं पड़ा है। न जाने क्या बात है कि जब तक 'आप' के सामने रहती हूँ तब तक तो ठीक रहती हूँ, परन्तु आप के सामने से हटते-हटते हृदय पर कुछ Tight सा बोझ सा हो जाता है, किन्तु हालत पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। हालत इतनी उजाड़ या बियाबान सूखी सी रहती है कि कुछ कहना नहीं और अब मैं देखती हूँ, यह तो स्थाई हो गई है। यही मेरा स्वरूप बन गया है। कभी कभी तबियत स्वत: बहुत रूखी रूखी सी ही रहने लगती है या कुछ अजीब उचाटपन है, नई तरह का। मुझे लगता है कि सूखापन तो मानों मेरा स्वभाव ही बन गया है। बात घर में या बाहर, सबसे करती हूँ, परन्तु तबियत सूखी की सूखी ही बनी रहती है। पूजा की ही बातें करती हूँ, पूजा करती हूँ, या करवाती हूँ, परन्तु तबियत में कोई अंतर नहीं पड़ता

है। वह तो ज्यों की त्यों, न सावन सूखी, न भादों हरी ही बनी रहती है। पता नहीं कुछ मेरे में कमी तो नहीं आ गई है।

मेरा तो अब यह हाल है कि जहाँ भी मेरी दशा है, वहां से भी तो अब मुझे कुछ अपना हाल नहीं मिलता है। मेरा तो अब कहीं कोई ठिकाना ही नहीं है कुछ न पता है, न बेपता है। न कुछ छुपा है न कुछ रौशन है। अब तो यह दशा है कि मैं ही नहीं, वरन् मानों सब कुछ बेहस्ती के, बेघर-बार के फिर रहे हैं। मुझे तो यह लगता है कि हर आदमी मुझे हर बात में अपने से अच्छा, ऊँचा या शक्तिमान लगता है। मेरी दशा तो मानों एक बिल्कुल लाचार हो गई है। न दृढ़ता ही रह गई है और न जाने क्यों पहले तो निगाह दुनिया के अच्छा-बुरा हो जाने पर कभी निगाह ही नहीं जाती थी, परन्तु भाई, अब सदैव तो नहीं, किन्तु चली जाती है। ऐसा न जाने क्यों है।

मेरी तो न जाने क्या दशा हो रही है कि अब दुनिया से बेलौस नहीं, वरन् मानों 'मालिक' से बेलौस हो गई हूँ। किन्तु फिर भी न फ़िक्र है, न कुछ तमन्ना है और 'मालिक' से बेलौसी मानों मेरा स्वभाव ही हो गया है। दुनिया को फ़िक्र जरूर कुछ रहती है, क्योंकि मैंने देखा है कि अब अन्य घर में किसी की भी बीमारी से मुझे फ़िक्र हो जाती है, जो पहले जरा भी नहीं होती थी। घबरा भी जल्दी उठती हूँ।

लगता है कि K_1 की सैर खत्म हो चुकी। मुझे लगता है कि मानों 'मालिक' की Current कभी अब मुझमें Pass ... नहीं होती। शायद अब मैं Negative ही नहीं हो पाती हूँ। अब मुझमें कुछ करने की हस्ती भी तो नहीं रही। मुझमें अब कुब्बत ही नहीं है, लेकिन हीनता भी नहीं है न दीनता ही है। एक खाली अवस्था ही मेरा स्वरूप हो गया है। जीभ का यह हाल है कि खट्टा, मीठा, चटपटा, कुछ खा लो, सब एक समान ही है। कहती हूँ कि दाँत खट्टे हो गये, परन्तु कैसा या क्या, यह पता कुछ नहीं रहता है। ता. 14 को तबियत अचानक उदास सी हो गई, यद्यपि दशा तो साफ़ ही रहती है और ता. 15 को स्वतः सँभल गई। अब तो हालत इतनी निर्मल सी रहती है, मानों कोई पर्दा ही हट गया और अब निर्मल एक विनम्र दशा ही क्या, बल्कि स्वभावतः ही कुछ ऐसा बन गया। अब वह बात न रही कि:-

"दिल में है दिल का प्यारा, मगर मिलता नहीं।
आँख में है आँख का तारा, मगर मिलता नहीं॥"

अब तो दशा व दृश्य बदला हुआ है। सिर पर न जाने क्यों अब पर्दा नहीं है, जो मैंने 'आप' को लिखा था, वरन् एक कोमल सी हथेली रखी हुई है, जिसके रखे रहने पर भी बोझ नहीं, बस कोमलता सी सिर में रहती है और इससे चाहे कितना काम करो, दिमाग में थकान का नाम नहीं आता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-584

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 22.8.56

बहुत दिनों से 'आप' का कोई पत्र नहीं मिला। फिक्र हो गई है। कृपया अपना समाचार शीघ्र भेजिये। आशा है, 'आप' स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, बिल्कुल सपाट दशा है। भीतर बाहर सब एक सपाट मैदान हो गया है। अब तो दशा न उजाड़ है, न बियाबान कहती हूँ। बस एक ऊसर सपाट मैदान हो हो गया है। सैर वैर अब तो सब समाप्त है।

भाई, मेरी तो न जाने क्या दशा हो गयी है कि शारीरिक शक्ति व मानसिक शक्ति एक हो गई है। मानसिक शक्ति मुझमें इतनी प्रबल थी, परन्तु पता नहीं अब सब क्या हो गया। अब तो यह कह लीजिये कि शरीर व मन एक हो गया है, क्योंकि बिना किसी इच्छा व जरूरत के शरीर हो दिनभर Work करता रहता है। मन कुछ नहीं कहता, न करता है। मेरा तो यह दशा है कि मैं कैसे पाऊँ प्रभु को, जब मेरा मन ही नहीं करता है। शायद मन है नहीं, इसलिये मन में मन के प्यारे को लाना चाहती हूँ, परन्तु वह आता नहीं। न जाने क्यों रूठ गया है। तड़पती हूँ, परन्तु एक क्षण को भी सामने नहीं होता है। कुछ भी मुझे 'उसके' बगैर भाता नहीं। सब कुछ सूना हो गया 'उसके' बिना। रात भर कभी सोती नहीं उसके बिना न कभी जागती हूँ 'उसके' बिना। परन्तु 'वह' सामने भूले से कभी नहीं आता।

मेरी समझ इतनी तेज थी, परन्तु बिना 'उसके' अब समझ भी मुझे छोड़ गई और नासमझी ने भी पल्ला छोड़ दिया। मैं तो अब अकेली सूनेपन के बीच निपट अकेली अँधेर में खड़ी हूँ। सच तो यह है कि मुझे 'उससे' प्रेम भी तो नहीं है। दिमाग में दिन भर व्यर्थ के विचार टकराया करते हैं, परन्तु 'मालिक' का ख्याल कभी नहीं आता है। 'मालिक' मुझे अँधेर में, इस महासूनेपन में अकेली छोड़कर कहाँ चला गया है, कुछ पता नहीं। भाई, क्यों मेरी हालत खराब है। बस मैं पना ही मैं पना शेष है और कुछ नहीं। मुझे अब कविता भी नहीं आती, कहानी नहीं आती। मेरा अन्तर सूखे आँसू रोता रहता है तथा सूखे घूँट पीती हूँ। क्यों? पता नहीं।

अब मैं पूजा करा ही नहीं पाती हूँ। यह भी सोच लूँ कि किसी को पूजा करा रही हूँ, तो ही कुछ घुटन सी शुरू हो जाती है। शायद तभी, अब पूजा कराने से जी भागता है। कभी अपने आप ही ठीक बन जाती है, तब तो Rest मिलता है। Sitting से पहले तो जी कुछ उचटने लगता है। जब बैठ जाती हूँ, तो फिर ठीक हो जाता है। न जाने क्या बात है, जी उचट जाता है। भला उजड़े को कौन और उजाड़ गया।

मेरा तो यह हाल हुआ कि 'मालिक' तो मानो अपना पिटारा खोल कर भाँति-भाँति की सुखद आत्मिक-दशाओं का जादू दिखलाकर फिर सब पिटारे में समेट कर चले गये। मैं अकेली बस सूने निर्जन में 'उसकी' उस विस्मृत याद में विस्मृत खड़ी 'उसी' के सहारे पथ पार कर रही हूँ। न सही, 'उसका' कुछ तो है, उसी के सहारे जाऊँगी 'उसी' के पास। मुझे जाना है और अवश्य जाना है, चाहे

न कुछ का ही सहारा लूँ, यही मेरा हाल है। अब न कोई मैदान है, न कोई पथ है, बस, कुछ न सही ही सब कुछ है, यही दशा है और उसी के सहारे पहुँच जाऊँगी। न घर का, न बार का पता है, न बनावट, न असलियत का पता है। न रोशनी, न अँधेरे की तमीज़ है।

अम्मा' आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री- कस्तूरी

पत्र संख्या-585

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 30.8.56

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सब कुशल है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

23 को अचानक पूजा करते में लगा कि कुमार स्वामीजी के हृदय में स्याही आ गई है, तो ईश्वर की कृपा से साफ़ (ठीक) तो हो गई। अब यह देखती हूँ कि यद्यपि अब पूजा करना या कराना मेरे लिये दोनों समान हैं। फ़ैज़ का तो मुझे अन्दाज़ ही भूल गया, परन्तु कुछ ऐसा Confidence कहिये या क्या कि देखती हूँ कि सफ़ाई तो अब बहुत शीघ्र होने लगती है। असर फ़ौरन मालूम पड़ने लगता है और हर काम के लिये यही हाल है कि होकर रहेगा। यद्यपि न अब शक्ति है, न सामर्थ्य है, परन्तु अब असर अच्छा और शीघ्र होता है। उधर M.K. Ganeshan जी की हालत न जाने क्यों रुक गई थी। पूजा कराने में न तबियत लगती थी और न असर होता दिखाई देता था, परन्तु अब तो 'मालिक' की कृपा से फिर ठीक आ रहे हैं। यद्यपि अभी पहले का सा जोश व लगन पूरा नहीं आया है, फिर भी आ रहा है।

सिर के पीछे जहाँ चोटी गुँथी जाती है, यानी पीछे, गर्दन से ऊपर जहाँ गड्ढा सा है, उसके कुछ ऊपरी बिल्कुल लगे से, अक्सर कुछ मुलायम, सरल-ठंड सी निकलती मालूम पड़ती है। कुछ ऐसा होने लगता है कि मानों कोई पीछे का ढक्कन सा वहाँ का उठाना चाहता है, परन्तु हिल-हिलाकर फिर ठीक हो जाता है। लगता है कि पीछे की सिर की हड्डी नर्म हो गई और उसमें से कुछ छनता है। नर्म नहीं, बल्कि मानों पसीज या पिघल रही है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-586

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 2.9.56

पूज्य मास्टर साहब के पत्र से आप का समाचार मिला। आप का पेट दर्द का हाल सुनकर हम

लोगों की चिन्ता बढ़ गई है। ईश्वर करे 'आप' जल्दी ठीक हो जायें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरा तो यह हाल है कि सब 'मालिक' की चर्चा करते हैं, मस्त होते हैं, परन्तु मेरा तो यह हाल है कि मुझे तो यह मालूम ही नहीं पड़ता कि वह कोई है। 'वह' तो कुछ भी नहीं है। वही क्या, मेरे लिये तो कहीं कुछ भी नहीं है। खाट पर लेटी रहती हूँ, परन्तु मानों उसे छू कभी पाती ही नहीं। दीवाल, पेड़ या फूल छूती हूँ, हाथ में लेती हूं, परन्तु मानों छू कभी पाती ही नहीं हूँ। दशा तो बिल्कुल निरी स्वच्छ ही स्वच्छ फैली है। उधर ऐसा लगता था मानों कोई शक्ति सिर में फिरती है, परन्तु उसको Sphere नहीं मिलता था, परन्तु 'मालिक' की कृपा से इधर 3-4 दिन से मानों कोई हड्डी तक रही नहीं बस हवा है। शरीर तो फूल सा उड़ता रहता है। दशा को हल्का कहना तो उसे भारी बना देना है। शुद्ध और अशुद्ध दोनों एक ही अर्थ रखते हैं। अब तो जैसा था, वैसा था जो है, सो है भी कहते अच्छा नहीं लगता क्योंकि यहाँ तो कोई है ही नहीं। न ऐसा, न वैसा, कुछ है ही नहीं। मुझे तो न जाने क्यों अब अपनी ज़रा सी भी आत्मिक-उन्नति ही नहीं मालूम पड़ती है। दशा तो ऊसर ज़मीन है, फिर उसमें अब आशा भी नहीं। मेरी न तो पूजा में स्वयं ज़रा भी रूचि है और सब मुझे खाली ही बैठे लगते हैं। मुझे तो यदि कोई दुनिया के भ्रम में भूली अवस्था वाली कहे तो शायद ठीक ही होगा।

पहले मैं लिखा करती थी कि मुझे यह याद नहीं पड़ता कि मैं उससे कभी खाली और अलग रही हूँ। मेरा कभी भी विछोह हुआ हो, यह असम्भव है, परन्तु अब तो दशा बिल्कुल उल्टी है। लगता है कि मानों मेरा कभी 'उससे' या किसी से कभी मिलन ही नहीं हुआ। मेरे कण-कण में कभी 'वह' मिला ही नहीं। अब क्या करूँ, समझ में नहीं आता। मेरी दृष्टि तो शून्य हो चुकी है। दृष्टि क्या, मेरा अन्तर-बाहर, सब शून्य हो चुका है और भाई, यही मेरा स्वरूप हो गया है। परन्तु वास्तव में तो अब स्वरूप कुछ होता नहीं, जैसा होगा, वैसा होगा। उत्सव (जन्माष्टमी वगैरह) के पूजा या Sitting के वातावरण में मेरी तबियत बजाय आनन्द व उत्साहित होने के, घबरा उठती है। दशा रहती सरल व स्वच्छ है, कि उसे नग्नता का ही नग्न रूप फैला है, कहना ठीक है, परन्तु मैं नग्न नहीं हूँ, न दशा ही नग्न है। बस नग्नता का नग्न रूप फैला है, यही कहती हूँ और मेरे शरीर का भी कण-कण मानों ऐसा ही होकर इसी दशा में समाया, बिखेरा हुआ रहता है। अब न जाने क्यों लगता है कि मानों अपने पथ में मैं अकेली, निर्विघ्न, निडर जा रही हूँ, दूसरा कोई नहीं है। 'मालिक' का भी एहसास नहीं होता। पहले हर काम 'मालिक' ही मानों इस मशीन द्वारा लिया करता था, परन्तु अब तो मैं अकेली हूँ। सब मानों अपने ही लिये होता है।

अब तो मुझे हर आदमी Initiated की तरह लगता है। रात कुछ ऐसा देखा कि मानों हर आदमी मुझसे Initiated हो। यद्यपि कितनी बेजा बात है, परन्तु मेरे न तो ऐसा कभी आज तक स्वप्न में भी विचार नहीं आया, यह मुझे न जाने क्या हो गया। हृदय तो लुट गया है। अब तो सेवा मैं इसलिए नहीं करती कि इसमें मुझे आनन्द आता है, वरन् अपने 'मालिक' के लिये, मिशन के लिये करती हूँ। अब तो मानों मेरी आत्मा 'मालिक' की आत्मा में समाँ चुकी है। कहीं कोई अस्तित्व नहीं। अब तो अस्तित्व भी गल गया है, लीनता भी लीन हो गई है। अब तो मेरे पास न कुछ बेचने को है, और न खरीदने की ही कुव्वत है। बस अब तो जो 'मालिक' दे दे, हर हाल में शुक्रिया

है और शुक्रिया भी मैं भला कैसे दूँ। मेरा तो रोम-रोम शुक्रिया बन चुका है। मेरी तस्वीर खुद 'मालिक' के शुक्रिये का ही तो रूप है। अब तो जो 'मालिक' का मन हो, सो ही हो। हृदय का हर पर्दा उठ चुका है। हर द्वार खुल चुका है। बुद्धि का दर्पण साफ़ हो चुका है। दृष्टि अब दृष्टि नहीं, वरन् 'मालिक' की ही दिव्य दृष्टि बन गई है। अब तो अणु-अणु दर्पण बन चुका है। हर कण साफ़ हो चुका है। किन्तु उसमें कोई तस्वीर, न कोई रूप की छाई नहीं आती। वह तो अटल स्थिर बन चुका है। तबियत जान या अनजान में भी इतनी झुकी रहती है कि अधिक बोलने को भी जी नहीं चाहता है। पहले जो लगता था कि दशा Heart से परे है, सो भी अब कुछ नहीं। न Heart के, न Mind के परे, न कुछ है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आप की ही स्नेहसिक्ता
सेविका - कस्तूरी

पत्र संख्या-587

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

आशीर्वाद! — 6.9.56

तुम्हारे पत्र 22.8.56, 30.8.56 तथा 2.9.56 के प्राप्त हुए। तुम्हारे जितने पत्र हैं, सब के सब उच्च-लय-अवस्था को बतला रहे हैं। अपने आखिर पहुँच तक नहीं मालूम कितनी लय-अवस्था और पड़ेगी और लय होना ही उस हालत का कमाल है और फिर उससे उछलना उस कमाल का असर है। मेरे तो होश उड़ते हैं, जब ये हालतें देखता हूँ कि ऐसी ऐसी लय अवस्थायें भिन्न-भिन्न तरीके की पैदा होती हैं। नहीं मालूम हमने अपनी ख़ोज में कितनी जीवनी गँवा दी है और अब तक बराबर खुलते चले जा रहे हैं। भारत वर्ष के महात्मा तो इतने ज्यादा गिर चुके हैं कि यहाँ तक इक्का-दुक्का कहने लगे कि रामायण सिर्फ घर में रखी रहे और उसकी आरती होती रहे, तो उसकी मुक्ति हो जाती है। एक मसल मज़ाक में लोग कहते हैं, जो ऐसे लोगों के लिये ठीक है कि- "इस हुस्न पर ये नखरे" अगर इसका कोई मिसरा बना दिया जावे- "इस हुस्न पर यह नखरे, चेलों का खुदा हाफ़िज"। मैंने यह लफ़्ज नखरा, जो इस्तेमाल किया है, वह बहुत माने रखता है। शब्द मसख़रापन का जरूर है, मगर इसके लिखने से मैं यों मजबूर हूँ कि इससे ऐसे महात्माओं की अदा प्रकट होती है। जब यह तालीम गुरू की और उस पर अपनी कद्र चाहते हैं और यदि कोई न करे तो उनके थर्मामीटर का पारा बहुत ऊँचा उठ जाता है। वक्त ऐसा जरूर आवेगा कि बरसाती धरती की धूल Mushrooms की तरह यह बैठ ही जावेंगे। मेरी तबियत तो चाहती है कि इन बातों पर बहुत कुछ लिखूँ, मगर कुछ फ़ायदा दिखाई नहीं देता, इसलिये बेकार है। ईश्वरीय लहर जब आवेगी, तब असलियत रौशन होकर फिर रहेगी।

5 सितम्बर सन् 56 को साढ़े ग्यारह बजे रात्रि को मैंने तुमको L_1 पर डाल दिया है। यह ऐसा मैदान मालूम होता है कि इसको अँधेरा मिला हुआ उजेला कह सकते हैं। इन मैदानों को,सच तो

यही है कि वही पार करता है, जो पपीहा की तरह "पिऊ कहाँ" की खोज में रहता है। तुम्हारा ख्याल सही है कि मैंने अपनी माता के पिण्ड के कुल स्थान पार कराके ब्रह्माण्ड मण्डल में डाल दिया है और कुल जिस्म में अजपा पैदा हो गया है। ब्रह्माण्ड की सैर इस वक्त हो रही है, इस तरह कि इनको इसकी ख़बर तक नहीं हो पाती और यह सिर्फ उनकी कमज़ोरी की वजह से ऐसा किया है, ताकि उनके दिमाग पर ज़ोर न पड़े। कमज़ोर वह इस क़दर हैं कि पखाने-पेशाब के लिए उनको उठाना पड़ता है। आगे फिर देखा जायेगा। दमा बदस्तूर है। मुझे दमा का बहुत मामूली दौरा हुआ था, जो या तो अपने आप ठीक हो गया हो, या एक दो बार शीतोपलाद की चटनी खा ली थी, उससे कुछ फ़ायदा हो गया हो।

श्री काशीराम जी का ख़त आया है, उन्होंने पत्रिका छपने के लिये कलकत्ता भेज दी है और अगली पत्रिका के लिये मज़मून माँगे हैं और यह भी लिखा है कि मज़मून मिलते रहें तो पत्रिका छपती ही रहेगी।

केसर का भी ख़त आया था। उसकी हालत अच्छी चल रही है।

एक पर्चा मेरे पास अभी आया है, जिस पर Heading है-

"कछला के श्री श्री 108 स्वामी दयानन्द महाराज सरस्वती की करतूतें" यह महात्मा कछला के हैं जिन्होंने स्कूल खोला है और पर्चा यह बता रहा है कि Govt. ने तीन सौ बीघा काश्त दी है। उसकी कमाई भी सब खा जाते हैं। फर्जी नाम मास्टरों और लड़कों के लिखे हुए हैं, और तनख्वाह सब ले लेते हैं। यह पर्चा Govt. के सभी Ministers के पास भेजा गया है और मेरे पास बहैसियत President Sri. Ramchandra Mission के आया है। कमेटी को किसी तरह Mission का पता लग गया और उसने भेज दिया। यह महात्माओं का हाल है और उस पर ये चाहते हैं, मेरी कद्र करें।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-588

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 6.9.56

कृपा-पत्र 'आप' का कई दिनों से नहीं आ रहा है, क्या बात है। कृपया अपनी तबियत का हाल शीघ्र दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि कुछ ऐसी भौंचक सी अवस्था या शान्त सी अवस्था है कि मुझे तो पता नहीं। मेरी कोई सत्ता भी है या नहीं, क्योंकि ख़्याल का तो मेरा यह हाल है कि न उसमें है, न नहीं है। दोनों बराबर हैं। बल्कि उसके बारे में कुछ सोचने तक को विचार नहीं जाता है। मानों सब कुछ भूल गया है, या नहीं भूल गया है, कुछ ठीक नहीं है।

श्री 'बाबूजी', आज आपने मुझे L1 point पर खींच दिया। इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। अपनी गरीब बिटिया पर कृपया इसीप्रकार अपना ख़्याल बनाये रखिये।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-589

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 11.9.56

कृपा पत्र आप का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

इधर कई दिनों से रीढ़ की हड्डी के बीचोबीच की गुरिया में कुछ बहुत अधिक सरसराहट व रेंगन रहती है और बाईं पीठ की चौड़ी हड्डी जो कंधे से नीचे होती है, उसमें व उसके इधर-उधर भी पसलियों तक में भी बड़ी सरसराहट व रेंगन बहुत रहती है तथा प्रकाश भी उसमें से बाहर निकलता रहता मालूम होता है। मेरी तो तबियत इतनी झुकी या नग्न या कोमल कह लीजिये कि मेरी तो यह दशा है कि मुझे तो अपने में न अच्छा न बुरा कुछ दीखता ही नहीं है तो फिर भला तुच्छ अवस्था जो अब मुझे कहने में ही बहुत ही मानों भारी लगता है, तो अपने में अब इसकी भी अनुभूति कहाँ है। बिल्कुल जैसे कोई एकदम सन्न से रह जाता है, कुछ ऐसी ही दशा हो गई है। हालत ऐसी है कि मानों बस भीतर-बाहर एक टकटकी लगी हुई है। बस ऐसी ही दशा या मैदान अब तो व्याप्त है और मैदान क्या, भीतर-बाहर मानों शून्य गगन ही व्याप्त है।

न जाने क्या बात है कि Point तो आप ने बढ़ाया 5 सितम्बर को, लेकिन परसों रात को करीब 10 बजे मैं लेटी, तो लेटे ही लेटे एकदम से एक क्षण को लगा कि मानों जैसे पैर आगे को रपट जाता है ऐसा कुछ झटका सा लगा कि मैं सन्नाटे में आ गई, मानों एकदम जैसे कोई जाग पड़ा हो, और उस एक क्षण में ही मानों कुल ईश्वरीय प्रकाश ही एक क्षण को व्याप्त हो गया। यह मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया, भौंचक हूँ अब भी और तब से कुछ ऐसी दशा व्याप्त है कि जिसे शून्याकाश या नग्न दशा को Reality या सार कह लीजिये। इतनी मंद मंद सी दशा व्याप्त है जो Conception में नहीं आ पाती है। कैसे कहूँ, 'मालिक' जाने। कल से फिर जिसने भी पूजा की, उसने ऐसी ही दशा बतलाई कि जैसी मेरे भीतर-बाहर सब व्याप्त है। शून्य, निस्तब्ध दशा ही सब बताते हैं।

भाई, न जाने कितनी शून्य दशा है कि इसको चाहे जितना हल्का कहकर व्यक्त करूँ, तो हर शब्द भारी पड़ जाता है, क्योंकि मुझे तो लगता है कि मानों हल्का कहूँ या भारी, मेरे लिये दोनों एक समान हैं। इनके कुछ ठीक अर्थ ही दशा का नहीं निकल पाता है और मैं व्यक्त करूँ क्या, बस वह तो स्वयं ही व्यक्त है। अब इसे जो जाने, सो जाने। अब तो यह दशा है कि- "कबिरा खड़ा बाजार में, सबकी माँगे खैर। ना काहू से दोस्ती, ना काहूँ से बैर।।"

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री - कस्तूरी

पत्र संख्या-590

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 17.9.56

आशा है, मेरा पत्र मिला होगा। पूज्य मास्टर साहब जी भी वहाँ पहुँच गये होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, मैं 'आप' को पत्र न तो बड़े उत्साह व प्रेम में भरकर लिखती हूँ, और न उफ़ान की तेजी में, बल्कि गति वही सम रहती है, हर हालत में। सोते-जागते में भी, जाने या अनजाने में भी ऐसी ही सम गति बनी रहती है। पहले तो मुझे ऊपर की होने वाली या वैसे भी तमाम बातें स्वत: ही सामने आ जाती थीं, पता लग जाती थी, परन्तु अब कुछ नहीं पता चलता।

मुझे तो यह लगता है कि अब "मैं" शब्द तो इतना हल्का हो गया है कि मैं इसे Use करती रहती हूँ, परन्तु यह conception में आ नहीं पाता है। इसे Use करने या न करने में मानों कोई हर्ज नहीं है। दोनों बराबर ही हैं। अब तो भाई दशा क्या है, कैसी है, यह मैं नहीं जानती। बस वह तो स्वयं ही व्यक्त है। मेरे लिये तो आगे पीछे या भीतर-बाहर, मानो कुछ नहीं है। सब एक ही हो गया है। न जाने क्यों अब तो अकेले में कभी अकेलापन नहीं लगता और दुकेले में कभी दुकेलापन नहीं लगता। पहले मैं सदैव 'मालिक' के साथ दुकेली ही रहती थी, परन्तु अब 'मालिक' की याद रहे वह सामने तक रहे, किन्तु मुझे कभी दुकेलेपन का एहसास ही नहीं होता है। ऐसे ही भाई, न काम करते रहने में काम की अनुभूति कभी होती है और न खाली बैठे रहने में खालीपन का ही एहसास होता है। न आराम करने में आराम की अनुभूति होती है, न गाने या बोलने में गाने या बोलने की अनुभूति होती है। किन्तु ऐसा सब होते हुए भी न मुझे कभी यह एहसास होता है कि यह सब शब्द मेरे लिये मानों बेकार के हैं, व्यर्थ हैं और न कुछ काम के ही हैं, ऐसा ही एहसास होता है।

अब तो भाई, हृदय में एक ऐसी धीमी पीर, टीस है, जिसमें दर्द या व्यथा का अनुभव नहीं है। वरन् बस केवल एक कोई बात है, जो मुझे मालूम नहीं। न जाने क्यों लगता है, कि हालत पर धुएँ की तरह मानों अँधेरा छा-छा जाता है, फिर साफ़ हो जाता है। कुछ यह दशा है कि किसी पर तवज्जोह देकर उसे पूजा करवाती हूँ तो उसका मन नहीं लगता और वैसे तबियत बहुत लगती है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या-591

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभ आशीर्वाद! — 19.9.56

तुम्हारे पत्र 11 सितम्बर और 17 सितम्बर के मिल गये। मुझे अनुभव किसी बात का ऐसा नहीं होता कि जैसे दुनियादारी की बातों का शुरू अभ्यास में जाना था। हाँ Nature की बातें जरूर अनुभव में आ जाती हैं इसलिये मैंने माताजी के सिवाय अन्नमयी कोष के और राब कोष भी तोड़

दिये। अन्नमयी कोष के तोड़ने की जरूरत भी नहीं थी, इसलिये कि इसके टूटने पर कुछ शक्तियाँ खालिस और जोरदार पैदा हो जाती हैं और यह हो सकता है कि मुँह से अच्छा और बुरा निकलने पर वैसा ही हो सकता है।

पंडित लक्ष्मीचन्द जो अब 'स्वामी राघेन्द्र देव' हैं, अपना सिलसिला अलहदा करके उसके नियम बना दिये और उसका नाम "दिव्य-पथ-प्रदर्शक मण्डल" रखा है। मुझे इसका खेद बिल्कुल नहीं है। मसल जरूर ठीक होती है कि "मेरे घर सों आगी लाई, नाम धरो वैसन्धर"। मुझे इस शख्स पर अब भी तरस आता है। उनके काबिल शिष्य हरिशरण ने एक किताब बड़े फ़क्र के साथ "योग वेदान्ती मुक्तावली" लिखी है। किताब और नियम भेज रहा हूँ, पढ़ लेना। मास्टर साहब को जब फुर्सत होगी, उन्हें भी देना, वह भी देख लें।

तुम्हारे पत्र अब जो मिलते हैं, उनके जबाब के लिये शायद लफ़्ज नहीं मिलते तुम किसी न किसी तरह से उसे व्यक्त कर ही लेती हो, कि धुँआ का पता होने से यह मालूम हो जाता है कि वहाँ आग जरूर है। सरमगहट रीढ़ पर या उसके करीब होना यह बतलाता है कि कम्पन या Vibration होते हैं, जिससे जागृति पैदा होती है। इसको वह हिलोर समझना चाहिये कि एक जगह पैदा होने से अपना Expantion दरिया में फैला देती है। ताकतें सब रीढ़ की गुरियों में छिपी हुई है। इसको आध्यात्मिकता की अगर Back bone कहा जाय तो गलत न होगा। एक तालीम का तरीका यह भी है कि रीढ़ की गुरियों पर ही Transmission किया जावे। जिस-जिस चक्र पर चाहे, उसी की सैर शुरू हो सकती है। मगर इस तरीके को जहाँ तक मुझे मालूम है, महात्माओं ने पसन्द नहीं किया और उसके चिन्ह भी कहीं नहीं मिलते। सम्भव है कहीं पर इसकी Research किसी ने की हो, मगर मुझे नहीं मालूम। मैं तो इतना सा इशारा जानता हूँ कि जिस चक्र पर असर पहुँचाना हो या उसकी यात्रा करानी हो तो उसके पीछे की (यानी दूसरे तरफ की) गुरिया ले ले। इस किस्म की तालीम देने की ज्यादा जरूरत भी नहीं। इसलिये उसकी Research भी ये कार है। मैंने कहीं कहीं पर जरूर काम लिया है।

तुमने जो लेटे-लेटे झटका लगना लिखा है, मुझे अभ्यास के साल दो साल बाद ऐसे झटके मालूम होते रहे हैं और इसकी वजह जब तुमने खत में लिखा है, तब समझ में आई। जब तबियत में यकसुई होती है, तो यह हो जाता है कि ब्रह्माण्ड में, जो विचार कि लोगों ने बनाये हैं, वहाँ तैरते रहते हैं। उनके Touch होने से झटका लग जाता है, और यह भी होता है कि अपना ही खयाल जो किसी वजह से उठ भागा हो, वह भी छूने से झटका लग जाता है। ऐसी हालत में यह भी मालूम होता है कि जैसे हम चौंक पड़े और यह भी वजह होती है कि एक सुई में ईश्वरीय-धार का बाज वक्त रेला आ जाता है। चुनांचे यह तुम्हारी हालत जो थी, वह ईश्वरीय-प्रकाश की वजह से थी और तुम्हें यह मालूम होना कि तुम्हारे बजाय वही प्रकाश है, इसके माने साफ़ जाहिर है कि तुम्हारी हस्ती अब बिल्कुल मिट चुकी है और अब Originality की शुरुआत है। मगर यह हालत असली चीज से अभी हजारों गुणा भारी है।

17 सितम्बर के खत में जो लिखा है, उसका जबाब यही है कि लय-दर-लय की हालत है। तुमने लिखा है कि अब यह एहसास होता है कि हृदय में ऐसी पीर है कि जिसमें न दर्द है, न व्यथा। इससे यह पता जरूर चलता है कि कोई चीज जरूर थी, जिसके लिये दर्द और व्यथा थी। अब इसका गुमान

ही रहना कि है पीर जरूर-इसके मानें यह होते हैं कि उसका अन्दाज़ आ चुका है, जिसको हासिल करना है। यह जो तुमने लिखा है कि हालत पर कभी अँधेरा आ जाता है और फिर साफ़ भी हो जाता है। ज़ाहिरा माने तो इसके ये हैं, कि वहाँ की कालिमा निकल जाती है। मगर इतने ऊँचे स्थान पर उस कालिमा का इतना Gross-way में एहसास नहीं हो सकता, इसलिये वहां पर यही चीज़ है, कि जैसी रूह, वैसे फरिश्ते। अर्थात् जैसे बढ़िया और सूक्ष्म स्थान है, वैसा ही सूक्ष्म वहां की कालिमा। इसलिये यही कहना चाहिये कि जब वहाँ की यात्रा शुरू होती है और फैलाव तो वह अन्दाज़ वहाँ पर विदा होता है जो हमारी सैर में रुकावट डाल रहा था।

एक बात लिखने से रह गई। वह पीर, जिसमें दर्द और व्यथा नहीं, इसकी हालत मुमकिन है आगे यूँ हो (मगर कुछ समय के बाद) कि जैसे कि कभी चोट लगी थी, तो सोचने पर तो उसे यह मालूम होता है कि चीज़ को भूल जाते हैं तो उसके यह माने नहीं होते कि वह चीज़ ख्याल से हट गई। उससे रिश्ता है तो उसके यह माने नहीं होते कि वह चीज़ ख्याल से हट गई। उससे रिश्ता ज़रूर कायम रहता है, मगर बहुत Internal। इसलिए पीर का मौजूद होना चिन्ह इस बात का है कि उसकी Nature अब वैसी ही हो रही है, जिसके लिये कि हमने पीर पैदा की थी।

केसर का खत मिला। उसकी हालत बहुत अच्छी चल रही है।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-592

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 22.9.56

कृपा पत्र आप का कल आया। पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आप की कृपा का धन्यवाद कैसे दिया जा सकता है। कृपया इस गरीबनी पर इसीप्रकार कृपा बनाये रखें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो पूजा में चाहे घंटो बैठी रहूँ, किन्तु कभी पूजा की खुमारी ही नहीं आती। न जाने क्यों साधना तो मुझे लगता है कि मानों ऐसा हो गया है कि जैसे Use करो, लेकिन कोई अर्थ नहीं। मैं ही नहीं, मुझे तो कोई भी आदमी साधना करते हुए एहसास नहीं होता है। साधना का तो मानों होम हो चुका। आज साधना शब्द सुना तो मुझे बिल्कुल ऐसा नया शब्द सा लगा, जिससे मेरा मानों कोई परिचय ही नहीं हुआ। दिन भर बोलती हूँ, किन्तु किसी शब्द का कभी अनुभूति ही नहीं होती। मानों कभी कोई ध्वनि ही नहीं होती, जो कान में पड़े, इसीलिये सब कुछ मानों सुन्न पड़ गया है। बाहर-भीतर मानों सब कुछ एकाग्र हो गया है किन्तु यह एकाग्रता भी अब कभी एहसास में नहीं आती। अब तो हर काम रहनी कथनी व करनी, सबकी एक समान गति है। एक Level है, हर काम उसी के द्वारा होते रहते हैं और मेरा तो इस समान गति के आस-पास भी न कहीं अपना पता पाती हूँ, न कहीं ठिकाना ही है। एक अजीब सरल सी मामूली फकीरी दशा है। न दर्द है, न कुछ आराम की ही अनुभूति होती है। अब तो मेरी तबियत लाचार यही कहती है कि-

"बाँह छुड़ाये जात हो, निर्बल जानि के मोहे।
हृदय ते जब जाहुगे, मर्द बदौंगे तोहे॥"

किन्तु मुझे तो ऐसा कहने में भी संकोच है, क्योंकि मुझे तो 'उसका' कभी एहसास ही नहीं होता है। न हृदय में इसके लिये पीर है। हाँ, हृदय जबरदस्त जरूर है, हारने वाला नहीं है। इसीलिये उपरोक्त "हृदय ते जब जाहुगे" की बात कह दी है किन्तु मेरे अंतस् में कोई भी विचार नहीं है। भाई, न जाने क्यों, एक स्वच्छ दशा, जो अब व्याप्त है, वही मानों मेरा स्वरूप हो गया है। इसके अतिरिक्त एक जो सरल-साम्य दशा सी जान या अनजान सोते-जागते सदा ही रहती थी, उसका मैं Touch भी नहीं कर पाती हूँ। न जाने क्या बात है कि साम्य अवस्था में फैले होते हुए भी उससे परे हो रहती हूँ।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री- कस्तूरी

पत्र संख्या-593

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! 28.9.56

पत्र तुम्हारा 22 सितम्बर का मिल गया। किताब जिसका नाम "वेदान्त मुक्तावली" है, स्वामी रामेन्द्र देव जी ने मेरे पास भिजवा दी थी। सम्भव है कि उनकी यह मंशा हो कि वह मुझे यह जाहिर करना चाहते हों, कि उनके यहाँ भी लिखैया मौजूद हैं। तो मैं तो भाई, काबिल आदमियों के सामने हमेशा कलम टेकने के लिये तैयार हूं। मुझमें भला क्या काबलियत है और जो कुछ कि लोग समझते भी हों, वह सब 'उसी' की काब्लियत है, जिसके दरवाजे पर मैं टिककर बैठ रहा। किताब देहातियों के लिये तो अवश्य अच्छी चीज है और कविता भी उसमें है, जो गा-गा कर उनको रिझाया जा सकता है। उसमें एक Chapter तमाखू पीने के ऊपर भी लिखा है, उस पर मैंने सुर्खी का निशान बना दिया। मैं लखनौर गया था तो हुक्का पीने पर मेरे एतराज था और है भी यह चीज क़ाबिल एतराज। एक सतसंगी भाई की राय है कि इससे मुझको ही नसीहत दी गई है, ताकि मैं इसको छोड़ दूँ और इसका उनको हार्दिक धन्यवाद है कि एक बुराई उन्होंने बतला दी।

अब तो उन्होंने अपनी संस्था भी अलहदा कायम कर ली है और नियम भी बना लिये और गुरू तो उनको रंगे हुए कपड़ों ने बना दिया। तुमने देखा कि थोड़ी सी तंग-नजरी (कहरपन और संकुचित विचार) ने कैसे-कैसे करिश्में दिखा दिये। ईश्वर इस बात से हर एक को बचाये रखे। जहाँ पर हमें अपने 'लाला' जी का कौल याद आता है कि कामयाब वही है कि जिसे ईश्वर अपनी तरफ़ खींच ले। जब वह नेत्रहीन हो गये तो मैंने उनकी अंतर दृष्टि खोलने की कोशिश की थी और खोल लाया था, मगर जहाँ पर कि हर हालत का Nucleus (असल) होता है, वहाँ पर मैं खुद-ब-खुद ठहर गया था, अगर जल्दी कर जाता तो वह टूट गया होता। मैं बड़ा नातजुर्बेकार (Unexperienced) हूँ और तबियत कुछ ऐसी बन जाती है कि फिर इधर-उधर देखने की तबियत ही नहीं चाहती। ईश्वर ऐसी बुद्धि दे कि मुझसे ऐसी त्रुटियाँ न हो। वह करीब के गाँव में दौरा कर रहे हैं, सत्संगी बनाने के

लिये। कुछ सत्संगी पुवाँया में भी है। 30-34 आदमी तो उनके पास थे ही, सम्भव है, कुछ और हो गये हों। इसमें मेरा कोई हर्ज नहीं। बहरहाल वह भी ईश्वर नाम फैला रहे हैं।

अब मैं कुछ थोड़ा बहुत तुम्हारी दशा पर रोशनी फेंकता हूं। प्रथम इसके कि मैं कुछ लिखूँ, वह चलता जुमला कह देना चाहता हूँ कि हालत लय दर-लय होती जाती है। ठौहा और ठिकाना का मालूम न होना यह बताता है कि जिस नींव पर कि Structure (इमारत) बनी थी, वह नींव नहीं रही। मतलब यह है कि भक्ति के तेज थपेड़ों ने उसको बर्बाद कर दिया है और अब उसकी जगह विश्वास ने ली है, जिस पर कि वह चीज तैयार हो रही है कि कहने के लिये और समझने के लिये हवाई किला कहा जा सकता है। जब यह अटलपना, जिसको विश्वास की उन्नति की (Advanced) हालत कहते हैं। यह भी धुल जावे, तो फिर समुद्र के किनारे पर पहुँचना कहेंगे। जिन चीजों से कि हम उन्नति करते, वही हमारे लिये आधार रेखा होकर sides बना देती है और वह sides यों बनाती हैं, ताकि उसके केन्द्र में ऐसी वस्तु न आ जावे कि जो उसके बने-बनाये खेल को बिगाड़ देवे। फिर क्या होता है कि वह अपना काम करने के बाद खुद घुलने लगती है। इसके अर्थ यह है कि वह अच्छी बन्दिशें जो हमारी उन्नति के लिये थीं, वह अपना काम करके विदा होने लगती है।

यह बात जो तुमने लिखा है कि कोई काम कितने ही मन से किया जावे, टटोलने पर यह मालूम होता है कि मानों न कोई इच्छा है, न अनिच्छा। इसके सीधा-सादा मतलब तो यह है कि इच्छायें बहुत कम होते हुए भी अनिच्छाओं का मजमून है। अब अपने जिले (ताल्लुक Concern) में अगर मैं बयान करूँ तो वह यह है कि मन की हालत बदल चुकी है और उसने अपना वह covering (पर्दा) उतार दिया है जिससे संसार का ताल्लुक ज्यादा था और उसमें पहले तो नशा था और अब खुमार की हालत है, जिसमें वह यह खोज करता है कि नशा उतरने पर यह सूक्ष्म गति, जो पैदा हो रही है, इसमें किसकी निस्बत (ताल्लुक) है। नहीं, नहीं, तुमने अब खुमार को भी उसके ऊपर से हटा दिया है, इसलिये उसकी गति अब ऐसी मिल रही है कि जो असल वस्तु के निकट है। जब यह बात है, तो फिर उसे तो याद उसी झंझट की रहेगी, जिसमें कि वह अब पड़ा हुआ है। अब उसमें नुक्स क्या है? वह यह, कि वह जिस झंझट में है, उसमें उसको वैसा ही मजा आ रहा है, जो उसको उस वक्त आया था, जब दुनियादारी के झंझटों में था। पहले उसको संस्कार का होश था और अब उसे दूसरे संसार (Next World) (उक्रबा) का होश है और होश होना यों लाजमी है, ताकि वह हकीकत को, असलियत को ढूँढ सके। तलाश और खोज के माने यही होते हैं कि उसके जी में कोई बात लग चुकी है या कोई सुगन्ध ऐसी आ गई है, जिसके फूल की उसको खोज है।

मैंने इन्हीं चन्द अक्षरों में तुम्हारी सब हालत का जबाब दे दिया, जो कुल पत्र का जबाब है। छोटी-छोटी बातों की व्याख्या नहीं की। कुछ मनुष्य का अजीब तार हो जाता है उस वक्त, जबकि लय-अवस्था जितनी कि मनुष्य को ईश्वर में हो जाती है वह अपने ही आप अपनी दी हुई Faculties से काम करने लगता है। यह एक अजीब बात मैंने बताई है और बात भी क्या, सभी जानते हैं। बस इतनी ही इन्सानियत उसमें बाकी रहती है। अगर यह चीज भी लय हो जावे तो फिर जिन्दगी का उसी वक्त खात्मा हो जावे। यह एक मामूली सी बात अपने बड़प्पन की बता गया।

तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ। माताजी व चौबेजी को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-594

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 28.9.56

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, रात में इधर मुझे न जाने क्या हो जाता है कि जब सो कर उठती हूँ तो बीच सिर में, बीच माँग में यानी जहाँ चोटी रखी जाती है, उससे चार अँगुल इधर हो, यानी सामने को जहाँ आप ने सहस्त्र दल कमल के बिल्कुल बीचोंबीच से सोकर उठने पर लगता है कि वहाँ से कोई चीज़ ऊपर से सम्बन्धित रहती है। वैसे सोते में विचार न जाने मुझे कितने आते रहते हैं और यह चीज़ तभी से बिल्कुल रहती है, जब से मैंने, जैसा एक बार लिखा था कि सिर में कोई चीज़ लगता है कि सिर फाड़कर बाहर निकल जाना चाहती है। जब से यह चीज़ ठीक हुई है, तभी से उपरोक्त बातें हो गई हैं। जागते में तो फिर, दिन भर तो नहीं एहसास में आता है।

कुछ न जाने अब अपने में यही लगता है कि मानों दीन या मोहताज नहीं रही। दस को खिलाकर खाने की सी दशा हो गई है। अब तो न जाने यह दशा है कि सोती हूँ तो लगता है कि मानों साम्य अवस्था ही फैली रहती है, उसी में व्याप्त रहती हूँ, किन्तु जागती हूँ या वैसे भी तो अपने में साम्य अवस्था का एहसास कभी होता ही नहीं है। यह जरूर है कि Sub-Conscious Mind का स्वरूप तो साम्य सरल अवस्था ही हो गया है। शायद वही सोते में मेरे एहसास में आता है। मुझे तो ऐसा लगता है कि सोते में मानों आप के निकट जा पहुंचती हूँ। आप की अन्तरात्मा में ही मेरी रहनी फैली रहती है, मानों 'आप' के नेत्रों की साम्य-ज्योति में ही मैं व्याप्त हो जाती हूँ, परन्तु जागते ही जैसे सब कुछ समाप्त हो जाता है। हाँ, यह जरूर देख रही हूँ कि मेरा अन्तर मानों उसी दशा का ही स्वरूप हो गया है, किन्तु मुझमें तो कुछ नहीं है, मानों अन्तर में सब होते हुए भी मेरी तो कुछ यह दशा है कि मैं तो कभी जैसे अन्तर में घुसती ही नहीं, और घुसूँ तो कहाँ, मुझे तो, सच तो यह है, न कहीं अन्तर दीखता है और न बाहर। मेरी दशा तो यह हो गई है कि खाली ही मेरी रहनी, कथनी, करनी, सब खाली ही है। शायद इसीलिये न मेरे में कुछ बनावट है और न असलियत।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-595

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 5.10.56

कृपा-पत्र आप का कल आया। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'आप' की तबियत को कुछ आराम सुनकर प्रसन्नता हुई। मेरी तबियत भी धीरे-धीरे बराबर ठीक हो रही है, चिन्ता की कोई बात नहीं है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

अब तो यह दशा है कि मालूम पड़ता है कि तुरियावस्था भी सो गई है, नहीं, नहीं, बल्कि उसकी भी मौत हो गई है। Everlasting peace में समा गई है। मेरी भी समझ में नहीं आता है कि मौत हो गई, या ज़िन्दा हूँ, क्योंकि मैं देखती हूँ कि जैसे कोई अनर्गल बातें बोलता जाता है, किन्तु न उसे उनसे कोई लगाव होता है और न बाद में सुधि। वही दशा अब मेरे लिये, जीवन या मौत के लिये हो गई है। बिल्कुल सफ़ाचट मैदान में हूँ। न अँधेरा है, न उजेला है, न कोई हवा है, न लहर। सदा, सर्वदा बिल्कुल शान्ति का साम्राज्य बना रहता है। बल्कि मेरा स्वरूप ही यही हो गया है।

भाई मेरा अन्तर व स्वरुप तो अब ऊसर हो गया है, जिस पर अच्छे बुरे, किसी बात का असर नहीं होता। या भाई, मुझे तो अब कभी दिल (मन) की अनुभूति ही नहीं होती कि वह है तो फिर जब दिल नहीं तो Expression (असर) कैसे और कहाँ पड़े। कुछ ऐसा मालूम पड़ता है कि जो बातें मुझे आगे बढ़ने में सहायक होती थी, यानी श्रद्धा, विश्वास, प्रेम व भक्ति, वह अब मैं ऐसे समुद्र के किनारे हूँ कि जहाँ पर हर दीवार ढहकर बराबर हो गई है। इतना ही नहीं, बल्कि अब तो मुझे इतना भी ज्ञान नहीं कि मैं बराबर शब्द भी कह सकूँ, क्योंकि अब तो हुआ यही है कि समता भी सो गई है। समुद्र का यह किनारा क्या है, बिल्कुल सन्न और अँधेरा व्याप्त है। अब तो बस इसी समुद्र की (सामुद्रिक हवा) हवा का ही प्रभाव मुझे मानों अपने में समेट लेना चाहती है और मैं भी बेहोश ही मानों हो रही हूँ। इसलिये पता नहीं, अब तब में कब पैर फिसल कर मैं समुद्र में जा पड़ूँ। लगता है कि मानों केंचुल उतर चुकी है। शरीर, शरीर नहीं एहसास में होता है। शरीर, शरीर नहीं रहा, क्योंकि रूप तो इस समुद्र की हवा का जो प्रभाव है, वही मेरा स्वरूप बन गया है। बल्कि यह दशा है कि अक्सर यह भी भूल भूल जाता है कि यह किनारा है या समुद्र में ही हूँ। लेकिन किनारा इसलिये कह रही हूँ कि समुद्र तो जाते ही मै तैरने लग जाती हूँ, फिर तो मैं रह ही नहीं सकती। 'मालिक' को इसीलिये मैं बीमारी की ख़बर नहीं देती कि मुझे बीमारी, बीमारी नहीं, बल्कि दशा ही लगती है। या यों कहिये कि वह भी दशा से ही मिल जाती है।

दूसरे देरी शब्द की मुझमें बर्दाश्त ही नहीं रही। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि समुद्र में आते ही बस मैं उसे तेजी से पैर कर पार कर लूँ। बस उसमें उतरने या पैठने की देरी भर है, क्योंकि इस किनारे से आर-पार मुझे न कहीं रूकावट है, न कोई अड़चन दिखाई पड़ती है, चाहे उसमें उतरी नहीं हूँ, लेकिन न जाने क्यों ऐसा लगता है कि मानों सब मेरे पेट में है। कुल समुद्र मेरे हृदय में हैं क्योंकि शायद उसके प्रभाव में तो मैं समा ही चुकी हूँ।

तुरियावस्था भी मानों सो गई। यहाँ पर एक श्मशान की दशा कह लें य. एक अजीब मुर्दे की सी दशा है। अब तो ऐसे समुद्र के किनारे हूँ कि जिसका सारा किनारा सोया हुआ है किन्तु इस सोने में निद्रा नहीं है। सारे सपने भी समाप्त हो चुके हैं। लगता है कि जैसे महाप्रलय की अवस्था में तम ही तम (अँधेरा) छाया हुआ है। नहीं, बल्कि महाप्रलय की अवस्था भी गलकर बराबर हो गई है। बस रह गया है केवल तम ही तम।

भाई, मुझे तो अब अपने में विश्वास का सहारा है न Innocence का सहारा है और अटलता तो गलकर कब की बराबर हो गई है। इच्छा-शक्ति का रत्ती भर पता नहीं। यहाँ तक कि पूजा-

तो करवाती हूँ, परन्तु यह भी पता नहीं रहता कि Sitting आती है या नहीं और भाई, आवे भी कहाँ से, इच्छा शक्ति जब कि न इच्छा है, न शक्ति।

इधर एक बात यह नई जरूर देख रही हूँ कि किसी की तकलीफ़ में ही मान लीजिये प्रार्थना चाहे कितनी मिन्नतों से, चाहे कितनी देर करती रही, परन्तु मानों कोई असर ही नहीं पड़ता, पड़ा भी तो नाम मात्र को, किन्तु एकदम से जब अपने अन्दर एक ज़िद् कहिये या जब हठ पकड़ जाता है, तो काम एकदम ही नहीं, बल्कि इतनी खाली या समर्पण की सी दशा में इच्छा शक्ति काम करने लगती है, तो बहुत अच्छा और बड़ी स्वाभाविक रीति से बन जाता है, किन्तु मुझे यह पता नहीं कि अंतर की वह चीज़ या वह स्थिति, आखिर होती क्या है, कौन बात होती है जिससे अपने आप ही काम बन जाता है और ऐसी स्थिति आते ही मुझे यह तो हो जाता है कि काम बनकर रहेगा, किन्तु न अटलता होती है, न विश्वास ही कहिये। यह तो कोई नई बात है नहीं, बल्कि अनुभव के इस पार व उस पार सब एक हो गया है, न आर है, न पार है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
पुत्री - कस्तूरी

पत्र संख्या-596

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 30.10.56

बहुत दिनों से 'आप' का कोई पत्र नहीं मिला। आशा है 'आप' अच्छी तरह से होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो मेरी यह दशा है कि रात में जब सोती रहती हूँ, तब तक तो लगता है, 'मालिक' में एकता होकर फैली थी, परन्तु जब से उठ या जग जाती हूँ तबसे फिर कुछ नहीं, मानों कुछ हुआ ही नहीं। दशा ज्यों की त्यों बनी रह जाती है, फिर निकटता न दूरी, दोनों बराबर हो जाती है।

एक स्वप्न देखा रात में कि 'आप' मुझे कुछ खिला रहे हैं। उसमें न कोई स्वाद है, न बेस्वाद है। फिर कुछ कपड़े मुझे पहिना कर कहा कि बस अब ठीक है। न जाने क्या अब ऐसी दशा है कि आंखें खुली हैं, कि बन्द, मुझे अब यह पहिचान भी नहीं रह गई है। दोनों एक समान ही हैं। लगता है कि अब ऐसी दशा है कि जैसे एक हारा थका पथिक जब विश्राम लेकर उठता है, सोकर उठता है, फिर न थकावट का पता है, न विश्राम की ही याद है। अब ऐसी दशा है कि जैसे कभी एक क्षण को स्वत: ही आदमी एक शून्य गति में हो जाता है, वही अब मेरा हाल हो गया है। चाहे इसे बेख्याल तबियत कह लीजिये।

मेरी तो कुछ यह दशा है कि अनुभव के पर्दे पर न कोई रंग आता है, न जाता है। हाँ, अनुभव के पर्दे के पार मुझे एक बे सिर पैर न कहीं आदि न अंत और न अनन्त ही है। ऐसे सूखे सागर में मेरी रहनी हो गई है। वहाँ न कथनी है, न करनी है, न रहनी है और न विचार सरनी हो जाती है। लगता है, यह सब कुछ इधर, इस पार ही छूट गया है, इस पार ही रह गया है। न वहाँ हृदय की गुंजाइश है, न दिमाग़ की पहुँच है। इन सब के पार, उस पार एक वीरान मैदान है, वहीं रहनी

है। सूनापन तो उससे कई गुणा भारी पड़ता है। उसकी भी गम्य नहीं। पता नहीं भाई, मेरी तो न जाने यह दशा हो गई है कि यह तन-मन मानों संसार में रम गया है, उसी में ही धुल मिल गया है और संसार कुछ है नहीं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:

आपकी दीन हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या- 597

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 10.11.56

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। 'आप' का पोस्टकार्ड जो पूज्य मास्टर साहबजी के लिये आया था, सुनकर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो यह दशा है कि न जाने क्यों दिमाग कुछ ऐसा हो गया है कि यदि उसमें कुछ विचार gather करके एक मिनट भी रखना चाहो तो नहीं ठहरता। वैसे चाहे विचार भले ही आते चले जायें और आते क्या है, लगता है कि कोई मानों जबरदस्ती ढूँसता है। दृष्टि अन्तर में एक सेकण्ड को भी कभी जाती ही नहीं, कभी Touch करती ही नहीं और जबरदस्ती भी हो नहीं पाती। मानों तबियत कभी एकाग्र होती ही नहीं। मेरेलिये तो दोनों समान हो गये हैं, चाहे एकाग्र कह लो, चाहे चलायमान कह लो। कुछ ऐसा हो गया है कि जैसे Photo के चारों ओर प्रकाश बना देते हैं, वैसा चारों ओर तो नहीं, बल्कि जैसे अपनी परछाई सामने चलती है, उसी प्रकार सामने सदैव एक प्रकाश तो नहीं है, हाँ, कुछ तेज़ सा बना रहता है। या यों कह लीजिये कि बाहर अपने Atmosphere में एक तेज व्याप्त हो गया है। वह बनी तो सदैव ही रहती है, किन्तु मुझे यह तक पता नहीं रहता कि यह परछाई किसकी है। यह तेज क्यों सदैव मेरे इर्द-गिर्द साथ रहती ही है। कहाँ से आया, क्यों उत्पन्न हो गया, यह कुछ नहीं मालूम है। इस तेज में न अँधेरा है, न उजेला है। यों कह लीजिये कि मेरे 'बाबूजी' शाहजहाँपुर रहते हैं, किन्तु 'उनका' तेज मेरे साथ ही बना रहता है न जाने क्या दशा है कि दृष्टि अंतर में न कभी जाती है और ले जाने पर एक क्षण भी वहां ठहरती नहीं। ध्यानावस्था भी कभी होती नहीं, चाहे पूजा में कितनी ही देर बैठे रहो। मैं तो भाई, अपने प्रियतम् से कभी प्रेम न कर सकी, न कभी अर्चना ही की, न वन्दना ही कर सकी। मैंने तो अपने मन के 'मालिक' का कभी दर्शन तक न किया। यही कसक कभी-कभी कसक उठती है। यद्यपि न अब मेरे कलेजे में दर्द है, न टीस है, न हूक है, न कसक है। हाँ, इतना याद है कि कभी इस हृदय के भीतर कहीं चोट लगी होगी, जिसका कभी स्मरण हो आता हो, यद्यपि मुझे पता नहीं है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-598

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 16.11.56

तुम्हारा पत्र 10.11.56 का मिला। तुम्हारी यात्रा अब M_1 पर है और तुमने वहीं की हालत लिखी है। इससे पहले स्थान L_1 था, उससे आगे का स्थान यह है। तुम चिट्ठी में देखकर लिखना कि पिछला स्थान L_1 ही था।

तुमने यह जो लिखा है कि दृष्टि अन्तर में कभी जाती नहीं और जबरदस्ती भी मुझसे होती नहीं। एक हिन्दी मसल है कि "नंगी क्या नहायेगी और क्या निचोड़ेगी"। जिस चीज़ में तुम्हें चिपटना था, उसमें चिपक चुकी। अब उसकी तरंग और बाहर मिट-मिटकर तुम्हें अनुभूति होती है। तुमने जो तेज अपने सामने होना लिखा है, यह जिस चीज में तुम चिपक चुकी हो, उसने यह तीसरी चीज़ पैदा कर दी है, जो शुद्ध है। हर इन्सान में यह चीज़ रहती है, मगर मनुष्य जो बुरे विचारों और दुनियादारी का असर लिये हुए हैं, उनका तेज या अक्स वैसा ही रहता है। एक बात तुम्हें नई बताता हूँ, जब मनुष्य की Changeless condition हो जाती है, तो फिर इस अक्स का पसारा कुल Universe में हो जाता है। जी का न ऊबने के माने यह है कि अब जी, जी ही नहीं रहा।

तुम्हारा यह खत संक्षेप में जवाब दिया है। छोटों को दुआ। चौबेजी को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-599

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 13.11.56

आशा है, मेरा पत्र पहुँचा होगा। आप की तबियत अब कैसी है? अपनी तबियत का हाल लिखियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि पता नहीं कि कर्म बंधन से मैं बँधती हूँ या स्वतंत्र हूँ। मुझे तो लगता है कि बंधन या स्वतंत्रता एक ही शब्द है। बंधन, स्वतंत्रतता, आत्मा, ईश्वर, साधना, साधक, प्रेम, भक्ति, यह पूजा सब मुझे एक उड़ती सी बातें लगती हैं। अब की बार तो शाहजहाँपुर में कुछ ऐसा हाल रहा कि आप और मैं आमने-सामने खाट पर पूजा पर बैठी रहूँ, तो यह नहीं कभी लगता कि सामने कोई बैठा है। वैसे चाहे मिलना न मालूम हो, परन्तु वापिस आने में जी खिंचता है। यद्यपि उसका भी कारण मुझे पता नहीं। स्वत: ही जी उदास हो जाता है। यद्यपि न आना होता है, न जाना। मेरे लिये तो दोनों एक समान हैं। न जाने अब क्या दशा है कि न मिलन होता है, न विरह ही कभी सताता है। मानों दोनों का अर्थ एक ही है।

पहले तबियत अति दीन व विनम्र सी हो रहती थी, परन्तु अब मेरे लिये मानों सब कुछ समान है। अब तो दशा यह है कि मेरे लिये मैं नहीं और मैं के लिये मेरा नहीं, सब खाली ही खाली है।

भाई ढोल के अन्दर पोल ही निकला, मेरी तो यही दशा हो गई है। मुझे लगता है कि मेरा, तेरा, मैं, तू एक ही शब्द है, एक ही अर्थ है, जो जरूरत के साथ स्वत: न जाने कब कब Use हुआ करते हैं। मेरी तो यह दशा है कि मैं भोली नहीं, अनजान नहीं, होशियार नहीं, न कुछ, बस जो कुछ, जैसा भी कुछ होता रहता है, कथनी, करनी व रहनी सब प्रकृति करवाती रहती है। इसीलिये मुझे कुछ मालूम नहीं। जैसा प्रकृति चलाती है, सब चलता है। मुझे तो अब यह तक पहिचान नहीं कि मेरी तबियत इधर (प्रकृति से मिली) है या उधर (ईश्वर, 'मालिक' से)। हाँ, मेरा काबू न अब इधर है, न उधर है। एक बात कुछ यह देखती हूँ कि जैसे मैं अपने दिमाग़ को चाहे आराम दे लूँ, किन्तु मैं देखती हूँ कि मेरे सोते में भी वह कुछ work जरूर करता रहता है। अब क्या व कैसा, व कहाँ work करता है, यह मैं स्वयं नहीं जानती हूँ, यह तो 'मालिक' ही जानें।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-600

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 19.11.56

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। 'आप' लोगों की कुशलता जानकर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो लगता है कि सर्वांग मेरे याद ही याद हो गया है। नहीं, नहीं, बल्कि यह हालत है कि मानों प्रेम, भक्ति, ज्ञान, अज्ञान, याद, विस्मरण अथवा सारी साधना का ही सृजन मेरे अंग से या इससे प्रकाशित तेज़ द्वारा ही हुआ है और मेरा यह हाल है कि मेरा तेज़-वेज़ किसी से सम्बन्ध नहीं। मैं तो अछूती ही हूँ, सदा अछूती रही और अछूती ही रहूँगी, क्योंकि न मेरे में साधना का निवास है, न सुगन्ध का वास है। मैं तो एक हस्ती, न बनने वाली, न मिटने वाली हूँ और पता नहीं कोई हस्ती भी हूँ या नहीं, क्योंकि बस केवल एक कुछ इसका ख्याल सा ही रह गया है और ख्याल भी एक रिक्त (खाली) सा है, जिसमें न ज़ोर है न ज़बर है।

कुछ यह दशा है कि जहाँ-जहाँ जाती हूँ, वहीं उजाला हो जाता है। विद्यालय में इतनी बिजली जलती रहती है, किन्तु मेरे घुसते ही लगता है कि एकदम से उजाला हो जाता है। मेरी Sub-consciousness बावली है, बेचैन है, किन्तु मेरी consciousness को मानों कुछ पता ही नहीं है। मुझे न दर्द है, न टीस है, न कुछ। कुछ ऐसा है कि जब 'आप' ने कहा कि मैं Half century cross कर चुका तो मुझे स्वयं को यही प्रतीत होने लगता है और जब एक बच्चे के सामने होती हूँ तो मैं भी वही हो जाती हूँ। मेरी वृत्ति का मुझे स्वयं कुछ पता नहीं। Age का Limitation भी है नहीं। इधर न जाने क्यों एक अवधूत सी दशा हो जाती है, परन्तु वह अवधूत सी अवधूत नहीं, बल्कि मेरी Sub-consciousness अवधूत गति को प्राप्त हो गई है। मैं देखती हूँ कि हर आध्यात्मिक दशा व चमत्कारों का अस्तित्व मिटकर बराबर हो गया है। तेज़, जो मैंने लिखा था, वह भी मानों लुप्त हो रहा है या व्याप्त हो गया है। हृदय कसमसाता है, तबियत एक अज्ञात

अनजान दिशा में समा जाने को भाग निकली है, परन्तु कोई दिशा मेरी अनजानी नहीं, कोई कुछ अज्ञात नहीं। हाल बेहाल पड़ा है, कुछ काबू नहीं, हृदय की किताब खुली पड़ी है, लेकिन उसमें कुछ लिखा ही नहीं गया। अन्तरतल सब सूना, रिक्त पड़ा है। सच तो यह है कि कुछ भी मेरी दशा हो, किन्तु मैं उससे न छूती हूँ, न अछूती हूँ। साथ रहते हुए भी अलग हूं और अलग रहते हुए भी एक ही हूँ, यही मेरा हाल है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-601

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 22.11.56

मेरा एक पत्र आप को मिला होगा। इधर मेरी तबियत कुछ खराब हो गई थी, परन्तु अब बिल्कुल ठीक हूं। फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

लगता है कि इस समुद्र में सब का अन्त है। हर दशा आकर ढह रही है। विशाल समुद्र के हृदय में जैसे पैसा या इकन्नी डालो तो गुप हो जाती है। इसी तरह से हर दशा का अस्तित्व मिट रहा है। यही दशा अवधूतावस्था की भी हो गई है। मानों इस गहन समुद्र में बिला गई है और मेरी तो आजकल यह दशा है कि मानों मैं तो तमाशा देखने वाली हूँ। उसी में कभी शान्त, कभी आनन्द हो जाता है, कुछ देर को। किन्तु मेरा भी अस्तित्व नहीं, वह भी तो इस समुद्र में सर्वप्रथम ही बिला चुका है। इसलिये मैं तो केवल एक तमाशबीन ही हूँ, बस और मेरा कुछ मतलब नहीं। कुछ ऐसी दशा है कि मुझे यह लगता है कि बातें व दशा मुझे अपनी condition से ऊँची का भी आभास बराबर मिलता जाता है और मुझे तभी कुछ न कुछ अनुभव भी अन्दाज में आ जाता है।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि मुझे लगता है कि मेरी Sub consciousness मानों किसी दूसरी दुनिया में खोई रहती है, भूली रहती है। लगता है कि मेरी Sub consciousness मानों कुल Universe में फैल चुकी है। किन्तु मुझे न जाने क्यों consciousness हमेशा, अब हमेशा एक ही सी बनी रहती है। मुझे कोई काम करना कभी भूलता ही नहीं। हाँ, कुछ इतना सा हो गया है कि दिमाग में कोई विचार एकत्रित मैं कर ही नहीं सकती। एक सेकेण्ड को भी विचार स्थित रह ही नहीं पाते हैं। मैं Sub-consciousness न जाने क्यों लिखती हूँ, किन्तु Sub-conscious mind तो बिला गया। उसका अस्तित्व ही मिट गया।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या - 602

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम! 28.11.56

मेरा एक पत्र आपको मिला होगा। मेरी तबियत में अभी कोई खास लाभ नहीं हुआ है। ईश्वर की कृपा से सब ठीक हो जायेगा। 'आप' चिन्ता न करें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो निवेदन कर रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि अन्तर मेरा बाहर हो गया है, और बाहर अन्तर हो गया है। लगता है मेरे शरीर में अन्दर-बाहर कोई चीज़ ही नहीं मिलती, जिसे 'मालिक' में समाहित कर दूँ, लयलीन कर दूँ। अब क्या लाऊँ, कहाँ से लाऊँ? कोई चीज़ उधार भी नहीं मिलती, जो न्योछावर कर दूँ। 'मालिक' बस इतना ही है कि मुझे कुछ मन ही मन शायद भाता बहुत है, इसीलिये मन चाहता है, कि सब कुछ उस पर न्योछावर कर दूँ, परन्तु सब क्या, मुझे तो कुछ भी नहीं मिलता। अब तो हैरान सी हूँ। भाई, मैंने प्रेम की परिभाषा जाननी चाही थी, किन्तु बजाय जानने के मुझे लगता है कि जो जानती थी, सो भी भूल गई। नहीं, बल्कि जो जानना चाहती थी, उसे भी भूल गई। फिर भला भक्ति में तो कदम रखना भी मुहाल है।

भाई, अब तो यह दशा है कि मेरी दशा एक बिल्कुल साधारण सब मनुष्यों के समान ही हो गई है जो चीज़ या बात मुझे हालत का पता देती थी, वह स्वयं ही न जाने कहाँ विलीन हो गई है। अब मैं करूँ तो क्या करूँ? मेरी तो अब यही समझ में नहीं आता कि आध्यात्मिकता, ब्रह्म-विद्या ये सब जैसे मानों एक मन का वहम् मात्र था, जो जाता रहा। अब तबियत में लगता है कि स्वयं कुछ नहीं है, बल्कि कुछ कुरेदन सी मानों कोई चिपकाये रहता है। मन तो है नहीं, मानों ज़बरदस्ती कोई मन नामक चीज़ चिपकाये है। चाहे कुछ चीज़ करती हूँ तो लगता है मानों कहती भर ही हूँ, महसूस कुछ नहीं होता है। यही दशा शरीर की है, कि चाहे किसी का नाम लेती रहूँ कुछ एहसास में नहीं आता, चाहे वह सामने ही खड़ा हो। अपना ही शरीर कभी एहसास में ही नहीं आता है। मुझे तो लगता है कि सब कुछ मानों वहम मात्र था, सो वहम रहा, नहीं तो जाने क्या मुझे हो गया है। पता नहीं क्या है, क्या नहीं। बाजे-बाजे समय कुछ सेकण्ड के लिये मानों शरीर मुर्दा हो जाता है। वैसे भी एकदम काया स्थिर ही रहती है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-603

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! 5.12.86

तुम्हारे पत्र सबके सब मिल गये। लिखैया न होने की वजह से जबाब न दे सका। अब कुल खतों का जबाब यह है-"गुड़ से मीठे हैं भगवान, बाहर-भीतर एक समान"। जब असलियत

और हक़ीकत से हम सम्बन्धित हो जाते हैं और उसमें घुस पड़ते हैं, तो यह बाहर और भीतर के Vision में कोई अन्तर महसूस नहीं होता।

केसर से कह देना कि वह जो कुछ मिशन को बढ़ाने के लिये कर रही है, करती रहे, मगर जब तक में South India में रहूँ, उसे यह ख्याल रखना चाहिये कि वहाँ के लोग मिशन से खूब Attract हो रहे हैं और तुम तो करोगी ही। मैं 10 दिसम्बर की रात को जाकर तिरूपति 14 को पहुँचूँगा और तीन दिन बाद मद्रास। वहाँ से लिखने की कोशिश करूंगा।

तुम्हारे 17 रूपये पहुँच गये, उसमें से 15 रूपये भेजने की जरूरत नहीं थी, इसलिये कि तुम्हारे पास भी कुछ रहना चाहिये।

चौबेजी और अम्मा को प्रणाम और तुम भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-604

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 9.12.56

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा, परन्तु आज फिर जी चल आया। कोई खास बात नहीं है, फिर भी जो दशा आजकल है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो यह दशा है कि मानों जबरदस्ती कोई मुझे इधर (यानी कुछ बेहोश होते हुए भी होश की दशा में) खींचे रहता है, नहीं तो रह रह कर लगता है कि मानों मैं खो ही नहीं, मानों बिला (बर्बाद हो) जाऊँ। शायद इसीलिए अक्सर अपने आप ही शरीर मानों मृत-प्राय हो ही जाता है।

अब तो लगता है कि जैसे कोई जबरदस्ती ज़िन्दगी को मेरे साथ चिपकाये हुए है और एहसास उसका कभी होने ही नहीं देता। हाँ, तब पता लगता है 'उसकी' जबरदस्ती का, जब कि अक्सर शरीर (या दशा) मानों मृत-प्राय हो जाता है। उसके बाद जब जागती हूँ, तब लगता है कि जबरदस्ती मानों किसी ने जगाया है। उँगलियों से अक्सर इतना तेज Vibration निकलने लगता है कि मानों सब काँप रही हैं। वैसे तो मुझे Vibration का भी एहसास ही नहीं होता है। कुल शरीर का कण-कण स्थिर स्थित है, किन्तु न जाने क्या बात है, कि दृष्टि को, यदि किसी को पूजा कराऊँ तो एक Point पर स्थित करती हूँ, तो न जाने कौन उसमें Vibration पैदा कर देता है। उसे हिला-हिला देता है।

मेरी तो यह दशा है कि ब्रह्म या जीव, आत्मा या परमात्मा यह सब उड़ती-उड़ती सी बातें लगती है। मुझे तो न ब्रह्म, न जीव, न आत्मा, न परमात्मा, कुछ लगता ही नहीं है। कहीं यह सब लोगों ने बेकार वहम की बातें तो नहीं, यह सब नहीं लिख दी है। यदि वहम कहती हूँ तो, उसमें भी कुछ तो होता, किन्तु मेरे पास तो कुछ भी नहीं। लगता है कि जो दशा है, वह भी मुर्दा है जो थी, वह भी मुर्दा थी और जो होगी, वह भी मुर्दा होगी। अब यह सब क्या है, आप ही जानें आप का काम जाने।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आप की ही स्नेह सिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-605

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर खीरी
सादर प्रणाम! — 18.12.56

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक है। आशा है आप भी सकुशल होंगे। मुझे कभी-कभी आप की बहुत याद आती है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा चल रही है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो यह दशा है कि मानों एक ऐसे अथाह (Infinite) मैदान में जा रही हूँ, जहाँ न आत्मा की गुजर है, न ब्रह्म की रहाइश। मुझे तो न जाने क्या हो गया है कि लगता है ईश्वर तो ईश्वर होगा, किन्तु आत्मा, आत्मा नहीं है। आत्मा किसी में नहीं है, कहीं भी नहीं है। ईश्वर सबमें है, किन्तु आत्मा किसी में नहीं है। यह सब तो लगता है, अब केवल सुनी-सुनाई उड़ती-उड़ती सी बातें मात्र लगती हैं। मेरी तो यह दशा है कि प्रसाद या खाना, मेरे लिये सब समान हैं। किसी का जूठन भी खाने में मानो वह मेरे लिये प्रसाद ही रहता है, किन्तु प्रसाद का न विचार है, न अनुभूति।

अक्सर कुल शरीर में तेज Vibration होता है और यह मेरा ही Vibration कुल विश्व भर में व्याप्त है किन्तु इस Vibration का स्वरूप पवित्रता है। यद्यपि Vibration तो केवल Vibration है, जो मेरे में है। बोलती हूँ तो Vibration ही निकलता है। यह शरीर जहाँ जहाँ जाता है, Vibration ही Vibration फैल जाता है और दूसरी चीज़ कुछ ऐसा प्रकाश व्याप्त है, जो प्रकाशहीन है। लगता है कि यदि इस Vibration में तबियत मिलाकर काम करूँ, तो इतना तेज हो जाता है कि फिर तुरत लगता है कि तबियत न जाने क्यों स्वयं इससे हट जाती है। अपनी न Will है, न Power, बस लगता है, इस Vibration में तबियत ज़रा सी मिला दूँ तो काम होने लगता है। न जाने क्यों हर आदमी ही मानों मेरे लिए गुरू हो गया है, किन्तु मुझे अपने 'मालिक' का कहीं पता नहीं मिलता। यदि कुल संसार में मिलकर ढूँढ़ती हूँ, तो वह मैं ही रहती हूं, कोई और नहीं रहता। अनेकता मानों थी नहीं कभी और वह एक भी तो नहीं है।

भाई, मुझे तो लगता है कि न कुछ सर्व-शक्तिमान है, न सर्व व्यापी है, न सर्व-आत्मा है। पता नहीं, यह मेरा क्या हाल है किन्तु फिर भी मैं वियोगिन हूँ, क्योंकि चार-पाँच दिन हुए, मैंने एक गीत ऐसा सुना, बस तबियत उदास हो गई, कण-कण बेचैन हो उठा किन्तु न जाने क्यों, यह पता नहीं, ऐसी तबियत होने पर भी यह लगता है कि मानों यह बेचैनी 'मालिक' के पास से आई है, फिर चली जायेगी। किन्तु कलेजा कोई थामे था, नहीं तो कण-कण फट जावे और यह दशा थी कि कोई कह दे कि श्री 'बाबूजी' बहुत दूर चले गये, तो लगता है कि मेरे प्राण दूर चले गये हों, मुर्दनी छा जाती है। यह दशा है कि जाने प्रकृति, परमात्मा, यह सब मानों सुनी, सुनाई, उड़ती-

उड़ती बातें हैं। मेरे मन में न अब राम पैठता है न रहीम, न प्रकृति न परमात्मा न ईश्वर न कुछ। इन बातों को सुनती हूँ तो लगता है कि मानों ये सब वहम है। आजकल मेरी समझ में कुछ नहीं आता। रात को बस ऐसा लगता है कि मानों जबरदस्ती कोई लिटाये रखता है, कुछ खबर-बेखबर रखता है, तब तक लेटती हूँ, नहीं तो जब भी चाहे, रात को दो बजे ही उठ बैठूं, न सोने की खुमारी कभी आती है, न आलस शरीर में आता है।

मेरी तो यह दशा है कि बेचैनी मानों मेरे में नहीं है। कोई बस चिपकाये रहता है या मानों कभी पीर की याद आ जाती है। किन्तु मुझे 'मालिक' स्वयं बेचैन यों नहीं होने देता कि मेरे बेचैन होने से कुल Atmosphere में, कण-कण में मानों बेचैनी के परमाणु दौड़ने लगते हैं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-606

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 21.12.56

आशा है, आप की तबियत अब ठीक होगी। यहाँ सब लोग कुशल पूर्वक है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो यह दशा है कि रह-रहकर मानों मर-मर जाती हूँ। भरे बुलावे के बीच बैठी होऊँ, उसमें यदि 5 मिनट को भी शान्त होकर चुपचाप बैठी रहूँ, तो पता नहीं, फिर तो मुझे कुछ खबर ही नहीं रहती कि कहाँ हूँ, कहाँ नहीं। होश आने पर भी न मुझे थोड़ी देर बोलना आता है, न कुछ। वैसे तो यह दशा तो मानों मेरा खवास ही हो गई है, कि होश-बेहाश ऐसे ही दिन बीतते चले जाते हैं।

अब तो भाई, न जाने क्या बात है कि अपने कण-कण में भीतर-बाहर कहीं भी 'मालिक' की सुगन्ध नहीं मिलती। कहाँ तो मुझे हर आदमी से हर चीज़ से अपनायत लगती थी और कहाँ मानो कोई है ही नहीं, कुछ महसूस ही नहीं होता, तो फिर अपनायत कहाँ का, प्रश्न ही कहाँ। खुद 'मालिक' में मुझे 'मालिक' की सुगन्ध नहीं आती। मेरी तो वह दशा है जो पूजा प्रारम्भ करने के पहले थी। बिल्कुल ऐसी, जिसे सिवाय घर-धन्धों का कुछ ज्ञान ही नहीं है। घर-धन्धे भी होते हैं, तो हों, नहीं तो इसका भी कुछ ज्ञान नहीं, क्योंकि न आगे के कार्य का सोच है, न पीछे की चिन्ता। दशा ऐसे सम पर है कि जहाँ मुझे तो स्वयं का भी ज्ञान नहीं होता और ज्ञान का भी तो ज्ञान नहीं होता। मेरी तो यह दशा है कि मैं चाहे कितना सोचूँ, ध्यान दूँ, अब न Duality का पता है, न यही कि Non-Duality में हूँ और ध्यान क्या, मेरे में अब इतनी शक्ति ही नहीं, जो इन पर Meditate कर सकूँ। मेरी तो यह दशा है कि अणु-अणु से 'बाबूजी' की शक्ति प्रकाशित हो रही है। मेरे शरीर के कण-कण से 'बाबूजी' की शक्ति प्रकाशित हो रही है। वह शक्ति क्या है, यह मुझे नहीं मालूम है।

सिर का यह हाल है कि लगता है कि कुल में जगमगा रहा है, किन्तु जगमगाने से मेरा मतलब प्रकाश से जरा भी नहीं है। न जाने कुछ कुल शरीर में कुछ ऐसा ही एक Change देख रही हूँ। मुझे तो यह भी मालूम नहीं रहता कि दशा भी मेरी है या नहीं। बल्कि दशा, दशा है या नहीं, क्योंकि मैं तो सूखी की सूखी रहती हूँ। न सावन सूखी न भादों हरी।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-607

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 13.1.57

मेरा पत्र जो दद्दा के हाथ भेजा था, 'आप' को मिल गया होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं। आशा है 'आप' भी अच्छी तरह होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो कुछ यह दशा है कि बिना पूजा के मामूली बैठे-ठाले भी आँख बन्द करके खोलूँ तो मुझे कुछ पाँच-सात मिनट तक न जाने क्यों कुछ दिखाई ही नहीं पड़ता है। वैसे तो आँख खोले रहूँ या बन्द रखूँ, दोनों मेरे लिये एक बराबर है न कुछ दिखाई देता है, न छूने पर महसूस ही होता है। यही नहीं, आँख बन्द करके भी चाहे जहाँ चलती फिरूँ या आँखें खोलकर मुझे तो कोई अंतर ही नहीं मालूम पड़ता है। मैं देखती हूँ कि पहले हर समय मेरे अन्दर एक रटना सी लगी रहती थी कि 'मालिक' तक पहुँचना है, 'उसे' पाना है, 'उस' पर मर मिटना है किन्तु अब न जाने क्यों अन्तर में शान्ति छाई जाती है, न प्यास है, न रटना। अगर मन में यह सब बातें दोहराती हूँ तो लगता है कि जैसे मन में कुछ असर ही नहीं पहुँचता। न जाने क्या हो गया है जो करती हूं, सो दिखावा मुझे लगता है, क्या करूँ। जिस 'मालिक' पर मर मिटने का मेरा प्रण था, प्रति श्वाँस श्वाँस, नस-नस, जिस मेरे प्रण में शामिल थी, हृदय जैसे उससे भी घुल गया, साफ़ हो गया। उस पर कुछ असर ही नहीं पड़ता है। अपने को मारूँ तो भी चोट नहीं आती। किसी को डाटूँ तो डाँट सुनाई नहीं पड़ती। अब तो इस दीपक का तेल समाप्त हो गया। चाभी भरी खत्म हो गई। कलावे में लाल रंग की तमीज़ नहीं आई। कलावा अम्मा को दे दिया, लेकिन कहा कि यह है, लाल रंग का कलावा नहीं मिला। लेकिन 'मालिक' सम्भाले हर हालत में रहता है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्रणाम। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री - कस्तूरी

पत्र संख्या-608

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 16.1.57

पूज्य मास्टर साहब जी से आप का समाचार मिला। आप की तबियत अब ठीक है, जानकर प्रसन्नता हुई। ईश्वर सदा आप को स्वस्थ रखे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो यह दशा है कि कोई चाहे 'मालिक' के प्रेम में ही बेचैन हो, तड़फड़ाये, किन्तु तो भी मेरे हृदय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और चाहता है कि कोई बेकाबू न हो, अन्दर चाहे कुछ हो। हृदय तो वास्तव में पत्थर है, और जो अपने को काबू में करने का प्रयत्न करे तो मुझे ठीक लगता है। न जाने क्या बात है कि भीतर की बात को बाहर निकालने में कुछ अच्छा नहीं लगता है। मेरा तो यह हाल है कि लगता है, प्रेम भी एक मैल है, जो धुल गया। नींद तो अब कभी आती ही नहीं। कुछ यह हाल है कि 'बाबूजी' को पत्र लिख रही हूँ और भूख लगी हो, तो लिख जाती हूँ कि 'बाबूजी' भूख लगी है। कोई बात छिपती नहीं। ज्यों की त्यों सबके सामने रहती है। यह सब क्या है, यह तो 'आप' ही जानें।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-609

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 22.1.57

आशा है मेरे पत्र मिले होंगे। यहाँ सब अच्छी तरह से हैं। आशा है, आप भी अच्छी तरह से होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो न जाने क्या दशा हो गई है कि मेरी तो तबियत की दृढ़ता वगैरह न जाने कहाँ उड़ गई है। दशा अब शुद्ध है तो स्वभाव भी बिल्कुल मुलायम हो गया है। पहले मेरी यह दशा थी कि यदि कोई मेरी प्रशंसा करता था, तो सबमें एक कुछ लहर खुशी की सी आ जाती थी। मैं चाहे उसे 'मालिक' की प्रशंसा में भले ही बदल देती थी, किन्तु खुशी होती थी परन्तु अब देखती हूँ कि लहर हल्की सी अन्तर में आती अवश्य है, किन्तु मानों मेरा उससे Touch नहीं होता, इसलिये अक्सर यही दशा रहती है कि यह पता नहीं रहता कि यह लहर है कहाँ, किसमें है, कुछ मानों खबर नहीं। पहले मेरी यह दशा थी कि मानों मैं हर एक की गुलाम हूँ, और सत्संगी भाइयों के तो चरणों में मानों झुकी ही रहती थी किन्तु अब तो न जाने बुत तबियत रहती है। जाने कुछ वैराग्य ही मानों तबियत का स्वरूप हो गया है। 'आप' के पास से लौटने वाले के आगमन में आप की बातें सुनने, आप का संदेश सुनने को बेचैन रहती थी, परन्तु दो-एक

दिन भीतर मन में कुछ प्रतीक्षा सी बनी रहती है। किन्तु तबियत से उच्छृंखलता नहीं आती। वह तो ज्यों की त्यों शान्त बना रहता है, मानों हर संदेश मिला हुआ है। अब तो यह एक मन भर गया या दो मन। मुझे यह सब मानों सुनने में अब स्वप्न में बरबराना, बस ऐसी ही बात लगती है। ऐसे ही जब उत्सव का ख्याल आता है, तो जाने को बेचैनी अनुभव होती है, किन्तु यदि ख्याल न आवे तो तबियत ज्यों की त्यों बुत ही बनी रहे। यदि उत्सव का ख्याल 'मालिक' न देवे तो उत्सव निकल जावे और मुझे पता ही न लगे।

परसों रात करीब 8-9 बजे दाहिने हाथ के बगल की हड्डी में तमाम फड़कन हुई और लगा जैसे कोई फोड़े की कील सी निकल गई हो। भाई, अब तो न कुछ खबर है, न बेखबर। यह भी तो अब दशा नहीं है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-610

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 29.1.57

बहुत दिनों से आप का कोई पत्र मुझे नहीं मिला। शायद आप दूसरे जरूरी काम में व्यस्त होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, मानों बिल्कुल बेख्याली तबियत ही तो मेरी रहनी बन गई है। कथनी, करनी, रहनी, मानों सब मिलकर एक हो गई है। यही नहीं, अन्दर, बाहर, सब में ही बेख्याली दशा व्याप्त है। बेदशा की दशा ही तो मेरा स्वरूप बन गई है और मुझे लगता है कि मानों हर एक के अन्दर ही यही दशा व्याप्त है, चाहे वह पूजा करे अथवा नहीं। कुछ ऐसी दशा है कि पूजा के लिये फूल तोड़कर चाहे कहीं रख आती हूँ, भूल से, परन्तु जब उन्हें पा जाती हूँ तो यह नहीं लगता है कि यह बेकार गये। सब मुझे पूजा के चढ़े हुए फूल के समान ही लगते हैं। मुझे कुछ दशा देखकर एक यह शेर याद आया। यही मेरी दशा है कि:-

अब तो दशा क्या है, कुछ ऐसी Resting place (आराम का स्थान) है, कि मानो न कुछ करा-धरा है, न कुछ करना धरना है, न कुछ लेना है, न देना है। न कुछ कहना है, न कुछ सुनना है। अब दशा ध्यान में रखती हूँ तो भी यही दशा है और भूल जाती हूँ, तो भी यही दशा है। अथवा यों कहिये कि चाहे ध्यान (याद) की अवस्था चाहे भूल की अवस्था हो, बस मानों अब अवस्था ही अवस्था Rest कर रही है, तो क्या ध्यान कहूँ, क्या भूल कहूं। बेख्याल का ख्याल ही व्याप्त है, बस और कुछ नहीं और इतनी सरल और हल्की-फुल्की कि विचार इतना भारी पड़ जाता है कि उसमें डूबना तो दूर रहा, जाने Touch भी कर पाता है कि नहीं। बस मानों निगाह ही दशा में समा गई है।

भाई, सच तो यह है कि ख्याल कहूँ या बेख्याल कहूँ, दशा कहूँ या बेदशा कहूँ, वहाँ तो अब किसी भी गम्य नहीं है। न करे-धरे की गम्य है, और न कुछ करने धरने को शेष ही अनुभव होता

है। यही दशा, जो भी पूजा में मेरे साथ बैठता है, उसे भी ऐसा ही अनुभव होता है। बस Rest ही मानों Rest कर रहा है।

कुल रीढ़ बिल्कुल हर समय एक साथ सीधी हो गई है। कुछ हल्की ठंढक सी फ़ुरफुरी उसमें रहती है तथा एक नम्र सी दशा भी उसमें व्याप्त है। मुझे तो ऐसा लगता है कि जिस Basis पर मेरा जीवन टिका है, वह Basis ही मुझे सब दशा में डूब सकने में या समा जाने में बाधक बन रही है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-611

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 24.2.57

बहुत दिनों से आपका कोई पत्र नहीं मिला। चिन्ता लगी है। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा है समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

अब भाई, यह दशा है कि बस पर बैठी जा रही हूँ, किन्तु मुझे यह पता ही नहीं लगता कि घर में बैठी हूँ या बस में। कहीं जाने का एहसास ही नहीं होता। चाहे किसी के बैठी होऊँ, किन्तु यह पता नहीं लगता कि अपने घर बैठी हूँ या किसी और के और अपने घर भी बैठी होऊँ तो भी यह पता नहीं कि किसके घर बैठी हूँ और सच तो यह है कि घर वर का तो मुझे एहसास ही नहीं होता, चाहे कहीं बैठूँ, एक ही बात है। वीरान ही वीरान पड़ा है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन हीन, सर्व साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-612

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 25.2.57

अभी कल ही मैंने एक पत्र आपको लिखा है। आज फिर लिख रही हूँ। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ यह दशा है कि यदि कोई पूछे कि पूजा में अच्छा लगा, तो कह नहीं सकती, क्योंकि न तो यह पता लगता है कि अच्छा लगा या बुरा और यदि अच्छा लगने का अनुभव भी होता है, तो यह पता नहीं लगता। भूल-भूल जाती हूँ कि मुझे अच्छा लग रहा है या किसे। मुझे अच्छा लगता है तो सबको ही, वही दशा ही, मुझे एहसास लगती है। कुछ ऐसा है कि सरला जिज्जी की फिक्र लगी है, लेकिन यह पता नहीं लगता कि किसे चिन्ता लगी हुई है। जैसे पहले संस्कार की छींट मेरे हृदय पर नहीं पड़ पाती है।

भाई, अब तो यह दशा है कि यदि कोई कहता है कि कस्तूरी तुम्हें श्री 'बाबूजी' ने बहुत याद किया है किन्तु मेरी समझ में यह नहीं आता कि कौन कस्तूरी है, किसके विषय में ये बातें हो रही हैं।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आप की ही स्नेह सिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-613

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 6.3.57

तुम्हारे पत्र दिनांक 24 व 25 फरवरी 57 के मिल गये और जज साहब का पत्र भी मिला। इसमें कोई परेशानी की बात नहीं, जरूरत इस बात की है कि लोग अच्छे बनें। अगर एक भी मुझ जैसा बन जाता है, तो फिर हमारा Mission Complete है, मगर अभी तक ऐसा कोई नहीं बना कि उस झोंक को सहन कर सके, जो 22 वर्ष की मेहनत के बाद मुझे प्राप्त हुई है। अच्छे लोग मिशन में अवश्य हैं, और सबमें रोशनी मौजूद है। यह तो बड़ा अच्छा तरीका है कि सिखाने वाले की शक्ल को देखते रहें। मैंने इसको बहुत किया है जब मैं अपने गुरू महाराज के पास जाता था और उनके सन्मुख होता था, तो उन्हीं की शक्ल देखता रहता था। यह तो मैंने कह दिया था कि तुम्हारी पहुँच Point N_1 पर है, मगर अभी उस Point पर मैं अधिक ध्यान न दे सका। असर उसका अवश्य है, मगर उसका Working अभी शुरू नहीं हुआ है।

मनुष्य जब सब कुछ ख़ो बैठता है, तब उसे वास्तविक जीवन प्राप्त होता है। असल में सब कुछ ख़ोना ही है और तुम ख़ोती चली जाती हो। मुझे अपना एक वाक्य याद है कि जब मैं तिरूपति से चला और रेनीगुन्टा पहुँच कर मद्रास के लिये गाड़ी बदली तो वहाँ पर Dr. K.C. Vardhachari के कुछ Disciples मिले, जिनको वह आध्यात्मिक पाठ हर 15वें दिन बतौर Lecture के देते हैं। मैंने भी चलते समय एक थोड़ा सा सबक दिया था कि:- "Liquidate yourself". तुम ऐसा खुद-ब-खुद करती चली जा रही हो। जैसा कि तुमने अपने पत्र में लिखा है कि जब तुम्हें यह मालूम होता है कि मैं तुम्हारी याद कर रहा हूं तो खुशी की लहर दौड़ कर फिर ज्यों की त्यों रह जाती हूँ और यह समझ में नहीं आता कि कौन कस्तूरी है"। इसके अर्थ यह है कि तुम्हें अपनी खबर क्या बल्कि याद भी भूल गई और इसे बहुत उत्तम प्रकार की लय-अवस्था कहते हैं। एक वाक्य तुमने अपने पत्र में इतना अच्छा लिखा है कि- "मैं अपने स्नेह की डोर से आपको बाँधते-बाँधते स्वयं खो गई"। इसके अर्थ ये हैं कि भक्ति की लड़ी जो जुड़ी थी, उसने अपना आवरण उतार दिया। हमें भक्ति से ही चलना चाहिये और जब उसका आवरण उतर जाता है तो फिर वही ज्ञान है और जब उसकी कुरेद समाप्त हो जाये तो वहीं Reality है। जब भक्ति का आवरण उतर जाता है और ज्ञान की अवस्था आ जाती है, फिर उसमें जो भूल आरम्भ होती है, अर्थात् जब उसका अनुमान जाता रहता है, तब Divine Wisdom का प्रारम्भ है। ज्ञान का प्रभाव जाते ही, विज्ञान का पर्दा, जिसे विज्ञानमयी कोष कह लो, टूटने लगता है। अपनी समझ और अपनी बुद्धि ईश्वरीय

होने लगती है। अब विज्ञान का भी पर्दा टूट गया तो फिर क्या? Divine wisdom भी अपने भाग को असल भण्डार में लय करना आरम्भ कर देती है। कहीं ऐसा हो गया, तो फिर यहाँ के पहुँचे हुए अभ्यासी के कहने में Automatic Divine Wisdom ही छलकती है, मगर इस नई लड़ी को अभी समाप्त होनी नहीं कहना चाहिये। इसका गुम होना तो तब है, जब कि नस-नस में वही असर पैदा हो जाये, जो असल में है।

कल 5 फरवरी को रात्रि में मैंने एक स्वप्न देखा कि मैं कुछ सत्संगियों को Sitting दे रहा हूँ। वहां पर क्या देखा कि जहाँ सत्संगी तवज्जोह ले रहे हैं, वहाँ पर से आसमान इतना नज़दीक है कि हाथ से छू सके और आसमान पर सितारे अपनी चमक ऐसे दे रहे हैं कि उसकी रोशनी जो कि Dim इतनी है कि अब भी दिल उसको देखना चाहता है। इस स्वप्न की तावीर (Inter pretation) जाने क्या है। स्वप्न अवश्य अच्छा है।

चौबेजी और अम्मा को प्रणाम तथा तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

तुम्हारा शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-614

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 8.3.57

कृपा-पत्र आप का आज ही मिला, पढ़कर प्रसन्नता हुई। पूज्य मास्टर साहबजी से मालूम हुआ कि 'आप' को कुछ जुकाम-खाँसी है, 'आप' दवा बराबर खाते रहिये। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो यह दशा है कि कहाँ तो अपने को याद करने का प्रयत्न करने पर भी व्यर्थ ही जाता था और कहाँ अब, कि अपने को भूलने का प्रयत्न करती हूँ तो ऐसा लगता है कि मानों जैसे नाटक के ऊपरी पर्दे पर बात रह जाती है, भीतर तो असर लेने का माद्दा ही नहीं रह गया है। Sitting लेती हूँ, तो कोरी बैठी रहती हूँ। देती हूँ, तो भी यह पता नहीं एहसास में आता कि Sitting जा रही है या नहीं। क्योंकि मुझसे तो वह छूती ही नहीं। मैं तो भाई, ऐसा हो गया है कि पत्थर हो गई हूँ। बस इतना जरूर है कि मनुष्य मात्र के लिए मैं पत्थर नहीं हूँ। उनके दु:ख-दर्द में सदैव साथ हूँ, लेकिन पूजा के लिये पत्थर हूँ।

मेरी तो ऐसी दशा है कि जहाँ कोई सत्ता नहीं, न मानवीय, न ईश्वरीय ही, न बन्दगी की और न 'मालिक' की ही। न पालक सत्ता है, न विनाशक। सत्ता नाम के शब्द का जहाँ कोई अर्थ नहीं है। ऐसा लगता है कि दशा के अनुभव करने में न तो अब रहनी ही पहुँच पाती है और न अनुभव ही पूरा पहुँच पाता है। बस केवल एक अन्दाज मात्र ही लग जाता है, वह भी 'मालिक' की कृपा से व ज़बरदस्ती से कहिये और भाई, अब तो यह लगता है कि अंदर ही अंदर स्वयं ही मेरी अपनी तवज्जोह हो जाती है। सिर के बीच सहस्त्र दल कमल के बिल्कुल लगे में बाईं ओर लगता है कि जैसे कोई हाथ के अँगूठे से सिर दाबे है। लगता है कि कोई हालत अपने अन्दर से बाहर को फैलती चली जा रही है और ऐसा लगता है कि जैसे अनार में से फुलझड़ी निकलती है, वैसे ही अन्दर

से फुलझड़ी के समान दशा बाहर को फैल रही है। ऐसा कभी नहीं हुआ। यदि मुझसे कोई कहता है कि तुम तो स्वतंत्र आत्मा हो, तो भी मुझे इसका कुछ आभास नहीं मिलता कि आखिर स्वतंत्रता क्या है और कुछ ऐसा है कि मुझे हँसी-खेल में कोई बच्चा बाँध देता है, तो भी कभी बंधन एहसास में ही नहीं आता। चाहे कोई दशा फैले या कुछ हो, मुझे लगता है कि मैं तो ज्यों की त्यों ही बनी रहती हूँ। मुझमें तो किसी हालत में कभी भी अब Change ही नहीं होता।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-615

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 15.3.57

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सब अच्छी तरह से हैं, आशा है, 'आप' भी अच्छी तरह से होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

न जाने क्या बात है कि पहले मुझे अपने चारों ओर पवित्रता का पावन Atmosphere मौजूद लगा करता था। जहाँ निकल जाती थी, वहाँ पवित्रता की लहर दौड़ जाती थी। किन्तु अब कभी अन्दाज़ तक नहीं आता, अनुभव तो दूर रहा। यही नहीं, मुझे जब आप के पास जाती हूँ, तो भी कुछ अन्दाज़ नहीं आ पाता है। सच तो यह है कि मुझे तो लगता है कि पवित्रता भी मानों एक मैल था, जो हृदय से धुल गया। यही नहीं, कहने को श्री 'बाबूजी', 'बाबूजी' रटा करती हूँ, किन्तु वह केवल रटना ही रह जाता है। कोई हस्ती अन्दाज़ में नहीं आती। बस, अब हृदय में नहीं, बल्कि इस पत्थर पर कोई मैला नहीं रह गया है, पूजा का भी नहीं। केवल पत्थर तो पत्थर ही रहेगा, यही मेरा हाल है। कुल शरीर अब पत्थर की मूर्ति ही बन गया है। आगे-पीछे कहीं भी अब टिघलन नहीं, सरलता नहीं, मुलायमपन नहीं अनुभव होता है। बस अब तो कस्तूरी नहीं। उसका रूप तो पत्थर बन चुका है, जो कि जल चढ़ाने पर भी भीगता नहीं। फूल चढ़ाने पर भी सजता नहीं है। हाँ, अब तो श्रीरामचन्द्र मिशन की Building की नींव रखने में ही यह पत्थर 'मालिक' के काम आ सकता है। 'मालिक' इस पत्थर को उठाकर कभी ऊपर रख देता है, तो कभी कहीं रख जाता है और न रखे तो वहीं पड़ा रह जाता है। चाहे मिट्टी चढ़े या धूल मैं तो ज्यों की त्यों हूँ।

मैंने पहले किसी पत्र में लिखा था कि बेहोशी में भी मेरे अन्दर एक होश सा पैदा हो गया है, किन्तु अब तो लगता है कि बेहोशी का तो आवरण ही उतर चुका है और होश का भी मैल चढ़ता नहीं। मुझे तो अब कुछ पता नहीं लगता है। दृष्टि भी आंतरिक कभी होती नहीं, फिर भी 'मालिक' मुझे Saint लिखते हैं। मुझे तो अब कुछ ऐसी दशा एहसास में नहीं आती, लेकिन 'आप' मेरे हैं, 'आप' की सब बात मुझे अच्छा लगती है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-616

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 24.3.57

आशा है मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूं।

अब तो यह दशा है कि पत्थर को चाहे नदी में डालकर कोई ठंढा बना दे, चाहे अग्नि में डालकर गर्म कर दे, पत्थर, पत्थर ही रहेगा। इसमें से तो राख भी नहीं झड़ सकती। अब तो यह दशा है कि पहले मुझे सब लोग सब कुछ छाया मात्र ही दीखते हैं, किन्तु अब तो पता नहीं, न छाया-मात्र न कुछ, मुझे सब ज्यों की त्यों है। जो हाल पूजा से पूर्व था, सब वैसा ही हो गया और यह दशा भी अब ऐसी है कि जैसे एक धुँधली सी स्मृति मात्र किसी को कभी आ जाती हो। कुल शरीर व दिमाग में जैसे Vibration हुआ करता है, किन्तु मेरी कुछ अजीब दशा है कि कुल शरीर में हर समय Vibration होते हुए भी मानों मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं, कोई स्पर्श नहीं। न जाने एक अब यह न जाने क्या लगता है कि कुल शरीर की हड्डी-हड्डी, माँस-माँस, नस-नस, जो है, सोई हो गई है। सब जैसी थी, वैसी ही हो गई है। शायद इसीलिए इसमें कोई भार ही नहीं रह गया है। होना या न होना, ज्यों की त्यों हो गया है। अब कुछ ऐसा हो गया है कि दिनभर बोलती हूँ, किन्तु इससे कभी सरोकार तक नहीं कि न कभी कुछ बोझ, कि बोलचाल रही हूँ। ज्यों की त्यों बोलती जाती हूँ, क्योंकि बोलना मुझे पता ही नहीं लगता। चाहे दुनिया की बातें बोलूँ, या पूजा की। मुझे बोलने का कभी एहसास ही नहीं। 'मालिक' ने साम्य अवस्था की बड़ी तारीफ़ की, किन्तु मेरी तो हालत इतनी हल्की हो गई है कि कभी साम्यावस्था उसे स्पर्श भी कर सकेगी या नहीं- कभी नहीं, मेरा जबाब है।

न जाने क्या बात है कि आँख बन्द किये पड़े रहने पर भी आँख लगता है, कभी बन्द ही नहीं होती। आँख बन्द अथवा खोलने में दशा एक सी ही रहती है। कुछ ऐसा लगता है कि आँख बन्द करने पर भी चारों तरफ खूब घूम फिर सकती हूँ।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-617

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 27.3.57

पूज्य मास्टर साहबजी से 'आप' सबकी कुशलता के समाचार ज्ञात हुए। 'आप' को कभी-कभी दौरा हो ही जाता है। ईश्वर शीघ्र ही इसे अच्छा कर दे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, यह हाल है कि अंतर की कुरेद ही मंद पड़ गई है, शान्त होती जाती है। आग

बुझ गई, राख भी झाड़ दी गई। आग भी ऐसी थी, जो कालिख भी न छोड़ गई, जिससे कभी यह कोई विश्वास कर लेता कि यहाँ कभी आग जली भी थी। उन्नति मुझे नहीं मालूम पड़ती। कुछ ऐसा लगता है कि याद सता जाती है, किन्तु उसका अन्दाज़ा नहीं लगता है। ऐसा ही हाल है कि कुछ अन्दर आनन्द जरूर रहता है, लेकिन यह अन्दाज़ा ठीक नहीं लगा पाती कि आखिर खुश कौन हो रहा है। यानी यह आनन्द मुझे है या किसी और को। यही हाल तकलीफ़,दर्द आदि में भी रहता है। बाज समय तो बिल्कुल ही धोखा हो जाता है। कमजोरी में दिन भर आँख बन्द किये पड़ी रही, परन्तु यह अन्दाज़ कभी न स्थिर कर सकी कि मैं कमज़ोर पड़ी हूँ और कुछ यह है कि यह भी नहीं लगता कि कोई दूसरा पड़ा है, बल्कि बस केवल दर्द व कमज़ोरी का तो एहसास हो जाता है, किन्तु किसे है, यह अंत तक तय नहीं हो पाता। यही दशा अपनी आत्मिक उन्नति का भी हो गया है कि उन्नति तो अन्दाज़ में आती है और दशा का भी अनुभव होता जाता है, परन्तु स्वयं मानों ज्यों की त्यों ही बनी रहती हूँ। यह सब न जाने कैसा मेरा उल्टा-उल्टा हाल हो गया है कि उधर उन्नति में भी 'मालिक' शामिल रखता है, किन्तु ज्यों की त्यों भी बनी रहती हूँ। जब कोई Liberated Soul के बारे में कहता है, तो मुझे लगता है कि मानों यह सब मेरा जाना हुआ है, वैसे मुझे कुछ पता नहीं रहता। मैं कुछ भी नहीं जानती हूँ। मेरे लिये तो मानों इन सब बातों का कोई महत्व ही नहीं रह गया है। सब जैसा का तैसा ही पसारा है। मेरी तो यह दशा है कि मेरे तो अंतर की श्रद्धा भी मर चुकी है। चाहे कितने बड़े महात्मा का नाम सुनूँ, तो भी श्रद्धा नहीं होती। Liberated Soul के बारे में सुनती हूँ, किन्तु श्रद्धा नहीं उत्पन्न होती। चाहे किसी को 10 circles या 12 circles सुनूँ, तो भी अन्तर में श्रद्धा नहीं उत्पन्न होती। चाहे कितने चमत्कारों की बात सुनूँ, किन्तु श्रद्धा नहीं जागती।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन हीन, सर्व साधन विहीना

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-618

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 3.4.57

तुम्हारे पत्र कई प्राप्त हुए, पर उत्तर इस कारण से न दे सका कि समझ में नहीं आया कि इन बारीक हालतों के कारण बताने में शब्दों का जामा (आवरण) कैसे पहिनाया जावे। मगर फिर सोचा है कि कुछ लिख ही दो। जब लिखने बैठा तो यही आया कि लय-अवस्था और फिर उसकी लय-अवस्था इसका छोर अभी दूर तक चला जावेगा। हमने जितनी बातें अपने में पैदा कर ली है, उन सबको उन्हीं में सिमट जाना है कि जो उसके कारण हैं। किसी ने लिखा है कि संसार नहीं है, बल्कि अपने विचार उसको प्रगट किये हुए हैं। लिखने वाले की यह दिमागी पहुँच थी, मगर बात यह है कि जब हम अपने एक परिवार सहित असल में आ जाते हैं, तो वही असल एक वस्तु भासने लगती है। जब हम अनेक थे, तब हमारे सामने अनेकपन था और जब हम एक हो गये तो वह एक चीज सबमें भासने लगी और जब यह बात भी न रही कि एकता का भाव या अनेकता का भाव, फिर सामने अब कुछ नहीं दिखाई देता। मगर यहाँ अभी अन्त नहीं है। यही तुमने लिखा

है कि पहले सब कुछ मुझे छाया मात्र ही दिखाई पड़ते थे, अब न छाया है, न कुछ। इस हालत में अगर बोलता है तो वही बोलता है, जिसको बोलना है। बस इसी हाल को तुमने अपने पत्र में तरह तरह से लिखा है।

चौबेजी तथा अम्मा को प्रणाम तथा तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-619

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 3.4.57

कृपा-पत्र आप का पूज्य मास्टर साहबजी के लिये आया था। उसमें 'आप' की कमज़ोरी का हाल सुनकर कुछ चिन्ता बढ़ गई। खैर, ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ 'आप' जल्दी ठीक हो जायें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने मेरा क्या हाल है कि पावन-ईश्वरीय धारा भी मुझे स्पर्श नहीं करती, तो वह भी मुझे पवित्र नहीं बना पाती है और पूजा का कोई भी लक्षण मुझमें नहीं, क्या करूँ? अब तो न पवित्रता का आभास मिलता है, और न अपवित्रता का, किन्तु चैन नहीं है। आज से दशा की थकान मिट चली है। हाँ, चित्त में मानों कोई पीर, कभी चमक मार जाती है, जिसका असर बेपीर की पीर का अन्दाज़ा मात्र हो जाता है, किन्तु प्रियतम की याद लेकर अब कोई नहीं आता। अब तो मिलन और बिछोह का मैल भी घुल गया है। दशा अब इतनी गहराई में चलती है कि जो कि चिमटे रहने पर भी चिमटे रहने के अन्दाज़ का बोझ नहीं सम्भाल सकती, नहीं, बल्कि न चिमटना, न अन्दाज़, अब कोई मैल नहीं चढ़ता। इस बेराह की राह पर ले चलने वाला केवल एक मेरे श्री बाबूजी ही हैं। मैं तो जैसी हूँ, वैसी भी नहीं जानती हूँ। जानने से तो मेरा कुछ अर्थ ही नहीं।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं और केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-620

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 6.4.57

मेरा एक पत्र आप को मिला होगा। बहुत दिनों से आप इधर नहीं आये। कभी अवसर मिले तो यहाँ भी एक-दो दिन के लिये हो लें। यहां सब सकुशल है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो यह दशा है कि जानना या न जानना, मेरे लिये तो दोनों एक ही समान हो गया है। जानूँ तो क्या जानूँ, यह नहीं पता और न जानूँ तो क्या न जानूँ, यह पता नहीं। मेरी तो यह दशा है कि

मन ने दशा को ही अपना श्री बाबूजी मान लिया है। ऐसे ही श्री बाबूजी से केवल मानकर ख्याल द्वारा चिपटने का ध्यान करती रहती हूँ। यद्यपि मैं देखती हूँ कि प्रभाव इसका भी मानों कुछ मेरे ऊपर होता नहीं और संतोष भी यों नहीं होता कि मानने को भी याद भूल-भूल जाती हूँ। लगता है, न जाने क्यों जैसे कुल सिर की नस-नस मानों ढीली (हल्की) पड़ गई है। यहाँ तक कि हड्डी तक लगता है कि खोखली, नरम पड़ गई है और ईश्वरीय प्रकाश हर नस-नस से निकल रहा है। जिसमें प्रकाश क्या, बल्कि मानों हल्केपन की ज्योति बाहर निकल रही है या हल्कापन बाहर छन छन कर आ रहा है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार।

सदैव आपकी ही कृपा-कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-621

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 10.4.57

तुम्हारे पत्र 3 तथा 6 अप्रैल सन् 1957 के प्राप्त हुए। दोनों का एक साथ उत्तर दे रहा हूँ। अब तुममें तो Energy तन्दुरुस्ती बढ़ाने वाली आरम्भ हो गई होगी। तुमने अपने 3.4.57 वाले पत्र में लिखा है कि "मुझे अपने में पवित्रता का भी कुछ आभास नहीं मिलता"। उसका आभास तो तब होता है, जब अपवित्रता हो। बिना Comparison के किसी वस्तु की वास्तविकता का पता नहीं चलता। ईश्वर की थाह इसीलिए नहीं मिलती कि उसको Compare करने के लिये उसके अनुसार कोई वस्तु नहीं मिलती। दशा में तो परिवर्तन होता ही चला जाता है, परन्तु इतना सूक्ष्म है कि पता नहीं चलता। जहाँ पर कि Changeless दशा है, वह तो मनुष्य के पहुँचने का अन्त है। बिना दर्द के पीर, यह पीर का वास्तविक Nature है। जब मनुष्य पानी की खोज में रेगिस्तान में चलते-चलते दूर पहुँच जाता है और पानी की बेकली उसके विचारों को चकनाचूर कर देती है, तो फिर बेकली भी रहते-रहते एक शान्ति (चैन) की दशा मज़बूरी में कर देती है। मगर पानी की वास्तविक तृप्ति नहीं होती। उसके परिश्रम से कहीं पानी बरसने लगता है, जो कि समुद्र ही से जिसका कि नदी एक छोटा भाग है, तो फिर जिस पानी की उसे खोज थी और जिस आवश्यकता के लिये थी, वह पूरी हो जाती है और कहीं पानी इतना बरसा कि तालाब भर गया तो नदी व समुद्र की ओर बहुत समय तक ख्याल नहीं जाता। अब 'उसके' लिये मिलन की इच्छा तो यूँ कम हुई, क्योंकि वस्तु मौजूद है और विछोह यूँ नहीं कि चीज़ Narrow रूप में मौजूद है। मगर Reservoir उस समय मिलेगा, जबकि इस तालाब का पानी पीकर खर्च कर दो। इसलिये कि फिर उसकी तलाश पैदा हो जावेगी। मैंने विछोह तथा मिलन की हालत जो तुम्हारे पत्र में दी हुई है, यूँ समझाया है। समुद्र अभी बहुत दूर है, इतना कि जहाँ पर तुम हो, वहाँ पर देखने से भी अभी नज़र नहीं आता, मगर यह समुद्र के निकट पहुँचने के चिन्ह अवश्य हैं।

यदि तुम अपने आप को ऋणी समझती हो तो मुझ पर तुम्हारा यह एहसान है कि तुमने वह अमानत (Security) जो तुम लोगों के लिये ही मेरे पास रखी है, उसको लेना आरम्भ कर दिया

है और मैं इसलिये उत्तर देने से बच जाऊंगा कि जिन लोगों के लिये यह अमानत जमा थी, उसको बांटा क्यों नहीं।

6 अप्रैल के खत में जो तुमने लिखा है कि "जानूँ तो क्या जानूँ, और न जानूँ तो क्या न जानूँ"। इसके तात्पर्य यह है कि कामनायें (Desires) नहीं रही है। सिर में कुछ Matter पता न चलने के अर्थ यह है कि झीने Matter से भी सम्बन्ध हट गया है और सम्भव है कि अव्यक्त गति निकट हो। जब सूक्ष्मता में लय-अवस्था उत्पन्न होने लगती है तो बाहरी संसार का आवरण हट जाता है, इसलिये बाहर, भीतर एक ही सा प्रतीत होने लगता है। यह गति बहुत अच्छी है, मगर रहना किसी गति में नहीं है और सिर का ढीलापन मालूम होना यह शारीरिक दुर्बलता का कारण है।

अम्मा तथा चौबेजी को प्रणाम और तुम्हारे भाई-बहिनों एवं बहू को शुभ आशीर्वाद!

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-622

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 14.4.57

आप के आशीर्वादों से भरा हुआ कृपा-पत्र मिला। पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ यह दशा है कि सब लोगों के नाम पुकारती हूँ, किन्तु उस नाम के साथ किसी भी रूप का कोई सम्बन्ध ही नहीं होता। जैसे किताब में कल्लू नाम पढ़ा जावे, तो बस, पढ़ता जावेगा, उसकी कोई आकृति सामने कदापि नहीं आती, किन्तु बड़ा ताज्जुब है कि इस पर भी केसर को बिट्टो और बिट्टो को केसर कभी भी नहीं निकलता।

अब तो यह दशा है कि शरीर भर ही क्या, बल्कि, भीतर-बाहर सब कुछ तो Vibration रहित हो गया है। कभी कभी अचानक Heart में जरूर कुछ Vibration सा होने लगता है, बाकी तो कुल सब व्यर्थ ही रह गया है। न जाने क्या दुनियाँ है मेरी कि काम सब करती हूँ, किन्तु मानों अपना शरीर तक हिलता नहीं। रिश्ता, कुल संसार से है, लेकिन सम्बन्ध का नाम नहीं है। Vibration अब एक ऐसी चीज़ हो गई है कि जिसका मानों कोई अर्थ ही नहीं है। बात सबसे करती हूँ, किन्तु है कोई नहीं, आवाज़ तक नहीं है। सांस तक से अपना मानों सम्बन्ध नहीं है, आये न आये। मरने की बात या जीने की बात सब एक समान है। मेरी तो अब यह दशा है कि न अपनी मौज है और न 'मालिक' की ही मौज होती है। फिर मुझे नहीं मालूम कि मैं 'उनकी' मौज़ में चल रही हूँ या क्या बात है, यह तो 'आप' ही जानें।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-623

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 15.4.57

मेरा एक पत्र आपको मिला होगा। आशा है आप सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो न जाने क्या दशा है कि जो कोई भी पूजा करता है मुझसे तो जब तक करता है, तब तक लगता है कि वह मेरे ही समान अवस्था (दशा) वाला हो जाता है। पूर्ण-रूप से ईश्वर में लय-अवस्था वाला मुझे लगने लगता है। आज रात को एक स्वप्न सा देखा कि मानों एक हृष्ट-पुष्ट, छोटी सी दाढ़ी वाले, परम शान्ति एवं प्रसन्न मूर्ति महात्मा जी 'प्रभु मेरे अवगुण चित न धरो वाला भजन गा रहे हैं। मैं मानो बहुत दूर से चली आ रही हूँ। उनके पास पहुँचते ही मैं उनके चरणार्विन्दों में लिपट गई। उन्होंने भी बालक की भाँति झट से मुझे उठाकर कहा कि- ''तुम्हारी मौत पर मैं खुशी के गीत गा रहा हूँ''। बस, तब से ही जागने पर भी मेरी एक अजीब हालत छा रही है, जो मैं व्यक्त नहीं कर सकती हूँ। न रोये बनता है और न हँसते बनता है। लगता है कि हालत मेरे जी को लग गई है। तबसे ही लगता है कि एक बरकत घर में छा गई है। उस ''प्रभु मेरे अवगुण चित्त न धरो'' की पावन ध्वनि की आहट लेते लेते मैं इन महात्मन् तक पहुँच जाती हूँ, बस चरणों पर लोट जाती हूँ। उनकी शक्ल तो जरूर फ़रक थी, किन्तु आवाज़ की ध्वनि और मिठास परम प्रिय 'आप' से बहुत ही मिलती थी, हाँ तेज थी आवाज़। यह सब क्या था, यह तो 'आप' ही जानें। मेरे समझ में तो जो आया, वह लिख़ दिया।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-624

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभ आशीर्वाद! — 19.4.57

तुम्हारा एकपत्र 14.4.57 का तथा एक 15.4.57 का प्राप्त हुआ। 19 अप्रैल को मेरे जीवन का नया वर्ष आरम्भ हो गया। तुम सब लोगों ने कुछ न कुछ खुशी मनाई और मुझे कुछ यह खेद होना चाहिये कि हमारी गिरह से एक साल निकल गया। आज के दिन के लिये, जैसा तुमने कहा था, वैसा मैंने कर दिया।सब लोगों ने 'मालिक' के फ़ैज से फ़ायदा उठाया होगा।

पिछले पत्र में तुम्हारी हालत व्यक्त करने के लिये रूपक दशा, अर्थात् (Metopharical Language) में लिख दिया था और कोई ढंग इसको समझाने का नहीं मिला। चलना और न चलना, समान मालूम होना, इस बात का प्रमाण है कि तुम अपने आप को बिल्कुल भुला चुकी हो और उसके बाद जो चीज़ रह जाती है, वह भी लय होती चली जा रही है। यह तुमने ठीक ही लिखा है कि खेमा (तम्बू) जहाँ पर कि तुम्हें वर्तमान स्थान से जाना है, वहाँ गड़ा

मिलता है। हमारे 'लालाजी' की शिक्षा कुछ ऐसी ही है कि जिस स्थान पर अभ्यासी को पहुँचना चाहिये, वहाँ के जौहर का बीज पहली ही Sitting में आरम्भ हो जाता है। अब जो लोग इस बीज को अपना लेते हैं, वह फिर चलते ही चले जाते हैं। समुद्र का आनन्द तो कुछ न कुछ, अगर एहसास तेज है तो, पहले ही दिन से आना आरम्भ हो जाता है।

तुमने एक बात अपने पत्र में लिखी है कि किसी के मरने-जीने की बात एक ही सी प्रतीत होती है। इसके यह अर्थ है कि तुम्हें जीवन और मृत्यु से कुछ सम्बन्ध नहीं रह गया है। दोनों सम्बन्ध टूट गये हैं और यह जीवन-मोक्ष-अवस्था, जो कि तुममें बहुत पहले आ चुकी है, उसके प्रमाण में यह वाक्य भी है- ''यदि कहीं मृत्यु की भी मृत्यु हो जावे तो, उसमें जो जीवन उत्पन्न होता है, वह जीवन उस हालत को बता देगा और पता देगा कि हम किसकी खोज में हैं''। मगर अभी चलना और रहेगा।

अब जो तुम्हारा 15 अप्रैल का पत्र है, तथा उसमें जो स्वप्न देखा है, वह बड़ा अच्छा है। उसके अर्थ ये हैं कि अब वास्तविक जीवन का प्रारम्भ हो गया है। हमने तो जब से अभ्यास आरम्भ किया, बराबर मोक्ष आत्माओं को स्वप्न में देखते रहे। चिरकाल तक ऐसा हुआ है कि कम से कम सप्ताह में दो बार ऐसे स्वप्न आते रहे और यह भी हुआ कि ऐसा फ़ैज मिला है कि जिसका सहन करना मनुष्य के लिये सम्भव नहीं है। अब यह ''लालाजी'' की तारीफ़ है कि जो सहने से अधिक होता था, वह उस समय मालूम होता था कि 'उन्होंने' ले लिया। जब Iniciation की बारी आई तो कई महात्माओं ने स्वप्न में मुझे Iniciate किया। जब हम Iniciation के लिए सहमत नहीं होते थे तो वहाँ पर हमारी तबियत ऐसी बना दी जाती थी। यह बातें उसको पेश अधिक आती हैं, जिसको 'मालिक' से प्रेम बहुत बढ़ जाता है। इसप्रकार की बातें अभी तक और सत्संगियों से मुझे नहीं मिली है।

तुम्हारी N1 की यात्रा पूरी हो चुकी है, अब O1 का स्थान आवेगा। मगर तुम्हारा स्वास्थ्य जरा और ठीक हो जावे। Dr. K.C. Vardhachari के बहुत प्रेम पूर्ण पत्र आते हैं और वह ईश्वर की कृपा से अच्छी उन्नति कर रहे हैं।

चौबेजी व अम्मा को प्रणाम तथा तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-625

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 21.4.57

कृपा-पत्र आप का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। यहाँ सब कुशल पूर्वक है। आशा है, 'आप' भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने अब तो कुछ यह दशा है कि कोई कहता है कि वृद्धावस्था में यह होता है, कोई कहता है कि बाल्यावस्था में यह होता है, किन्तु मेरा तो यह हाल है कि हर अवस्था मानों एक समान ही रहती है। हर अवस्था एक ही अवस्था (वह मानों मेरी जो दशा है) बस, वही हो गई

है और मेरी अवस्था को अवस्था कहना भी निरर्थक है। एक मानी हुई दशा है, एक माने हुए 'श्री बाबूजी' को ही साथ लिये हूँ, वह भी दिन भर भूल भूलकर और साथ क्या लिये हूँ, साथ रखने पर भी मानों साथ कभी होता ही नहीं। प्रत्यक्ष रहते हुए भी मानों प्रत्यक्ष (दर्शन) कभी होता ही नहीं और दर्शन क्या होगा, जबकि दर्शन, दर्शन नहीं है। क्या खूब एक अलौकिक मार्ग है, एक अलौकिक अव्यक्त गति है न कुछ कहना, न सुनना भाता है।

मेरी तो दशा आदि और अन्त के पार ही रहती है। सिर के बीच माँग के लगे में दाहिनी ओर एक पोरे भर जगह में Vibration सा रहता है तथा सिर में आगे माथे भरे में तथा नाक की पूरी हड्डी में नोक तक मानों दिन भर में अक्सर बहुत गुदगुदी की सिहरन दौड़ जाती है। ऊँगली का पोर-पोर मानों खाली पड़ा है। पीठ भर में तथा रीढ़ की हड्डियों तक में Tale bone के नीचे तक मानों ऊपर कहीं से सिहरन सी आती रहती है। दो-तीन माह से नाभि के अन्दर बड़ा हल्कापन सा रहता है और लगता है कि अन्दर फैलाव हो गया है। मेरा तो मानो Construction ही Change हो गया है। मुझमें चाहे कोई Change हुआ हो या न हुआ हो, मैं नहीं जानती, लेकिन रूह पलट चुकी है, किन्तु पलट कर क्या हुआ यह नहीं मालूम है, यह तो आप ही जानें और आप का काम जाने, मुझे तो कुछ नहीं मालूम।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं और केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन हीन, सर्व साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-626

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 9.5.57

कृपा-पत्र आप का पूज्य मास्टर साहब के लिये आया। उसी से आपके समाचार ज्ञात हुए। आप का स्वास्थ्य ठीक है, जानकर सब को खुशी हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्यों कुल शरीर का तो रग-रग साफ़ व खाली लगता है, लेकिन शरीर के होते हुए हृदय पर कुछ भारीपन रहता है। ऐसे ही अपनी दशा से System कुछ भारी ही लगता है न जाने क्यों अब आँखे कभी मूँदना ही नहीं जानती। दशा में खुल जाती हैं।

न जाने क्या बात है कि हृदय में वह बहाव नहीं, जो पहले था। वह मस्तानगी नहीं, जो पहले थी। अब तो एक उजड़ा हुआ वीरान चमन ही भीतर-बाहर सब हो गया है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-627

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 9.5.57

एक पत्र डाल चुकी हूँ, मिला होगा। इधर दशा कुछ थोड़ी सी और बदल गई है। वह जो कुछ और जितना समझ सकी हूँ, लिख रही हूँ।

याद जो मेरे जीवन का एक अंग थी, वह भी घुल गई है, नहीं, बल्कि याद की याद यानी भूल में भी एक प्रकार का जो विस्मृत स्मरण होता था, वह भी मानो Sub-Conscious Mind में घुलकर हृदय बिल्कुल हल्का व स्वच्छ (खाली) हो गया है। अब तो मैं देखती हूँ कि, बेहोशी में भी मानों Sub-conscious mind में या क्या, एक होश बना रहता था, किन्तु अब तो पता नहीं, कौन चीज़ आती है, जो, सबको धोकर चली जाती है, किन्तु अपना पता मुझे नहीं देती है। अब तो न कभी बेहोशी का एहसास होता है और होश का भी तो अन्दाज़ नहीं। लगता है 'मालिक' भी मानों ग़ैर हो गया है। मानों न मेरा 'उससे' सम्बन्ध है, न कभी था। मैं जिसे 'मालिक' पुकारती हूँ, 'उसका' अपना कोई पता नहीं। मुझे 'उसका' कोई पता नहीं, किन्तु दिल में एक बिना कचोटन की एक कचोटन है, जो मेरे स्वरूप को अचल व स्थिर नहीं हो जाने देती है। Practically Nil नहीं हो जाने देती है। यह दशा है कि कोई मेरा हाथ पकड़े चलता है, तो मुझे एक क्षण को भी न पकड़ने या छूने का एहसास होता है और अलग बिना छूते हुए चलती हूँ तो न अलग चलने का और न बिना छूने का ही एहसास होता है।

आज रात को ऐसा स्वप्न देखा कि एक विशालकाय भव्य मूर्ति महात्मन् मेरे मस्तक पर हाथ रखे हुए कह रहे हैं कि तुमने कोई अपराध नहीं किया, तुम्हें जीना है, अवश्य ही जीना है। उठो, काम करो। तबसे मानों हृदय से यह घुल गया कि 'आप' को मुझसे कोई तकलीफ़ पहुँचती है। मेरे Health में ताज़गी आ गई। मैं उठ पड़ी, किन्तु मेरी आँख खुल गई। वे कोई काम मुझे न बता सके। अब तो मुझे जीना है, क्यों? पता नहीं। अब तो हालत कोई आती जान नहीं पड़ती, जाती ही चली जाती है। क्या मैं 'मालिक' को जी भर कर प्रेम न कर सकूँगी? क्या मैं उस मधुर छवि पर न्यौछावर न हो जाऊँगी? क्योंकि मैं देखती हूँ कि मुझमें अब मेरी ही गम नहीं है। प्रकाश जो चारों ओर छाया रहता था, उसका भी पता नहीं है। लगता है कि 'मालिक' कोई दिव्य या अलौकिक दशा खोलते जा रहे हैं।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार।

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-628

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 18.5.57

बहुत दिनों से आप का कोई पत्र नहीं मिला और न आपका कोई समाचार ही मिला है। चिन्ता लगी है। आशा है आप कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ ऐसी खाली दशा है कि नम्रता की दशा भी उससे इतनी ठोस है कि जो सोचने से भी अन्दाज़ में टिक नहीं पाती। उस खाली दशा का अन्दाज़ केवल वीराना, उजाड़ या खाली दशा कहने से ही आभास में आ पाता है, वरना कोई उपमा नहीं। अब तो यह दशा है कि न मिठास है, न कड़वापन (तुर्शी)। लगता है कि जनून की भी अब गुज़र नहीं है। नहीं, अब तो गुज़र की भी गुज़र नहीं है। बस अब तो एक ही बात है कि 'आप' मुझे सिखाये जायें और मैं सीखे जाऊं। हालत, वालत कुछ नहीं। प्रेम व भक्ति से कोई सरोकार नहीं, वह भी घुल गया। मुझे तो Iniciation का भी पता नहीं चलता। कहाँ, कब, कैसा Iniciation मानों कभी अब तो कुछ हुआ ही नहीं।

अब तो यह दशा है कि चाहे जिस Function में घूम आऊँ, किन्तु सब वीराना ही वीराना नज़र आता है। मेरा स्वयं का स्वरुप ही वीराना हो गया है। सब लोग जानते हैं कि मुझे कोई तकलीफ़ है, जो कि मैं हँसती बोलती हूँ कम, किन्तु मैं क्या करूँ, मेरा तो स्वरूप ही वीरान हो गया है। चाहे कोई ध्यान में से उठा ले, तो बुरा नहीं लगता है, बैठने दे या न बैठने दे, कुछ बुरा नहीं लगता है और न कोई विशेष पूजा से प्रेम ही रह गया है। जब पूजा में मेरा देवता ही नहीं प्रतीत होता, तो पूजा क्या। पूजा तो मेरी शून्य हो गई है। मेरा रूप ही शून्य हो गया है। मेरा तो स्वरूप अचल व स्थिर है। मैं तो जो हूँ, वह पता नहीं। मैं जो करूँ, सो पता नहीं। अब तो लगता है कि बाहर-भीतर सारे में, सब शून्यता ही शून्यता राज्य कर रही है। एक अजीब मुर्दा-अवस्था सी है, कि न एक, न दो, कुछ भासता ही नहीं है। मेरा तो अब न जाने क्या हाल हो गया है कि अपना आगा पीछा मानों घुल घुलाकर सब एक ही हो गया है। व्याह में गई, तो भी मेरे लिये सब मानों वीराना ही था। तमाम भीड़ में भी न मेरे लिये कुछ कचकच थी, न भड़भड़, बिल्कुल शान्त था।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-629

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! 27.5.57

तुम्हारे कई पत्र मिले। सोचता रहा कि जवाब क्या दूँ, इसलिये कि तुम्हें भी अब हालत लिख नहीं मिलती और हमें भी अब जबाब दे नहीं मिलता। मैं चाहता तो यह हूँ कि जब तक जबाब निकल सके देता रहूँ। अब मुझे याद नहीं, तुमने ख़तों में क्या लिखा। अन्दाज़ ज़रूर है कि तुमने वीराने की हवा खाई है और वही वीरानापन पत्रों में व्यक्त किया है। अब वीराने की तह को अगर हम देखें तो कोई चीज़ ऐसी ज़रूर मिलेगी, जिसका असर ख्याल में मौजूद है। यह जिसको तुम ठीक नहीं लिख सकी O1 की हालत है। यहाँ की हालत ऐसी है जैसे किसी के यहाँ मौत हो गई हो और रौनक इस वजह से चली गई हो। मगर हमें जरूरत है कि इस वीराने की भी मौत हो जावे। अभी तो सिर्फ वह यह बता रहा है कि किसी की मृत्यु हुई है, परन्तु वीराने की स्वयं मृत्यु नहीं हुई, इसका इन्तज़ार करना चाहिये और इसमें समय लगेगा। असल में यह हमारी हालत है, जो इतने दिन चलने के बाद व्यक्त हुई है। वीराने की मौत हो जाने के यही माने है कि हम स्वयं उस

हालत पर चले जायें। वैसे तो मरने के बाद भी कुछ न कुछ रह ही जाता है, इसलिये इस रह जाने वाली चीज़ की मृत्यु की जरूरत है। मगर जहाँ तक मृत्यु होगी, कोई न कोई सूरत उसकी रहेगी। जब ये सब सूरतें खत्म हो जायें तब भूमा से निस्बत (सम्बन्ध) होने की उम्मीद है।

तुम्हारे भाई-बहिनों को आशीर्वाद व अम्मा को प्रणाम!

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-630

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 28.5.57

कल पूज्य मास्टर साहब से मालूम हुआ कि इधर 'आप' कुछ अस्वस्थ हो गये हैं। आप की साँस उखड़ गई थी। आशा है, अब 'आप' की तबियत ठीक होगी। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख़ रही हूँ।

भाई, मैं ईश्वर-ईश्वर कहती हूँ, किन्तु ईश्वर की कलई मुझ पर ख़ुल चुकी है। "नाम सुन पहुँची वहाँ, देखा वहाँ तो कुछ न था"। मैं तो लुटी हुई, वीराना हुई घूम रही हूं। अब तो यों कह लीजिये कि जिसकी वजह से दशायें आती थीं, वह वजह अब नहीं रह गई है। पूजा करने या कराने, किसी में भी ईश्वरीय धारा का आभास तक नहीं मिलता है और मुझे तो यह सब बातें भूल गई लगती हैं। पूजा का मानों कोई तत्त्व ही नहीं है। अब दशा शब्द मेरी हालत से भारी लगता है।

मेरी तो यह दशा है कि जो कुछ अब तक अनुभव किया था, वह भी सब धुल गया खूब गाऊँ-बजाऊँ, किन्तु न शोर सुनाई पड़ता है, न कोई आवाज़ या ध्वनि। लगता है कि जो या जहाँ से Origin हुआ है, उससे ही सम्बन्ध टूटकर बराबर हो गया है। वीराना भी भूल-भूल जाती हूं। उसे बार-बार याद करके पकड़ती हूँ ताकि कोई अनुभव या आनन्द रहे, किन्तु जब मैं ही बेहोश हूँ, तो सब कुछ मानों अब हाथ या मुट्ठी से निकल गया। रह-रह कर एक ऐसे मैदान (या स्थान) की हवा लग जाती है कि जिसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता है। मेरी Power भी अब नहीं रहा, जो पकड़ सकूँ। रह-रह कर उस हवा से स्नान हो जाता है, जिसमें नहाकर भी सूखी ही बनी रहती हूँ।

बीच सिर में जहाँ माँग काढ़ी जाती है, तो माँग के किनारे-किनारे बाँईं ओर पाँचों उंगलियों से दबा रहने पर भी उस हाथ के नीचे कोई चीज़ जाग चुकी है जो ऊपर आने को फड़फड़ाती है, परन्तु वह हाथ के नीचे दबी फड़फड़ाती रहती है। कुछ ऐसी दशा है कि पहले जैसे अक्सर Inactiveness की दशा बार-बार आ जाती थी, अब तो लगता है कि वही तो मेरा स्वरूप हो गया है। ऐसा मैदान मैं तो पार कर रही हूँ कि जिसमें मानों मेरा स्वरूप ही समाया हुआ है और यह Inactive स्वरूप पार होता जा रहा है। अब तो ऐसे घेरे में घुस पड़ी हूँ, जहाँ बस सफ़ाई ही सफ़ाई है। मेरा स्वरूप में से मेरा निकाल दीजिए इस घेरे की दशा के बारे में मैं क्या कहूँ, कुछ कहा नहीं जा सकता है। कोई चाहे जितना, चाहूँ भी तो शाहजहाँपुर न जा सकूँ, तो भी कुछ मानों बुरा नहीं लगता। अब तो कुछ ऐसी दशा या मैदान है कि जैसे होश थके पथिक

को बिल्कुल आराम व निश्चिन्तता मिल गई हो। मानों पथिक को दरिया का किनारा मिल गया हो। अब दशा क्या है, जैसे राँड़ की रौनक चली गई हो। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-631

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 4.6.57

एक पत्र आपको लिखकर पूज्य मास्टर साहब को दे दिया था, 'आप' को मिल गया होगा। मेरी तबियत अब बिल्कुल ठीक है। आशा है, 'आप' भी अब स्वस्थ हो गये होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मुझे तो ऐसा लगता है कि न जाने कैसे अब Points व स्थानों की सैर हो जाती है, वरना जिनमें विचार की भी गम नहीं, मानना भी भूल-भूल जावे, उसकी सैर की गुंजाइश कहाँ, किन्तु 'मालिक' कुछ ऐसा कर देते हैं, कि सामने कुछ मैदान सा फैल जाता है और बिना विचारे सैर शुरू हो कर समाप्त भी हो जाती है।

अब तो भाई, दशा क्या है, न हँसी है, न खुशी है, न गाना है, न रोना है। अब तो मुट्ठी खुली है। यह भी पता नहीं कि क्यों चली थी और अब तक क्या हुआ, लेकिन इतना अवश्य है कि फिर भी दशा से कोई एक सेकण्ड पीछे हटा दे तो यह बंदिश स्वीकार नहीं है। तबियत न गहरी है, न उथली है, न प्रकाश है, न अँधेरा है, न आदि है, न अन्त है और न सबेरा है, न शाम है, न ठंढक है, न गर्मी है, न ऊसर है, न बहार है। अब तो आँख बन्द करने पर भी न अँधेरा है और आँख खोलने पर न उजेला ही होता है। हालत न अच्छी है, न बुरी है।

लगता है सिर में माँग के बाईं ओर कोई चीज़ उतरती है, फिर पूरे बाँये सिर में घूमती है। भाई, जहाँ रहूँ, 'मालिक' की रहूँ। जैसी रहूँ, 'उसकी' रहूँ। चाहे इसका पता भी 'वह' दे या न देवे और रहूँ या न रहूँ, फिर भी 'मालिक' की ही रहूँ।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-632

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 17.6.57

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहां सब कुशल पूर्वक है। आशा है आप भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई अब तो यह दशा है कि याद-याद सबसे कहती हूँ, किन्तु याद के अर्थ तक खुद को मालूम नहीं। अब तो यह दशा है कि जैसे ही 'आप' पूजा कराना शुरू करते हैं, वैसे ही, और जब तक,

कराते रहते हैं, तब तक Automatic ही विचारों की लड़ी सी बँध जाती है, और इससे मुझे आराम भी मिलता है और इसके सहारे बैठी रहती हूँ, किन्तु यदि यह न आवे तो, आँख बन्द करते ही तबियत घबराकर आँख खुल जाती है और दिन भर कुछ भारीपन व हल्का सा दर्द होने लगता है। ऐसे ही पूजा कराने में भी Heart में कुछ दर्द व भारीपन पैदा हो जाता है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार।

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-633

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभ आशीर्वाद! 4.7.57

तुम्हारा पत्र मिला। 'मालिक' का धन्यवाद है कि तुम सब लोग अच्छे हो रहे हो। तुम्हारी हालत के बारे में यह लिखता हूँ कि-

"नानक शून्य समाधि में, नहीं साँझ नहीं भोर"।

तुम्हारे भाई-बहिनों को आशीर्वाद और चौबेजी और अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-634

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम! 12.7.57

कृपा-पत्र आप का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो न जाने यह क्या दशा है कि अक्सर बैठे-बैठे झूमने सी लगती हूँ। पता नहीं क्या, अन्दर देखते ही, अपने आप ही न जाने कब तक, झूमती रहती हूँ। जब अक्सर उस झूमने का झटका या कुछ चेत ही कहिये, आता है, तो अन्दर शून्य ही पाती हूँ। न कोई आनन्द पाती हूँ, जिससे झूमती हूँ और न कोई ऐसी दशा। लेकिन आँखे अंदर जाते ही बस शरीर का स्वत: ही हिलना शुरू हो जाता है। मुझे इसका मन में कुछ अक्सर आश्चर्य हो जाता है कि भला ऐसी लगन व प्रेम कि मालिक मुझे किस तरह सँभालता जा रहा है। लगता है कि अन्दर-बाहर, सब एक अजीब सन्नाटा छाया हुआ है और छाया क्या, बल्कि मेरा रूप ही यही हो गया है। कुछ ऐसा है कि मैं एक अजीब बात देखती हूँ कि शक्ति का या Will Power का तो पता ही नहीं है, वरन् एक प्रकार की दृढ़ता आ जाती है, जो स्वयं Work पूरा कर देती है।

छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-635

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 16.7.57

तुम्हारा पत्र दिनांक 12.7.57 को हस्तगत हुआ और केसर का भी पत्र मिल गया। यहाँ से इसमें सन्देह नहीं कि चौबेजी अपनी आत्मिक उन्नति चाहते हैं, मगर कुछ स्वभाव ऐसा बन गया है कि अपने ज़िस्म को आराम हर प्रकार से देना चाहते हैं और अभ्यास जो करते हैं, उससे उनके दिल का लगाव बिल्कुल नहीं होता है, जिसका कारण मोहब्बत की कमी कहा जा सकती है। अलावा इसके कुछ आदत ऐसी बन गई है कि वह ईश्वर-प्राप्ति तो अवश्य चाहते हैं, मगर ईश्वर से कुछ मतलब नहीं रखते, इस कारण से बहुत से नुख्स पैदा हो गये। अभी तक उन्होंने किसी को न अपना बनाया और न किसी के हो रहे। दोनों में से एक काम भी नहीं किया है। इस बात पर अगर वह खुद विचार करें और थोड़ा सा आराम में खलल डालें और लगाव बढ़ायें, तभी जीवन अच्छा सुधर सकता है। यहाँ तक हमें आध्यात्मिक इतिहास बताता है कि लोगों ने ईश्वर प्राप्ति के लिये कितनी-कितनी Sacrifices की हैं, तब कहीं ईश्वर तक पहुँचे और वह भी एक जीवन में नहीं, जाने कितने जीवन लगे होंगे और मैं तो कोई Sacrifice भी नहीं बताता, बस इतना कहता हूँ कि अपनी तबियत उस तरफ ऐसी, करे जो हटाये से भी न हटे।

अब तुम्हारी हालत बताता हूँ। यह ठीक है कि O1 की सैर तुम्हारी समाप्त हो चुकी। यह तुम्हें जो सन्नाटा छाया हुआ मालूम होता है, यह उस जगह की सफ़ाई है। यह सन्नाटा जो है, यह एक शक्ति है, जो दूसरे के लाभ के लिये प्रयोग की जा सकती है और किसी जगह को वीरान बना देने में भी प्रयोग हो सकती है। परन्तु इसका प्रयोग नहीं करते, जब तक कि ईश्वरीय-हुक्म इस कार्य के लिये न हो गया हो। यह जो तुमने लिखा है कि "बैठे-बैठे तुम झूमने लगती हो"। इसको Soul का नृत्य कहा है। अगर और गहरे जाओ और इसको प्राकृतिक तरीके में देखो तो इसमें कुछ अर्थ और निकल सकते हैं। जब आत्मा ही आत्मा थी और सृष्टि के पैदा होने का समय आया, तो वह हलचल जो हुई या क्षोभ कह लो, यह नृत्य उसी तरह का है।

केसर का पत्र आया। उसने लिखा है कि "कहीं भी देखती हूँ, परन्तु क्या देखती हूँ, कुछ समझ नहीं पाती" इसके अर्थ यह है कि हृदय बाहरी चीज़ का Impression नहीं लेता और इसलिये संस्कार नहीं बन रहे हैं। बाकी दिल का घुलना और Soul का घुलना जो उसने लिखा है, इसके यह अर्थ हैं कि जिस्म का मान हल्के-हल्के जा रहा है।

अम्मा तथा चौबेजी को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-636

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 14.7.57

पूज्य मास्टर साहब के पत्र से आप का समाचार मालूम हुआ। यह जानकर खुशी हुई कि आप

स्वस्थ हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो न जाने क्या हो गया है कि जो कोई शक्ति सदैव से बराबर मुझे अपनी ओर खींचती चली आ रही थी और जिसके सहारे बराबर मैं खिंचती चली जा रही थी, सो अब इधर कुछ समय से बिल्कुल ठप हो गया। खींचने वाला आकर्षण न जाने क्या हो गया और की भी गुंजाइश जाती रही। पता नहीं क्या हो गया है।

इधर जब से 'आप' गये, रात भर, रोज सपने में बस Functions देखती रहती हूँ, भीड़ देखती हूँ। उसमें कभी अपने को मालिक की गोद में पाती हूँ, और बराबर पास तो बैठी ही रहती हूँ। इस पर भी अक्सर आप को अपने सिर पर हाथ फेरते या रखे, अब भी याद कर के तबियत गदगद् हो उठती है। अब तक तो भाँति-भाँति की मौन लहरें एवं मौन शिकनें मिलती रहीं, जिनका केवल आभास या अन्दाज़ मात्र ही था किन्तु अब तो सब ओर बराबर सतह ही फैली है। सलवट या लहरों का अन्दाज़ भी अब आभास में नहीं आता। ऐसी दशा है कि मानों तमाम झाड़-झंखाड़ों से निकलते, चलते, पार होते भी अब थकान के बजाय शीतलता में सो कर उठने के बाद सा Rest फैला है।

अब तो बस, सब कुछ भूल गया है। अब तो यह कहना भी व्यर्थ है कि पूजा शुरू करने के पहले की हालत है। हालत शब्द की मानों गुज़र नहीं रह गई है। अब तो न जाने यह हाल है कि अनजाने में झूमने पर भी सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर भी Senses में न मज़े का एहसास आता है, न बेमज़े का ही एहसास होता है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-637

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 28.7.57

कृपा-पत्र आप का आया। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की अपने ऊपर अहेतुकी कृपा का कहाँ तक धन्यवाद दिया जा सकता है। बस 'उसकी' ऐसी ही कृपा इस गरीबनी के ऊपर बनी रहे।

लगता है कि मानों न कोई सृष्टि है, न कोई रचना है, न कार्य है, न कर्त्ता है। लगता है कि अब तो न सन्नाटे का आभास है, न कुछ। बस भीतर-बाहर, आगे-पीछे, पैर से होकर सिर तक सब कुछ Calm and Quiet का स्वरूप हो गया है। सब कुछ एक ही हो गया है। अपना तर्ज़ व तरीका, रहन व सहन, सब कुछ मानों एक ऐसी ही स्थिति में ढल गया है और यह दृश्य ऐसा Natural हो गया है कि दशा तो यह भी नहीं है, वह तो जो है, सो है। दशा तो अपनी जैसी बस स्वयं वही है। लगता है कि मानों ईश्वर का खुला हुआ रूप मेरे चारों ओर फैला है। कुल शरीर के अन्दर समाया है और मेरे हृदय में यह सब समाता चला जा रहा है। लगता है मानों ईश्वर का ईश्वरत्व, विराटत्व मेरे में बिला गया है। कोई Open, Fresh आरामदेह स्थिति में मैं समाती चली जा रही हूँ। लगता है कि कण-कण से स्थूलत्व निचुड़कर बाहर हो गया है। लगता है कि मेरे शरीर का कण-कण मथ लिया गया है और ईश्वर का विराट स्वरूप

मेरे हृदय में समाता चला जा रहा है और इतनी तेजी और जल्दी, बस समाता जा रहा है कि मैं नहीं जानती कि यह सब इतना विराटत्व कहाँ समाता चला जा रहा है। यह सब क्या है, यह तो 'आप' ही जानें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-638

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 12.8.57

आप का पत्र पूज्य ताऊजी के लिये आया। उसी से आप की कुशलता का समाचार मिला। यहां भी सब सकुशल है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है सो लिख रही हूँ।

लगता है कि मानों कोई सीमा टूट गई है और इधर कुछ की धारा सी एक बह रही है। हर जीवधारी का अपनत्व या अहं मानों यहाँ डूब गया है। एक विराट स्वरूप फैल गया है और वह सबका सब मेरे हृदय में समाता चला जा रहा है। इतनी शुद्ध व सरल तबियत का स्वरूप ही हो गया है। हृदय बिल्कुल सरल तथा विनम्रता की धारा बन गया है। मेरी तो यह दशा है कि 'मालिक' से बिल्कुल बेलौसी सी हालत रहती है। मैं तो इस सबकी केवल दृष्टा-मात्र (देखने वाली भर) हूँ, यह मेरा हाल है। पता नहीं मुझे कि यह सब क्या हो रहा है।

भाई, एक दिन ऐसा हुआ कि दो भाई पूजा करने बैठे, तो एकदम से अपने आप लगा मानों हृदय का सम्बन्ध समर्थ 'श्री लालाजी' से हो गया और तवज्जोह बराबर आप ही देते रहे। उस दिन सबके सब आनन्द मग्न हो गये। मेरी यह सब कुछ समझ में नहीं आता है। मैं तो हैरान हूँ। मैं तो एक गरीब उन्हीं की लड़की हूँ। मेरा तो यह हाल है कि 'मालिक' से बेलौसी है और पूजा से वैराग्य है।

मेरी तो यह दशा है कि सादगी या Simplicity का भी आभास नहीं है। मेरी दशा तो ऐसी है कि खरीदी हुई चीज़ को कभी 'मालिक' किसी से सँवार दे, कभी किसी से सजाकर किन्तु वह तो जैसी की तैसी ही मानों जब उसका आभास भी होवे तबियत में, तो भी मानों मुझे Touch नहीं कर पाती है। शान्ति का एहसास भी यही बताता है कि चाहे कुछ आवे या ना आवे मुझे जाने क्या हो गया है कि कोई भी चीज़ तबियत को Touch ही नहीं कर पाती है। समय पर चीज़ आती है और चली जाती है, किन्तु मुझे मानों अब कोई मतलब ही नहीं है। दशा यह है कि तमाम विचारों के रहते हुए भी विचार तबियत को नहीं पकड़ पाते हैं, किन्तु खाली रहने में भी एक अजीब बात है कि अच्छी लगती है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-639

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 26.8.57

मेरा एक पत्र मिला होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं, आशा है आप भी सकुशल होंगे। अब जो अपनी आत्मिक-दशा ईश्वर की कृपा से समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने क्या बिल्कुल Blank ही बनी रहती हूँ, मानों यह मेरा स्वभाव व जामा ही बन गई है। 5-6 दिनों से ऐसी कुछ उदास सी भूली सी दशा चल रही है कि मैं तो लाचार सी फिरती हूँ। भूली सी कहूँ या खाली सी कहूँ, कुछ समझ में नहीं आता है। सोचती थी कि सब लोगों के आने से भीड़ में ठीक हो जावेगी, परन्तु ऐसा नहीं हुआ।

भाई कल सबेरे मुझे न जाने क्या हो गया, लगा जैसे कि खुद मेरा कण-कण सामने बिखरा पड़ा है और एक-एक कण मैं उठा कर देखती जाती हूँ, तो मानों अपना नहीं, वरन ईश्वरीय शक्ति का स्वरूप ही पाती हूँ। फिर देखा, कि आप का कण-कण बिखर गया और जिन कणों को मैं देख रही थी, उनमें ये कण समाते-समाते लीन होते-होते समाप्त हो गये। फिर सारे कण-कण अन्तर्ध्यान हो गये। अब मुझे पता भी नहीं, कुछ ऐसी दशा है कि मानों कोई नई बात नहीं हुई। बस अब तो मानों मेरा अन्तर इतना स्वच्छ है, मानों शीशे की तो कोई उपमा ही उसमें नहीं अब बैठती है। बिल्कुल Pure साधारण दशा है। जाने मुझे क्या हो गया है कि पूजा कराते समय यह ख्याल कि आप पूजा करवा रहे हैं, इसको करना, न करना, बराबर हो गया है। मुझसे अब कोई ख्याल ही नहीं बाँधा जाता है और जोर मुझमें रह नहीं गया है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-640

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 31.8.57

तुम्हारा पत्र 26 अगस्त सन् 57 का लिखा हुआ प्राप्त हुआ। तुम्हारा आध्यात्मिक हाल पढ़कर मैं गद्‌गद् हो गया। पूजा तो होना अब असम्भव सा है और है तो यह भी बन्धन, मगर इस बन्धन के बिना बँधे हुए छुटकारा भी नहीं होता। तुमने अपने शरीर को जो कण-कण बिखरे हुए देखे हैं, इसका मतलब यह है कि परमाणु जिससे तुम बनी हुई हो और Activity पैदा कर रहे हैं, उन्होंने अपना काम छोड़ दिया है और ऐसा होने के बाद एक Natural दशा, जो बड़ी ऊँची हालत है, आ गई है। यहाँ तो लोग जीवन-मोक्ष-दशा को सब कुछ समझ बैठे हैं और इससे आगे वह और कुछ नहीं समझते। उनके कान में जोर से कहकर पूछो कि यह क्या हालत है? अब उसमें ईश्वरीय प्रभाव का एहसास होना, यह अर्थ रखता है कि परमाणु ने अपनी Basic

(मौलिक) हालत ले ली है, मगर उनमें कुछ भारीपन जरूर है। मगर उसको तौलने में बाट जवाब दे देंगे। अब मेरे जिस्म के परमाणु उस जगह प्रवेश होना यह मतलब रखता है कि यह नमक उन परमाणुओं को भी नमक बना देंगे और Weight और वज़न जो कुछ कि बाकी है, उसको हटाने में सहायक होंगे।

अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-641

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 2.9.57

मैं एक पत्र भेज चुका हूँ- मिल गया होगा। इलाज तो तुम्हारा शुरू हो गया होगा और ईश्वर करे जल्द फ़ायदा होकर तुम्हे सेहत हो। मैं सितम्बर के दूसरे हफ़्ते में देहली जाऊँगा, मगर अभी कोई ज्यादा ठीक नहीं है।

अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-642

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 4.9.57

तुम्हारा पत्र आया। मैं दो पत्र डाल चुका हूँ, मिल गये होंगे। तुम्हें इस वक्त अपनी बीमारी को दूर करने और तन्दुरूस्ती के बढ़ाने का ही ख्याल रखना चाहिये और इस सबको पूजा समझो, क्योंकि जिस्म को ठीक रखना भी हमारा धर्म है, ताकि ईश्वर की याद कर सको और दूसरों की सेवा।

तुमने लिखा है कि आगे जाने के लिये जी हुटहुटाता है, यह ठीक है, मगर तुमने यह गौर नहीं किया कि कुल हालतें,जो अब तक आई हैं, उनका फैलाव हो रहा है। यह भी ईश्वर का एक Boon है।

मैं देहली जाना चाहता तो जरूर हूँ और मैं कोशिश भी कर रहा हूँ, मगर घर की उलझनें जाने नहीं देती। बहुत से जरूरी काम पेट पालने के, इस समय दरपेश है।

अम्मा को प्रणाम!

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-643

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 5.9.57

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। यहाँ भी सब लोग कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, कुछ ऐसा लगता है कि सब दशायें फैली हुई है। मेरे भीतर-बाहर हर कण-कण में (दशा का) फैलाव हो गया है। लगता है कि नाभि में कोई चीज़ खुलना चाहती है। अक्सर कुछ ऐसा दर्द होता है कि मानों कोई चीज खुलना ही चाहती है। लगता है कि मानों मेरे भीतर-बाहर सब बड़ी मुलायमियत फैल गई है, या यों कहना ठीक होगा कि वही मेरा स्वरूप हो गया है। न जाने क्या, लगता है कि मानों मेरा कुल रूप सफ़ेद चट्टान की तरह से हो गया है। कुछ ऐसा लगता है कि हृदय पर मानों कुछ Vibration की Link सी बँधी रहती है, कहीं से Vibration आया करता है। अब तो सदैव एक ऐसी समान शान्त दशा रहती है कि सोते-जागते तथा भूले हुए में भी वह दशा तो समान रूप से बनी ही रहती है। ऐसी दशा लगती है जैसे किसी का सारा दर्द, पीर, हर चुकी हो। न रोना आता है, न हँसना आता है, न जीना आता है, न मरना आता है। बस ज्यों की त्यों मैं हूँ या पत्थर को चट्टान सी फैली हुई है। न झूमना आता है न घूमना आता है, न भीड़ बुरी लगती है, न एकान्त प्रिय लगता है, न कोई प्रिय लगता है, न अप्रिय। कोई कैसी भी भावना पास फटकने ही नहीं पाती। मेरे लिये हर बात समान ही रहती है। मेरे स्वभाव में भाई, कुछ ऐसा Change हो गया है, कि मुझे अब बोलना नहीं आता, चाहे प्रेम की बातें हों, चाहे कोई चर्चा हो, क्योंकि मन में कोई बात आती ही नहीं। हाँ, बीच में पड़कर बोलने लगूँ तो बोलने लगूँ।

अम्मा आप को आशर्वाद कहती है और केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-644

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 15.9.57

पत्र तुम्हारा 5 सितम्बर का मिल गया। तुमने लिखा है कि ऐसा मालूम होता है कि चलते हुए, चलने का अन्दाज़ मालूम नहीं होता, इससे यह मालूम होता है कि तुम चलते-चलते चाल भूल गई, अर्थात् कार्य के Impressions कहीं पर नहीं बनते। हमने किसी खत में लिखा भी है और फिर लिखता हूँ, ब्रह्म की परिभाषा है-

"बिन पग चलै, सुनै बिन काना।
कर बिन कर्म, करै विधि नाना॥"

यह जिसको तुमने होश पैदा होना लिखा है। यह मरने के बाद जो ज़िन्दगी पैदा होती है, वह वही ज़िन्दगी है। गँवारू शब्दों में:-

''चौबेजी की कस्तूरी तो मर चुकी है, अब उसकी कस्तूरी है, जिसकी सब जगह महक़ फैली हुई है''।

तुमने यह जो लिखा है कि दुनिया में जो कुछ किसी के पास है, वह सब आप का ही दिया हुआ है। यदि कहीं ऐसी अनुभूति हो तो, कि तुम्हारे पास जो कुछ है, वह सब इन्हीं लोगों का दिया हुआ है, तो बहुत ही अच्छा है।

अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-645

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 17.9.57

कृपा-पत्र आपका जो पूज्य ताऊजी के लिये पूज्य मास्टर साहब के हाथों आया था, उसे सुनकर प्रसन्नता हुई। 'आप' की तबियत भी ठीक है, सुनकर खुशी हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

आज रात को तो सबेरे इतना आनन्दमय स्वप्न देखा कि कुल प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त है। मैं सोच रही हूँ कि अरे! सारी दुनिया कहाँ चली गई, जो यह सब ईश्वरीय प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त हो रहा है। क्या महाप्रलय हो गयी और मुझे पता भी न चला? इतने में देखते-देखते ही मैं स्वयं कुल प्रकाश में व्याप्त हो गई, किन्तु मन के न जाने किस कोने में एक विचार तैर रहा है कि प्रियतम तो मिला नहीं और मैं भी मिट गई। इतने में देखा कि दो हाथ उठते हैं और मैं मिटे ही मिटे कह रही हूँ कि- ''उन हाथों को मैं पहिचानती हूँ, जिनकी गोद में मुझे जाना है।'' तब वे हाथ मिटकर और दो हाथ आये, फिर और आये किन्तु मैं बराबर यही कहती रही। अंत में दो हाथ जो आये, बस मैं बोल पड़ी- ''यही मेरे पहिचाने हुए हाथ हैं और मैं उनमें जाते-जाते ही समा गई। अब जागकर मैं यह सोचती हूँ कि मैं मिटे-मिटे ही कैसे समा गई, किन में समा गई, कुछ मेरी समझ में नहीं आता है क्योंकि कुछ ऐसी दशा हो गई है कि इसे समझ पाना, जी घबड़ाना हो जाता है। अब तो बोलती ही बन्द हो गई है। कुछ कहा नहीं जाता है, कुछ समझाया नहीं जाता है, किन्तु एक कसक, एक कराह से चैन नहीं पाती हूं। वह किसमें है, कहाँ है, क्यों है, यह तो मुझे पता नहीं, किन्तु पीर है, या ऐसी बेपीर है, जो मारती है किन्तु घाव नहीं होने देती है। मैं तो पत्थर की चट्टान हूँ। सच ही वही स्वरूप है मेरा। पत्थर पसीजता नहीं। यही मेरा भी हाल है। वह ज्यों का त्यों जहाँ डाल दिया जाता है, पड़ा रहता है। नदी के अन्दर डाल दो, तो उसे कष्ट नहीं, किनारे पर डाल दो, तो कोई आराम नहीं। कोई उठाकर दूर फेंक दे, तो भी चोट नहीं। किन्तु पता नहीं भाई, यह उस पत्थर की बात कह रही हूँ या अपनी ही बात कह रही हूँ। मैं अब समा नहीं सकती, क्योंकि मेरे में अब गुंजाइश ही नहीं है। मेरे अन्दर बीज ही नहीं, जो अँखुआ फूटे। हालत, बेहालत का ही स्वरूप बन गई है।

अब तो भाई ऐसी अनजानी दशा है, जिसे स्वयं यह पता नहीं कि दिशा है या दशा है। ऊपर चाहे मैं 'मालिक' की बातें करते-करते आनन्द मग्न हो जाऊँ, परन्तु वह आनन्द, वह मस्ती भी मेरे मन तक पहुँचती ही नहीं। यद्यपि मैं देखती हूँ, अन्दर और बाहर तो मेरा कुल एक ही है, फिर भी इतनी बात रहती है। मैं देखती हूँ कि अब दशा चाहे बदलती रहती है, किन्तु एक सरल, साम्य स्थिति में कभी कोई Change नहीं आता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-646

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 19.9.57

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सब कुशल है। आशा है, वहाँ भी सब कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, यह दशा है कि साँप, छछुन्दर की सी गति है, न छोड़ते बनती है, न पकड़े ही बनती है। मेरी तो यह दशा है कि कहाँ तो लगता था, मानों मेरा कण-कण मोम सा मुलायम हो गया है। पहले तो कुछ मोम थी और कहाँ अब संग (पत्थर) बन गई। अब तो भाई, मैं क्या हो जाऊँ, यह मेरे हाथ से बात निकल गई है। 'मालिक' चाहे मोम बना दे या संग (पत्थर) बना दे। मैं तो जैसी आई थी, वैसे ही मुझे जीना है। नहीं, न जाना है, न आना है, न अपना कोई ठिकाना है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-647

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 22.9.57

पत्र तुम्हारा 11 सितम्बर का लिखा हुआ मिला और दूसरा 15 सितम्बर का मेरा एक ख़त पिछले पत्र के जबाब में पहुँच चुका होगा।

जब अभ्यासी बहुत ऊँचे शिखर पर पहुँच जाता है, तो फिर एक किस्म की, बिला आवाज़ की गूँज पैदा हो जाती है और फिर उसका रेला नीचे की तरफ़ उतरना शुरू हो जाता है। मैं इस हालत को जानता था, मगर समझ में नहीं आता था, कि यह कैसे होता है। अब तुमसे यह बात तज़ुरबे में आ चुकी और मैं इसका Observation अपनी जानकारी बढ़ाने के लिए कर रहा हूँ।

कबीर साहब ने लिखा है कि- "यह सब जानते हैं कि सिन्धु में बूँद समा जाता है, मगर यह कोई विरला ही जानता है कि बूँद में भी सिन्धु समा सकता है"। फलत: तुमने लिखा भी है कि

कुल रूप सफ़ेद पत्थर की भाँति हो गया है। यह उस चीज़ का रेला है, जो Infinite है। नाभि में जो चीज़ तुम्हें खुलती हुई मालूम होती है, इससे यह मतलब है कि दो-तीन चक्र नीचे के हैं, और यह हमारे यहाँ बाद में लिये जाते हैं, एक-एक करके खुलना चाहते हैं। इसमें Miracles (सिद्धि-शक्ति) भी रहते हैं। इसलिये इनको उस वक्त लिया जाता है, जबकि Miracles पर हमारा ध्यान नहीं जाता। यह तुम्हारा अनुभव सही है और इसका मुझे भी अनुभव रहा है।

जो Vibration तुम्हारे दिल में आ रहा है, यह मेरी तरफ से है। तुमने जो स्वप्न देखा है, वह बूँद में सिन्धु की हालत साबित करता है। आखिर में जो हाथ आये, वही ठीक थे, जिनसे तुम्हारा कल्याण होगा।

तुम अब किस स्थान पर हो लिख देना, मैं भूल गया। मैंने धर्म की Definition कहीं लिखी है, अगर याद हो तो लिख देना।

अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-648

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 27.9.57

कृपा-पत्र आप का मिला। पढ़कर सभी समाचार मालूम हुये। ईश्वर बस आप की उम्र बड़ी करे और स्वास्थ्य ठीक रखे। 'मालिक' की कृपा से अब तक जो आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

भाई न जाने क्या हो गया है कि अपना मालिक जो इतना महान्, इतना सर्वव्यापी, सर्व शक्तिशाली लगता था, अब साधारण जन की भाँति महसूस होता है। कोई बड़प्पन नहीं, कोई विशेषता नहीं ज्ञात होती है। क्या मेरी ही पुतली कुछ बदल गई है या यह क्या हो गया है। कुछ ऐसा हो गया है कि मानों उस 'मालिक' का खज़ाना खाली हो गया। वह भी साधारण जन की भाँति ही हो गया है। कुछ ऐसा हो गया है कि कोई दे तो खा लूँ, न दे तो न खाऊँ। मैं तो मानों अब दुनिया के हाथ की कठपुतली हूँ। हर चीज़ यहाँ तक कि आध्यात्मिकता भी दुनिया ही देती है।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि जो बात 'आप' जिस दिन से लिखते हैं, जैसे कि जब तक सेहत न हो, हापुड़ नहीं छोड़ना चाहिये। वही बात उसी दिन से अपने आप ही बिल्कुल वही तबियत बन जाती है। अब कहाँ मेरे में जाने की धुन लगी थी, और कहाँ अब बिल्कुल साफ़ हूँ। अब मुझे दशहरे में इकट्ठे हुए सब भाई-बहिनों से मिलने का भी चाव जाता रहा। न इम्तहान की ही चिन्ता है।

कुछ ऐसा लगता है कि मानों कुल शरीर जड़ता का स्वरूप हो गया है। काम चाहे जितना करूँ, परन्तु मानों कण-कण में Activity पैदा ही नहीं होती है। मैं तो जड़ता की ही मानों मूर्ति बन गई हूँ। मुझे लगता है कि P1 Point मेरे में रौशन हो उठा है किन्तु मेरे में अब ऐसा नमक

है जो पत्थर है नमकीन नहीं है। कोई ईश्वर-प्रेम में रोता है, तो मेरे लिये खिलवाड़ के समान प्रतीत होता है और किसी को कष्ट में रोते हुए देखती हूँ, तो दिल भर आता है। यह कैसा भेद है किन्तु सेवा करते हुए, दिल भरा हुआ होते हुए भी अन्तर मानों पत्थर ही बना रहता है। पहले मैं मूर्ति-पूजा करती थी, अब स्वयं पत्थर की जड़-मूर्ति बन गई हूँ, किन्तु परवाह नहीं।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-649

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 28.9.57

अभी कल ही एक पत्र 'आप' को डाल चुकी हूँ। फिर अपनी आत्मिक हालत ईश्वर की कृपा से जो कुछ भी एहसास में आई है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि मानों रेला का रेला उतरता आता है, और मेरे में तुरत का तुरत हज़्म होता जाता है। रेला तो कहने को, शुद्धता व सफ़ाई का है, इसलिए Weight नाम नहीं, किन्तु पहले जब कोई दशा हज़्म होती थी तो मुझे लगता था कि कण-कण, नस-नस मानों उसे चूसे ले रही है। किन्तु अब तो नज़ारा ही और है कि बिना आकर्षण के आकर्षण है, यानी रेला नीचे आकर जज़्ब हो रहा है और बिना हाज़्मा शक्ति के सब हज़्म है। खज़ाना खाली है, किन्तु रेला आ रहा है, क्या मज़ाक है। मुझे तो अब लगता है कि 'मालिक' की Power मुझमें जज़्ब हो रही है। 2-3 दिन से चौबीस घंटे दिन-रात जज़्ब हो रही है। केन्द्र ही जज़्ब हो रहा है, किन्तु थाह नहीं है और न वज़न का पता है। शक्ति है, किन्तु Powerless है। एक अजीब तमाशा है, जिसमें न कोई खिलाड़ी है, न खेलने वाला और न बाज़ीगर है, न नाचने वाला है। अपने आप ही चाहे बात करती हूँ, तो लगता है, मानों आप की कही बात कह रही हूँ और यह इतनी स्वाभाविक हो गई है कि मुँह से भी फटाफट यही निकलता है कि 'आपने' कहा है।

कुछ ऐसा है कि अब सब अजीब बात है, अजब तमाशा है, किन्तु मेरे लिये मानों सब Natural है। बिल्कुल ही स्वाभाविक, लापरवाही या उदासीनता सी घर कर गई है और उसे चाहे कुछ कह लें या न कहें, वह तो मानों Nature ही बन गई है। एक Natural Flow सा बना रहता है, तबियत में, हृदय में। मैं चाहे उसे भूल जाऊँ, किन्तु वह तो ज्यों का त्यों ही बना रहता है। एक साफ़ शुद्ध या Purity ही मेरा अन्तर-बाहर का एक सा स्वरूप ही बन गई है। अब तो यह पता नहीं कि बात बोल रही हूँ या Purity या Reality उगल रही हूँ और अजीब बात है कि अपने में कुछ महसूस नहीं होता। मेरे में अब Mind का बन्धन नहीं। चाहे यह Mind कह लें या Sub-conscious Mind कह लें, चाहे conscious कह लें या Sub-conscious कह लें या Superconscious कह लें। मेरे लिये सबके अर्थ अनर्थ हैं, मानों कोई दिव्यता नहीं। मैं तो जड़ता की प्रतिमा हो गई हूँ, किन्तु क्या परवाह, जो जानें, सो जानें। यहाँ तो एक अलौकिक निश्चिन्तता का सागर ही मेरा

स्वरूप बन गया है। मानों मेरे अंग-अंग में, नस-नस में दिव्यता ही भर गई है। यही मेरा स्वरूप हो गया है। माया से परे एक दिव्यता घर कर गई है जीवन में।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई बहिनों को प्यार।

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-650

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
आशीर्वाद! — 9.10.57

तुम्हारे पत्र 27 व 28 सितम्बर के मिल गये। स्वामीजी से तुम्हारी भेंट हुई, अच्छा हुआ। मगर भाई, मेरे पास उनका आना बड़ा मुश्किल है और अगर आ भी कहीं इत्तफ़ाक से गये तो, मेरे बारे में जानें क्या राय कायम करेंगे। इसलिये कि यहाँ कोई हालत ही नहीं रही। तवज्जोह (Transmission) से हर आदमी ख़ुश नहीं होता, इसलिये कि उसमें भी तरी नहीं है। जब Surrender अच्छा हो जाता है, ऐसा कि उसको पता नहीं चलता, तो गति कठपुतली की ही हो जाती है। Surrender क्या है? 'मालिक' की हालत की नकल, जो असल हो जाती है और फिर Density से ताल्लुक ही नहीं रहता अर्थात् हम अपनी अंतिम दशा में आ जाते हैं। इसलिये गीता में कृष्णजी ने इसकी बड़ी महिमा कही है। रेला उतरना, यह चीज़ मैंने तुमसे ऐसी सीखी कि मुझे अब इस हालत का पैदा कराना मालूम हो गया। मैं इसको सोचता रहता था, मगर समझ में नहीं आता था। अब, जब कि सामने हुआ, तब सब पता चल गया। इसके लिये अगर बिन्दु में सिन्धु का समाना कह लिया जाय तो यह मतलब अच्छा समझा सकेगा। मगर इस हालत को बिन्दु में सिन्धु का समाना तो कह ही दिया गया है, मगर जब वह Limitation टूट जाये कि बिन्दु हमारे समझ में न आवे कि हम थे और रेला आते-आते ऐसी हालत पैदा हो जावे कि सब एक ही धरातल Surface बन जावे और फिर उसमें भी शर्त यह है कि रेला, जो चीज़ अपने साथ लाई है, उसका भी पता न रहे, फिर क्या हो जाये, उसके लिये शब्द नहीं मिलते। शायद इस तरह से व्यक्त हो सके, कि न रेला रहा, न समुद्र, न बूँद, यानी इन शब्दों से वह चीज़ जो Express होती थी, वह न रह जाये। अब उसको क्या कहें? Negation कह लो। अब तो यहाँ पर कुछ कह नहीं मिलता। नहीं-नहीं करते चले जाओ, फिर भी यह "नहीं" ख़त्म नहीं होती और "है" और "है" पीछा भी नहीं छोड़ता।

अम्मा को प्रणाम और तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-651

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 14.10.57

कृपा-पत्र आप का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। यहाँ भी सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मैंने तो अब यह जाना कि होश या बेहोशी वास्तव में कोई चीज़ नहीं होती, बल्कि एक झीना आवरण था, जो कि उतर जाने पर अब मानों आँखों का अँधेरा सा साफ़ हो गया। अब तो यह हाल है कि सब ओर प्रकाश ही प्रकाशहै। अणु-अणु से बाहर भीतर, कण-कण से, हर चेतन व जड़ से एक अनुपम शान्ति रूप दिव्य प्रकाश निकल रहा है।

अब तो यह हाल है कि दशा क्या है, बाहर-भीतर, बिल्कुल समतल धरातल फैला हुआ है। अब तो न पत्थर हूँ, न चट्टान, न कुछ। कुछ अजीब सादा, समतल रूप ही मेरा कण-कण प्राप्त कर चुका है। शरीर या रूप क्या है, मानों एक बराबर समतल धरातल फैला हुआ है। अब तो जाने क्या दशा है कि न कोई चीज़ आती है, न जाती है। 'मालिक' को सौंप देने को मेरे पास कुछ रहा ही नहीं।

मैंने लिखा था कि कण-कण में एक दिव्यता भर गई है, परन्तु अब कुछ नहीं। अब तक रेले के साथ आने वाली चीज़ के नशे से कुछ दिन भर खोई सी रहती थी, किन्तु अब तो न नशा है, न ख़ुमारी है और न खोई हूँ। होश अब कभी बेठिकाने तक नहीं पहुँच पाते हैं। अब तो ठिकाना कहीं है ही नहीं, सब बेठिकाना ही बेठिकाना फैला है। अब तो मुझे लगता है कि मानों Stages इत्यादि, मानों सब कहने मात्र भर को थी। वास्तव में अब न कहीं Stage है न कुछ। अब तो एक बेनक़ाब, बेदशा ही फैली हुई है या यों कहो कि बस धरातल ही धरातल फैला है और शरीर तो मेरा मानों धरातल ही बन गया है और ऐसा शीशा बन गया है, सब ज्यों का त्यों झलकता है। पहले Sitting दे लेती थी, किन्तु अब तो मुझसे वह भी नहीं होता। नाम को बैठती हूँ, परन्तु पता नहीं, कुछ Sitting जाती है या नहीं। जाये कहाँ से, जबकि केवल एक समतल धरातल ही मेरा स्वरूप बन गया है।

लगता है कि सारी दिव्यता व अलौकिकता मेरे में हज़्म हो गई है और मैं फिर ज्यों की त्यों 'मालिक' के सामने खड़ी हूँ, मानों- ''सूरदास कारी कामरी पर चढ़ै न दूजा रंग''। न पता, सारी चीज़ कहाँ चली जाती है, जो मेरे पर फिर असर ही नहीं रहता है। ऐसा लगता है कि एक माया रहित दशा फैली हुई है और फैली ही नहीं, वरन् सब मेरे अन्दर सिमट कर शान्त हो गई है। माया से परे एक अनुपम दिव्य स्वरूप ही हो गया है मेरा।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-652

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 27.10.57

तुम्हारा पत्र दिनांक 14.10.57 का मिल गया। ख़त के जबाब में अब की बहुत देर हो गई। ता. 5.12.57 को दक्षिण भारत जाना तय हुआ है। तुमने कोई ख़त इधर नहीं भेजा, इसलिये हर रोज़ तुम्हारी तन्दुरूस्ती की फ़िक्र रहती है, जल्दी जवाब देना।

मैंने किसी ख़त में लिखा था, जिसका मतलब यह था कि ऊपर से जो चीज़ उतर रही है, उसका फैलाव नीचे तक हो रहा है। अब एकसार हालत पैदा हो चुकी है और बहुत धीमापन है, जिसके

माने यह है कि जिस स्थान की जो हालत कि तुममें है, यानि O1 की, वह करीब-करीब सब एकसार हो गई है। तुम्हें अपना घर और दूसरों के घर एक समान प्रतीत होते है, इसका मतलब है कि ग़ैरियत का भाव तुम्हारे दिल से जा चुका है और सब अपने प्रतीत होते हैं। अब इसके बाद ईश्वर ने चाहा कि कोई भी भाव मन में न रहे, यह Reality की दशा है।

तुमने जो न होश, न बेहोश वाली दशा लिखी है, यह तुम्हारी हालत है। मेरी भी यह हालत है कि जब पैर कहीं नीची-ऊंची ज़मीन पर पड़ जाता है और गिरते-गिरते बचता हूँ तो मुझे यह ख़्याल होता है कि मैं बेहोश था। जब मन की वृत्ति अपने असल में, जितना होना चाहिये, लय हो जाती है, तो यह हालत पैदा होने लगती है। पूरी तौर से अगर मन अपने असल में लय हो जावे तो ज़िन्दगी ख़त्म हो जावे, इसलिये मैं समझता हूँ कि इतना होश ज़रूरी है।

अम्मा को प्रणाम। तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-653

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 28.10.57

मेरा एक पत्र मिला होगा। आशा है, 'आप' अच्छी तरह से होंगे। ईश्वर की कृपा से जो कुछ आत्मिक-दशा आजकल है, सो लिख रही हूँ।

भाई, कुछ ऐसी शून्य या खाली दशा है या स्थान है कि जिसके लिये No World कहना ही ठीक बैठता है और No World होने के कारण No Word भी कहना पड़ता है। जब बाजे व तमाम शोर होता है तो लगता है कि मानों शून्य हृदय में बाजे का शब्द या छमछमाहट लगकर लौट आती है। सब कुछ शून्य है, शरीर व कण-कण शून्य पड़ा है। भीतर-बाहर, ज़र्रा-ज़र्रा शून्य हो गया है। तबियत शून्यता का ही रूप हो गई है। किन्तु अब यह शून्यता भी ऐसी है कि मैं और 'वह', मानों एक हो गई हूँ। जब मैं शून्यता लिखती हूँ तो, मानों अपने को ही लिखती हूँ। खाना-पीना, सबका स्वाद भी शून्य ही हो गया है और एक यह कुछ है कि तबियत के हल्केपन और शून्यता का मैं थाह नहीं ले पाती हूँ। मैं तो धरातल हूँ। मेरा तो स्वरूप यही है। लेकिन अन्तर केवल इतना है कि चट्टान ठोस होता है, परन्तु मेरे में हल्केपन व सरलता की थाह नहीं मिलती है। तबियत अब ऐसी रहती है कि न उसे वैराग्य कह सकती हूँ, न उदास कह सकती हूँ। हाँ, निर्मलता की थाह नहीं मिल पाती है। भीतर-बाहर, बस एक समान ही तबियत रहती है और उसकी भी थाह नहीं मिलती है।

मैं तो भाई, अब इतनी छोटी हो गई हूँ कि अब तो सब कुछ अथाह ही अथाह है, लेकिन उस अथाह में क्या है, तो यही कहूँगी कि Nothing। मेरी दशा तो उस प्याज की गट्ठी की तरह है कि जिसके पर्त्त के पर्त्त छीलते चले जाओ, बाद में Nothing रह जाता है किन्तु उस Nothing पर ही सारे पर्त्त टिके हुए थे। बस वह Nothing ही मेरी दशा है। मेरा कण-कण ही अथाह मानों Nothing हो गया है। एक ओर इस Nothing पर गौर करती हूँ तो अथाह

Unlimited पाती हूं, परन्तु अथाह में गौर करने पर Nothing रह जाता है न जाने अब क्या मामला है, 'मालिक' जानें या 'आप' जानें, मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे-भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-654

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 5.11.57

पत्र तुम्हारा 28 अक्टूबर का लिखा हुआ मिल गया। अबकी श्री राघवेन्द्र राव गुलबर्गा में Annual Day of Branch बड़े Scale पर मना रहे हैं। दक्षिण भारत में आग सुलगना तो शुरू हो गया है। लोग कम जरूर आ रहे हैं। वहाँ पर मुझे कम से कम हर साल तीन महीने रहने की जरूरत है। ता. 5 दिसम्बर को मैं South India चला जाऊँगा। मुझको त्रिचनापल्ली का Center जिसमें M.K. Ganesan काम कर रहा था, बन्द कर देना पड़ा।

अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-655

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 31.10.57

कृपा-पत्र आप का जो पूज्य मास्टर साहब जी के नाम आया था, सो सुनकर तबियत ख़ुश हुई। ईश्वर आपको हमेशा इसी तरह स्वस्थ रखें, ताकि सब लोगों को रूहानी लाभ मिलता रहे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो सदैव अचल व स्थिर बनी रहना, जो मैंने लिखा था, वह भी भूल गया है, या अनुभव नहीं होता। अब तो ज्यों की त्यों यानी कुछ भी नहीं बनी हुई हूँ। मेरा तो यह हाल है कि जब मरना और जीना एक ही राह है, ब्रह्मानन्द या बेआनन्द सब एक ही राह है, तो कबीरजी की कहावत कि- "कब मरिहौं, कब पाइहौं, पूरन ब्रह्मानन्द"। भला मैं निपट गँवारिन क्या जानूँ उसका मोल। क्या मरना चाहूँ, क्या जीना, यह भी क्या जानूँ? मेरी तो बस यह दशा है कि- "भैंस के आगे बीन बजाई, भैंस बैठि पगुराये"। जिसे जीने का महत्व नहीं मालूम उसे गवाँना या रखना, एक सा है। मैंने तो भाई, अब यह जाना कि महत्व या विशेषता नाम की तो मानों कोई वस्तु ही नहीं है।

अब तो भाई, भीतर-बाहर, शून्यता, किसी का एहसास ही नहीं होता है। थाह और अथाह, सब मेरे लिये मानों एक सा ही शब्द है। Limited या Unlimited मेरे लिये तो अब, सब कुछ एक ही है और जो अन्त में है, लिखती हूँ, वह कुछ भी नहीं है, महज़ वाक्य पूरा करने का केवल एक बहाना है। अब सच तो यह है कि दशा ही क्या है, लिखने का केवल एक बहाना मात्र है। चाल तो अब

बिल्कुल मानों स्थिर थम गई है और चाल ही क्या, कुल System ही मानों स्थिर स्थित हो गया है, किन्तु अजीब तमाशा है कि न स्थिरता है, न स्थितपना ही है। कुल स्वरूप ही ज्यों का त्यों रह गया है, नहीं, ज्यों का त्यों कहने में भी कुछ भारी सा प्रतीत होता है तो कुछ नहीं, कहने को कह लिया है। 'मालिक' का आभास भी अब कहने को कह लेती हूँ, मानने को मान लेती हूँ, किन्तु सच तो अब जो है, सो है ही। अब छिपाये से छिपता नहीं। मुझे तो न जाने अब क्यों यह लगता है कि मेरी तो पूजा की अभी A,B,C,D शुरू नहीं हुई है। पता नहीं 'मालिक' पढ़ायेगा या नहीं, 'वह' जाने। मुझे तो अब न पढ़ना याद होता है और न रटना ही याद होता है। जैसा 'वह' चाहे वही होगा।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-656

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 4.11.57

आशा है, मेरा एक पत्र मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो न जाने क्या दशा है कि Receiving Power तो मुझमें रही ही नहीं। नहीं, Power नाम की कोई वस्तु अब मेरे में रही ही नहीं। इतना ही नहीं, 'आप' पहले मेरे लिये जो कुछ करते थे, हर चीज़ मैं समझ जाती थी, कि 'आप' कुछ कर रहे हैं। किन्तु अब तो मैं कभी कुछ अनुभव ही नहीं कर पाती हूँ तो Receive क्या करूँगी। मैं तो बिल्कुल खाली-खाली फिरा करती हूँ। मेरा तो रूप ही खाली हो गया है। रग-रग का ख़ालिस रूप हो गया है और रूप कुछ भी नहीं है, बल्कि बस निरी ख़ालिस हूँ। फिर ख़ालिस की पीर व रूप ख़ालिस ही जानें। मुझे तो कुछ भी पता नहीं कि क्या लिखूँ और पीर क्या, मैं तो बेपीर ही हो चुकी हूँ। अब तो न पत्थर ही हूँ और न मोम ही रही। कण-कण, बाहर, भीतर अब Inactive रहा करता है।

मैं देखती हूँ कि 'मालिक' के प्रेम के कोष का वह अथाह खजाना (मेरे में) न जाने कहाँ सोख चुका है। अब तो सहोदर व सहोदराओं का स्नेह इस पाषाण प्रतिमा को अपने स्नेह-जल से नहलाये रखता है। 'मालिक' आने वाले हैं, किन्तु मैं तो एक गूँगी प्रतिमा के समान फिरा करती हूँ। मिलन का उछाह 'मालिक' ही जब, जितनी देर स्वयं ही इस बालिका का स्मरण करता होगा, बस केवल इतनी ही देर को आता है, फिर जहाँ से आता है, वहीं पर समाप्त हो जाता है। फिर भला मैं सेवाकार्य ही किस भाँति सँभाल सकती हूँ। बस एक यंत्रवत् जाने क्या-क्या स्वयं ही होता रहता है, जिसका मुझे पता नहीं। इसलिये मुझे तो आज अपने को सबकी सेविका कहने तक की भी गम्य नहीं। यहाँ तक कि अन्तर की प्रेरणा तक मुझे नहीं मिलती है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार।

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-657

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 9.11.57

तुम्हारा पत्र आया। अब इस समय लिखना यही है कि जियो और तन्दुरूस्त रहो। मैंने अम्मा से प्रार्थना की है कि वे तुमको वहीं छोड़ देवें और जब तक डाक्टर साहब न कहें, वहीं रहने दें। अगर उत्सव में भी वह वहाँ रखना इलाज के लिये जरूरी समझें तो मैं यही कहूँगा कि तुम्हें उत्सव में भी नहीं आना चाहिये।

अम्मा को प्रणाम!

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-658

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 29.11.57

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। यहाँ भी सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो कुछ यह दशा है कि लगता है कि बनावटीपन और नकलियत सब मानों किसी ने धीरे-धीरे निचोड़कर, पिघला-पिघला कर समाप्त कर दी। अब तो दशा में न बनावटीपन है, न नकलीपन। असलियत व नकलियत दोनों मेरे लिये नहीं हैं। मैं तो केवल उस मशीन की भाँति हूँ, जिसका कोई भी अस्तित्व ही नहीं है। अब तो यह दशा है कि स्वतंत्र होते हुए भी स्वतंत्र नहीं हूँ। यह सब क्या है, यह तो 'आप' ही जानें, 'आप' का काम जानें। मुझे तो बस 'मालिक' से मतलब है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

सदैव ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-659

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 17.12.57

आशा है 'आप' आराम से पहुँच गये होंगे। 'आप' को खाँसी बहुत आती थी, सो कुछ लाभ हुआ या वैसी ही है। कृपया दवा बराबर समय से लेते रहिये। यहाँ सब कुशल है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि रात को कुछ ऐसी नींद हो गई है कि रात को सोती भी

रहती हूँ और हर खटपट एवं हर आवाज़ कान में पड़ा करती है। मेरा 'मालिक' मुझे अपने में सराबोर कर दें, बस इतनी सी ही प्रार्थना है। अब तो बीज ही दग्ध हो चुका है। प्रेम भी दें या न दें, इस अपनी ही चीज़ को बस अपना लें। ऐसा लगता है कि मानों मेरा सूक्ष्म शरीर या मेरे अन्दर का शरीर एकदम से एक क्षण को प्रकाशित होकर बिल्कुल बिला गया। तबसे ऐसा लगता है कि मानों System का जाल या पर्त्त हटकर बिल्कुल सब खाली-खाली सा हो गया है। दशा कुछ ऐसी है कि शुद्ध कहती हूँ तो, सरल या मुलायम कहूँ तो अब कोई बात ही ठीक नहीं जँचती है। इधर कुछ मेरे अन्दर की कोई चीज़ एकदम से मिट गई है, बिला गई है। यह नहीं कह मिलता है कि क्या चीज़ थी। मेरा स्वरूप जो मैं लिखा करती थी, कि मानों मेरा स्वरूप ही यही या ऐसा हो गया है, वह चीज़ भी अब बिला गई है। अब तो कहने को मेरे पास यह कुछ भी नहीं है। फिर ठीक प्रकार से क्या दशा है, यह मैं कैसे लिखूं 'आप' को यह समझ में नहीं आता है।

अब तो भाई हल्कापन भी मेरे में बिला गया। क्योंकि अब तो यह भी कहते नहीं बनता है। सच तो यह है भाई, कि अब तो दशा के लिये हल्कापन, सरलता या पवित्रता जो कुछ लिखती हूँ, तो मानों बनावटी बातें लिख रही हूँ। हालत में अब कोई भी बात या कोई भी विशेषता रही नहीं, तो सब जो भी लिखती हूँ, नकलियत मुझे लगती है।

'अम्मा' आप को आशीर्वाद कहती है। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-660

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 20.12.57

कल पूज्य मास्टर साहब जी के पत्र से मालूम हुआ कि 'आप' की तबियत कुछ अच्छी है, पढ़कर खुशी हुई। मेरी आत्मिक-दशा जो कुछ 'मालिक' की कृपा से मालूम हुई है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि जागते में आँखे खोले देख रही हूँ, फिर भी अक्सर कुछ ऐसी दशा हो जाती है कि कोई सन्मुख आवाज़ देता रहे, तो भी सुनाई नहीं पड़ता है। बिल्कुल मानों एक शून्य, निर्दोष दशा मेरा स्वरूप बन गई है। अक्सर यह आँखों में छा जाती है, जो मैं निर्दोष बैठी मानों शून्य को निहारती रह जाती हूँ। उस समय यह कहना उचित ही होगा कि शून्य में बैठी शून्य को निहारती हुई खो जाती हूँ किन्तु एक ऐसा होश जिसका अधिकतर रात को सोते में होश आता है, या दिन में कभी-कभी झटके से लगने पर होश आता है, वह मानों मेरी दशा का एक मुख्य अंग ही बन चुका है। शून्य से मेरा मतलब खाली से बिल्कुल भी नहीं है, बल्कि अपनी परिभाषा में वह स्वयं अकेला ही है। स्वयं एक ही है और नेति-नेति ही उसके लिये कहा जा सकता है। अथाह ही जिसकी थाह है। नम्रता का दायरा भी पीछे ही रह गया है। अब तो कुछ ऐसी दशा है कि उसे चाहे सत् कह लो, या असत् कह लो, उसमें अब किसी का रंच-मात्र भी स्पर्श नहीं हो पाता है। वह तो सबसे परे है, अछूती है, क्योंकि अब उसे कोई छूत नहीं लग सकती। कुछ ऐसा लगता है कि जैसे कहा जाता है

कि जब योगी के प्राण निकलते हैं, तो सिर में कोई दराज़ हो जाती है, उसी से निकल जाता है, किन्तु मैं देख रही हूँ, कि सिर में, माँग के बिल्कुल लगे में, मानों एक दराज़ सी पड़ गई है। यह क्या है, मुझे नहीं मालूम। यह तो आप ही बता सकते हैं।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-661

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 26.12.57

मेरा एक पत्र आपको मिला होगा। यहां सब कुशल है। आशा है वहां भी सब लोग कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो यह दशा है कि ज़रा सा ध्यान का ध्यान आते ही तबियत घबड़ा जाती है। हालत कुछ ऐसी हो गई है कि मन की गम्य से परे हो गई है। एक ऐसा अविरल, अजस्त्र श्रोत नितान्त प्रवाहित है, जिसकी गति एक समान है। न जाने क्यों साँस में कुछ भारीपन रहने लगा है। अब तो मानों पीठ के पीछे की सारी आध्यात्मिक दुनिया मेरे हाथों में है, किन्तु मुझे तो मानों अब उससे भी वैराग्य रहता ही है। मन भी देखती हूँ कि इस नित्य, अखण्ड दशा में दशा ही रूप होकर समा गया है, क्योंकि न जाने क्या बात है कि मन की तो मुझे अब सोते, जागते, कभी प्रतीत ही नहीं होती है। अब दशा को Read करने तक के ध्यान में मानों तबियत कैद होकर छटपटा जाती है। एक बिल्कुल सादी व भोली दशा है। महाशून्यता ही मेरा रूप हो गया है।

अब तो बस एक ऐसे ही विलक्षण क्षेत्र में पैरती जा रही हूँ वह भी बिना शक्ति व प्रयास के। एक अजीब विलक्षणता ही मेरी नस-नस में समा गई है। न जाने क्यों गर्दन के ऊपर एवं सिर के पीछे दर्द सा बना रहता है। कभी-कभी तेज़ी पकड़ जाता है, किन्तु दशा पर पीछे कुछ ऐसी चीज़ व्याप्त है, जो कि खुली नहीं प्रतीत होती है। वैसे पीछे दृष्टि घुमाने पर तो Mastery मालूम पड़ती है, किन्तु फिर भी कोई वस्तु उस पर व्याप्त है, फिर भी आगे मैदान खुला है, व खुली हवा है। अब तो ऐसी बात है कि मानों सब दशा जिस कारण से व्याप्त थी, अब दशा नहीं वरन् केवल कारण ही कारण है, या यों कहिये कि महाशून्यता ही आगे पीछे, भीतर-बाहर, नस-नस में व्याप्त हो गई है। अब तो जड़ता ही मेरा रूप हो गया है। किन्तु इस सूखी जड़ता में भी मैं मग्न हूँ। कुछ ऐसी महाशून्यता व्याप्त है कि जहाँ पर न सांय हो रही है न सन्नाटा ही शेष रह गया है। अब तो लगता है कि सब ओर साफ़ ही क्षेत्र, नवीन क्षेत्र सामने है। अब तो जो मेरे कण-कण में मानों विलक्षणता व्याप्त हो गई है, क्योंकि अब ऐसा ही क्षेत्र व्याप्त है। नवीन क्षेत्र, बिल्कुल सादगी व्याप्त है। एक भोली दशा ही नित्य एक समान रूप से मेरे में प्रवाहित है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-662

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 9.1.58

'आप' का कोई पत्र बहुत दिनों से नहीं आया। इस कारण आपकी कुशलता का भी कोई समाचार न मिल सका। चिन्ता लगी है। कृपया 'आप' अपना समाचार जल्दी दें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ ऐसी बेनक़ाब दशा है कि जो नक़ाब से छिपाई ही नहीं जा सकती है। एक अजीब भीनी सी, सरल सी सादगी ही व्याप्त हो गई है। कुछ ऐसी अद्‌भुत विलक्षणता ही मेरी नस-नस में, बाहर भीतर के कण-कण में व्याप्त हो गई है कि जिसमें अब Mastery ही Mastery व्याप्त हो गई है। मेरी तो अब यह दशा है कि मिटते-मिटते मेरा 'मालिक' भी ओझल ही नहीं, वरन् मिट चुका है। अब तो यह दशा है कि:-

"निज को गँवाया रोयकर, पिया गँवाया हाँसि।
घर-बाहर अँधियारा मा, उड़ती बुझती साँसि।।"

Mastery तो व्याप्त है, किन्तु मानों अब आत्मिक शक्ति व इच्छा-शक्ति भी विलीन हो चुकी। फिर क्या Mastery और कौन Master अब तो ऐसा मैदान सामने है, जहाँ पर वायु की भी गम्य नहीं। खाली, सपाट, सादा, ऊसर दशा है। महाशून्यता ही जिसके चारों ओर व्याप्त है, या उसके घर है, या यों कह लें कि महाशून्यता ही जिसका नक़ाब है, किन्तु दशा उससे भी अछूती है। वह तो मग्न है अपने में ही। किधर भी देखने की या गर्दन टेढ़ी करने तक की फुर्सत ही किसे है। किनारा पा लिया। अब तिनके की परवाह ही क्या है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-663

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 20.1.58

पूज्य मास्टर साहब जी के पत्र से 'आप' का समाचार मिला। 'आप' को लाभ है और साँस की तकलीफ़ कम है, जानकर खुशी हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ यह दशा है कि पूजा करने बैठती हूँ तो मानों अपने अन्दर के चक्र-वक्र तक सब समाप्त हो गये हैं। ईश्वरीय-धारा हृदय में जा रही है। यह कैसे ख्याल करूँ, जबकि हृदय भी गलकर समाप्त हो गया है, कुछ रह ही नहीं गया है। हड्डी-हड्डी गलकर समाप्त हो गई है। बोझ नाम की कोई वस्तु अब मेरे अन्दर-बाहर, या शरीर तक में नहीं रह गई है।

साँस इतनी हल्की आती है कि उससे आने जाने का आभास तक नहीं होता है। यह सब क्या है, यह तो 'आप' ही जानें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-664

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 31.1.58

मेरा पत्र मिला होगा। आशा है आप स्वस्थ होंगे। यहाँ भी सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ यह दशा है कि सिर के पीछे, गर्दन से ऊपर एक Point पर मानों ज्वालामुखी की तरह कोई चीज़ ऊपर आने को जोर मारती है। जब से सिर में माँग के लगे में दराज़ सी हुई है, तबसे वह पांचो उंगलियों वाला हाथ सिर पर से मानों हट गया है। मेरी तो यह दशा है कि मानों कुल जड़वत् होते हुए भी काम चलता ही रहता है। रोना-हँसना सब कुछ चालू रहता है किन्तु फिर भी काष्टवत् या जड़वत् होने में तो कोई कमी नहीं आने पाती है वह तो सम-अवस्था में ही रहती है। न उसमें कोई कमी आती है और न कभी तेज़ी, बस जैसी है, वैसी बनी रहती है।

परसों रात अचानक यह कुछ आवाज़ सी लगी कि अब तो मरने की भी गुंजाइश नहीं रही। अक्सर रात के स्वप्न में लगता है कि मानों कई पावन आत्मायें मेरे पर पुष्प से बरसा कर रही हैं। फूल Actual नहीं मालूम पड़ते हैं, परन्तु कुछ बरसता सा है। कभी कुछ अपने बारे में कनफुसी सी होती लगती है। जागते में ये स्वप्न सी बातें Actual ही मालूम पड़ती हैं। जड़ और चेतन मेरे लिये एक समान अर्थ वाले शब्द ही हैं।

मेरे 'मालिक' पहले मुझे दो शरीर एक प्राण मालूम पड़ते थे, किन्तु अब तो न कोई शरीर और न प्राणों का अनुभव होता है। पहले मैंने लिखा था कि कुल संसार मुझे जड़वत् दीखता है, किन्तु अब तो कुछ भी अनुभव ही नहीं होता। अब तो न संसार कुछ था और न अनुभव ही कुछ है। न कुछ खत्म है न अखत्म है। यदि कुछ है तो अथाह है और अथाह का कोई अनुभव नहीं है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आप की ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-665

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 11.2.58

कृपा-पत्र आप का जो ताऊजी के लिये नारायण दद्दा के हाथ भेजा, सो मिल गया। समाचार मालूम हुए। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ अजीब हाल है। हर तरफ मानों अचम्भा ही अचम्भा है। निराकार व साकार, सब कुछ गलत या भ्रम बात थी। यह भी पता नहीं चलता कि है क्या, लिखूँ क्या? मुझे तो लगता है कि जो दशा पूजा के पहले थी, वही अब मानों मेरी रहनी का स्थान बन गई है या वही मेरा स्वरूप बन गया है। उन्नति या बेउन्नति का मेरे लिये एक समान ही, अर्थ हो गया है। मालिक मेरा मुझे जगा दे, ताकि मैं चल पड़ूँ 'उससे' मिलने मुझे तो न जाने क्यों मालिक मिलता ही नहीं। मैं तो अब एक जगह बैठ गई हूँ। शायद कभी वह कृपा कर आता जाता मिल जावे। किन्तु मार्ग का पता नहीं कि कहाँ बैठूँ, आदि में, अन्त में, या मध्य में।

सब 'बाबूजी', 'बाबूजी' कहते हैं, किन्तु कहाँ है, 'बाबूजी' कैसे हैं, कोई मुझे बतावे। जो कोई कहता है- "मैं 'बाबूजी' के पास से होकर आया हूँ और सब हाल बताता है, तो वह मुझे उड़ती-उड़ती बातें, बहकी सी बातें लगती हैं क्योंकि जो कदाचित् 'बाबूजी' के पास पहुँच जायेगा, फिर वह क्या लौटकर भला बताने आयेगा या भाई, क्या वह आ सकता है। मैं भी मन में 'बाबूजी', बाबूजी रटती हूँ, किन्तु सब ऊपरी बात है, जो न जाने क्यों मन के भीतर लगता है कि पैठती ही नहीं। अब तो सब कुछ खामोश हो गया है। मौत भी, जिन्दगी भी, चैन भी, बेचैनी भी, कुरेदन भी, आह भी, मार्ग भी। पता नहीं कौन चीज, मेरी हालत पर लगता है मानों हर समय एक पर्दा लिये खड़ी मेरी हालत को सदैव ढाँकने की ही कोशिश में रहती है, फिर भी कभी मेरे 'मालिक' का दिया होश बार-बार मानों वह पर्दा हटाकर मुझे कुछ दे जाता है, परन्तु मैं पुनःपुनः वैसी ही हो जाती हूँ। यह सब न जाने क्या है? मैं क्यों नहीं 'मालिक' के दिये हुए उस कुछ को समेट पाती हूँ। ज़रा देर भी नहीं सम्भाल पाती हूँ। 'मालिक' जितनी देर चाहे, क्षण भर ही कुछ देता है तो क्षण भर ही मैं उसमें मिल पाती हूँ, परन्तु यह मैंने देख लिया कि अब जिसमें मैं क्षण भर ही मैं उसमें मिल पाती हूँ, वह है कुछ भी नहीं, क्योंकि यदि कुछ होता तो मिला ही क्यों न रहता। किन्तु मैं ही कहाँ मिल पाती हूँ। कोई पर्दा हटाकर एक कर देता है, फिर बस मुझे उसकी कुछ याद ही नहीं रहती।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

आपकी दीन हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-666

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 28.2.58

आज हरि दद्दा से वहां के समाचार मालूम हुए। आप की तबियत ठीक रहे, 'आप' स्वस्थ रहें, ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि लगता है कि श्री बाबूजी का कण-कण पिघल-पिघल कर मेरे सारे शरीर में समाता या लय होता चला जा रहा है। बस, रुकता ही नहीं। यही प्रवाह बराबर चालू है। किन्तु मेरा अन्तर व सूक्ष्म कुछ भी तो अब नहीं रहा। अब तो बस इस स्थूल शरीर में ही उनका कण-कण समाकर बिलाया जा रहा है। मेरी तो यह दशा है कि मेरे लिये तो आध्यात्मिकता

या सांसारिकता, दोनों एक समान ही अर्थ वाले शब्द हैं। विशेषता व महानता नाम की तो कोई वस्तु का मुझे आभास ही नहीं होता। वास्तव में सारे निरर्थक हैं। शब्द रचना ही निरर्थक है न जाने कुछ ऐसा आभास होता है कि मानों मैं घोड़ा बनी हूँ, और 'मालिक' मेरे ऊपर सवार है, किन्तु कोई बोझ ही नहीं है और 'वह' हूँ-हूँ कर के अक्सर हुँकारी भरता जाता है, जिससे मुझे पता नहीं क्या हो जाता है। कुछ ऐसा है कि जो मैं अलौकिकता अपने कण-कण में समा गई देखती थी, किन्तु अब तो लौकिक या अलौकिकता मेरे लिये कहने को केवल समान शब्द भर हैं, अन्यथा यह कुछ भी नहीं। कोई दिव्यता नहीं, कोई महत्ता नहीं, कोई विशेषता नहीं, न पूजा में, न 'मालिक' में, और न अपने में। अब तो यह दशा है, वीराना भी वीराना नहीं रहा या यों कह लीजिये कि वीराना ही मेरा स्वरूप बन गया है, बल्कि यों कहिये कि उस पर भी मौत की खामोशी व्याप्त हो गई है, किन्तु अब मौत भी मौत नहीं है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं और केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपाकांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-667

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 5.3.58

मेरा पत्र पहुँचा होगा। आशा है आप की तबियत अब ठीक होगी। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि मानों एक पूरे Circle में मैं समाई हुई हूँ, जिसका रंग कुछ ताँबे के रंग सा है। हर मानव-मात्र मुझे केवल एक अवतारी शक्ति भासता है, जन्मता, मरता नहीं, बल्कि सब प्रगट हैं सो हैं। किन्तु फिर भी पैदा होने पर प्रसन्नता व मरण पर कुछ बुरा अवश्य लगता है, यद्यपि एक हल्के ख्याल के तरह ही, किन्तु होता है और मैं मानों हर एक से दबी हुई सी मस्तक झुकाये ही लगती हूँ, किन्तु कुछ ऐसा है कि मैंने अवतारी शक्ति व्याप्त लिखी है, किन्तु मैं उससे बिल्कुल ही अनभिज्ञ, अजान सी रहती हूँ, क्योंकि शक्ति तो मेरे लिये केवल एक कहने भर का ही शब्द मात्र है, न कोई बोझ, न कोई प्रकाश, न पथ कोई चीज़ भासती ही नहीं। केवल दुनिया में रहती हुई एक आदमी हूँ। दुनिया क्या, कुल सृष्टि Nature प्रकृति व परमात्मा या आत्मा, जीव या ब्रह्म, यह सब मानों कोई ग्रन्थियाँ थीं, जो 'मालिक' ने साफ़ कर दी। अब इनके बारे में न कोई बुद्धि ही प्रश्न करती है, न औरों से कुछ सुनकर ही तबियत उधर जाती है। मुझे तो यह सब बेकार बातें लगती हैं, जिन्हें मैं समझ नहीं सकती हूँ। शायद अब न कोई मेरे लिये विषय रह गया है, न प्रश्न, न उत्तर, न कोई उलझन। इसलिये यदि अब कुछ लिखना चाहती हूँ तो कठिनाई पड़ती है। कोई विचार ही नहीं आते कि क्या लिखूँ। लगता है कि कुछ है ही नहीं, क्या लिखूँ। फिर कुछ लिख जाने पर भी यदि उसे पढ़ती हूँ तो पढ़ने पर भी सब कोरा का कोरा ही लगता है। पहले तो यह हाल था कि लिखने

का संकल्प-मात्र करने पर ही तमाम विषय व उसके बारे में बातें मानों कोई खुद ही मेरे में उड़ेलता चला जाता था, परन्तु अब तो सब मानों मौत की भी मौत सी खामोशी भीतर-बाहर सब ओर व्याप्त है। मैंने पहले लिखा था कि बेहोशी में भी एकप्रकार का होश पैदा हो गया है, किन्तु अब तो कुछ भी नहीं है। मैं तो बस एक संसारी साधारण मानव-मात्र हूँ। यही नहीं बल्कि मन में प्रियतम मालिक की रटना रहती है, किन्तु वह भी बस अपने ही समान प्रतीत होता है। यह सब पता नहीं मुझे क्या हो गया है। शायद प्रेम की ही कमी हो।

Note:- Nature के ऊपर के आनन्द में Pressure नहीं रहता, इसलिये मन उसकी अनुभूति में रहता हुआ भी उससे परे ही रहता है। दशा में रहते हुए भी परे ही लगता है। जब हम Nature से आगे बढ़ते हैं, तो आनन्द का स्वरूप बदल जाता है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-668

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 12.3.58

तुम्हारी आध्यात्मिक हालत तो अच्छी ही है, फिक्र तन्दुरूस्ती की है। ईश्वर करे तुम तन्दुरूस्त हो जाओ, जो मिशन का काम कर सको। जब अभ्यासी उन्नति करते-करते ऐसे स्थान पर पहुँच जाता है, जहाँ पर कि ईश्वरीय दिमाग जिसको Super Mind कहते हैं, का असर आने लगता है, तो फिर शून्य की अनुभूति होती है। जब उसमें घुल-मिलकर एक हो जाता है, तब उसको उससे सूक्ष्म गति की खबर मिलती है। यहाँ तक कि इतनी हल्की हालत हो जाती है कि जिसको अगर शब्दों में वर्णन किया जाये तो यही कहा जा सकता है कि यहाँ पर Lamp या चिराग़ कभी जला था और उसकी रोशनी थी, अर्थात् बस यह गुमान (ख्याल) ही होता है कि रोशनी का कुछ असर बेअसर हो आने के बाद जो होता है, उसकी अनुभूति होती है, और साफ़ अगर किया जाये तो उसकी सूरत ऐसी मालूम होती है, जैसे टिमटिमाते हुए प्रात:काल का दीपक यानी इन्सान के मन पर जो शक (Doubt) का असर होता है, बस वही असर मालूम होता है। चक्र तो अपना करिश्मा दिखाकर और उन्नति देकर अपना काम खतम कर देते हैं फिर Centre रह जाते हैं, जो Nature का भेद बताते हैं।

दराज सहस्त्र-दल कमल पर पाँच उँगलियों का न मालूम होना यह बताता है कि हमारी सहायता सूक्ष्म मात्र ही रह गई है। यह काम Nature ने बहुत कुछ ले लिया है। जब अभ्यासी में लय-अवस्था सूक्ष्म गति में हो जाती है, तब भीतर-बाहर खामोशी (Silence) सी छाई रहती है।

जब हर चीज़ की अनुभूति चली जावे, जब भाव अभाव हो जावे, तब यह समझना चाहिये कि असलियत या Reality में पैराव आरम्भ हुआ है। फिर और कुछ भी है, वह यह कि वहाँ के सब परमाणु भी घुल जाये और अपनी असलियत खो बैठे। तुम्हें अपनी इच्छा-शक्ति बैठे-बैठे न सही, लेटे ही लेटे सही, इस बात पर लगाना चाहिये कि तुम्हारी सब बीमारियाँ दूर हो

रही हैं और तुम तन्दुरुस्त हो रही हो। तुमने कभी अपनी शक्ति का अनुभव नहीं किया। तुममे वह शक्ति है कि अगर पूरी शक्ति से पत्थर पर जमा दिया जावे तो टुकड़े-टुकड़े हो जायें। पहाड़ और ज़मीन हिलने लगेगी, बीमारी क्या चीज़ है।

अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-669

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 14.3.58

कृपा-पत्र आप का पूज्य मास्टर साहब के लिये आया। आपका समाचार मालूम हुआ। मेरी तबियत ठीक चल रही है। 'मालिक' की कृपा से जो आध्यात्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो यह दशा है कि मानों मेरे भीतर-बाहर, कण-कण में से दिव्यता एवं अलौकिकता किसी ने बिल्कुल निचोड़ दी हो और बिल्कुल रूखा छोड़ दिया हो। ऐसी दशा है, जैसे भोजन में नमक न हो। एक बार आप ने मुझे Divine Wisdom के बारे में लिखा था कि हममें मौजूद है। किन्तु अब तो यह दशा है कि मानों मेरे अन्तर-बाहर, कण-कण में से Divine पना किसी ने निचोड़ लिया हो और मैं तो अब एक बिल्कुल साधारण-जन मात्र ही हूँ। पता नहीं कि यह Divine लड़ी कब टूटकर समाप्त हो गई। मैं तो अब कुछ जान भी तो नहीं पाती हूँ। पहले मैं जो कुछ, साधारण बात-चीत भी दिन भर में बोलती थी, या जो कुछ लिखती थी सब मुझे दिव्य एवं अलौकिकता लिये हुए प्रतीत होते थे, परन्तु अब तो न जाने क्या हो गया है कि 6 लाख का घर खाक़ हो गया है।

यही नहीं, बल्कि न जाने यह क्या हो गया है कि खुद तो भीतर-बाहर अब वीरान भी नहीं रहा, किन्तु कुछ ऐसी चरण मानों हो गये हैं कि जिधर से निकल जाती हूँ, मानो वीरानपन बरस जाता है, नहीं, वरन् मानों मौत सी एक मनहूस खामोशी व्याप्त हो जाती है। किन्तु यह अजीब बात है कि स्वयं मैं मनहूसियत से भी गई बीती हूँ, क्योंकि मुझे तो वह भी नहीं छू पाती है। मेरी तो वही दशा है कि:-

"प्रात लेय जो नाम हमारा। ताहि न तेहि दिन मिले अहारा॥"

कुछ यह दशा है कि जब तक आप का कृपा पत्र पढ़ती हूँ, कि मैं यह कर सकती हूँ, वह कर सकती हूँ, बस तब तक तो मैं मानो सब कर सकती हूँ, बस उसके बाद ज्यों की त्यों। क्योंकि बात तो सच यह है कि मैं तो केवल एक दुनियाबी साधारण जीव मात्र हूँ। यह सब गूढ़ विषय. भला मैं क्या समझ सकूँ। कोई एक समय था कि जब अपने स्नेह की डोरी लेकर 'मालिक' को बाँधने चली थी, किन्तु पता नहीं, डोरी कहाँ चली गई और मैं भी डग भर भी चल न पाई और अपने को भी जहाँ की तहाँ, ज्यों की त्यों, खड़ी पाया और बाँधने की मंशा किसे थी, यह भी भूल गया। सारा खेल बिगड़ गया। फिर घर के धन्धे ज्यों के त्यों प्रारम्भ हो गये। न कभी अब बाँधने का ही ख्याल आता है और न कुरेदन ही मुझे जगा पाती है। मैं तो अब अक्सर यह सोचने लगती

हूँ कि आखिर मुझे यह हो क्या गया था। शायद इसीलिये 'उसके' ख्याल के साथ ही साथ Divine लड़ी व अलौकिकता व दिव्यता की ज्योति भी विदा हो गई। अब तो मानों एक बुझा दीपक पड़ा है, जिसमें घर में कुछ उजाला कर सकने की क्षमता ही नहीं रही। इसलिये घर भी एक सराय है, जहाँ दीपक कभी जलाया ही नहीं गया। चाहे जो अँधेरे में आवे, चला जावे, कुछ पता नहीं।

आप ने लिखा था कि "Reality का प्रारम्भ हो चुका है, तुम उसमें अब आगे तैर रही हो", किन्तु मैं भला एक साधारण बालिका क्या समझूँ। जिसमें दीपक को जलाकर रखने की क्षमता नहीं रही, बुझा पड़ा है, तो पड़ा रहने दो, वह भला Reality या गूढ़ तत्व क्या समझ पावेगा। किन्तु कुछ भी हो, चाहे दिखे या न दिखे कुछ हाथ तो आगे ही फैले, आगे ही टटोलेंगे। अब यह सब क्या है, यह तो आप ही जानें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-670

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी लखीमपुर
सादर प्रणाम!

कृपा-पत्र आप का प्राप्त हुआ। पढ़कर प्रसन्नता हुई। मैं अपनी तन्दुरुस्ती पर पूरा ध्यान रख रही हूँ, चिन्ता की कोई बात नहीं है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

कई दिनों से गर्दन के ऊपर, सिर के बिल्कुल पीछे निचले सिरे पर एक जगह बराबर दर्द बना रहता है और काफी मात्रा में बढ़ जाता है। सिर में सीधी मांग को पीछे सिर तक काढ़ता जावे तो उसी के लगे दाहिने Point पर जहाँ पहले अक्सर फड़फड़ाहट सी होती थी, वह अब भी बनी हुई है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-671

प्रिय बेटी कस्तूरी
शुभाशीर्वाद!

पत्र तुम्हारे सब मिल गये। तुमने अपनी तन्दुरुस्ती अच्छी लिखी, इसलिये खुशी में तुमको P1 के स्थान पर रात डाल दिया। अब वहाँ की सैर शुरू होगी। ब्रह्म-विद्या की दशा को अगर मनहूसियत कह दिया जाये, तो जैसे जिन्दा को मुर्दा कह लेते हैं, सबसे अच्छा Description है और आगे चलकर यही दशा रहकर फिर विदा हो जाती है। कण-कण का निचोड़ देना, जो तुमने लिखा है, वह ठीक है और इसके अर्थ यह हैं कि दुनिया की तरी अब तुमसे विदा हो गई है और हो रही

है। तुमने जो दीपक बुझा हुआ की मिसाल दी है, तो दीपक बुझा हुआ नहीं है, बल्कि उसमें असल रोशनी पैदा हो गई है अर्थात् वह रोशनी या शक्ति जिसमें तमाम दीपक जल सकते हैं। एक बात यह है कि तुम्हारे घर में भी तुमसे रोशनी फैली है।

तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ। चौबेजी को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-672

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 19.3.58

कृपा-पत्र आप का मिला। समाचार मालूम हुए। मेरी तबियत अब बिल्कुल ठीक है। 'मालिक' की कृपा जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो अब यह दशा है कि 'मालिक' से यदि फरियाद होती है, तो बस यही कि:-

"बिना भक्ति तारो, तब तारिबो तिहारो है"।

और तारो या न तारो, यह तरना-वरना अब कुछ मेरी समझ में नहीं आता है। अब तो प्रार्थना भी 'मालिक' से होती है, तो सूखी हुई, निचुड़ी हुई, कि केवल फरियाद है, किन्तु इस फरियाद में फरियाद या प्रार्थना कुछ भी नहीं रहती है। कुछ ऐसी दशा अब स्वाभाविक या सहज ही बन गई है, या यह अपना Nature ही बन गया है। अब कुछ यह अजीब बात देख रही हूँ कि दशा मैं अनुभव करती हूँ तो उसका आनन्द जितना या जैसा भी हो, अनुभव होता ही है, किन्तु फिर भी न जाने क्यों Senses ज्यों को त्यों पड़ी रहती है, दिल व दिमाग़ तक ज्यों के त्यों बने रहते हैं। यह सब कुछ समझ में नहीं आता कि क्या है। सब कुछ ठीक बना रहता है, भीतर-बाहर, सब कुछ ज्यों का त्यों पड़ा है, मानों कभी किसी ने हाथ तक न लगाया हो, छुआ तक न हो। कोई नयापन नहीं, न कोई अजीबपन है, मानों जब आँख खुली तो दुनिया को ज्यों की त्यों पाया।

कुछ ऐसी दशा है कि मानों एक पूरे circle में मैं समाई ही नहीं, वरन् मानों सब मेरी मुट्ठी में समाया है। मैं देखती हूँ कि यद्यपि इस Circle व point को मैं cross नहीं कर सकी, परन्तु फिर भी पड़ी चैन कर रही हूँ, वरन् 'मालिक' क्या कर रहा है, यह 'वही' जानें। कुल पूरे-पूरे circle मैं घूम चुकी हूँ और उसका जर्रा-जर्रा हल्का होकर मेरे अन्दर व्याप्त हो चुका है, किन्तु मुझे खुद अपना ठिकाना व पता नहीं है। पता नहीं 'मालिक' ने कहाँ गुम कर दिया और स्वयं भी तो मुझे लेकर कहीं गुम हो गया। मैं ज्यों की त्यों खाली हाथों खड़ी अब भी जब याद आती है तो, 'उसकी' बाट निहारती अपने को पाती हूँ, किन्तु सच तो यह है कि याद कभी आती ही नहीं है। सेवा भी तो अपने 'मालिक' की अब कभी होती नहीं। क्या सेवा करूँ, कैसे करूँ, यही तमीज़ नहीं रही।

अब न जाने इधर करीब 15-20 दिनों से कुछ ऐसी दशा है कि रात में अचानक चिल्ला पड़ती हूँ, सोते में और यही नहीं, दिन में भी, न जाने क्यों जागते में भी, रह-रहकर मानों चिल्ला पड़ती

हूँ किन्तु इतनी मालिक की कृपा है कि मेरी चिल्लाहट अभी तक घर में कोई दूसरा सुन नहीं सका, नहीं तो भला मैं क्या कारण बताती, न मेरे दर्द है, न मेरे पीर है। Senses ज्यों की त्यों शान्त पड़ी हैं। दिल व दिमाग़ बिल्कुल सम अवस्था का रूप ही हो चुका है, परन्तु यह मुझे न जाने क्या हो गया है।

कल अचानक बाँये पैर के अँगूठे की नोक में इतनी तेज फड़फड़ाहट थी, कि लगता था कि पूरे पैर की वह नस फड़फड़ा उठी थी, फिर कुछ ठंढी फुहार सी उसमें समाने गई और निकलने लगी, फिर सब फड़फड़ाहट शान्त हो गई। अब भी लगता है कि मानों अन्दर अंगूठा खुल गया है, पता नहीं यह क्या है।

अब न जाने क्यों मुझमें एक ऐसी तेजी या Activity रहती है, जिस पर मेरा control नहीं है। किन्तु मानों मेरा उस Activity या तेजी से रंच मात्र भी सम्बन्ध ही नहीं है।

एक बात और यह हो गई है कि जब मैं कोई चीज़ खाना चाहती हूँ, तो बजाय अपने आप खाने के दूसरों को जब खिला देती हूँ, तो मुझे वही सन्तोष मिलता है, जो अपने आप खाने से मिलता है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी सदैव ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-673

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 3.4.58

आप का पोस्टकार्ड पूज्य मास्टर साहब के लिये आया था, सुनकर प्रसन्नता हुई। आप ने मुझे P1 point पर खींच दिया है, बहुत-बहुत धन्यवाद है, 'आप' की मेहरबानी के लिये। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो न जाने क्या दशा है कि लगता है मानों हर मन-मानस पर मेरा अधिकार है। काशी यदि दर-दर मिशन के लिये झोली फैलाता फिरेगा तो कस्तूरी हर मन-मानसों को उस झोली को भर देने को मजबूर कर देगी। परवाह नहीं, जनम-जनम मिशन के प्रचार को मुझे ग्रहण करना पड़े परन्तु मिशन का काम व प्रचार मानों मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। मुझे उसे पूरा ही करना होगा। मेरे 'श्री बाबूजी' श्री समर्थ जी से वह प्रतिज्ञा कि मिशन का प्रचार घर-घर कर दूंगा, मानों अब मेरी ही निज की प्रतिज्ञा होकर सामने नाचती है। मुझे करना होगा, हर मानव-मानसों को मिशन की ओर झुकाना होगा। संसार के समस्त तन व मन व सारा धन मिशन का ही है और उसके ही लिये दोनों हाथों से उलीचा जायेगा। यदि मेरी Service लगी होती तो एक जून ही रूखा-सूखा खाकर व एक घड़ी सोकर ही मैं अपने मिशन को रूपयों से अकेले ही भर देती। किन्तु 'मालिक' की नौकरी की है, तो यह भी हो जायेगा। यदि 'मालिक' ने मेरा Care, take-up किया है, तो मैंने भी मिशन की Care व 'उनकी' Health का Case, take-up जो पहले से था, अब पूर्णरीत्या अपने पर ही ले लिया है और यह 'आप' की कृपा से ही पूर्ण होगा।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-674

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभ आशीर्वाद! — 7.4.58

तुम्हारा एक पत्र दिनांक 31 मार्च सन् 1958 और एक पोस्टकार्ड दिनांक 3 अप्रैल 1958 का मिला। मैंने तुम्हारा पोस्टकार्ड मिलते ही तुम्हें तवज़्जोह दी और तुम्हें अच्छा भी लगा होगा। एक अचम्भे की बात यह भी है कि लोग ईश्वर से प्रेम नहीं करते और अगर करना भी चाहते हैं तो कर नहीं पाते। तुमने इस बात को सोचा कि क्या वजह है? हमने सोचा तो नहीं, मगर इस वक्त का विचार लिख रहा हूँ। वह रिश्ता या नाता जो दुनियादारी की तरफ उनको लपेटे हुए है, ईश्वर की तरफ़ उसको कायम करके मजबूत नहीं बनाते। अक्सर यह नाता मुझे जोड़ना पड़ा है और इसकी कोशिश भी की है, मगर अब नहीं मालूम कि मेरा क्या हाल हो गया है कि मैं उस तरफ़ तवज्जोह नहीं लेता, इसलिये कि मेरे नाता जोड़ने से बस यही असर रहा कि जब तक शराब पिलाई गई, नशा रहा और जब पिलाना बन्द कर दी, नशा गायब। अपने में यह चीज़ पैदा नहीं की, कि उस नशे को देख करके नशे की हालत ही पैदा कर लेते।

दक्षिण-भारत में 'मालिक' की कृपा से जैसा तुम्हारा विचार था, मिशन की आग भड़कना शुरू हो गई है और Dr. K.C. Vardhachari के पास अच्छे-अच्छे लोग आना शुरू हो गये हैं। आश्रम के लिये Govt. जल्दी कर रही है और वह लोग इन्तजाम कर रहे हैं, ईश्वर 'मालिक' है। एक शख्स ने अकेले आश्रम बनाने का वादा किया है, बशर्ते कि उसको China clay का पट्टा मिल जाये। एक Retired Deputy Collector ने जाकर उसका काम बनवा दिया। "हिन्दू" अखबार का Asst. Editor जो सत्संग में शामिल हुआ है, उसको 3-4 Sittings लेने के बाद 7 अप्रैल को अमेरिका जाना पड़ रहा है। कुछ दिनों के बाद अगर उसको अमेरिका जाना पड़ता तो कुछ प्रचार का काम हो जाता। फिर भी छ: किताबें Reality at Dawn की मैंने भेज दी है।

अब मैं तुम्हारी हालत पर आता हूँ। तुम्हारी यात्रा का स्थान P1 है, मगर अभी सैर शुरू नहीं हुई है। यह भी हो जायेगी। तन्दुरूस्ती का ख्याल है, इसलिये Natural Way में थोड़ा थोड़ा करता हूँ। अब तो तुम भी इच्छा बाँध ही दो कि तुम्हें आराम हो रहा है और तुम खूब तन्दुरुस्त हो रही हो। तुमने जो 31 मार्च के खत में यह लिखा है कि जब तुम कोई चीज़ खाना चाहती हो तो बजाय अपने आप खाने के दूसरों को जब खिला देती हो तो तुम्हें वही सन्तोष मिलता है, जो अपने आप खाने से मिलता है। मेरा हाल भी यही वर्षों से चल रहा है और जब तुमने लिखा तो मुझे भी याद आ गया। इसका मतलब यह है कि एक भाव पैदा हो गया है और

तुम्हारी कोई इच्छा बाकी नहीं रही। मिशन के फैलाने की जो तीव्र इच्छा तुममें पैदा है, इसकी वजह बहुत मामूली है कि मुझमें तुमने लय-अवस्था बहुत अच्छी पैदा कर दी। इसलिये मेरा यह जज़्बा तुम्हारे में पैदा हो रहा है।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-675

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 10.4.58

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। आशा है 'आप' का स्वास्थ्य ठीक होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब आज अचानक मैंने यह अनुभव किया कि Atmosphere में Condition उत्पन्न कर देने की क्षमता 'मालिक' ने मुझे दे रखी है। वैसे आज तक कभी न ऐसा अनुभव हुआ और न इधर ध्यान ही गया कभी। न जाने क्या बात है कि मेरे कण-कण में से दुनिया निचुड़ गई हो तो, यह नहीं, बल्कि मानों मेरे 'मालिक' को भी किसी ने निचोड़ कर मेरे हृदय को मेरे कण-कण को भीतर-बाहर, सब किसी ने शुष्क करके रख दिया है। न जाने क्यों 'मालिक' ने ऐसा किया। लगता है, कि सारे कण-कण में से मानों किसी ने नमक खींच लिया हो। बस मानों कुल में सूखा पड़ गया है और न जाने अब क्या है कि कण-कण तो मैंने लिख दिया है, किन्तु मुझे तो बस केवल कुछ शब्द ही व्यापक मिलता है और कोई एहसास नहीं, अनुभव नहीं और कुल का भी न कोई अनुभव है, न प्रतीति ही है। इस मुँह से केवल अब कुल शब्द ही निकलता है, सोई लिखती हूँ। कुछ या न कुछ है या नहीं, भीतर या बाहर, कण-कण कुल मिलाकर बस कुल हो गया है। या यों कहिये कि कुल को निचोड़ या घटाकर केवल यह कुल ही शेष बच गया है, सो भी न 'मालिक' के Conception में आता है, न स्वयं के ही, बस रूखा-सूखा, फुटकर केवल कुल ही है, दूसरा कोई Idea नहीं।

कुछ ऐसी दशा है कि जिसे मैं विशुद्ध दशा ही कह पाती हूँ। सारी पीठ इतनी नग्न हो गई है कि मानों हड्डी-वड्डी का कहीं पता ही नहीं रह गया है। बोझ नाम की कोई वस्तु छू तक नहीं गई है। लगता है कि मानों साफ़ खुले मैदान में मैं बिल्कुल Fresh खड़ी हूँ मानों एक नवीन Circle में मैं खड़ी हूँ, किन्तु फिर भी 'मालिक' की कृपा से मानों कुल Circle मेरी दृष्टि के अन्तर्गत है। मानों अब लय-अवस्था की यह एक नवीन एवं अद्‌भुत Stage के अन्दर खड़ी हूँ, जो श्रद्धा, विश्वास, प्रेम एवं लय और ज्ञान से बिल्कुल अछूती है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-676

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद! — 16.4.58

तुम्हारे दो पत्र डाक से और एक दस्ती मिला। बड़ी खुशी हुई, जो तुमने यह लिखा कि अब तुमको आराम होकर ही रहेगा और बात भी ठीक है।

तुम्हारा यह ठीक ख्याल है कि तुममें Atmosphere में Condition पैदा करने की क्षमता मौजूद है, इसलिये कि ब्रह्माण्ड-मण्डल की Mastery तुमको दी गई है। तुम्हारी शुद्ध दशा तो चल ही रही है, मगर अभी तुम शुद्ध और अशुद्ध का ख्याल बाँधे हो। वहाँ न शुद्धता है, न अशुद्धता। तुम्हारा यह ठीक ख्याल है कि तुम लय-अवस्था की नवीन दशा में खड़ी हो। तुम्हारे Soul Consciousness में लय हो जाने का पता जल्द ही मिलेगा- अभी उसके दरवाजे पर हो। शुरुआत नहीं हुई है, मगर कुछ उभार की दशा ऐसी पैदा हो गई है कि लय अवस्था के Circumstances बन रहे हैं। यह तुम्हारे 10 अप्रैल के पोस्टकार्ड का जबाब है।

अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-677

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 16.4.58

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सब कुशल है। आशा है, वहाँ भी सब कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ ऐसी दशा है कि मानों मेरी अब कुछ समझ में ही नहीं आता है। कस्तूरी का Form तो केवल नाम मात्र को है क्योंकि लगता है कि इससे तो मानों न मैं सुनती हूँ, न समझती हूँ, न बोलती हूँ और न देखती या अनुभव करती हूँ। कस्तूरी का Form तो अब केवल उसका नकाब् मात्र ही है, नहीं तो सारी बातें सुनकर न जाने कहाँ भीतर चली जाती है। कहीं या समझी जावे या न समझी जावे, सुनी जाये या न सुनी जाये, इसलिये समझ या नासमझी का कहीं स्पर्श तक नहीं है। साँस भी भीतरी ही भीतर कहीं जाती हो कि जिसका मुझे एहसास नहीं और मैं क्या, भीतर या बाहर कहूँ, जब मेरे लिये तो अंतर-बाहर, दोनों ही एक समान है।

जो उदासी की दशा मैं वर्षों पहले लिखा करती थी, लगता था, तब वह नकाब् के रूप में थी, किन्तु अब तो लगता है कि हर दशा एक और केवल एक कुल शब्द में व्याप्त हो गई है, समाप्त हो गई है। मेरे पास अब कुछ भी नहीं है। न खरचने को दाम है और न लेने को हरिनाम ही है। अब तो दशा क्या है कि मानों सर्व अंतर्यामिन या सर्वव्यापी रूप में व्याप्त हो गई है। दशा अपने असल में समा गई है और मुझे अकेला फुटकर छोड़ दिया है।

कुछ ऐसा तमाशा हो गया है कि ज़िन्दगी अपने असल में समा गई है, मौत अपने में समा गई

है, गुण भी अपने असल में समा गये। यहाँ तक कि 'मालिक' भी स्वयं अपने में समा गया है। मैं तो फुटकर मशीन की भाँति फिरा करती हूँ, पता नहीं किस वेष में और विचार द्वारा बस सब काम करा करती हूँ। आध्यात्मिकता भी स्वयं में समा गई। मुझे कौन पूछता, किन्तु हर हालत में मेरे तो 'मालिक' हैं, चाहे जैसे रखें।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-678

परम पूज्य श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 21.4.58

कृपा-पत्र आप का मिला। समाचार मालूम हुए। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तक तो मानों सब अंतर की लीलाएँ देखा करती थी, किन्तु अब तो सारी लीलाएँ, सारे खेल व तमाशे सब समाप्त हो चुके। अब तो जो है, सो है या नहीं। भाई, अब तो जो था, सो भी अब नहीं है। अब तो खेल व तमाशे व भाग-दौड़ का मैदान जाता रहा। शून्य समाधि की दशा, जो पहले मैं लिखा करती थी, सो भी अपने में समा गई या लय हो गई है। अब तो कुछ लगता है कि कुल या विराट् रूप में समाकर अब उससे भी मानों नाता ही टूटकर एक अकेली जगह मैं खड़ी हूँ। अब तो लगता है कि आत्मा का भी टिघलना शुरू हो गया है।

अब तो वह दशा जो मै लिखा करती थी कि- "जो पहिरावे, सोई पहिरूँ" अथवा "जहाँ बैठारे, तित ही बैठूँ", वे सारी बातें समाप्त हो गई। वह प्रेममयी दशा भी गल-गलाकर बराबर हो गई। कुल दशा मानों अपने में ही समा गई, किन्तु अब तो जो है, उसमें ही पता नहीं क्यों मस्त हूँ। कभी अन्दर से स्वत: ही मानों एक अवधूत गति सी दशा उभर कर ऊपर आती जाती है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-679

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद! — 27.4.58

तुम कुशल पूर्वक दिल्ली पहुँच गई होगी और Ward में दाखिला तो स्टेशन से उतरते ही हो गया होगा। मैंने तुम्हें वनवास भेजा है। इसलिये कि तुम रही सही बीमारी को वहाँ मार सको। तुम्हें हिम्मत रखनी चाहिये और सबको हर हाल में खुश रहना चाहिये।

तुम्हारी आध्यात्मिकता की Stages ईश्वर ने चाहा तो वैसी ही चलती रहेंगी और हृदय में तुम्हारे तसल्ली रहेगी। अगर कुछ भी तकलीफ़ मालूम हो तो प्रार्थना का औज़ार तुम्हारे पास है- उससे सब हालत ठीक हो जायेगी।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-680

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 4.5.58

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मैं विरोध कर सकती हूँ, किन्तु मेरे अन्तर में 'आप' की कुछ इच्छा देखकर व कुछ कह देने के बाद विरोधी भावनाएँ ही नहीं उठती हैं। यद्यपि अब न यह मालूम पड़ता है कि मेरी यही भावना हर समय रहती है कि 'मालिक' की मर्जी में मैं खुश हूँ। अब तो न विरोधी भावनाएँ हैं और न इच्छित भावनाएँ ही हैं। सच तो यह है कि अच्छी या बुरी, अब तो कैसी भी, भावनाएँ उठती ही नहीं हैं। मैं तो इसलिये स्वयं ही अपनी दशा को समझ सकने में असमर्थ हूँ, क्योंकि रोऊँ तो, गाऊँ तो सब बातें बिना अंतर की भावनाओं के उठे ही होता है। मैं तो केवल कठपुतली मात्र हूँ और केवल अपने 'मालिक' ही नहीं, वरन् हर मानव-मात्र की ही, किन्तु जड़ कठपुतली की भाँति हूँ, क्योंकि यह भी ज्ञान नहीं रहता, जो कि खुश हो लूँ, कि मैं तो कठपुतली मात्र हूँ।

ऐसा लगता है कि अंतरतम् का दरवाजा फट गया, सब कुछ एक धार हो गया लगता है कि अन्तर से प्रेरणा व स्फुरन देने वाली मेरी शक्ति मर चुकी है। नहीं, वरन् एकसार दशा ही व्याप्त हो गई है और मैं तो जैसे बिल्कुल खाली, भूली भटकी सी चुपचाप फिरा करती हूँ। मुझमें बराबर विचार अब नहीं आते, वरना सिर के बीच का भाग जो कि कुछ ऊपर से सम्बन्धित रहता है, तो ऊपर से कुछ Vibration हो आया करते हैं, किन्तु रात में सोने में मानों ऐसा लगता है कि बिल्कुल महाशून्य में ही व्याप्त हो जाती है। ऐसा लगता है कि यहाँ रहती जरूर हूँ, किन्तु मेरा खेमा तो घर में ही लग चुका है, किन्तु इसका एहसास निद्रा में ही होता है। न जाने क्या बात है कि महाकाश को सबसे शून्य कहा गया है, किन्तु मेरी दशा में तो वह भी मेल नहीं खा पाता है, वह तो भारी ही रहती है और मेरी हालत तो बस मानों खाली शब्द की तह का ही रूप हो गई है। अब खाली कहने को कह लूँ, किन्तु उसके लिये तो यह भी ठीक नहीं आता है कि यह अपनी दशा का अनुभव है या केवल एक अपना ही स्वरूप है। अब तो अनुभव और दशा भी एक सार हो गये हैं। बस एक ही चीज़ हो गये हैं अब तो जिसकी वजह से आत्मिक-दशाओं की अनुभूति होती थी मानों वजह ही बिला गई, समाप्त हो गई। शायद इसीलिये वह आकर्षण भी समाप्त हो गया, जो मुझे हर समय ऊपर और अंतर में खींचे रहता था। अब तो ऊपर नीचे, अंतर-बाहर, सब कुछ समाप्त हो गया। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-681

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 29.5.58

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहां सब कुशल पूर्वक है। आशा है आप भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा चल रही है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने अब तो कुछ ऐसी दशा है कि रात को सोते रहने पर भी दिमाग में मानों कुछ आराम नहीं, वरन् थकान ही लगती है। मानों दिमाग़ की नसें कुछ काम करती हैं, जो मुझे पता नहीं, किन्तु दिन में यदि कभी सो जाती हूँ, तब तो न जाने क्यों ज़रूर दिमाग में कुछ Rest मिल जाता है, वैसे नहीं। लगता है कि 'मालिक' के मिलन के या लय-अवस्था की एक बिल्कुल नवीन मैदान में पैराव शुरू हो गया है। एक बहुत कोमल दशा मेरा स्वरूप बन गई है। भीतर-बाहर, सब कुछ कोमल ही हो गया है। अब तो यदि उसे बहाव कहती हूँ तो वह बहाव या सरल शब्द भी दशा से भारी लगता है। शब्दों के अर्थ की तौल या अब तो दशा का अनुमान तक दशा से भारी लगता है। कैसे व्यक्त करूँ अब दशा को?

जो है, सो है भी भद्दापन ही लगता है दशा के लिये। नम्रता कहती हूँ, तो भी दशा के लिये उचित नहीं बैठता है। दशा कैसे कहूँ, जबकि वह तो पंच तत्वों व तीनों गुणों से रहित अथवा परे ही हो गई है। दिखावट या लगाव लपेट का ज़रा सा भी गुमान तक उसमें नहीं रह गया है। एक बहुत ही कुछ नाजुक सी दशा है। कुछ ऐसा हाल है कि शरीर भी अब शरीर नहीं, मानों ईश्वरालय या भगवान का घर है। न जाने क्या हो गया है कि अंग-अंग और नस-नस तथा कण-कण, भीतर-बाहर मानों ईश्वरीय शक्ति और प्रकाश से परिपूर्ण हैं। यद्यपि कुछ ऐसी नासमझ दशा भी मेरी कुछ साथ में है कि जिससे शक्ति व प्रकाश मैं नहीं जानती कि क्या है, अथवा कैसी है। सब कुछ असीमित हो गया है और उस असीमित Limitation रहित में ही मैं भी समा गई हूँ। अब तो दशा के लिखने में भी मानों मेरी तबियत एकाग्र होने से घबड़ा उठती है। एकाग्रता अब न जाने क्यों मुझे सहन नहीं हो पाती। स्वयं ही तबियत में कभी कुछ और कभी कुछ आवे या जावें, किन्तु वैसे मुझे अब कुछ भी सहन नहीं होता। सब कुछ असीमित हो गया है। मैं भी पता नहीं, ऐसे ही जाने कहाँ विलीन हो गई हूँ। शरीर, मन व प्राण का कण-कण बिखर कर अकस्मात् ही उस सीमित में ही समा गया है। अब इन सब के कहने में कोई आनन्द नहीं, कोई अर्थ नहीं है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-682

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 7.6.58

मेरा पत्र जो मैंने दद्दा के हाथ भेजा था, मिल गया होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं, आशा है 'आप' भी अच्छी तरह होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि इधर तो P_1 point की सैर समाप्त होने से अब आगे Stopage यानि हाथ पैर बन्द हो गये भी लगते हैं और दूसरी ओर एक नवीन दशा में पैराव होना भी शुरू हो गया है।

कुछ ऐसी दशा हर मिनट रहती है कि पहले जैसे मैं लिखा करती थी, कि एक प्रकार से सेंक से मैं हर समय सम्बन्धित रहती हूँ, किन्तु अब न जाने यह क्या दशा है कि वही सेंक अब निज का मेरा स्वरूप बन गया है। कुछ ऐसा हो गया है, कि भीतर-बाहर, कण-कण में कुल में, वही धीमा सा, कोमल नाज़ुक सा सेंक व्याप्त हो गया है। आज अचानक माथे पर Last point माँग तक तमाम एकदम से मानों भीतर वह point बिल्कुल फैल गया और तमाम नसें ऊपर को खिंची हुई थीं और ऊपरी दशा से सम्बन्धित थी।

अब दशा क्या है, Softness की इन्तहाई दशा है। भीतर-बाहर कण-कण समाप्त होकर कुल में Softness एक सार व्याप्त हो गई है। पहले मेरी दीवानगी दशा थी, अब तो शरीर का कण-कण ही दीवानगी का स्वरूप हो गया है, इसलिये दीवानगी कहना भी बेकार हो गया है। दीवाना दीवाने को भला क्या कहे, या क्या पहिचाने। हर चीज़ इन्तहाई दशा कह लें, या समाप्ति की दशा हो रही है। लगता है कि 'मालिक' की Soul में मेरा पैराव शुरू हो गया है। एक ही Soul में लय सी दशा का पैराव शुरू हो गया है। लगता है कि ऐसी दशा है कि मानों जिसमें कभी क्षोभ उत्पन्न ही न हुआ हो।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-683

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 15.6.58

आशा है, मेरा एक पत्र मिला होगा। यहाँ सब अच्छी तरह से हैं, आशा है 'आप' भी अच्छी तरह से होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ ऐसी दशा है कि लगता है कि तमाम Active पना सब समाप्त होकर, शरीर का ज़र्रा-ज़र्रा तक मानों एकदम से शान्त व मौन पड़ गया है। एक शरीर के कण-कण में, अंतर में तथा बाहर, सब, बस धुंधलापन सा छा गया है। 'मालिक' से लगाव का पता नहीं और क्या लिखूँ। 'मालिक' पर तो बस यह जीवन न्योछावर है, इतना ही कह सकती हूँ। जैसी मर्ज़ी, वैसी ही रहनी बनाने का प्रयत्न कर रही हूँ। कुछ ऐसी दशा है कि जिसके कारण से Spiritual दशा होती थी, या यों कहिये, जो आध्यात्मिकता का कारण था, वह भी मानों गलते-गलते समाप्त हो गया। अब तो उसका कोई कारण ही नहीं, मानों अब भी वही ढल चुकी है। इसलिये दीवार (दशा रूपी) कैसे अपनी मालूम हो सकती है। यही नहीं, बल्कि जिस कारण से लय-अवस्था होती थी, लगता है कि अब वही कारण भी बराबर टिघलते-टिघलते, पानी पानी होकर गुम होता जा रहा है।

अब तो कोई शान्ति मिली कहे या कोई आनन्द कहे, किन्तु मेरी तो यह दशा है कि पता नहीं कि तबियत में शान्ति रहती है या अशान्ति आनन्द है या बेआनन्द। तबियत में या विचार में इतनी शक्ति ही नहीं जो अब शान्ति या अशान्ति, आनन्द या बेआनन्द को पकड़ भी सके। सादगी या Simplicity को भी अब विचार पकड़ ही नहीं पाते। वह तो कोसों दूर की अपने से अलग चीज़ें लगती हैं और मुझे फिर इनसे काम ही क्या।

कुछ ऐसा हो गया है कि जो चीज़ मुझे मेरी हालत का पता देती रहती थी, वह न जाने कब समाप्त हो गई। मेरा दिल इतना छोटा हो गया है कि कहीं जगह ही नहीं, जो इन किसी भी चीज़ को या आध्यात्मिकता तक को स्थान दे सकती। इसलिये सब विदा हो गई। अब तो बिना मैदान का मैदान सामने है और जिसमें बिना गति अथवा चाल के मैं चलती जा रही हूँ।

एक न जाने क्या हो गया है कि अपनी हालत हर आदमी के सामने चाहे वे पूजा करें या न करें, देखती हूँ तो छोटी रहती है। कोई विशेषता नहीं लगती है। न जाने क्यों मैं अपनी दशा से अब चिमट नहीं पाती हूँ और प्रयत्न करना सब बेकार है। मुझे कोई मेरी हालत की अनुभूति ज़बरदस्ती कोई भुला-भुला कर देता है किन्तु मैं तो अब ऐसा किये रहती हूँ कि Will से विचार को वहीं छोड़ देती हूँ, जिससे पूरी तरह अपनायत तो होती ही रहती है। 'मालिक' जैसे भी कृपा कर मुझे लिये चल रहा है। उससे मैं तो एक ही तरह लिपटी रहूँगी। हाथ-पैर नहीं चलते तो न चले। अब हाथ-पैर हैं नहीं तो चलेंगे क्या? वैसे अब कहने सुनने या लिखने को मेरे पास न शब्द है न अनुभूति है और न शक्ति है, किन्तु विचार लिखते समय खुद 'मालिक' से शक्ति घसीट कर शब्दों के रूप में कुछ उगल देते हैं। वरना तो शरीर में या बुद्धि या मन में तो Activeness का पता ही नहीं। जरूरत पड़ने पर विचार ही 'मालिक' से शक्ति लाकर काम बनाते रहते हैं।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-684

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 29.6.58

पत्र जो पूज्य ताऊजी के हाथ भेजा था, सो मिल गया होगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, कुछ ऐसी दशा है कि मानों अपना हृदय ही कुल में फैला हुआ है और हर का सुख-दुख, अच्छाई या बुराई सब Vibrations इस हृदय में टकराया करते हैं। सब का रंज व खुशी के Vibrations इस हृदय में टकराते हैं। हालत में भीतर-बाहर, न सफ़ाई लगती है, न अँधेरा, कुछ धुँधलापन ही कुल में व्याप्त हो गया है। या यों कहिये कि कुल दृष्टि में धुँधलापन ही पैठ गया है। मैं तो केवल 'उनकी' ही दासी हूँ या यों कहिये कि मेरा जीवन 'उन्हीं' का जीवन है।

भाई, अब तो एक ऐसी साम्य दशा ही भीतर-बाहर, सबमें सब ओर ही फैली हुई है। एक बार मैंने लिखा था कि जब 'मालिक' के ख़्याल में होती हूँ, तो वह Greatness ख़ुद मुझमें मालूम

देती है, किन्तु वह सब मानों मेरे लिये केवल कहावत मात्र थी। Greatness नाम की वस्तु सब बिल्कुल मानों व्यर्थ हैं, उसका कोई अर्थ ही नहीं है।

सिर के बाँयें भाग में, जहाँ पर माँग खतम होती है, वहाँ से कान तक तथा उतने ही सिर के आधे भाग में पीछे गर्दन तक करीब 15 मिनट तक इतनी तेज कभी गुदगुदी व सुन्न की अवस्था हो जाती थी कि कुछ कहना नहीं। मुझे लगता है कि जो भी दशा मेरी बीतती जाती है, उस तरफ से कोई मेरा मुख मोड़े रहता है। यहां तक कि बार-बार अवधूत गति रहती है, परन्तु कोई मुझे ज़बरदस्ती मेरा मुख उधर से मोड़े रहता है। कोई मेरी हालत जो कुछ भी बीत चुकी है, या है, उससे मुझे बेलौस रखता है। पता नहीं क्यों ऐसा है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-685

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 12.8.58

मेरे तथा ताऊजी के पत्र पहुँचे होंगे। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं, आशा है, 'आप' भी अच्छी तरह से होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुल ऐसी दशा है कि जो कुछ भी 'मालिक' ने दिया हो, उसको वही जानें, उसको छोड़कर मेरे पास तो अब कुछ नहीं है। यहाँ तक कि आध्यात्मिकता तक भी मानों हृदय भूल चुका। प्रेम को पाने की तलब अब भी है, क्योंकि कभी आह खिंच जाती है स्वयं ही कि हाय! 'मालिक' से जी भर कर प्रेम न कर सकी।

कई दिनों से लगता है कि हृदय में व पीठ में सुइयाँ सी चुभने लगती हैं। मेरी तो ऐसी दशा है कि मानों पूर्ण सम-अवस्था या पूर्ण स्थिरता को कोई शक्ति ऐसी है, जो पूरी तौर से मेरी नहीं हो जाने देती है। जाने कहाँ से हर समय Vibration से मानों एक सम्बन्ध सा जुड़ा रहता है और अब थिर भी क्या हो, जबकि मुझे तो सुरत-वुरत सब ही छोड़ कर चली गई। न जाने मेरा क्या हाल हो गया है कि मैं सदैव अपने 'मालिक' से ही बेलौस रहती हूँ। न जाने क्यों अब हर आदमी की Condition जो पहले मैंने लिखा था कि अपने से ऊँची लगती है, परन्तु अब दशा को तो निकाल दीजिये, क्योंकि किसी दशा का मुझे अब अनुमान नहीं है, परन्तु अपनी निग़ाह व तबियत जाने क्यों सबके चरणों में झुकी रहती है। यहाँ तक कि मेहतर के पैर छू लूँ या कुत्ते के पैर तक पकड़ लूँ तो कुछ नहीं। अब अन्तर इसमें पहले से इतना है कि पहले अन्तर में एक प्रकार का इतना उभार था, जिसके कारण ऐसा कर सकने की प्रवृत्ति थी, परन्तु अब अन्तर में तो एक सम-अवस्था विद्यमान रहती है।

मेरी तो अब यह दशा है कि न मनोरंजन ही मुझे अच्छा लगता है, न चमत्कार ही भाते हैं, न उजाड़ की कथा भाती है, न वीराने की बात अच्छी लगती है और सच तो यह है कि मनोरंजन या इन सब बातों का मुझ पर असर ही नहीं पड़ता है, किन्तु पता नहीं अन्तर की कुरेदना किसकी

लगी रहती है, जो जोंक की तरह चैन नहीं आने देती है और सच तो यह है कि चैन मुझे भाता भी नहीं है। हालत मानों Nature से मिल-जुल गई है।

अब कुछ ऐसी दशा है कि अब तो आत्मिक दशाओं को देखते हुए भी तथा भीतर-बाहर, सब कुछ देखते हुए भी अनदेखती सी दशा रहती है। क्या मेरे 'बाबूजी'! मैं अपने 'मालिक' को प्राप्त कर लूँगी? मैं नहीं जानती कि वह मुझे मिलेगा या नहीं। न जाने क्यों अपने चलने के मैदान का भी मुझे एहसास नहीं होता, वरन् कभी-कभी तो मुझे यह भय होने लगता है कि मेरी चाल तो कहीं नहीं रुक गई है? किन्तु ऐसा सम्भव नहीं हो सकता, क्योंकि 'मालिक' मेरा अपना है, उसी का सहारा व भरोसा है, अपने बल का कुछ है नहीं। चाल में थकान अवश्य बीच-बीच में कभी आ जाती है, जो कुछ प्रार्थना से पूरी या 'आप' के लिखने से दूर हो जाती है।

मैं तो एक बिल्कुल साधारण सी गृहस्थ बालिका की ही भाँति हूँ, जिसे आध्यात्मिक बातों या ईश्वर-विषय बातों की जानकारी ही नहीं है, मानो सब कुछ भूलकर भी एक बेहोश सा होश मेरे पीछे लगा रहता है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती है। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-686

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 27.8.58

कृपा-पत्र 'आप' का कल शाम को पूज्य मास्टर साहब ने पढ़कर सुनाया। सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। वास्तव में आप के पत्र की एक-एक पंक्ति सीखने योग्य है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो कुछ यह दशा है कि मैं अपनी दशा से चिमट भी नहीं पाती हूँ,क्यूँ? अब अपने अंतर में पैठे रह सकने की भी गम्य मुझमें नहीं है। एक कुछ यह बात देख रही हूँ कि कोई भी काम अब मानों मेरी आदत में नहीं रहा। जैसे पूजा या ध्यान करना तक भी बस, जब जैसा मौका होता है, वैसा ही कर लेती हूँ और यह ख्याल तक कभी नहीं आता कि यह किया या क्या करती थी, सो नहीं किया। ऐसे कोई विचार तक नहीं आ पाते हैं। मेरी तो यह दशा है कि कर्म में, चाहे दुनिया के हों, या आत्मिक, मेरे में मानों कोई अब पाबन्दी नहीं रह गई है। Right और Wrong की मुझे अब कोई तमीज़ नहीं रह गई है। मेरे में सुस्ती बहुत रहती है। न जाने मेरी क्या दशा है।

मुझे कुछ ऐसा लगता है कि जहाँ पर मेरी ठहरने की तबियत भी कभी चाहती है, तो एक कोई चीज़ मुझे ठहरने नहीं देती और मुझे कुछ याद पड़ता है कि आपने B1 पर जब मैं थी, तो कहा था कि मैंने ऐसा Vibration पैदा कर दिया है, जो कि तुम्हें ठहरने नहीं देगा। क्या उसका ही यह असर कुछ चला आता है? तबियत में थकान भी आती है, तो भी अंतर की तबियत में मानों कोई थकान को ठहरने नहीं देता है, किन्तु तेज़ी भी कभी आने नहीं पाती। सतह से ऊपर कभी

लहर उठने नहीं पाती है। न जाने क्यों मुझे अक्सर एक झुँझल सी अपने ऊपर आती है या वैसे भी रह-रह कर आ जाती है, मानों मैं बिल्कुल खाली बैठी हूँ, कुछ काम ही नहीं करती।

मुझे कुछ ऐसा लगता है कि आपके Change के Work में कण-कण का आध्यात्मिक Energy से भर जाने का काम क़रीब क़रीब ख़तम हो चुका है और Destruction के Symptoms भी पूरे मर चुके हैं, परन्तु अभी इतनी सी बात है कि काम के ऊपर धुँधलापन सा या कोहरा सा छाया है, जो मुझे विश्वास है, हम सब 'आप' के बालक-बालिकाओं के लिए शुभ है, इसलिये कि 'आप' के संसार में रहते रहने का यह हमारे लिये सन्देश व सहारा है।

एक बात कुछ यह देखती हूँ कि अव्वल तो मुझे गहरी नींद बहुत कम ही आती है। सब तो कुछ नहीं मालूम पड़ता वरन् गहरी नींद से सोने पर, उठने पर ऐसा लगता है कि मानों मैं अपने से निकल आई और सोने का या ख़ुमारी का तो नाम तक नहीं रहता है। इसी तरह से समझ लें कि जैसे मुझे आँखें बन्द करने या खोलने में एक समान ही रहता है। न अन्धेरे की प्रतीत बन्द करने में और न उजाले की प्रतीत खोलने में होती है। विचारों का ताँता की भी कुछ ऐसी बेपरवाही हालत, कहने को कह लीजिए कि मानों सोते हुए आदमी को मच्छड़ काटता है तो वह खुजलाता भी जाता है, किन्तु उसकी नींद उससे नहीं टूटती है। बस मेरे में बेहोशी में भी एक होश या होश में बेहोशी या ज़िन्दगी कुछ बाक़ी है, तो इतनी ही नहीं तो मैं तो एक साधारण सी छोटी बालिका की भाँति ही हूँ।

परसों अचानक बैठे बैठे लगा कि मानों दिमाग़ का कोई पर्त्त सा उचल गया, तबसे जो बराबर सिर में दर्द रहता था, वह बहुत ही धीमा पड़ गया। पहले जो मैंने लिखा था कि हृदय में व पीठ में ऐसा लगता है कि सुइयाँ सी चुभने लगती है, परन्तु इधर भी कभी-कभी ऐसा बहुत लगने लगता है। पहले ज़ोर था, परन्तु अब ऐसा समझ लीजिये कि ऐसा लगता है कि जैसे कुल शरीर में हो, पीठ में व हृदय में कुछ अधिक मानों हल्का सा पिपरमिन्ट छू गया हो। ऐसी बात कण-कण में से निकलती मालूम होती है या यों कह लीजिये कि अब कण-कण में से जो प्रकाश सा छनता था, उसकी जगह अब इस चीज़ ने ले ली है। इधर कुछ समय से दाहिने हाथ के अँगूठे की नोंक में न जानेक्यों कुछ Sensation सा बना रहता है और उसे चुटकी काटने में कुछ अच्छा लगता है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती हैं। केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपाकांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-687

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 3.9.58

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। आशा है, आप की तबियत ठीक होगी। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो यह दशा है कि यदि कोई कहे कि अपने मन की करती है या ज़िद्द कहे, किन्तु

मुझे पता ही नहीं लगता कि मन की करती हूँ या बेमन की। अब तो सदैव एक बेकैफ़ी सी कैफ़ियत बनी रहती है। अब तो पूजा में या वैसे भी माना कुछ अच्छा लगे तो भी यह पता ही नहीं लगता कि किसे अच्छा लग रहा है।

मेरी तो यह दशा है कि जान में या अनजान में, सुधि में या बेसुधि में जब ख़्याल आता है तो यही दशा पाती हूँ कि-"बैठे सूते पड़े उतान, कहैं कबीर हम वही ठिकान"। किन्तु फिर भी मेरी बागडोर तो सदैव किसी के द्वारा खिंची सी रहती है, जो मुझे आपे में रहने को मजबूर रखती है, किन्तु ख़्याल अक्सी तौर पर जाने कहाँ रहता है, यह नहीं पता है और इस पते का भी पता तब लगता है, जबकि अचानक किसी से टकरा जाती हूँ, या एकदम से कभी पैर में या कहीं ठेस लग जाती है। लगता है कि जो दिमाग पर या तबियत में एक बेहोशी व बेलैसी का पर्दा सा पड़ा था, वह अचानक साफ़ हो गया। यह सब न जाने मेरा क्या हाल हो गया है, जो मुझे अब पते का भी पता नहीं लगने देता है और कभी देखती हूँ कि जब ख़्याल का भी ख़्याल आता है, तो ऐसा पता लगता है कि मानों बहका सा फिर रहा हो।

इधर दो-एक दिन से बायें अँगूठे की पास वाली उँगली भीतर मानों खुली सी या Fresh सी हो गई है। तबसे अब रेंगन भी नहीं मालूम पड़ती है। मेरी तो तवज़्जोह रखने की शक्ति ही अब समाप्त हो गई है। किसी को पूजा करवाती हूं, तो भी मानो तवज़्जोह मेरे पास नहीं होती, बल्कि तब जाने क्या होता होगा, यह मैं जान नहीं पाती हूँ। अब तो न जाने क्यों पूजा में भी कुछ अच्छा लगता किसे है या किसे अच्छा लग रहा है। यहाँ तक कि अच्छा लग भी रहा है या नहीं। न जाने क्यों अब मुझे अन्दर की कैफ़ियत का तो पता नहीं, किन्तु बाहरी तबियत बिल्कुल सादा रहती है। अब तबियत में आदत की पाबन्दी नहीं रह गई है, बल्कि सब कुछ साधारणत: हो गया है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आप की ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-688

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 22.9.58

आशा है 'आप' आराम से पहुँच गये होंगे। पूज्य दद्दा से आपके समाचार मिले। सुनकर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, इधर कई दिनों से माथे से ऊपर, जहाँ से माँग शुरू होती है, वहाँ से तीन अंगुल ऊपर, बाईं ओर मांग के बिल्कुल लगे में, कुल हड्डी में, कई दिन तो ऐसा लगता रहा, जैसे मानों जब फोड़ा फूटने को होता है, वैसा कुछ होता रहा। हल्का, मीठा सा दर्द भी होता था, परन्तु कल से वहाँ मानों सूराख़ ही नहीं वरन् मानों पूरी हड्डी खुलकर फैल गया है। कल से दशा बिल्कुल खुली सी लगती है। मैंने आप से, जब मैं वहाँ थी, तब कहा था कि Q1 की सैर लगता है, समाप्त हो गई है, तब से भीतर कुछ होता भी रहता था जिससे गति

बिल्कुल रुकने का भी एहसास नहीं होता था, किन्तु हाथ-पैर फैलाने को भी जैसे स्थान नहीं मिलता था, इससे कुछ घुटन सी भी रहती थी, किन्तु कल से लगता है कि 'मालिक' की कृपा से सब कुछ साफ़ हो गया है, खुल गया है। हाथ-पैर अपनी जगह पर फैल गये हैं। चैन की साँस आने लगी है, किन्तु संतोष की नहीं। मुझे अब न जाने क्यों अन्तर में या आत्मा तक में मानों कुछ रेंगन सी बनी रहती है।

भाई, अब तो न जाने क्या बात है कि दशा भी बेदशा हो गई है। गति भी अगति हो गई है। अंतर-बाहर, सब Senses तथा शरीर का कण-कण कुल तक मानों नीरव महाप्रलय का ही स्वरूप हो गया है। बस पता नहीं, Heart में एक प्रकार का Vibration सा आता रहता है, जो मेरी जान या अनजान में आता ही रहता है। इस नीरव महाप्रलय में कभी-कभी ऐसा अचानक हो जाता है, मानों दाहिने पैर के अँगूठे से लेकर सिर के बीचोबीच, जहाँ चोटी रखी जाती है, तक एक प्रकार के तार सी झुनझुनाहट एक सेकण्ड में होती हुई निकल जाती है। इसका फिर असर और कहीं नहीं रहता, किन्तु कुल पीठ के रीढ़ में व रीढ़ के बाई ओर की कुल पीठ में काफी असर रहता है।

कुछ यह दशा है कि यदि उसे अब अव्यक्त स्थिति भी कह दूँ, तो उसकी असलियत जाती रहती है। इसलिये अब चुप बैठी 'उसके' नज़ारे को देखती हूँ, जिसमें न हाँ कहने की गम्य है और न नहीं है कहने का गम्य है। जैसा है, वैसा है, 'मालिक' का है, क्योंकि मैं तो अब उससे लिपट तक नहीं पाती हूँ। मैं तो केवल अब दृष्टा मात्र ही हूँ। नहीं, बल्कि दृष्टा भी नही, केवल साक्षी मात्र हूँ दशा की। बस यह दशा है अब तो कि स्थिति तो मेरी अब नहीं है, किन्तु स्थान या मैदान तो सब मेरा ही फैला हुआ है। मेरा कुल शरीर ही नहीं, वरन् कण-कण तक बस मानों नीरव सपाट मैदान हो गया है, जिसमें 'मालिक' की दिव्य विभूति विस्तृत है, किन्तु मेरी तो यह दशा है कि मैं तो बेहाश ही हूँ। मेरी अपनी न कोई दशा है, न मैदान। या यों कह लीजिये कि मैं किसी की नहीं हूँ।

न जाने अब क्या हो गया है कि मानों मेरा कण-कण विराट् हो गया है, जिसका पता नहीं मिलता। किन्तु अब मेरा पता मुझे हमेशा रहता है क्योंकि मै किसी की नहीं हूँ और न मैं स्वयं अपनी ही। पता नहीं मेरी क्या दशा है, 'मालिक' ही जानें। अब दशा यह कोई ऐसी है, कि मानों 'मालिक' ने मुझे अपना कोई राज़ खोला है, जो मैं केवल कहने में असमर्थ हूँ कि क्या है। दशा क्या है, मानों 'मालिक' ने मेरे सन्मुख अपना कोई राज़ खोला है और खोला ही क्या है, बल्कि अपने राज़ को मेरे कण-कण में फैला दिया है, और फिर भी शायद मुझे अपना बना लेने के लिये अपने पास ही रखा है। अब तो सर्वत्र कण कण में 'उसका' ही राज़ खुला फैला पड़ा है, स्वरूप बन गया है, परन्तु मैं तो अब चिपट सकने की मेरे में क्षमता ही नहीं रही। खैर, न सही, मैं तो उसके राज़ (भेद) की साक्षी मात्र हूँ, मेरा अपना कुछ भी नहीं है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इतिः-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-689

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर

सादर प्रणाम! — 4.10.58

आप की साँस की तकलीफ़ आशा है, ईश्वर की कृपा से अब ठीक होगी। ईश्वर से प्रार्थना है, 'आप' हमेशा स्वस्थ रहें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो जाने क्या दशा है कि लगता है कि मेरे हर कण-कण का हर रोम रोम का Connection मेरे से टूटकर असल भण्डार से हो गया है। अब तो भीतर-बाहर, कण-कण में अपने रोम-रोम से मानों ईश्वरीय प्रकाश निकल रहा है।

भाई, अब तो कुछ यह दशा है कि अब तक तो अपना यह हाल था कि स्वयं अपना हाथ उठाये हुए हूँ, किन्तु यह बिल्कुल भी पता नहीं, ज़रा सा भी एहसास नहीं कि यह किसका हाथ उठा है और कौन उठाये हुए हैं। कोई आवाज़ देता है, तो सुनती हूँ,परन्तु यह पता नहीं कि कौन बोल रहा है, परन्तु अब तो उससे भी अजीब दशा यह है कि 'मालिक' सामने बैठा है, 'उसे' छू रही हूँ, परन्तु 'मालिक' के पैर का भी एहसास नहीं होता। 'आप' से बोल रही हूँ, सवाल-जबाब कर रही हूँ, परन्तु आवाज़ तो न अपनी, न आप की ही मेरे कानों में जाती है और आवाज़ क्या, 'आप' सामने बैठे हुए भी तो अब मुझे दिखाई नहीं देते। न जाने क्या, यह 'मालिक' का कोई राज़ है, या मेरी दशा है। अब मैं तो कुछ नहीं जानती हूँ, 'आप' ही जानें।

अब तक तो 'मालिक' से इतना अपनत्व था, कि 'उसके' बिना जी नहीं सकती थी, किन्तु अब अचानक मुझे छोड़कर वह न जाने कहाँ और क्यों चला गया। कहाँ तो भीतर-बाहर, सर्वत्र उससे ही प्रकाश फैलता था, और उसी में मैं रहती थी और अब मानों वह, सब उसकी माया थी और अब उसने अपनी माया को एकदम समेट लिया है। अब मैं कहाँ हूँ, क्या कर रही हूँ, या करूँ, कुछ पता नहीं। परन्तु मेरा यह विश्वास मुझे सहारा लकड़ी की तरह दे रहा है कि उसे मेरी ख़बर ज़रूर है। 'वह' मायाबी है। 'उसने' अपनी माया समेट ली तो क्या हुआ। यहीं कहीं कुल भीतर-बाहर, शरीर के रोम-रोम तक से मानों किसी ने अपना माया जाल समेट लिया है। न जाने क्यों, अब ऐसा लगता है कि कुल शरीर के अन्दर का एक पूरा पर्त्त का पर्त्त ही किसी ने उतार कर रख दिया है।

'मालिक' ने इधर तो न जाने कितने खेल मेरे संग खेले। कभी तो अपनी अलौकिक दिव्यता देकर मुझे लुभाया, कभी अपने विराट् रूप के साथ मेरे भी रोम-रोम को विराट् बना दिया और अब मुझे ऐसा लगता है कि वह सब कुछ केवल एक माया जाल की तरह उन्होंने समेट लिया है। शरीर के भीतर का कुल शरीर का पर्त्त का पर्त्त उचाल कर फेंक दिया है और शरीर का ही क्या, कुल प्रकृति का पर्त्त का पर्त्त उचलकर साफ़ हो गया है। अब तो न प्रकृति कुछ है, न परमात्मा। ऐसा लगता है कि मानों सब कुछ एक वहम के सदृश 'मालिक' ने दिखाकर अपना सब जाल समेट लिया है।

अब मैं तो बिल्कुल एक अज्ञान, अबोध बालक की भाँति चुपचाप अकेली एक मैदान सपाट के मध्य खड़ी हूँ। कोई मेरे साथ नहीं है। बस इतना विश्वास हृदय के किसी कोने में दृढ़ है कि 'उसे' मेरी ख़बर है। यद्यपि यह विश्वास भी मेरे हाथ में नहीं है, बल्कि 'मालिक' ने अपनी रौशनी देने का

यह तरिया मेरे अन्दर कहीं छोड़ दिया है, जिससे मैं राह में लगी रहूँ, नहीं तो मैं बिल्कुल अज्ञान बालिका कहीं भी भटक जाऊँ। न जानें क्यों 'उसने' पहले अपना राज मेरे में खोलकर अब सब समेट लिया है। अपनी दिव्यता, महानता एवं विलक्षणता सब माया जाल को मेरी निगाह के सामने से समेटकर मुझे अकेली एक सपाट और अथाह मैदान में छोड़ दिया है। खैर, मुझे तो चलना है, पता नहीं कहाँ और क्यों। बस इतना मालूम है कि मैदान में खड़ा किया है तो इसे पार करना ही है।

मुझे तो अब यह भी पता नहीं कि यह सब दशा लिखती जा रही हूँ या एक कहानी कहती जा रही हूँ। मेरे 'मालिक', 'आप' ने अपने को मेरे हृदय में से भी निकाल लिया एवं मन में से भी समेट लिया एवं विचारों में से भी मथ लिया है, तो मथ लें, किन्तु मैं तो आप का फिर भी शुक्रिया ही अदा करती हूँ कि 'आप' ने अपने को मुझमें से तो समेट लिया, किन्तु मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मुझे 'अपने' में से 'आप' नहीं समेट पाये और शायद कभी 'आप' समेट पायेंगे भी नहीं। बस यह विश्वास जो अब मेरे में नहीं, बल्कि 'आप' की ओर से मुझे प्रकाश के सदृश पथ दिखा रहा है। मेरी हालत तो दो-तीन महीने के शिशु की तरह है, जिसे कि अभी अपनी माता की भी पहिचान नहीं हो पाई है। मेरी आँखों के आगे से तो मानों सारी प्रकृति का मायाजाल ही एकदम से किसी ने समेट लिया है। परन्तु परवाह नहीं कि परमात्मा को ऊपर से ही चढ़कर जाऊँ। मुझे तो अपने प्रियतम 'मालिक' तक पहुँचना है। 'वह' अपना खेल समेट ले तो मुझे क्या करना है। मैं तो एक अचम्भे में हूँ कि यह सब क्या है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-690

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 13.10.58

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ ऐसी दशा है कि सब रंग मिल-मिलाकर जब एक रंग नहीं, बेरंग हो जावें एवं सब दशा मिलाकर बेदशा हो जावे, उसके बाद जिस स्थान या मैदान को पैरना होता है, वही मैदान सामने है और उसमें भी पैराव शुरू हो गया है, नहीं, बल्कि उसमें काफी चल आई हूँ, बस वही दशा चल रही है। ऐसा देखती हूँ कि बस जितना समय मैदान के किनारे आने के बीच में लगता है, उतना तो लगता है, किन्तु उसमें फाँदते ही मानो हाथ पैर इतने विराट् हो जाते हैं कि फिर स्वयं को ही इसका यानी गति का अन्दाज नहीं लग पाता कि गोया मैदान को मैंने पैरकर पार किया है या यह स्वत: ही पार हो गया है। मुझे तो लगता है, यह ठीक लगता है कि जिस वेग और जिस गति (चाल) से हनुमानजी ने समुद्र को लाँघा था और लंका में आग लगाई थी, वही दशा मनुष्य की हो जाती है, किन्तु यह अवश्य है कि माया की शक्ति की यहाँ समाप्त हो जाती है, उसी के साथ यों कहना चाहिये कि अपने में Will Power बिल्कुल रही नहीं जाती है और न अन्तर में

जोर न दृढ़ता, बस अब ऐसा मान लिया है कि जब जो 'उसकी' तरफ से मिल जाता है, फिर समय के बाद 'उन्हीं' के पास लौट जाता है। मुझे तो बस ऐसा लगता है कि शक्ति का तो कोई अस्तित्व ही नहीं है और न उसकी कोई स्थिति है। इसलिये उसमें स्थाईत्व भी नहीं है और शक्ति का ही क्या प्रेम भक्ति, लगन एवं विश्वास, मैं और तू, इन सबका कोई अस्तित्व नहीं है और न स्थिति है, इसलिये स्थाईत्व नहीं है। सब कुछ एक माया या भ्रम या स्वप्न के सदृश आता और चला जाता है, जैसे माया सदैव आनी-जानी कही गई है। बस यही दशा मेरी हो गई है।

अब तो कुछ यह अचम्भा सा हो जाता है कि अपना हाथ सिर के नीचे रखे हुए हूँ, परन्तु यह जानते हुए भी यह पता ही नहीं चलता, एक क्षण को भी यह अन्दाज या गुमान तक नहीं आता कि यह हाथ रखे हुए हूँ या नहीं। सच तो यह है कि अब तो यह दशा है कि मेरा शरीर मुझे छूता ही नहीं और केवल शरीर ही क्या अब तो सच तो यह है कि मन, बुद्धि, विचार एवं आत्मा भी मुझमें है ही नहीं तो स्पर्श क्या हो। हृदय पर ध्यान करना चाहिये, यह सब से कहती हूँ, परन्तु मेरा तो हृदय ही नहीं है, तो मैं ध्यान क्या करूँ और क्यों करूँ, यह भी समझ में नहीं आता। सबसे सब कुछ करने को कहती हूँ, परन्तु स्वयं अपनी समझ में कुछ आती नहीं। अब तो न जाने क्या दशा है कि कभी उठते-बैठते, सोते-जागते, कोई भी कैसा भी विचार ही नहीं आता है। भीतर-बाहर, कहीं भी, कभी भी कोई विचार टकराता या उठता ही नहीं है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आप की ही स्नेह सिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-691

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 23.10.58

कृपा-पत्र आप का कई दिनों से नहीं आ रहा है, सो क्या बात है। कृपया अपनी तबियत का हाल शीघ्र दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ यह दशा है कि मेरा हृदय तो केवल ब्रह्म-विद्या की स्क्रीन Plate की तरह है, जिस पर 'मालिक' आत्मिक दशायें रूपी चित्र स्थित किया करता है। फिर दिखाकर समेट लिया और वह (हृदय) पुन: ख़ाली मैदान का मैदान ही रह जाता है। अब तो ऐसी दशा है कि या तो मैं कायर हो गई हूँ या यह कह लीजिये, सोते, जागते, उठते, बैठते, कैसा भी कोई विचार ही कभी नहीं टकराता है। भीतर-बाहर, नस-नस व मेरे रोम-रोम में मानों एक शून्य सी स्थिति बिछी हुई है, या यों कह लीजिये कि ऐसी दशा पर तकिया धरे मैं निश्चल बैठी हुई हूँ। अब तो अजीब दशा है कि न तो चैन ही में हूँ और न बेचैन ही रहती हूँ। हाँ, कोई तकलीफ़ नहीं है, तो आराम भी नहीं कहा जा सकता है। मेरा तो अब न कहीं ठीहा है, न ठिकाना, न कोई पता है न बेपता। मुझे तो अब यह लगा कि यह सब प्रेम, भक्ति, लगन एवं विश्वास तथा मैं व तू इन सबका कोई अस्तित्व ही नहीं। सब कुछ सुनने पर अब मुझे एक स्वप्नवत् लगता है। मानों सब कुछ माया

या भ्रम या स्वप्नवत् आता है और चला जाता है। मैं न जाने क्यों अब जब सबकी बातें सुनती हूँ तो मुझे ऐसा ही लगता है। बस एक कसक तब भी चैन एक क्षण को भी मुझे नहीं लेने देती। अब तो दशा कोई भी आती है, तो उससे चिपटती नहीं, वरन् मानो देखती रह जाती हूँ, मानों दूसरे की चीज़ देख रही हूँ। मेरी दशा तो आजकल के साधु-सन्यासी की भाँति हो गई है, नहीं, बल्कि उनमें विद्वता तो होती है और मेरे पास तो वह भी नहीं है। मेरी तो यह दशा है कि मानों कभी कोई आध्यात्मिक इच्छा पैदा ही नहीं हुई है और यह बिल्कुल सत्य दशा है। आत्मिक-शब्द दशा के लिये अब मैं केवल लिखने के लिये लिख देती हूँ, यद्यपि अब दशा का मानों आत्मा से कभी सम्बन्ध ही नहीं रहा और इसी तरह आंतरिक-दृष्टि के लिये चाहे औरों को मैं बताऊँ, किन्तु मेरा हाल बेहाल है। मैं किसी से भी कुछ कहने योग्य नहीं हूँ।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-692

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 17.11.58

आशा है, मेरा पत्र मिला होगा। मुझे ऐसा लगता है कि ईश्वर ने मेरी बीमारी के द्वारा ही मेरी अन्तर की सफ़ाई कर दी है, जिससे मेरा हृदय 'मालिक' को अपनी ओर खींचने में अधिक सहायक हो सके। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो न जाने क्या दशा है कि मुझे तो यह भी अब कभी अनुभव नहीं होता कि मैं मिशन की मेम्बर हूँ। ऐसे ही सबसे चाहे 'आप' के बारे में कहूँ, परन्तु मुझे लगता है कि मेरा मानों आपके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं तो जाने आर्य समाजी हो गई हूँ, या क्या, कि भगवान् या ईश्वर, यह सब कुछ नहीं है। मुझे कभी एक क्षण को भी एहसास नहीं होता। मेरा तो यह हाल हुआ कि जिस डाल पर बैठी थी, पता नहीं, वह डाल ही काट दी। भजन अब गाती हूँ, पूजा भी करती हूँ और करवाती हूँ, परन्तु मुझ पर कुछ असर नहीं पड़ता है। इससे तो अच्छी तब थी, जबकि फड़फड़ाने का कोई इलाज तो अपने पास था, परन्तु अब कोई औषधि काम नहीं देती, 'मालिक' ही जाने।

अब तो कुछ ऐसी दशा है कि लगता है कि भीतर-बाहर ऐसा धुँआ सा फैला हुआ है, जो न काला है, न सफ़ेद, न भारी है, न हल्का। अब तो भीतर-बाहर, कुल मानों कुल उदासीनता का ही स्वरूप हो गया है। शरीर के रोम-रोम में एक समान उदासीन सी दशा व्याप्त है, जो न हिलती है, न डुलती है, न चल है, न अचल है, जिसमें न स्थिरता है और न अस्थिरता ही होती है कभी। लगता है, न जाने क्यों कुल शरीर, रोम-रोम तक Transparent हो गया है। जिसमें अब स्थूलता तो है ही नहीं, किन्तु सूक्ष्मता का भी पता नहीं है। दशा के लिये तो अब सूक्ष्मता शब्द का प्रयोग तक अच्छा नहीं मालूम पड़ता है। अब तो दशा ही नहीं, बल्कि कुल कण कण तक मेरा जो है,

सो है। कस्तूरी तो जो है, सो है। बस इसके अतिरिक्त समझने की कुछ तबियत नहीं होती है और न समझ ही कुछ काम देती है और समझ कर करूँगी भी क्या। जो जाने, सो 'मालिक' जाने। मेरा तो सम्बन्ध ही कुछ ऐसा विच्छेद हुआ है कि न दीन से रहा, न दुनिया से, न भगवान से, न इन्सान से, किन्तु न जाने यह कुछ हो गया है कि वैसे तो प्रत्येक से मेरा ऐसा नाता है, जैसा सगे सम्बन्धियों से किन्तु पूजा में उन्नति करने वालों से तो प्राणों से भी प्यारे का स्व-सम्पर्क हो जाता है, परन्तु मेरा सम्बन्ध किसी से नहीं होता। नहीं, बल्कि कुछ ऐसी दशा है कि मेरा तो सम्बन्ध न किसी से कभी होता है न विच्छेद होता है, बल्कि यों कहिये कि सम्बन्ध का सम्बन्ध ही मुझसे टूट गया है, नहीं बल्कि कभी था ही नहीं। 'मालिक' या कोई, मैं तो अब सबके लिये लाचार हूँ।

मेरे अंतर में जब कोई चीज, कोई तथ्य ही नहीं रह गया है, तो मैं भला कहाँ से लाऊँ। नहीं, बल्कि मुझे सबकी एक ही, ऐसी ही दशा हो गई लगती है और भाई, सम्बन्ध-विच्छेद क्या होगा, जबकि कभी हुआ ही नहीं। अब एक यह न जाने क्या बात हो गई है कि दशा को लिखने में या तो उसमें In Touch हो जाती हूँ, या क्या, सांस भारी हो जाती है और तबियत लिखना छोड़ने को फड़फड़ा उठती है। साँस फूलने भी लगती है। चुप बैठने को तबियत लाचार हो जाती है यही कारण है 'मालिक' कि अब दशा को डायरी में या पत्र में लिखने से टालती रहती हूँ। इसलिये पत्र लिखने में देर हो जाती है और दो-एक बात भूल भी जाती हूँ। मानों शरीर के कण-कण तक में आवरण साफ़ हो गया है। ठोसता या सूक्ष्मता ऐसी भी अब कोई दशा नहीं रह गई है। यह सब 'आप' स्वयं देख लीजियेगा। मेरी समझ में तो जो आया, या जो बन पड़ा वह लिख दिया। बाकी 'आप' जानें, आप का काम जानें।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। केसर ने भी आप को पत्र लिखा है, उसे भी देख लीजियेगा। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-693

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 26.11.58

मेरा पत्र मिला होगा। पूज्य मास्टर साहब जी भी वहाँ पहुँच गये होंगे। आशा है, आप स्वस्थ्य होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो ऐसी दशा है कि मानों न मुझे ईश्वर से कुछ लेना है और न देना है, इसलिये पूजा या संयम-नियम का ही न अब कोई झगड़ा है, न फ़साद। एक अब यह न जाने क्या बात हो गई है कि पहले हर होने वाली घटना मुझे पता लग जाती थी, या जिससे मैं कहती थी, अधिकतर हो जाता था, किन्तु अब तो जैसे वाणी में मानों कोई प्रभाव या विशेषता नहीं रह गई है और ऐसे ही मुझे तो अब न जाने क्या हो गया है कि उधर दिनेश का आप के घर गिरने का एवं ताऊजी के उस दिन के Accident का केसर को पता चल गया किन्तु मैं तो एक मूढ़ नासमझ की तरह बैठी सब काम वाम करती रही, मुझे कुछ पता ही नहीं चला। सच तो यह है कि मैं तो बिल्कुल साधारण मनुष्य की भाँति हूँ, बल्कि समझ उससे भी कम है।

मेरी तो कुछ ऐसी दशा है कि मुझे तो अब न शान्ति है और न अशान्ति है। दुनिया शान्ति के लिये उपाय करती है, परन्तु मुझमें पता नहीं शान्ति है या नहीं, न मेरी इच्छा ही किसी प्रकार की रह गई है। न अब भजन गाने की आवाज़ अंतस तक पहुँचती है और न पूजा करने या करवाने में भी मैं अंतस तक पहुँच पाती हूँ। मैं तो स्वयं ही अपने से भिन्न हो गई हूँ। शरीर में लगता है अब कोई दूसरी कस्तूरी Work कर रही है, जिसे न मैं जानती हूँ, न कुछ परिचय है। ऐसे ही 'आप' के प्रति मेरी दशा हो गई है, मानों 'आप' का नाम लेते हुए भी 'आप' से कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। मेरा तो कहीं न ठिकाना न ठौर है। मेरा तो कहीं क़याम ही नहीं है। 'आप' में रहते हुए भी, 'आप' की रटना लगाते रहने पर भी, मेरा आप से कोई सम्बन्ध नहीं। मैं तो बिल्कुल साधारण गृहस्थ बालिका हूँ। अब तो मानों न कोई अच्छे संस्कार रह गये हैं और न बुरे। अब तो न कोई अपनी चीज़ है, न बिरानी। कोई अपना नहीं है, इसलिये अब कोई पराया भी नहीं है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-694

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 29.11.58

आशा है, मेरा पत्र मिला होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक है। आशा है वहां आप सब लोग भी कुशल पूर्वक होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो यह दशा है कि न हैर है, न हैरानी, न खोज है, न ख़बर और न शान्ति, न अशान्ति। न स्थिरता की अनुभूति होती है और न अस्थिरता ही कभी होती है। बस अन्तर में एक प्रकार का कुछ ऐसा उचाटपन रहता है, जो न बेचैनी का एहसास होने देता है और न पूर्ण शान्ति ही को होने देता है। अन्तर की अजीब दशा है, न ख़ामोश है और न लहर ही उठती है। न सम है और न चंचल है। सारे शब्द मेरी दशा के लिये निरर्थक हो गये हैं, फिर मैं क्या हूँ और सच तो यह है कि मेरी कोई अवस्था नहीं है। सब कुछ एक सा बँधा जैसे का तैसा चलता रहता है, जिसमें अब न कोई नियम है, न संयम और न बन्धन ही है। इधर तीन-चार दिन से बीच सिर में माँग के बिल्कुल लगे-लगे में दाहिनी ओर करीब तीन अंगुल स्थान में बस ऐसा लगता है कि मानों कोई जानवर रेंग रहा हो। अक्सर तो रेंगन इतनी तेज़ मालूम पड़ती है कि बरबस अपना हाथ सिर पर चला जाता है, परन्तु कभी कभी तो ऐसी दशा रहती है कि न मालूम सोने में रेंगन हो रही है, न मालूम जागने में और न मालूम शरीर में हो रही है और न मालूम दीवार में।

अब तो यह दशा है शरीर के भीतर, बाहर, रोम-रोम व कण-कण मानों सब कुछ वास्तव में ही जड़ हो गया है, परन्तु चेतना व काम सब कैसे होते रहते हैं और कहाँ से चेतना आती है, यह मुझे नहीं मालूम है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-695

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 4.12.58

आज पूज्य मास्टर साहब जी से आप की तबियत का हाल सुनकर सन्तोष हुआ। 'मालिक' की कृपा से मेरी जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, मेरी दशा तो यह है कि जिस जगह जन्म-जन्मान्तरों के व रोज़ाना के संस्कार एकत्रित होते हैं, मुझे लगता है कि मेरे अन्दर तो वह स्थान ही नहीं रह गया है। सब बाहर-भीतर, कुल शरीर के आर-पार तक Transparent हो गया है। मैं देखती हूँ कि Moderation की दशा अब मेरे हर काम को अपने में खींचे रहती है। यद्यपि आत्मिक-दशा में मुझसे वह पिछड़ चुकी है, परन्तु बाह्य बातों या कर्मों में उसने अपना अधिकार कर लिया है। मेरी तो श्रद्धा एवं विश्वास तक की डोरी या ज्योति न जानें कहाँ विलीन हो गई है। अब तो बिल्कुल खाली कस्तूरी फिरती रहती है। इसीलिये, अब न तो दृढ़ता, जो इतनी मेरे में थी, जरूरत से भी ज्यादा, वह भी न जाने कहाँ विलीन हो गई। हाँ, कमज़ोरी भी नहीं है। मैंने जो लिखा था कि मर कर भी मैंने ज़िन्दगी पाई है, वह जिन्दगी जाने कहाँ विलीन हो गई है। अब तो ज़िन्दगी का शब्द ही मेरे लिये बेकार है और पता नहीं, मौत भी कहीं है या नहीं, यह भी बेकार है।

मेरी तो यह दशा है कि बिना सम्बन्ध के सारे सम्बन्धों का पसारा फैला हुआ है। मैं नहीं जानती कि मैं अकेली चुपचाप कहाँ चली जा रही हूँ। राह दिखाकर, उस पर ले चलने वाला, पता नहीं, अब क्यों ख़ामोश है? मेरे तो अंतर व बाहर के सारे पट खुले पड़े हैं। मैं तो राह देखती अब भी हैरत में चली जा रही हूँ। कहीं तो 'उसका' पता या ठिकाना मिलेगा ही। 'वह' नहीं बोलता, तो न बोले। 'वह' अब हाथ नहीं पकड़ता, तो न पकड़े। जैसी 'उसकी' मर्ज़ी परन्तु मैं उसके बिना कैसे रह सकती हूँ? मेरी आँखें 'उसका' दिव्य प्रकाश पी चुकी है, जो मुझे वीरान जगह, उजाड़ देश में अंधा होते हुए भी पार करवा कर मुझे 'उस' तक पहुँचा देगी।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपा कांक्षिणी
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या-696

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 9.12.58

आप का कृपा पत्र पूज्य मास्टर साहब के लिये आया। उन्हीं से आप की तबियत का हाल सुनकर हर्ष हुआ। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरा अंतर-बाहर तो एक सम-अवस्था या नहीं, बल्कि शून्य या खाली अवस्था में पड़ा रहता है या यों कहिये, यह 'उसका' स्वरूप ही हो गया है। परन्तु फिर भी तबियत में कोई ऐसी चीज़ बनी रहती है, जो चैन नहीं लेने देती अन्दर ही अन्दर कुरेद पैदा करती है। कभी-कभी तबियत

इतनी उचाट हो जाती है कि तब अगर आप की कृपा से तबियत अपने आप अन्तर की अवस्था में समा न जाये, तो फिर मेरा जीना ही दुर्लभ हो जाये। किन्तु 'मालिक' सब कुछ अपने ही आप ठीक कर लेता है। मैं तो अब यह भी नहीं जानती हूँ कि चाल रूकी हुई है या चल रही हूँ। बस यह जरूर है कि गति अखण्ड, अरूप एवं निर्विकल्प हो गई है। कल रात के करीब साढ़े नौ या दस बजे चारपाई पर लेटी, तो एकदम से माथे में बाईं ओर भौंहो के ऊपर से एकदम से हल्का सा सेंक सा लगने लगा, फिर वह बढ़ते हुए कुल माथे में फैल गया और इतने ही बीच में सिर के बिल्कुल पीछे, जहाँ से रीढ़ शुरू होती है, उसके चार अंगुल ऊपर इतनी तेज फड़कन शुरू हो गई कि मैं कह नहीं सकती। किन्तु यह सब 12-15 मिनट में होकर फिर कुछ नहीं।

कुछ न जाने ऐसी दशा है कि अक्सर मानों कोई संदेश स्वत: मुझ तक अपने आप ही अंतर में आता रहता है और कुछ जाता रहता है, किन्तु मैं कुछ भी नहीं जान पाती हूँ।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। केसर आप को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-697

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 13.1.59

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। अम्मा की तबियत अब ठीक है। मुझे भी स्वास्थ्य लाभ हो रहा है। 'आप' चिन्ता न करें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो यह दशा है कि सारी पीठ में से व सिर के चारों ओर लगता है कि धीमा धीमा सा निर्मल प्रकाश बाहर आ रहा है। अंतर का तो ऐसा मन्थन हुआ है कि शुरू से आखिर तक चले जाइये, न कोई कहीं शोर है, चूँ तक नहीं और न कहीं से कोई प्रमाण लेने वाली चीज का पता है और न अभाव डालने वाली वस्तु का निशान है। एक यह न जाने क्या बात है कि अंतर में शुरू से आख़िर तक नहीं, वरन् अंतर या वाह्य रूपी चादर पर चाहे कोई आये-जाये, उस पर कभी कोई दाग या धब्बा पड़ता ही नहीं और यही नहीं वरन् न कभी पड़ा था और न पड़ता है और न पड़ेगा। कोई धब्बा न होते हुए भी चादर का रंग सफ़ेद नहीं है। हाँ, ऐसा कह सकते हैं कि जैसा रंग, निर्मलता, पवित्रता नहीं, वरन् सरलता व नम्रता का जैसा रंग होता होगा, वही रंग अब मेरी हृदय रूपी या अंतर रूपी चादर का हो गया है और अंतर-बाहर अब मेरे लिये एक समान ही शब्द हो गये हैं।

अब तो 'मालिक' ने अपनी इस गरीब बिटिया की चादर ज्यों की त्यों ही उतार कर रख दी, यही मेरी दशा है। अब तो मैं सब टटोलकर हार गई। मेरे पास तो कहीं कोई भी वस्तु नहीं है, जिसे आपको नजर कर सकूँ। अब तो बस यही प्रार्थना है कि जो आप को नजर पड़ जाये, आप की बिटिया के पास वह सब ही 'आप' को नजर है।

मेरी तो यह दशा है कि मैं तो यह भी भूल गई हूँ कि मुझे कुछ देना चाहिये या मैं दूँ। मैं

तो 'आप' को याद रखना भी भूल गई हूँ और भला क्या दूँ। मेरा हृदय तो मानों सरलता व नम्रता का स्वरूप ही हो गया है और न जाने क्या हो गया है कि सबके आगे ऐसा झुका रहता है, मानों सबका ही ऋणी हो।

आप ने कृपा करके मुझे Point S_1 पर डाल दिया है, इसके लिये धन्यवाद कहाँ तक और कैसे दूँ।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव आपकी ही चरण सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-698

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 25.1.59

'आप' का कृपा-कार्ड, जो पूज्य मास्टर साहबजी के लिये आया, सुनकर फ़िक्र हो गई। ईश्वर से प्रार्थना है, वह शीघ्र ही आप को स्वास्थ्य लाभ पहुँचाये। 'वह' हमारी प्रार्थना अवश्य सुनेगा। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी दशा तो बहुत ही अच्छी चल रही है। चाहे मैं इससे चिपट जाऊँ, या नहीं, किन्तु मुझे उसका सेंक लगातार मिलता ही रहता है और वह मेरा ही स्वरूप होती चली जाती है। मुझे ऐसा लगता है कि मानों किसी ऐसे समुद्र में फेंकने की तैयारी हो रही है, जिसके बारे में मैं कुछ कह नहीं पाती हूँ। हाँ, उसकी अनुभूति का सेंक अवश्य मेरे साथ है। तबियत के अन्दर बस बढ़ते रहने की कुरेदन रहती है कि एक क्षण को भी सुस्ताना नहीं चाहती है। अब यह सब क्या है, आप ही देख लें।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। केसर आप को प्रणाम कहती है और कहती है 'आप' उसकी ओर भी ध्यान देते रहियेगा। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव केवल आपकी ही स्नेह सिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-699

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 3.2.59

आशा है, मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सब कुशल है। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो मेरी कुछ ऐसी दशा है कि मैं स्वयं एक विस्मृत, अनजान पहलू के सदृश हूँ। मुझमें अब न कोई रौ है, और न कोई लौ ही लगी रह गई है। लय-अवस्था तो मानों मेरे विचार से भी परे हो गई है, फिर उसमें समाने का तो प्रश्न ही कहाँ है। न कोई ज्योति है, न दीपक, मानों

सब कुछ, अंतर-बाहर, सब गुप पड़ा हुआ है। न जाने यह क्या दशा है कि विवाह-कार्य कर रही हूँ, यह पता नहीं, वरन् मुझे तो यहाँ भी अपना उत्सव ही उत्सव दिखाई पड़ रहा है। वही उमंग व वही धारा सब जगह पाती हूँ। न जाने यह क्या हालत है कि जो दास्य-भाव यानी बिल्कुल दीन सी मेरी तबियत रहती थी, अब, जब तक 'उसकी' महानता का स्मरण मन में करूँ, तब तो वैसी ही तबियत अपनी पाती हूँ, परन्तु जहाँ ज़रा बिल्कुल समान व Natural स्थिति में आती हूँ, तो न जाने क्या हो जाता है।

अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं। केसर आपको प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

सदैव ही कृपा-कांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-700

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम! — 3.3.59

कल ताऊजी व मास्टर साहबजी आराम से यहाँ पहुँच गये। उन्हीं से 'आप' का समाचार भी मालूम हुआ, सुनकर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी तो यह न जाने क्या दशा है कि लगता है कि ईश्वर का कुल Mind मेरे में समाया हुआ है और मेरी निगाह अब उससे भी परे न जाने कहाँ क्या खोज रही है। मैं बराबर यह देखती आ रही हूँ कि ज्यों कदम आगे बढ़ता है, त्यों त्यों 'उसके' निकट पहुँचती हूँ। खोज व प्यास की Degree में बजाय कुछ संतोष के बढ़ती ही पाती हूँ। इस बक़ा के अनुभव से मेरे अन्तर में यह तीव्रता है कि मैं क्या करूँ? कैसे अपने प्रियतम को पाकर चरणों में लिपट जाऊँ। मेरी तो यह दशा है कि बक़ा जीवन में घर कर गई है। अब तो बक़ा ही बक़ा है, शेष समाप्त हो गया। अब तो यह दशा है कि-"रहे न काहू काम के। मैं भरोसे अपने राम के॥" अब तो न जाने यह क्या दशा है कि न हँस सकती हूँ और न रो सकती हूँ एवं न कुछ कह सकती हूँ न सुन सकती हूँ। यही नहीं, अब तो न कुछ Imagine ही कर सकती हूँ। बस अन्तर में कुछ कुरेदना मची है, किन्तु पता नहीं क्यों अब चैन और बेचैन, भीतर और बाहर, सब कुछ एक समान ही हो गया है। मुझे तो न जाने क्या हो गया है कि एकता कभी पास फटकती नहीं और दुई से भी अछूती ही रहती हूँ। मैं किसी से एक नहीं हो पाती, दशा तक से एकता नहीं हो पाती। ऐसी दशा, अपनी दशा से भी रहती है कि जैसे स्वप्न में यदि कोई बर्रा पड़ता है, तो उसे उसकी ख़बर नहीं होती। मैं दशा आप को लिखती हूँ, कोई आनन्द भी अन्तर में रहता है, परन्तु मैं अब एक किसी से भी हो नहीं पाती हूँ। मुझे तो बस चाह है, मुझे मिलना है, आगे क़दम बढ़ते जायें, बस इतना सा ही सबक़ केवल याद है। इसके अतिरिक्त मानों कभी कुछ सीखा-पढ़ा ही नहीं है। लगता है कि कुल ब्रह्माण्डों का ब्रह्माण्ड मेरे में समाया हुआ है।

अम्मा आप को आशीर्वाद कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति:-

आपकी दीन-हीन, सर्व साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

संत कस्तूरी द्वारा लिखित पुस्तकें

1. दिव्य देश का दर्शन-सहज-मार्ग के दर्पण में - सन् 1978
2. साक्षात्कार से अन्तिम सत्य तक सन् 1988
3. कौन थे वे - प्रथम संस्करण, मार्च, 1992
   द्वितीय संस्करण, फरवरी, 1996
4. अनंत यात्रा - भाग 1 - जुलाई, 1992
5. वह सबको प्यार करता है - सन् 1994
6. अनंत यात्रा - भाग 2 - जुलाई, 1994
7. संध्या के गीत व्याख्या सहित - सन् 1995
8. अनंत यात्रा - भाग 3 - सितम्बर, 1996
9. वह दिव्य छवि - जुलाई, 1997
10. अनंत यात्रा - भाग 4 - दिसम्बर, 1997

अनुवादित पुस्तकें - English Translation

1. Anant Yatra Part - I - July, 1992
2. Who was He - February, 1995
3. Realization to Ultimate Reality - Oct, 1996
4. Anant Yatra Part - II - February, 1997